श्यामली

कौशलेन्द्र पाण्डेय

श्यामली लखन शर्मा की सर्वथा अनिंद्य समष्टि-सुन्दरी है, ब्रह्माण्ड सुन्दरी भी कह सकते हैं आप। उसका आकर्षण विलक्षण है, किसी नाप-जोख, निगूढ़ता तथा अनेकरूपी अशालीनता से अनिर्मित। उसकी बाह्य एवं आंतरिक तिलोत्तमता को परिभाषित करने के लिए कृतिकार के स्तर से अपनाये गये निकष भी अकल्पनीय-से हैं। मेरी समझ में कवि-कथाशिल्पी की सौन्दर्य दृष्टि की अप्रतिमता है यह!

ISBN No. : 978-81-907796-2-3

डॉ. रामवृक्ष सिंह
उप संपादक 'संकल्प'
सिडबी टावर, अशोक मार्ग
लखनऊ-226001

सुकवि-समालोचक
मनीषी-मार्तण्ड
अप्रतिम वक्ता एवं प्रखर प्रशासक
डॉ. शंभुनाथ
को ससम्मान

-कौशलेन्द्र

श्यामली

(उपन्यास)

□ कौशलेन्द्र पाण्डेय
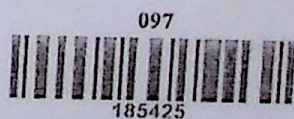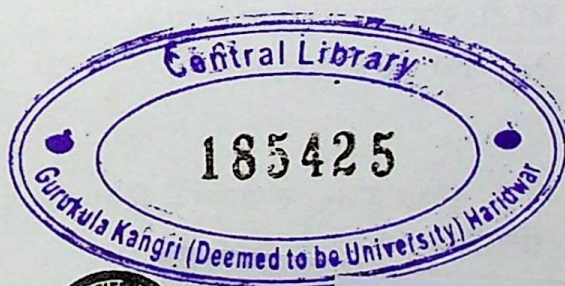
उद्योग नगर प्रकाशन
गाजियाबाद (उ.प्र.)

श्यामली (उपन्यास)

❑ कौशलेन्द्र पाण्डेय

ISBN: 978-81-907796-2-3

मूल्य : १४० रु.

प्रथम संस्करण, २००८

उद्योग नगर प्रकाशन
६६५, न्यू कोट गाँव
जी.टी. रोड, गाजियाबाद (उ.प्र.)
२८६०११०, ९८१८२४६६०२

मुख पृष्ठ/अक्षर संयोजन: रिचा कम्प्यूटर
इन्दिरानगर, लखनऊ (९४५०६१३४८४)

मुद्रक :
गाजियाबाद ऑफसेट प्रेस
गांधी नगर, गाजियाबाद

Shyamali (Novel) *By* **Dr. Kaushlendra Pandey**

कथा-रुचि सम्पन्न आपसे

आपने प्रत्येक आकार की मेरी कहानियाँ आकाशवाणी से सुनी होंगी, देश–विदेश की जानीमानी पत्रिकाओं एवं समाचार पत्रों में पढ़ी भी होंगी। आप मरघट का प्रहरी, आंगन से भी छोटा आसमान, एक नया आसफुद्दौला, पटाखे, गगनचुम्बी, नीले फ्रेम वाली खिड़की एवं संवेदना के जुगनू संज्ञायित मेरे कथा संग्रहों से भी परिचित हैं; पूर्णिया, पटना, फरीदाबाद, नागपुर, दिल्ली और रायबरेली, लखनऊ तथा पश्चिम बंगाल से प्रकाशित कथा संकलनों में भी मेरे रचनात्मक अवदान को देखा होगा। ....कथा लेखन से अर्जित लोकप्रियता से प्रोत्साहित होकर अब आपके हाथों में 'श्यामली' नाम की यह औपन्यासिक कृति सुलभ करा रहा हूँ। उपन्यास लेखन की दिशा में प्रथम प्रयास की सुपरिणति है यह तथा मुझे आशा है कि पाठक इसे पढ़ेंगे, पसन्द करेंगे और मेरी लेखकीय मान्यताओं पर उदारतापूर्वक विचार करते हुए मेरा उत्साह बढ़ायेंगे।

'शून्या' नाम से इस कृति को पाण्डुलिपि का रूप–स्वरूप तीन वर्ष पहले ही मिल चुका था किन्तु किन्हीं कारणों से इसका प्रकाशन प्रसवस्थ ही रहा, हालांकि इस अंतराल में 'त्रिशंकु' (एकांकी नाट्य संग्रह) एवं समालाप (मेरे साक्षात्कारों का संग्रह) आपको पढ़ने को मिले; वे अखिल राष्ट्रीय चर्चा में भी आये। त्रिशंकु तो जबलपुर की साहित्यिक सांस्कृतिक संस्था 'कादम्बरी' द्वारा २७ नवम्बर २००७ को पुरस्कृत एवं सम्मानित भी हुआ। मेरी मंशा कतई यह नहीं कि संदर्भित तथा अन्यान्य कृतियों से अर्जित उपलब्धियों के आधार पर गुणवत्ता की दृष्टि से आपसे 'श्यामली' को उत्तमातिउत्तम कोटीय औपन्यासिक कृति मनवाऊँ। मैं तो अनुमान तक करने में समर्थ नहीं कि इसे निकट भविष्य में गुणात्मकता तथा सार्थकता एवं उपादेयता की दृष्टि से किस स्तर की मान्यता मिल सकेगी ! तो भी इतना कहने में मुझे रंच मात्र संकोच नहीं कि इसमें ऐसा कुछ नहीं कहा गया जो भारतीय अस्मिता एवं मानवीय जीवन मूल्यों के विरोध में हो; इसलिए इसे आपका यथेष्ट स्नेह आवश्यक है। काम करने के लिए उपलब्ध वर्तमान के अच्छे से अच्छे उपयोग की कोशिश में हो सकता मेरी 'श्यामली' आपकी अपेक्षा एवं आशानुकूल भी हो, और आपकी आँखें इसके आद्योपान्त पारायण के उपरान्त ही विश्राम लें।..... ऐसी स्थिति में मैं स्वयं को कृतकृत्य समझूँगा।

'श्यामली' के कथानक की बाबत मैं अपने इस निवेदन में ज्यादा कुछ नहीं

कहना चाहता, सिर्फ इसके कि यह एक प्रेम त्रिकोण पर आधारित है। लखन शर्मा और झरना एक ही बैच के प्रशासनिक अधिकारी हैं जबकि श्यामली एक विदुषी है, रतिरूपा एवं अच्छे से अच्छे संस्कारों से सिक्त। सत–असत में अगर हम इसको सत्य की पक्षधर मान लें, तो समझ सकते हैं आप कि विजयश्री किसके साथ रहेगी।.... इसके अन्य पात्रों में हैं जस्टिस शर्मा जो लखन के बड़े भाई हैं, उनकी माँ, पत्नी वसुन्धरा, उनकी कन्या वृन्दा उर्फ कैटी। श्यामली की तरफ के पात्र हैं– उसके पिता जो जिला विद्यालय निरीक्षक के पद से रिटायर हुए, उनका पुत्र सचिन तथा पुत्रवधू शुभांगी दोनों ही जो अलग अलग कम्पनियों में ऊँचे ओहदों पर कार्यरत हैं। मात्र संक्षिप्त भूमिकाओं में मुख्य हैं भास्कर, स्मिता, सुधा और प्रीती। चारों ही लखन शर्मा और झरना वाले बैच के अधिकारी। .....जस्टिस शर्मा के घरेलू सेवक रग्घू काका, तो झरना के डैडी और मॉम का इस अवसर पर स्मरण न करके अपने पाठकों के रोष का भागी भी नहीं बनूँगा।

कैटी प्रारम्भ से ही अंग्रेजी माध्यम से पढ़ी है, अब इण्टरमीडिएट की छात्र है तो अन्य सभी पात्र समय तथा परिवेश से बखूबी जुड़े हैं। कम्पनियों के कर्मी तो आधे अंग्रेज होते ही हैं; इन कारणों से इनके संवाद हिंगलिश में बहुतायत में हैं, जो कतई अस्वाभाविक नहीं। अभिव्यक्ति की वह भाषा अवश्य ही आपत्तिजनक मानी जायेगी जो पात्र की योग्यता, उसकी प्रास्थिति तथा परिवेश के मुताबिक न हो।.... इसके बावजूद आपको लखन की माँ– कैटी और श्यामली तथा लखन के बीच ऐसे संवाद पढ़ने को मिलेंगे जो संकेत रूप से हिन्दी की ही हिमायत करते हैं।

......समिश्रित भाषा के उपयोग के पीछे मेरा यह भी उद्देश्य रहा है कि सम्प्रतिक भाषा जो किसी भी समाज या समुदाय की पारस्परिक अभिव्यक्ति की माध्यम है की भी वास्तविक आकृति साहित्य के दर्पण में दिखाई पड़े। चम्पा के सन्दर्भ में ही कृपया सोचिये। पहली बार उसने कोई शहर देखा, वह शहरी भाषा समझ तो सकती है, लेकिन बोल नहीं सकती। रग्घू अर्से से लखनऊ में जस्टिस शर्मा का घरेलू नौकर है, इसलिए उनकी माँ को छोड़ सभी आदर देने के लिए उसे रग्घू काका सम्बोधित करते हैं, लेकिन शहरी बोली बोल सकने के बावजूद वह ग्रामीण भाषा को उसमें इस प्रयोजन से समिश्रित कर देता है कि उस परिवार के सेवक रूप में वह सभी के लिए प्रियकर बना रहे। उर्दू के समिश्रण के बिना कोई भी कलमकार भाषा का पण्डित तो माना जा सकेगा, कथाशिल्पी नहीं। उर्दू एक ऐसी धातु की भूमिका अदा करती है जो हिन्दी के सोने में मिलकर कथाभिव्यक्ति के उम्दा से उम्दा जेवर का जन्म सम्भव करे। उधर आज के पढ़े–लिखे लोग हिन्दी में अंग्रेजी और अंग्रेजी में हिन्दी शब्दों की छौंक लगाकर स्वयं के मनोभावों को बखूबी व्यक्त कर पाते हैं, युगीन विवशता

है यह ! मैं समझता हूँ भाषा के स्तर पर आपकी आपत्तियाँ मेरे इस स्पष्टीकरण से नक्की हो गयी होंगी।

पहले से ही एक और निवेदन है कथा शिल्पन के बारे में। मैंने ज्यादातर कहानियों के कथानकों को 'मैं' पात्र के स्तर से गति दी है। किस्सागोई का यही लहजा ही रहा है मेरा; लेकिन इस आधार पर चाहे वे कहानियाँ हों या ये श्यामली उपन्यास– कोई भी घटना–परिघटना मेरे अपने जीवन से जुड़ी नहीं। यदि इसके पात्र व स्थान भी किसी व्यक्ति, वर्ग या समुदाय से मिलते–जुलते लगते हों, तो इसे मात्र संयोग समझा जाये क्योंकि युगीन विसंगतियों के सन्दर्भ में सभी कुछ कल्पनाधारित है। राजकीय सेवा में मैं आईएएस स्तर का भी नहीं रहा। ग्रहस्थ आश्रम में सन् १९६१ में दीक्षित हुआ था, यानी अड़तालीस वर्ष पहले जब इक्का दुक्का लड़कियाँ ही सरकारी अथवा गैरसरकारी नौकरियों से जुड़तीं थीं। कहने का आशय यह है कि उस वक्त झरना, कैटी, कैटी के कालेज की कतिपय लड़कियों जैसी आजाद ख्याल की बातें कर सकने वाली लड़कियाँ भी नहीं होती थीं। इस प्रकार श्यामली में इस्तेमाल किया गया 'मैं' लखन शर्मा के सर्वनाम से भिन्न कुछ नहीं। लेखक रूप में मैंने अधुनातनता तथा पारम्परिकता विषयक अपनी मान्यताओं के पैबन्दों से शिल्पित इस कृति में लोकधारणा को ही उचित ठहराया है। यही कि आज की स्थितियों में पुरातन पूरा–पूरा तिरस्कार्य नहीं तो साम्प्रतिक सांस्कृतिक परिदृश्य में सब कुछ अच्छा भी नहीं– अतएव हमारे लिए आवश्यक है कि हम परम्पराओं से सरोकारशील बने रहकर..... नये को सतर्कता से परखें तथा आवश्यकता या स्थिति के अनुसार ही उसे अंगीकार करें।

लखन शर्मा और श्यामली के चरित्र में तरह–तरह के रंग भरने की ललक में मैंने अपने कुछेक मित्रों के काव्यांशों का प्रसंगानुकूल उपयोग किया है, तदर्थ बहुश्रुत गजलकार एवं अग्रज तुल्य अनुज आचार्य भगवत दुबे (जबलपुर) तथा नवगीत भंगिमा के प्रथम पांक्तेय कवि–मधुकर अस्ठाना के अप्रतिम औदार्य को मैं नमन करता हूँ। उपन्यास को निर्विलम्ब प्रकाशित कराने के लिए अक्सर फोन से 'अशोच्यानन्व शोचस्त्वं का उपदेश करने वालों में सर्वश्री ओम प्रकाश चतुर्वेदी 'पराग' (गाजियाबाद), सुकवि राम सनेही लाल शर्मा 'यायावर' (फीरोजाबाद), शीर्ष कथाशिल्पी रमेश नीलकमल (जमालपुर), समालोचक पाण्डेय रामेन्द्र (रायबरेली), राधेश्याम शुक्ल (हिंसार विश्व विद्यालय), समय सुरभि अनन्त (बेगूसराय) के यशस्वी सम्पादक बन्धु नरेन्द्र कुमार सिंह, लखनऊ के कथा–त्रिकूट नेत्रपाल सिंह, सुरेश प्रकाश शुक्ल एवं राजेन्द्र वर्मा, सम्पादकाचार्य उमाशंकर मिश्र एवं बंधुत्रय पारिजात, अंशुमान तथा मयंक पाण्डेय विशेष स्मरणीय हैं। इन सभी के प्रति भी मैं श्रद्धावनत हूँ।

–कौशलेन्द्र पाण्डेय

१

रोज–रोज जैसी ही बकैती कर रहा था टीवी ! उम्दा नाकनक्श वाली मेनकायें भी डिटर्जेन्ट पाउडरों की अमोघता का बखान कर रही थीं। किसी खास नाम की चाय की दीवानी एक सुन्दरी तो अब तक की सुबह में पाँच–छः बार स्टाल के पास आकर चाय की चुस्कियाँ ले चुकी थी, तो हर बार हरेक हाल्ट वाले स्टेशन पर गार्ड बाबू कुछ–कुछ खीझते हुए वहीं पहुँचे और हर बार ड्राइवर पर आँखे तरेरी थीं; ट्रेन के खुलने में देर हो रही थी न ! सतरंगी पोशाक में शक्तिमान भी किसी से कम नहीं था। कमर पर हाथ के पंजे टिकाये वह शहरी नन्हे–मुन्नों को घर में सलीके से रहने और इम्तहान से पहले पढ़ने के नुस्खे दे रहा था। एक इकलौता पुत्र अस्पताल से अपने घर वापस होते हुए डाक्टर से कह रहा था– अंकल जी ! बहुत दिनों से आप हमारे घर नहीं आये ? तो डाक्टर बोला था–तुम्हारी मम्मी ने बुलाया ही नहीं.... और अच्छा ही है कि तुम भी शायद बीमार नहीं पड़े।

ऊब चुका था आये दिन की इन बासी बातों से, तो टीवी बन्द करके ट्रान्जिस्टर का खटका खिसका दिया, फिर बड़ी सुकून की साँसे लीं, क्योंकि उस वक्त शिव जी की शादी वाले प्रसंग की चौपाइयाँ चल रहीं थीं। इसी दौरान माँ और कैटी ने पहले तो कुछ खुशी–खुशी, फिर थोड़ी सी रहमदिली से मुझे निहारा था। उनकी आँखे कई दिनों से मुझसे सवाल कर रहीं थीं कि बाइस बरस से जास्ती उमर हो चुकने के बाद भी मुझे कुवाँरा बने रहना क्यूँ पसन्द है ! माँ ने दो–एक बार एक लोकमान्यता का जिक्र भी किया– 'बारह बरस तक के दूल्हे को ही वर कहते हैं बचुवा ! उसके बाद शादी करने वाले को दूल्हा, लेकिन जो पचीस की उमर पार कर गया उसके लिए भतार कहलाये जाने की पद्मश्री भी इज्जत की बात नहीं मानी जाती।' माँ ऐसा ही कुछ एक बार फिर दोहराती कि कैटी ने दादी की बात में कुछ मर्मभेदी संशोधन सुझाये– दादी जी ! आज के दिन बाइस से तीस तक की उमर के हस्बैण्ड को वर कहेंगे– चालीस तक वाले को दूल्हा और चालीस से ऊपर वाले लड़के को भतार। गलत कह रही हूँ कुछ ! आखिर आदमी की औसत जिन्दगी सौ बरस है आजकल।..... एक दिन तुम्हीं तो कर रही थी ऐसा, मम्मी जी से।..... फिर अंकल को यूँ निराश क्यों कर देती हो बार–बार ?

माँ ने कुछ लमहे कैटी के कटाक्ष को समझने में गुजारे, फिर पूरे प्रकरण को इन शब्दों के साथ विराम दिया– भतार नहीं कैटी, क्यूँकि भतार वाला सम्बोधन देहातों में चलता है। गाँवों की मेरी उम्र वाली महिलायें पढ़ी लिखी नहीं होतीं न, इसलिए भरतार न कहकर विवाह कर रहे लड़के के प्रति कुछ खास अरुचि दिखाने की मंशा से 'भतार' कह लेती हैं। तुम लोगों की अंगरेजी में समझाऊँ तो आउटडेटेड या फिर टाइम बार्ड लड़का माना जाता है वह ग्रहस्थ बनने की दृष्टि से। बताया ना अभी ! यह सब लड़के को ज्यादा इज्जत न देने के उद्देश्य से होता है।

माँ और कैटी का ऐसा सम्वाद अक्सर इसी मकसद से होता कि मैं किसी सरकारी ओहदे के फिराक में जितना रहता हूँ, उसी स्तर की चिन्ता गृहस्थी बसाने के लिए भी करूँ। आपको बतादूँ, माँ तो मेरी मॉम है ही, सीनियारिटी के लिहाज से परिवार की पुरखन भी। अपनी सेहत से ज्यादा फिक्र करती हैं रातोदिन अपनी उंगलियों पर माला फेरते रहने की। इस बात की भी निगरानी रखती हैं कि घर में सारा कुछ ठीक–ठाक है, फूल–फल रहा है परिवार और सेहत के लिहाज से भी किसी के लिए कोई चिन्ता की बात तो नहीं। उनका परिचय इससे कुछ ज्यादा देना कैटी की दादी की बेइज्जती है।

तो भी एक बात और उनके बारे में। मुझपर वह अपने पुत्रमोह तथा घरेलू जिम्मेदारियों के निभाने के अलावा भी कुछ कारणों से ज्यादा मेहरबान रहतीं हैं।..... रामायण के किसी प्रसंग या फिर भगवद्गीता के किसी श्लोक में उलझ जाने पर मदद के लिए वह मेरी ही तरफ देखती हैं। बाद में मुझपर अपने वात्सल्य का घड़ा लुढ़का देती हैं, आँचल में लगी गाँठ को ढीला करके कभी दो रुपये तो कभी पाँच रुपये का सिक्का मेरी हथेली पर रखकर। उनकी उलझन रफ़ा करने से पहले ही मैं इतमीनान कर लेता कि उनके खूट में कोई सिक्का या नोट बंधा है या नहीं। अब मैं बड़ा हो गया हूँ तो वह ऐसे मौके पर मुझे पाँच रुपये से कम नहीं देती; इस शुकराने को लेकर अपनी जेब में रखने के दौरान दोनों की आँखे परस्पर नेह भरी बौद्दार करती हैं– तब मुझे किसी खास तौर का सुख महसूस होता है। कई बार कहा भी मैंने– अम्मा ! आँचल में सिक्का न भी बंधा हो तो भी पूछ लिया करो– किसी प्रसंग में मदद पाने के लिए संकोच उचित नहीं। एक बार धीमी आवाज में कहा भी था उन्होंने– चालाक वानर,

सिक्का चुटकी से दबा लेने में मुस्तैदी दिखाता है, नाटक उदारता का करता है। ढीठ कहीं के!

और कैटी! इतने खुलासे से समझ गये होंगे आप कि वह मेरी भतीजी है। मैं ही नहीं, सारा घर इसे प्यार से कैटी सम्बोधित करता है। पास पड़ोस के लोग इस बात के अपवाद नहीं। अस्लियतन कंजी आँखों वाली चार–पाँच साल बाद की मिसवर्ल्ड है यह। बिल्ली की तरह की इसकी चेष्टायें भी होती हैं, दूध पीने की भी शौकीन है यह। बस बोलती है आदमी की भाषा में। साल भर पहले तक तो उसकी बालिका सुलभ लीलायें किसी को भी मोह लेतीं। पीठ के पीछे वह अपनी मम्मी या दादी के पास पंजों के बल चलकर ही आती। मेरे पास भी ऐसे ही आकर चौंका देती, कभी–कभी कान के पास मुँह लाकर म्याऊँ–म्याऊँ भी कर देती या टूथपिक में रुई लगाकर कान के अन्दर खुजखुजी कर देती। एक बार तो माचिस की तीली ही मेरे कान में तोड़ दी थी। हॉस्पिटल जाकर डाक्टर से निकलवाया उसे। किसी भी हरकत पर मैं रंच मात्र नहीं खीझा..... उसका मन छोटा हो जाता न!

आज सामने ही बैठी थी अपनी दादी से सटी हुई। कहने लगी अंकल! तुम्हारी बेली तुम्हारे सीने से सवाया हो चुकी है; दादी जी की विनती है कि इसे काबू में करने की खातिर जल्दी से जल्दी कोई जतन करो। मार्निंग वॉक करो या सायकिल चलावो, या फिर रामदेव बाबा जी की बताई तरकीबें आजमाओ.... अरे यही आसन वासन या प्राणायाम, जिसे ज्यादा पढ़े लिखे लोग 'योगा' कहते हैं, वर्ना......

वर्ना... ? उसी के मुख से बाहर आये लफ्ज को मैंने सवाल बनाकर अपनी दोनों भौंहे उछाल दीं। बोली वह, आज तो तुम्हें देखकर कोई भी कन्या मेरी आण्टी बनना चाहेगी, लेकिन कल या परसों की बाबत मैं कुछ भी नहीं कह सकती। अरे अंकल, ...अंकल मैं कोई जोतिषी कैसे हो सकती हूँ!

मैंने यूँ भंगिमायें बनायीं जैसे उसकी आशंका को मुकम्मल तौर पर तसदीक कर रहा हूँ। इस पर वह शायद और कुछ कहने के लिए उठी, मेरे सामने आयी और तनकर खड़ी हो गयी।.... एक तरकीब है अंकल– गोबिन्दिया नाच की नकल करो, पाँच–दस मिनट रोज। मेरी एक मैम कह रहीं थीं कि इस नाच से पेट–सीना, कमर, पाँव के पंजों और कंधों की अच्छी–खासी वर्जिश हो

जाती है, हाजमा दुरुस्त रहता है, खुलकर गैस खारिज होती है और सीने के अन्दर साँस ले रहे दिल की धौंकनी की सर्विसिंग भी अपने आप हो जाती है। उनसे यह बात सुनते ही मैंने मन बना लिया था कि अपने अंकल को बताऊँगी यह नुस्खा!

तेरे मन की बात मैम कैसे समझ पाई होंगी?

'क्यों नहीं अंकल? बड़ी इन्टेलीजेण्ट हैं, इंगलिश की लेक्चरर हैं न। मैंने तुम्हें यह नुस्खा बताने वाली बात बुदबुदाई ही थी, जिसे वह ठीक-ठीक समझी भी थीं क्योंकि उसने अपने स्नोह्वाहट दाँतों से ओठों को आहिस्ते से उठा लिया था।' इतना कह चुकने के बाद कैटी खिलखिलाकर हँस पड़ी थी।

मैं अनुमान कर रहा था कि सिर्फ रत्ती भर मुस्कान में ही वह कित्ती खूबसूरत दिखी होगी। तुरन्त ही कैटी के डाटिया सवाल से जीवन-मरण की स्थिति पैदा हो गयी। पूछ लिया उसने- अब क्या हुआ तुम्हें? इतना आसान नुस्खा तक तुम्हें नहीं भाया?

भाया क्यों नहीं! लेकिन तुम्हारी मम्मी, तुम खुद, और तुम्हारी दादी... सभी अपनी-अपनी मिसाइल दागोगे ....तो फिर क्या होगा मेरा हाल? तुम कहोगी- 'अंकल तो घर से बाहर पाँव निकालना ही नहीं चाहते। न ग्वाले तक जाना चाहें, न चौराहे के किसी खोखे से ब्रेड-बटर लाने।' दादी भी अपना डॉयलाग दागेगी- 'सुबह-सुबह बापू लोगों के मुखारविन्द से भजन कीर्तन सुनने के वक्त ये मुआ गोविन्दी हुड़दंग कर रहा है। हँह...बस शायद मेरी भाभी ओठों से बाहर कोई बात न लायें, तो भी यह सोचते हुए कुढ़ती रहेंगी- 'भइया जी तो सुबह-सुबह पूरे कमरे में रमे हैं, झाडू-पोछा वाली कैसे क्या करे..... वह खुद आज के अपने लेक्चर की तैयारी कैसे करें।' .....किसी का भी यूँ सोचना गैरवाजिब नहीं होगा मेरे विचार से। ...क्यूँ कैटी?

तो अंकल, सुबह सुबह की हवाखोरी और मटरगस्ती ही ठीक दिखे। अब फाइनल ही समझ लो इस बात को। मेरी दादी तो सीता स्वयंवर और-और राम जनम वगैरह छोटे पर्दे पर देखेंगी, मॉम को अपना लेक्चर तैयार करने का मौका मिलेगा और तुम अंकल जी, किसी लॉन में कमर पर दोनों हाथ टिकाये खड़े-खड़े साफ सुथरी हवा घूँटोगे... इससे तन्दुरुस्ती बनेगी ही और मुझे प्यारी-प्यारी आंटी मिलेगी। कहकर एक बार फिर कैटी खिलखिलाई थी।

देर से कैटी को सुनते–सुनते माँ ने भी अपनी बात जोड़ दी– कैटी को आंटी मिलने से मुझे भी एक फायदा हो जायेगा– ये तुम्हारा अंकल चौपाइयों और श्लोंकों का अर्थ यूँ ही गोलमाल सा बता देता हैं– तो भी मेहनताने की रकम मैं पूरी की पूरी दिया करती हूँ। हो सकता है मेरी मदद करने में कैटी की आंटी अपने पारश्रमिक में मुरव्वत करे, या मुफ्त में ही मुझे अपना वक्त दे दिया करे। ...अब बहू तो डिगरी कालेज से बंधी–बंधी ही इस घर में आयी, मजबूरी है उसकी, लेकिन अब तो छोटी वाली मेरे पाँव पलोटेगी, मेरे बीमार होने पर ठीक से मेरी तीमारदारी करेगी और भगवान् के सामने बैठकर गीता–रामायण से परलोक सुखी बनाने वाले प्रसंग भी पढ़ेगी। हह...... !

माँ ! अगर जरूरत से ज्यादा तेज–तर्राक हुई तो ?

देख तू, नोट करले मेरी बात अपने मगज में– वह घर की बिजली से ज्यादा तेज-तर्राक नहीं होगी, उसके मन की लगाम तो मेरे ही हाथ में होगी।

दादी के इन मन्सूबों पर कैटी ने सीमेण्ट लगा दी, तो 'अच्छा–अच्छा' कहते हुए मैंने दोनों की मनोकामना का अनुमोदन भी कर दिया, साथ ही एक हल्का सा ठहाका भी लगाया था। इससे उत्साहित होकर वह और भी बोली कुछ– 'तू संस्कारी लड़का है, इसलिए जानती हूँ मैं कि तू मेरी ही मंशा पर अमल करेगा।' कैटी से मुखातिब होकर बोली फिर–'वर्ना आजकल के ज्यादातर बच्चों के दिल में अपने बड़े–बूढ़ों के लिए इज्जत ही कहाँ, जो अपनी घर वाली से कहें कि वह पूरी गिरस्ती सम्भाले और आने–जाने वालों के लिए घरी–घरी चाय उबाले। ....मैं जानती हूँ मेरी यह बहू किसी संस्कारी घर की होगी।'

माँ की व्यूह रचना में मुझे तड़फड़ाता छोड़कर कैटी खिसकने की फिराक में थी। कमरे से बाहर पाँव निकालते हुए कह भी रही थी, अंकल ! अच्छी सेहत और अच्छी कन्या से ब्याह रचाने में बड़ा कनेक्शन होता है–अब देखना यह है कि दादी के लिहाज से सर्वगुण सम्पन्न कन्या तुम कैसे खोज पाते हो !

दूसरे ही दिन, ट्रान्जिस्टर में राम चरित मानस से संगीत बद्ध पाठ हो चुकने के तुरन्त बाद कैटी ने स्कूल बैग अपने कंधे से लटकाने से पहले मुझे पूरे घर में खोजा। पलंग के नीचे झुककर देखा, अल्मारियों और किवाड़ों के पीछे भी तलाशा। शायद पूरी तरह सन्तुष्ट हो लेना चाहती थी कि मैं मार्निंग वॉक के लिए निकला हूँ या घर में कहीं दुबका हुआ बैठा हूँ। ...लेकिन मैं तो वापिस

हो रहा था, घूमघामकर दरवाजे से दाखिल ही हुआ था कि कैटी ने भौहें टेढ़ी कर दीं– कल मैंने तुम्हारे लिए इतनी मगज़मारी की अंकल, लेकिन तुम्हारा जवाब नहीं... !

मतलब ?

टहलने नहीं गये तो नहीं गये, लेकिन फ्यूचर से इतनी ज्यादा बेरुखी क्यों ? अबसे मैं कभी भी इस बारे में तुमसे बात तक नहीं करूँगी।

माँ मुँह से बिल्कुल चुप थी लेकिन चश्में के अन्दर से उसकी हँसती आँखें वाचाल कैटी की भंगिमाओं पर बाग–बाग थीं। यूँ कैटी की मिसाइलों की मददगार माँ की चुप्पा मिसाहल से मुझे आत्मरक्षा करनी ही थी। उत्तर दिया– 'कैटी ! लौट कहाँ से रहा हूँ फिर, ये तो बोल !

अंकल झूठ... ? अरे इतनी सी बात में हमेशा ही सच बोलने वाले मेरे अंकल को आज असच भाषण करना पड़ा। आखिर हो क्या गया तुम्हें ? रोज–रोज वाले जूते, वही बदबूदार मोजे, वही बुश्शर्ट और बेहया पैंट.... तो मार्निंग वॉक कैसी ! ....अरे सफेद मोजों पर सफेद ही जूते पहनो कनवैस वाले और बैगी पैण्ट, मतलब ढीलीढाली हॉफ पैंट, यूँ कि जांघों तक के मोटे मोटे रोंयें साफ–साफ दिखें– बिल्कुल फ़िजूल है ये फुटपाथिया जीन्स। ज़रूर तुम नुक्कड़ वाली चाय की दूकान का चक्कर लगाकर लौट लिए हो।

हाँ, तुम्हारा ऐसा सोचना गलत नहीं लेकिन शुरूआती दिन इतना टहलना ही ठीक होता है। आदत तो धीरे–धीरे बनेगी ना ?.... नहीं तो हफ्ते भर तक देह की मसाज़ करानी पड़ेगी। दूसरे या तीसरे दिन से ही नागा शुरू हो जायेगा, तब मेरी नानी जी ? ...जहाँ तक बाकी टीमटाम की बात है- कल बाजार ही बन्द था। देख लेना–आज ही तुम्हारी बताई हुई चीजें लाता हूँ। .....तुम्हारी और तुम्हारी दादी जी की ये तकरीर मेरी समझ में दो–चार दिन पहले ही होनी चाहिए थी।

ठीक अंकल.... आज ही सारा कुछ मार्केट से। फार्म बनाना बड़ा जरूरी होता है.... तो अब से कोई बहाना नहीं !

चुप रहा मैं। चुप रहकर ही मैंने उसके हुकुम की तामील करने का वायदा किया। करता भी क्यों न ? चुस्त–दुरुस्त रहने में फायदे तो मेरे ही, आखिर मुझे

भी तो है कैटी की आंटी का लालच। ....शायद यूँ बुदबुदाते हुए सुन लिया था उसने। बोली–सक्सेस का फारमूला जानते हो ?

मेरे हाँ या ना कहे बिना ही वह बड़ी संजीदगी से बताने लगी- मार्निंग वाक के दौरान.....

जाने कैसे भाभी सुन रही थी हमारी बातें ! उन्होंने ही कैटी की बात पूरी की–' कितने ही किसी लड़की के जनक मुँह लटकाये–लटकाये अपनी टोली–वालों से कहते रहते हैं– कोई अच्छा लड़का उनकी निगाह में हो तो बतायें। ....बस खाते–पीते और शरीफ परिवार का हो– हाइट, हेल्थ और अच्छी नौकरी शुदा।

ठीक है भाभी। ....लेकिन किसी से ऐसी बात करते हुए नहीं सुनी तो ? दूसरे यह कि अभी तो मैं बेरोजगार ही हूँ– उसके मुताबिक मैं बेमेल रहा तो ?

अरे लाखों में एक मेरा देवर फोर फर्स्ट क्लास, कामदेव की तरह की छवि वाला, इतने बड़े घराने और इतने मशहूर ऐडवोकेट का भाई होकर इतना क्यूँ निराश !...... तुम अभी तक स्टूडेन्ट रहे, कालेज–यूनीवर्सिटी की पढ़ाई खत्म करके भी कम्पटीशन्स की तैयारी के दौरान भी स्टूडेण्ट ही रहे तो उस जीवन से नये मोड़ पर मुड़ने के लिए तुम्हें मानसिक रूप से तैयार कर रहे हैं हम लोग। नौकरी तो मिलेगी ही तुम्हारी पसन्द वाली.... इतना विश्वास खुद पर तुम्हें भी है, हमें भी।

माँ बोली– 'मैं तो रोज ही कहती रहती हूँ भगवान् जी से– मेरे बेटे को आई.ए.एस. ही बनाना। इसके लिए मैंने अपने सारे पुण्य भी दाँव पर लगा रखे हैं। मेरा पूरा आशीर्वाद है बेटे के लिए।' कहते–कहते माँ ने पुत्र के सिर पर हाथ भी रख दिया था। इससे वास्तव में मैं साहस और संकल्प से भर उठा था।

कैटी भी बोली– 'पेशेन्स, फोरसाइटेडनेस और डिटर्मिनेशन तुममें है तो मायूस होने की क्या बात ! अक्सर देखा करती हूँ मैं सुबह की तरह सुनहरा और उजाला भरा तुम्हारा फ्यूचर। फ्यूचर को क्या कहते हैं अंकल ? ....अरे हाँ भविष्य।' कहकर खिलखिलाई थी वह; अपनी मैम का भी जिक्र किया था। अंकल मेरी मैम के मुताबिक आदमी की कामयाबी में पेशेन्स और डिटर्मिनेशन का बड़ा हाथ होता है। गान्धी जयन्ती के मौके पर इसीलिए पेशेन्स को और

असरदार बनाने के लिए सिम्पल लिविंग ऐण्ड हाई थिंकिग पर उन्होंने बड़ा जोर दिया था। पेशन्स एक बगुले वाला- ठीक, आई बात समझ में ?

माँ बोली– ठीक कहा उन्होंने– तेरे बाबा जी कहा करते थे– काक चेष्टा, बकुलवत ध्यान तथा श्वान निद्रा जैसे गुण आदमी को जीवन में उन्नति के अवसर देते हैं।

नतीजन आज सुबह का ये घण्टे–डेढ़ घण्टे का वक्त हर उम्र के इल्मदार आदमी से गुरुमन्त्र ग्रहण करने का रहा। अंग्रेज कैटी से तो पूछना पड़ेगा किसी दिन उसकी मैम का हुलिया और बाकी बातें क्योंकि जिन्दगी की सारी बड़ी बातें सीखने के मूल में वही हैं उसके लिए। मैं सोच ही रहा था ऐसा कि अंग्रेज ने हवा में हाथ हिलाये, फिर रिक्शे में फुदककर बैठ गयी। जब तक गली बायें नहीं मुड़ी, हवा झलती हुई उसकी घनी–घुंघराली अलकों को देखता रहा, बाग–बाग होता रहा यह सोचकर कि इत्ती कच्ची उमर में भी उसकी सोच–समझ बतियाने के सलीके और अपने अंकल के लिए उसकी निष्ठा कित्ती लाजवाब है।

२

दूसरी ही सुबह मैं टहलराम बन गया। पिछली शाम को ही मार्निंग वाकर के टीमटाम वाली सारी चीजें बाजार से ले आया था। उन्हें पहनकर जैसे मुझमें कोई नयी रूह समा गयी थी। युवा वाकर मुझे आँखे फैलाकर बार–बार देखते– मन ही मन सोचते भी कि उनकी बटालियन के ईदगिर्द यह नया जवान कहाँ से। हाँ, इस बटालियन में कुछ बुजुर्ग भी थे। नया–नया मैं अपरिचितों को देखता, कभी–कभी उनकी बातें सुनते हुए मुस्कुरा भी देता, लेकिन इस टोली का बुजुर्ग वर्ग मैंने कुछ–कुछ उदासीन महसूस किया। बगल से निकलने वाली किशोरियाँ हावभाव से अपने भविष्य के प्रति चिन्तित दिखतीं जिससे उनके चेहरे कुछ फीके रंग वाले दिखते, हालाँकि वे ललचाई नजर से मुझे देखतीं, शायद मन मसोसकर रह जातीं, सोचते हुए कि यह अंगूर मीठा नहीं।

मैंने तय किया कि बारह–तेरह लोगों की इस टोली से पहले मैं तआरुफ बढ़ाऊँ। इसी बीच एक बुजुर्ग टोली के युवा मेम्बर से बोले– क्यों दुखी दिख रहे हो और आपस में फुसफुसा क्यों रहे हो भाई ? अगल बगल वालों से अपने सुख–दुख की बातें तो दिल खोलकर बतानी चाहिए।

बोला वह– अरे कुछ भी नहीं दद्दा– औरतों की बेवकूफी का क्या बखान करें। अब पछताते रहने से भी क्या मिलना, नुकसान तो हो ही चुका है।

दद्दा बोले– कैसा नुकसान, साफ–साफ बात कहो मेरे बेटे।

हाँ दद्दा, कल मैं दफ्तर से लौटा तो घर में चिल्ल–पो मची थी। हुआ ये कि चार बजे के करीब दो आदमी मेरी पत्नी से जेवर ठग ले गये। कहा था कि उन्हें वह दूना कर सकते हैं, मगर उसे कोई बेहोशी की दवा सुघाया, फिर सारे जेवर बटोरकर चंपत भी हो गये।

हिम्मत से काम लो भाई। पुलिस में रिपोर्ट तो दर्ज ही करा दो। मिलनी मिलानी तो है नहीं तब भी कोई चीज। और सुन, पत्नी की पिटाई–विटाई मत कर देना जिससे दूसरा ही बखेड़ा खड़ा हो जाये। उसे धीरे–धीरे शहर में रहने लायक चुस्त–चालाक बनाओ, बाकी प्रभु ईच्छा। अरे ये ठगी वाला कारोबार कल से ही नहीं चालू हुआ। अंग्रेजों के जमाने में तो ठगों की हरकतों ने आम आदमी का जीना ही दूभर कर दिया था। चलो यह भी प्रभु इच्छा ही समझो जो इस काले हुनर से तब सैकड़ों परिवारों का पेट भरता था।

कैसे दद्दा ? किस इलाके में चलता था ये काला हुनर; उस जमाने में कोई कानून नहीं था क्या ? तब भी नवाबी थी कि आदमी जो चाहे कर सकता था ?

सुनो भी, सुनो भी। राजपूताना, मालवा, बुन्देलखण्ड और उधर नर्मदा घाटी में छोटी–छोटी रियासतों के अलग–अलग कानून थे, उनकी पुलिस और फौज भी अलग–अलग हुआ करती थी; ज्यादातर गली, गलियारे कच्चे ही थे, बीहड़ इलाके और जंगलों के बीच से गुजरती कच्ची पगडंडियों पर जगह–जगह के जलभराव और कीचड़ से मुसाफिरों को बेइन्तेहा दिक्कत होती। इसका फायदा डाकू, चोर–उचक्के और ठग उठाते। ये रास्ते में अपनी गुप्त जानकारी की बिना पर मालदार मुसाफिरों और व्यापारियों को अपने व्यवहार तथा उनके रास्ते के दुख–दर्द बाँटकर अपनी छवि एक बहुत ही शरीफ आदमी की बनाते। विश्वास में आकर मुसाफिर अपने माल असबाब के साथ–साथ अपनी जान भी गवाँ देते।

कैसे मारते थे, फिर जान ले लेने के बाद उसे वैसे ही फेंक देते थे या......?

बताता हूँ .....बताता हूँ। रेशमी रुमाल से गर्दन कस देते थे किसी की जान लेने के लिए, फिर जंगलों की झाड़ियों में ऐसी जगह गड्ढा खोदकर दफना भी देते जो आम पगडंडी पर न हो। बाद में उसके ऊपर कांटेदार झाड़ियाँ रखकर निश्चिन्त हो जाते।

लेकिन इन सारी वारदातों में भगवान् की इच्छा का क्या सवाल, ऐसा करके ठगों की टोलियाँ पाप ओढ़ती थीं, भगवान् की मर्जी बताकर ठग लोग अपने पाप से छुट्टी कैसे पा सकते थे ?

मिसिर जी ! अमीर अली नाम के एक सबसे खतरनाक ठग ने अंग्रेज बहादुर की फौज द्वारा गिरफ्तार कर लिये जाने पर बड़ी खुशी से सात सौ उन्नीस लोगों की हत्या की बात कबूली थी, खुद ही बताया था अंग्रेज हाकिम को कि भगवान् की इच्छा इसलिए कि वह न चाहे तो कोई भी छोटे से छोटे प्राणी की जान नहीं ले सकता भले ही उसमें एक हाथी की ताकत क्यों न हो। मिसिर ! ये बुन्देलखण्ड की रियासतों में सीधे साधे और बहुत ही भले आदमियों या व्यापारियों की तरह शांति से रहते, लूट का कुछ हिस्सा उन्हें पनाह मुहैय्या करने वाले रईसों को भी देते।.....बस।

'किस धरम के होते थे ये, जात क्या थी इनकी ?'

'हिन्दू और मुसलमान दोनों ही होते, इनकी जातियाँ अगर कोई थीं तो खुद ही समझ लो भाई। दद्दा ने ठगों की बाबत बयानबाजी यह कहकर खत्म की कि अब वह थक चुके हैं वर्ना उनके पास किस्सों की कमी नहीं। ....टोली के किनारे–किनारे चलता हुआ मैंने भी पूरे माहौल का आनन्द लिया। ....कुछ सोचते–सोचते एक दूसरे बुजुर्ग ने आज के अध्याय पर विराम लगाया था यह कहकर कि 'देखो भाई, आज भी ठगों की कोई छोटी जमात नहीं। स्टेशन पर या रेलगाड़ी पर चाय के साथ बेहोशी वाले विस्कुट खिलाकर दूसरे मुसाफिर का रुपिया–पैसा हथिया लेने, नौकरी दिलाने या विदेश–यात्रा का प्रोग्राम बनाकर कबूतरबाजी करने जैसे बहुतेरे वाकिये भी ठगी के दायरे में आते हैं।

टोली में एक अन्य सदस्य ने भी बड़ी गुरुता से कई फाइनेंस कम्पनियों का जिक्र किया जो पब्लिक की गाढ़ी कमाई को हड़प करके कुछ वर्ष पहले लापता हो गयीं थी, और आज भी वह दोनों हाथ मलते हुए खड़ी है।

३

दूसरे दिन भी रहा इस टोली में किसी अपरिचित की तरह। मिसिर जी ने दद्दा को छेड़ दिया– कल तो ठगी के इतिहास की बाबत आपने हम लोगों को तरह–तरह की बातें बताई थीं, आज भी उनका कोई दिलचश्प किस्सा सुनाइये, दद्दा जी।

दद्दा ने एक झटके से 'नहीं' कहा, फिर थोड़ी देर तक अपने हुसके हुए गले को सम्भालते रहे। बोले– मिसिर तुम्हारा स्वाद विचित्र है, अपराधियों को बार–बार याद करना उन्हें महिमा मण्डित करना होता है, इसलिए आज हम दो हरिजन संत नामदेव और रविदास जी की बात करेंगे।

तो सुनो, दोनों साथ–साथ तीर्थाटन कर चुकने के बाद जैसलमेर के रेगिस्तान से होकर वापस लौट रहे थे तभी उन्हें बड़ी प्यास लगी। दोनों सिद्ध संत! तभी–रेगिस्तान में एक सूखा कुवाँ दिखा। नामदेव ने ईश्वर से प्रार्थना की कि वह तृषा संकट से उनकी रक्षा करे। फलस्वरूप कुएँ में पानी की एक धार निकली, ...तो नीचे उतरकर उन्होंने अपनी प्यास बुझाई, साथ ही रविदास जी से भी कहा कि वह भी ऐसा ही करलें। वह नहीं माने– कहा कि ईश्वर स्वयं ऊपर तक आकर पानी उपलब्ध करायेगा, तभी वह उसे ग्रहण करेंगे। फिर क्या था! पानी कुएँ के ऊपर तक आ गया और रविदास जी की प्यास भी बुझ गयी।

मुझे ध्यान नहीं कि दद्दा ने यह कहानी यहीं खत्म कर दी या आगे भी कुछ खींची तथा टोली वालों की प्रतिक्रिया क्या थी क्योंकि यकायक मै सामने से आने वालों और दायें–बायें होकर आगे निकलने वाली ईश्वर की एक कारीगरी में रम गया था। तो चार–पाँच साल की वरिष्ठता वाले दम्पतियों में पतिवर्ग मुझसे कुछ उखड़ा–उखड़ा दिखता लेकिन उनकी पत्नियाँ उनकी नजर बचाकर मुझे देख लेतीं।

कई दिनों मुतवातिर तौर पर यह सिलसिला जारी रहा। सामने से आती हुई जोड़ियों पर मेरी नजर किसी अच्छे या गैर अच्छे इरादे से पड़ ही जाती। एक अर्द्धांगिनी को या तो कोई गलतफहमी हुई या मैं उसके मन को वास्तव में भा गया– वह मेरे दायें से गुजरती हुई बड़ी–बड़ी आँखों पर छाई पलकें कुछ नीचे दबाकर, बारीक सी मुसकान के साथ नमस्ते वाली रश्म अदा करने लगी। उसके प्रणयी मन को मैंने कई दिन पढ़ने की कोशिश की। रोज–रोज वह

अलग–अलग पोशाक में आती, अलग–अलग रूप–स्वरूप और रंग वाले जूते, चप्पल या सैण्डिल पहनकर। पता नहीं कैसे करती होगी, मुझे उसकी नेलपालिश भी रोजाना बदली हुई लगती। मेरे मन में आया, या तो वह अपने पावों या जेब की दमदार है, या विदेशों की काफी हवा खाई हुई है, या फिर स्वभाव की दिलफेंक है– इसलिए इस शुभांगी को थोड़ी सी लिफ्ट देकर देखा जाये। इस निर्णय को बड़े सलीके से अमल में भी लाया। लम्बी नाक वाला अच्छी पर्सनालिटीदार उसका पार्टनर थोड़ा सा खाँस–खखारकर मुँह का मक्खन रोड के किनारे बनी नाली में प्रक्षेपित करने का प्रयास कर रहा था, तभी मैंने मौके का फायदा उठा लिया– शुभांगी जी, नमस्ते– धीमी आवाज में कहते हुए दोनों हथेलियाँ आपस में चिपकाकर आसमान की तरफ तान दीं। मेरे पूर्वानुमान के मुताबिक बड़ी खुश दिखी थी वह, खासकर इसलिए कि मेरे नमस्ते का स्टाइल बड़ा समझदारी भरा था।

दूसरे दिन सेन्चुरी पार्क की सारी ही सड़कें और गलियाँ, कुर्सियाँ, बेंचें और छोटे–बड़े लॉन छान डाले लेकिन शुभांगी और उसका पार्टनर पूरे पार्क से नदारत ! .....तो मन मसोसकर रह गया, तरह–तरह के अनुमान भी लगाये– हो सकता है मुँह से अपशिष्ट विसर्जन के तुरन्त बाद शुभम् ने मुझे शुभांगी से गुपचुप तरीके से नमस्ते करते देख लिया हो, इसलिए गुस्से में मार्निंग वाक का कार्यक्रम ही रोक दिया हो। ....या फिर कल की मेरी भारतीय हरकत का बुरा मानकर किसी दूसरी दिशा में मार्निंग वाक करनी शुरू कर दी हो, शुभांगी को सर्दी जुकाम की शिकायत हो गयी हो, या फिर बाहर से कोई अतिथि आ गये हों तो दोनों उन्हीं की खातिरदारी में मशगूल हों। .....और शायद देर रात तक कोई अच्छी सी फिल्म देखते रहे हों दोनों।

हनुमान् मन्दिर तक पहुँचा यही सब मन ही मन गुनते हुए। अकस्मात् मेरा मुरझाया मन खिल उठा.... तो आज कुछ ज्यादा ही खुल गया शुभी से। एक ही बार में दोनों को नमस्कार मारा, सवाल भी किया– तबियत तो ठीक है शुभम् जी..... और शुभांगी जी, आपकी ? ....वाकिंग पूरी करके लौट रहे हो या आज कुछ देर से चल पाये ?

'नहीं साहब, अभी लौटने की क्या बात ! अभी तो हमें लोगों से होने वाले नमस्ते, नमस्कार, हॉय–बाय वगैरह का डेली कोटा पूरा करना है। .....अ अ वास्तव में हम दोनों रात में कुछ देर से सोये थे, नैचुरली देर से उठे भी।' पति

की यह बात शुभांगी ने पूरी की– 'तो सोचा मार्निंग वॉक में बिल्कुल ही नागा कर देना गलत होगा... और चल दिये।'

शुभम् बोले–बस यहीं से मुड़ लेंगे, लेकिन भाई साहब ! मेरा नाम ठीक ठाक याद कर लीजिए, मैं सचिन शर्मा हूँ..... शुभम् नहीं। ये जरूर शुभांगी है, इसका यह नाम आपकी जानकारी में कैसे ?

ब्यूटीफुली बिल्ट हैं ये, इसीलिए मैंने शुभांगी कहा, और संयोग से है भी यही नाम। मैं तो इस बात से और भी ज्यादा आनन्दित हूँ कि शुभांगी जी के माता–पिता जैसी ही मेरी नजर है..... गलत कह रहा हूँ मैम ? ...अरे कोई भी देखने–सुनने में जैसा लगे, वैसा ही तो नाम होना चाहिए। नाम का बाकायदे मतलब भी निकलना चाहिए। मनमानिया अपने बच्चे को कोई राजीव लोचन नहीं कह सकता न ! ....अगर उसकी आँखे घुँघची सी हैं, और आयेदिन चीपड़ उगलती हैं।

सचिन हँसा था। मैंने उसकी प्रसन्न मुद्रा देखकर अपनी बात जारी रखी'– 'शुभांगी जी को देखिये न... इनका कोई भी अंग देखकर सीने के बाई तरफ अजीब सा कुछ होने लगता है। ये बुरा न माने मेरी बात का, खुद ही जाकर किसी सरोवर में झुककर झाँक लें– जो नारी पानी में दिखेगी, इन्हीं को उससे जलन हो जायेगी, छोटी–छोटी दर्जनों मछलियाँ पानी में दिख रही शुभांगी को चूमने चाटने लगेंगी। ....निष्पाप भाव से कह रहा हूँ ....सचिन जी ! बुरा ना मानना आप दोनों।

बुरा.... मानने की क्या बात भाई ! अ अ शुभी ! लौट लो अब, हम लोग कुछ आगे ही निकल आये हैं.... अब तो आफिस जाने में भी देर हो जायेगी। ....रास्ते में तुम्हारी नाकनक्श की समझ रखने वाला कोई दूसरा जौहरी मिल गया तो आज का पूरा दिन पकौड़ी बनकर रह जायेगा।

मैंने शुभांगी के बदन पर तिलमिलाती दसियों नन्ही–नन्हीं लकीरों की बेचैनी का अनुमान किया था। उसके पाँव तो सचिन के साथ–साथ चल रहे थे लेकिन मन मेरी बाहों में बाहें फँसाये था। मैं देख रहा था लगातार.... जब तक दूसरे मोड़ तक वह सीधे चलते रहे.... शुभांगी की गदबदी–चमकीली चोटी जो कभी पीठ की ओर लटकती तो कभी बायें कंधे से होकर बाई छाती पर अटक लेती। सोचने लगा– ये चलती है तो लगता है सड़कें उसी के लिए बनी ......चौराहे भी उसी के लिए बाहें फैलाये रहते हैं। ....और सूरज उसी को

निहारकर कृतकृत्य होने की खातिर वक्त से निकलता है। फूलों को छूकर किसी भी सिम्त से आती हुई हवा उसके बदन को चूमने के लिए ही चली... और जमीन पर कुलांचे भरती नदियाँ, पहाड़ और उनसे सिर के बल कूदते झरने, सारी हरीतिमा, आसमान को रात भर छुछुआता चन्द्रमा, चमकते लाखों लाख तारे.... सबके सब शुभांगी की सुषमाई को जगजाहिर करने के लिए ही बिखरे हैं। सेंचुरी पार्क के पीछे से मोर–मुरैलों की कुछ आवाजें, मन्दिर के गुंबज और कंगूरों से टकराई थीं। तो उसी क्षण मैं स्वयं से फुसफुसाया था जाने क्या–क्या !

मानस चक्र अब कुछ धीमी गति पर आया.... पर क्यूँ.... क्यूँ वक्त जाया कर रहा हूँ अपना.... किसी दूसरे की सम्पत्ति की लालसा में। फिजूल ही तो है इन दोनों के प्रति मेरा लगाव ! इससे तो कैटी, भाभी और माँ ....और बड़े भैया को बड़ा आघात पहुँचेगा; चकनाचूर हो जायेंगी मेरे प्रति उनकी महत्वाकांक्षायें ! मेरी जान–पहिचान वाले भी मेरा मजाक बनायेंगे, क्या कहेंगे– खुद ही समझ सकते हैं आप। .... मेरे परिवार की गरिमा और मेरे भविष्य दोनों के खिलाफ होगी शुभांगी के प्रति मेरी आसक्ति.... उससे ज्यादा वास्ता बढ़ाना। इस नतीज़े पर पहुँचते–पहुँचते मैं अपने दरवाजे तक तो लौट चुका था, पर कालेज जाने के लिए कैटी रिक्शे पर बैठी मेरा इन्तजार कर रही थी। मुझे देखते ही उसने अपनी दाईं तर्जनी हवा में पटककर खुशी जाहिर की थी– 'यस अंकल, दिस इज लाइक अ गुड मैन।' हथेली को आसमान की तरफ लहराकर उसने 'बॉय–अंकल' भी कहा था।

४

अगली सुबह सामने से आते हुए दोनों बड़ी खुशमिजाजी से मिले। सचिन ने मुझसे हाथ भी मिलाया। गदगद मन से मैंने उसके सुलझेपन की दाद दी। शुभांगी की तरफ दृष्टि डाली तो बड़ी मोहक मुस्कान के साथ उसने अध्याय बन्द हो चुकने का संकेत दिया। इससे मेरे मन में समाया हुआ भय अपने आप नक्की हो गया। भय इस बात का नहीं था कि दूसरे या तीसरे दिन अपने चार–पाँच साथियों को लेकर सचिन मुझसे लड़ेगा.... या किसी को मुझे शरीरी नुकसान पहुँचाने की सुपाड़ी दे देगा। बस, मुझे लग रहा था कि वे मार्निंग वॉक का नैत्यिक कार्यक्रम ही बन्द कर सकते हैं, या फिर किसी दूसरी तरफ निकल

सकते हैं हवाखोरी के लिए। यह भी चिन्ता थी कि वे दोनों आपस में तू–तू–मैं–मैं की स्थिति में ही न आ जायें, यूँ खलल पड़े उनकी पारिवारिक सुख–शान्ति में। सचिन ने शुभांगी के प्रति मेरी ओछी तकरीर पर अपने बड़प्पन और अपनी शराफत का परिचय दिया।.... अपने आप कहने लगा– कल मैं आपसे कुछ बेरुखी से पेश आया। फील मत करना भाई.. सॉरी !

शुभांगी ने अपनी बात जोड़ दी सचिन की बात में– भाई साहब, आपने तो शायराना अन्दाज में मेरे बारे में कुछ कहा, इनके दोस्त तो इनके मुँह पर ही जाने क्या–क्या कह देते हैं। पिछले हफ्ते ही तो इनका दोस्त जैकब कहने लगा– भाभी ! अगले जनम में मैं आपका इन्तजार करूँगा, पहचान लूँगा आपको चाहे आप दुबई में पैदा हों चाहे दार्जलिंग में, स्वीडन या शिकागो में। ....और–और .....ये खुद ही कहने लगे थे– तू इसी जनम में उठा ले जा। मैं न तो इस बात का बुरा मानूँगा न इन्हें वापस ही माँगूगा। मैंने इनसे कहा कि जैकब और दूसरे में सिर्फ यही तो फर्क है कि दूसरा आपका दोस्त नहीं। ....अब सुन लीजिए भाई साहब, इनसे शादी के चार–पाँच साल पहले के कुछ वाकिये। ....मेरे फादर और एक ब्रदर ऊपर वाले को प्यारे हो गये तो मैंने देखे हैं वे दिन जब पास–पड़ोस का ऐरागैरा भी मुझे देखते ही अपने सीने के बटन खोल देता था। जाड़े के दिन..... और धूप लेने के वास्ते घर के दुमंजले पर खड़ी थी, तभी निगाह सामने के घर की बैठक पर पड़ी। मुझसे कई साल छोटा बिशन खिड़की के पास खड़ा–खड़ा बेकरार था मुझे अपनी आँखों में बन्द कर लेने के लिए ! .....थोड़ी ही देर में मुहल्ले का दादा शकूर रास्ते से गुजरते हुए चीख उठा– 'हॉय री तकदीर !' यूँ खुद को कोसता हुआ वह अपना सीना नोच रहा था। हैटट्रिक भी हुई। तुरन्त बाद, सफेद कपड़ों में लिपटे एक शास्त्री जी मुझे निहारने में कचड़ा गाड़ी से ही टकरा गये। कहते हुए– जीने से फर्श की तरफ लुढ़कती गिन्नियों की आवाज में खिलखिलाई थी वह !

शुभी से सचिन ने एक और घटना सुनाने का अनुरोध किया– हापुड़ रोड की रेलवे क्रासिंग वाली बात भी... कभी तुमने बताई थी मुझे।

घटना ही है वह। तब क्रासिंग पर ओवर ब्रिज नहीं बना था। क्रासिंग अक्सर ही बन्द रहती–तब दोनों ओर ट्रैफिक का जाम लग जाता । मेरा रिक्शा उसी में कहीं अटका रहा होगा, वक्त रहते नहीं आ पाया तो मैं पैदल ही कालेज

से लौटने लगी थी। ....जनाब मार्निंग वाकर जी ! मेरे पीछे–पीछे हर उमर, हरेक रंग, हरेक जात और मजहब के लोग... कहिये कि पूरा हिन्दुस्तान चल रहा था– इस दौरान मुझे महसूस हुई थीं देश की लगभग दो अरब आँखों की गैरवाजिब हरकतें।

शुभांगी भाभी ! मैं इनका शत्रु भी तो नहीं, इनसे उम्र में भी छोटा हूँ, मेरे मन में रंच मात्र कालिख भी नहीं। कहा ही है मैंने.... आपकी नाकनक्श हजारों हजार कन्याओं से उम्दा थी इसीलिए आपके पैरेन्ट्स ने वैसा ही नाम भी रखा। आपके लिए मेरी तारीफ का तालमेल आपके जनमदाताओं से बखूबी ठीक बैठता है। आप दोनों को ही दाद देनी चाहिए कि मैं खूबसूरती का कित्ता बढ़िया पारखी हूँ !

सचिन बोला– तो भाई, तू ऊपर वाले के दफ्तर में अप्लीकेशन लगा दे कि अगले जन्म में और भी बेहतरीन नाकनक्श के साथ ये तेरे को ही मिले।... तेरे कम्पटीशन में फिलहाल जैकब ही दिखता है।

सचिन की इस मजाक पर हम तीनों ही थोड़ा हँसे थे। तब तक जो फार्मेलिटीज पहले ही दिन पूरी कर लेनी चाहिए थीं, उनकी आज मैंने शुरुआत की– 'हल्लो ! मैं लखन हूँ.... लखन शर्मा। नाम के नज़रिये से भी मैं आपका छोटा भाई हूँ। वैसे भी आप मुझसे कुछ सीनियर हैं, खासकर दुनियादारी के लिहाज से, गृहस्थी का सुख भोग ही रहे हैं। मुमकिन है आपको आप लोगों की तरह का ही लवली मॉडल भी मिल चुका हो– उसके लिए आप वॉकर भी खरीद चुकें हों.... सूट या फ्रॉकें भी।' मैं बोलता ही रहता कि शुभांगी ने सवाल किया– हम लोग तो पाटलीपुत्र कालोनी के गेट के ठीक सामने रहते हैं चित्रकूट इन्क्लेव में, पर तुम ?.... कांटैक्ट नम्बर कोई ? कई दिन हम साथ–साथ टहले, बोले बतियाये लेकिन आपसी जान–पहचान की फिक्र तक न की। हार्रीबुल !

भाभी ! धीरे–धीरे .....धीरे .....प्लीज। एक ही दिन में सारी पहिचान नहीं। आज नाम जान चुकी हैं... अब सिर्फ यह जान लीजिए कि कंचन मृग नाम की मेरी छोटी सी कुटिया है। चित्रकूट वालों ने कभी एक कंचन मृग की जान ली थी, करीब–करीब वही कुछ आज दोहराया जा रहा है। आप लोगों से भेंट होने का अर्थ यह लगा रहा हूँ कि किसी न किसी तरह..... और कभी न कभी आप दोनों के जाल में पड़ूँगा जरूर। ....भाभी जी, इसी रास्तें में कहीं मेरी साँस की

लर टूट जाये, उससे पहले अपना रास्ता बदलना चाहूँगा, जिससे कि घर पहुँचकर अपने लालनपालनकर्त्ताओं को कुछ देर तक देख लूँ।

सचिन बोला– लल्ले ! न तू रास्ते में टें करेगा न अपने घर पर।....अभी तो अक्खा जिन्दगी पड़ी है तेरे सामने।

शुभांगी बोली– और तुम्हारा यह लल्ला हमारे लोगों के किस जाल की बाबत बात करने लगा है– मेरे तो भेजे में पड़ी ही नहीं यह बात !

सचिन फिर बोला– इसलिए अब दूसरी किस्म की बात कर शुभी।

मैंने एक व्यवस्था दी– मैं सिर्फ सुनूँगा आप दोनों की बातें। बोलते वक्त आप दोनों, खासकर शुभी भाभी को देखते ही रहने का जी करता है। इनकी हँसी तो मरीज का उपचार करती है, प्यास बुझाने वाली निर्झरी की मानिन्द किसी की भी ओर से कितनी भी तारीफ की हकदार है।

सचिन बड़ी खुशमिजाजी में बोला– बस–बस–बस लखन भाई, देवर की मनपसन्द भाभी नजर आना तो हम दोनों के लिए बहुत ही खतरनाक !..... फिर तो आज ही इनकी झाड़फूँक करानी पड़ेगी वर्ना इन्हें सिरदर्द भी हो सकता है.... हरारत भी हो सकती है।..... 'अरे वाह ! इस वक्त की हवा तो रोज से कुछ ज्यादा ही ठण्डी होने के बावजूद जादुई लगती है।... तो घर वापिस होने की जल्दी न हो तो कुछ देर और बतियाते रहें हम लोग'– सचिन के इस सुझाव का शुभी ने आँखों ही आँखों समर्थन किया था, मैंने भी हँसकर मूड़ी हिला दी थी। शुभी ने ही बात शुरू की– लखन जी ! मैं हँसती या मुस्कराती रहती हूँ, लेकिन तभी जब तुम्हें या बात कर रहे और किसी को सुनाने के लिए मेरे पास कुछ नहीं होता। तुम्हें एक दो गाने ही सुनाती लेकिन गाने की आर्ट भी नहीं मेरे पास..... इसलिए ज्यादा अच्छा होगा कि तुम पूछते रहो कुछ न कुछ, हम दोनों सुने और जवाब में अपनी बात कहें।

सचिन ने अपनी बात जोड़ दी– मेरी तरफ से ही शुभांगी ही जवाब देगी। मैं सिर्फ इसके और तुम्हारे मुँह पर उभरती इबारत पर निगाह रखूँगा, कभी–कभी सिर्फ चेहरे पर छहरते भाव सारा कुछ कह देते हैं न..... जरूरत होती है सिर्फ उन्हें पढ़ पाने की....। और ये हुनर है मुझमें !

अच्छा ! तो आप कई तरह से हुनरमंद हैं।

मेरी पीएस है सुखजोत। उसमें है यह आर्ट। थोड़ा बहुत उसी से सीख

लिया है मैंने।

कैसे ?

लखन जी ! कोई अच्छी बात करना चाहती है वह या किसी से बहुत खुश है– तो उसके दोनों गालों में एक साथ कुण्ड दिखते हैं; मुँह के अन्दर बंधी–बंधी जीभ के हिलने डुलने से उन कपोलकुण्डों में बहुत बारीक सी लहरें उपजती हैं– मन के भावों को खोलती हैं वे... उस वक्त वह बहुत ही लुभावनी भी दिखती हैं !

और अगर कुछ परेशान है, या किसी से किसी बात पर खिन्न है वह ?

उस हालत में उसके मन में उपज रहे भाव कंठ तक नहीं आ पाते। तब गले में तेजी से कँपकपी होती है, भौंहे भी कुछ न कुछ तन जाती हैं।.... कहते–कहते सचिन शुभी को देखते हुए थोड़ा हँसा था, फिर बोला– लखन भाई ! शुभी के लिए कह रहा हूँ यह सब– चौबीस घण्टे की तारीख में ये ही तो है मेरी सुखजोत, वर्ना......

वर्ना क्या जी ?

मेरा आफिशियल पी.एस. तो जिमनास्ट या बाक्सर है। उसके अंग–अंग में गोश्त के लोथड़े चिपके हुए हैं; खोपड़ी के बालों से दुश्मनी है उसे.... और गर्दन की नाप–जोख मेरी वाली से आठ इन्च ज्यादा। ...सवाल ही नहीं कि उसकी गर्दन की चर्बी में जरा भी जुम्बिश हो। ...अरे दायें–बायें भी उसे बमुश्किल मोड़ पाता है वह।

शुभी बोली– बस–बस–बस। यूँ ही बोले चले जा रहे हो, हालाँकि अभी–अभी बतियाने की शर्त ये बताई थी कि सिर्फ शान्त रहोगे। ...देखा न लखन जी इनकी अदा। पत्नी की तारीफ भी ये किसी दूसरी महिला के बहाने करते हैं। मैं सोच ही रही थी कि इनके किंगकांग का ट्रान्सफर हो गया क्या जो ये उसका नाम सुखजोत बता रहे हैं।

कहने का अपना अपना सलीका होता है भाभी ! ....खैर ये आपकी बात के बीच में चुप बैठेंगे... पर आप कहें तो अपनी बात।

ठीक....। सबसे पहले तुम्हारी गलत फहमी रफा कर दूँ– अभी हम दोनों ने कोई मॉडल नहीं तैयार किया, इसलिए वॉकर बेबी सूट या फ्रॉक की फिराक में रहने का वक्त निकालने का सवाल ही नहीं। वैसे अब मन बना रहे हैं कि

हम भी सबके रचनेवाले के काम में हाथ बटायें। ... अ् अ्... तुमने शादी की ?

नहीं, पहले सेटल होना चाहता हूँ।

इस बात में देर लग सकती है क्या ?

अपने बस में नहीं है कुछ। जिसके बस में है वह दिखता नहीं, वर्ना पूछता उससे कि क्या माजरा है भाई ! मेरे सारे कामों में रेड टैपिज्म क्यों ? मेरा मतलब है लेटलतीफी शुभी जी। हुंह्... जाने कैसी पेशगी की दरकार है उसे। अरे इज्जत की बात तो होती हैं शुकराने में– नुक्ती वाले लड्डू या फिर बंगाली रसगुल्ले जो भी चाहे वह !

शुभांगी ने एक मुख्तसर सी मुसकान के लिए यत्न किया था– कन्सेन्ट्रेट करो, ऑम श्योर, कुछ न कुछ मन चाहा तो हो ही जायेगा। जिसे तुम लड्डू या रसगुल्ले खिलाने की बात कह रहे हो– कहते रहो उसी से..... और मेहनत भी करो। .....लेकिन किसी ठीक धंधे से लग जाने पर तो शादी करोगे। कैसी लड़की पसन्द होगी तुम्हें ?

आप ही बताओ, मेरे काबिल लड़की कैसी होनी चाहिए।

हर तरह से डिजर्बिंग..... तुम्हारी पर्सनैलिटी ही ऐसी है न। पता नहीं किस उम्दा से उम्दा नसीब वाली सुन्दरी का नाम जुड़ेगा तुम्हारे नाम से। खैर..... वक्त है अभी, बताऊँगी मौका आने पर। शायद सोचने लगी थी शुभी– लखन को अभी पंख नहीं उगे तो आसमान में उड़ने की क्या बात ! फिर भी दिमाग में रखना जरूरी है इसे क्योंकि उसकी पात्रता पर ही निर्भर करेगी लड़की की नाक–नक्श और उसकी लाइफ स्टाइल वगैरह.... तो कोई भी हो सकती है वह।

सचिन जैसे मुझे धीरज देने लगा हो– मैं बताऊँगा यार.... एक नहीं कई–कई–कई। मेरी कम्पनी में हर जात, मजहब, रंगरूप की देशी और विदेशी लड़कियाँ है।

शुभी भी बोली– 'अपने इन्स्टीट्यूट में मैं भी देखूँगी.... बहुत बड़ा है ये.... पूरे मुल्क में तकरीबन हर जगह पर फैले हैं इसके हाथ–पाँव। ऐसा तो कतई नहीं कि लखन जी के लायक पाँच कुड़ियाँ भी न हो उसमें।' शुभी की इस बात पर सचिन और मैं जीभरकर हँसे थे, वह भी बाद में हँसने लगी थी.... तो मैंने कहा– एक ही चाहिए शुभी भाभी, लेकिन आपसे एक परसेण्ट भी

कम नहीं होनी चाहिए वह। ....जरा रहमदिली बनाये रखियेगा मेरे प्रति। ....और हाँ शादी करने की जल्दी में भी नहीं हूँ अ ह ह ह ह् अ!

यकायक कुछ गमगीन होकर सचिन बोला– अच्छा भई, हम लोग अपने–अपने रास्ते पकड़ते हैं। लेकिन हाँ... दो–तीन दिन तक शायद हम मिल न पायें। जरा बाहर जायेंगे।

सचिन से उसके 'हम' का खुलासा मैंने नहीं कराया। नहीं चाहता था कि वह बिलावजह ही मुझे अमानत में खयानत करने वाला समझ ले।

५

सुबह–सुबह इस निश्चय के साथ अपने लॉन में चहलकदमी करने लगा कि मार्निंगवॉक के लिए आज नहीं जाना है। रात में काफी देर तक ऐसा मन बनाने में नींद भी ठीक से नहीं आयी। थोड़ा सा ही ऊँघता कि बाहर कभी आटो गुजरने या किसी न किसी चौपहिये वाहन के हार्न बज उठने के कारण नींद तुनक उठती। एक बार तो कुछ मर्द और औरतें तेज आवाज में किसी फिल्म की अच्छाइयों और खराबियों की बावत चर्चा करते हुए गुज़रे–नींद को तुनकना ही था.....तो पूरे वक्त सचिन और शुभांगी की बाबत सोचता रहा। यही कि दोनों साथ–साथ बाहर गये हैं तो उनमें से किसी से मुलाकात की गुजाइश नहीं।.... सिर्फ सचिन बाहर गया है तो जरूरी नहीं कि शुभी अकेली मार्निंग वाक के लिए निकले। लेकिन निकलती है वह, तो मुझे खोजेगी भी जरूर। बेचारी परेशान और पस्त हो जायेगी मेरी तलाश में। उस हालत में उसे अपने आफिस जाने में विलम्ब हो सकता है।.... सारी चिन्ताओं के बावजूद किसी जादू या टोने से मुतास्सिर सा मैंने यकायक जूते–मूजे वगैरह पहन लिए, सड़क पर आकर सेंचुरी पार्क की ओर चल पड़ा। हनुमान् मन्दिर के सामने पहुँचते ही मन ही मन मूरत का नमन करने का मन बनाया लेकिन मूरत की ओर जाती दृष्टि फिसलकर एकायक मन्दिर के बाहर शुभी पर अटक गयी।

हॉय लखन।

हॉय....। इस बिलायती नमस्कार के साथ ही मैंने अनुभव किया जैसे मेरी छाती में छुपी धौकनी पहाड़ से छलांगे लगाती हुई उतर रही हो; किन्तु एक दुबली–पतली सी दुश्चिन्ता फाँस सी अखर रही थी– सचिन को पता चल ही

जायेगा कि शुभी अकेले मेरे साथ मार्निंग वाक कर रही थी.... तो बहुत बुरा मान सकता है वह।..... आखिर मर्द है।..... ये भी मुमकिन है कि हम दोनों की वह परीक्षा ले रहा हो...... और इस वास्ते वह कहीं भी गया ही न हो– दो दिन के लिए शहर के किसी होटल से ही हमारे आचरण पर नजर रख रहा हो।.... सोचते–सोचते मैंने दोनों कंधे एक साथ उछाले थे, हथेलियाँ सामने की हवा में घुमा दी थीं, मन ही मन कहते हुए– तो क्या ? एक जजबाती इज्जत आफजाई का रिस्ता ही तो है आपस में। शुभी से दूसरा कोई लेना देना नहीं। ......वह पढ़ी–लिखी है.. इतने मशहूर इन्स्टीट्यूट में एग्जीक्यूटिव है, आत्मविश्वास से भी भरी होने की वजह से सिर्फ आपसी व्यवहार में बेतकल्लुफ है... होना भी चाहिए, इक्कीसवीं सदी की महिला को ऐसा।.... उधर मैं भी अपने पारिवारिक संस्कारों से बँधा हूँ। हम दोनों में इधर–उधर की कोई बात.... मुमकिन ही नहीं। मेरे लिए तो वही लक्ष्य फायदे का है जो माँ, भैया, भाभी और कैटी को सम्मान दे सके। इसलिए मुझे भी स्वयं पर पूरा–पूरा भरोसा है।

शुभी ने मेरी लम्बी चुप्पी खत्म की– 'कहाँ हो तुम हुजूर ? बहुत गुमसुम से दिख रहे हो, खैरियत तो ? आज पहली बार इस सलोने चेहरे पर फिक्र की बनती–बिगड़ती–बिखरती फिर यकायक गुम हो जाती लकीरें कैसे नजर आ रही हैं ?'

नहीं भाभी, मैं समझता था कि सचिन भाई के साथ आप भी शहर से बाहर होंगी, लेकिन यह देखकर मन ग्लैड–ग्लैड हो उठा कि आप शतप्रतिशत यहीं हैं.... और हम दोनों की मुलाकात भी हुई।

खूबसूरत भौंहे अपने उभरे हुए माथे पर तानकर बोली वह– अरे ! सचिन के खूँटे से बंधी मैं कोई गाय तो नहीं। पति–पत्नी के रूप में हम दोनों समान सरोकारों वाले हैं, एक–दूसरे के प्रति ईमानदार हैं, खैरख्वाह हैं.... आई मीन आनेस्ट सिन्सियर एण्ड फेथफुली केयरफुल..... और मैं भी एक वर्किंग वोमन हूँ। मेरा इन्स्टीट्यूट मुझे इस बिना पर छुट्टी क्यों देगा कि मेरे पति अपनी कम्पनी के किसी काम से हिल स्टेशन जा रहे हैं और मुझे उनको कम्पनी देनी है। दोनों के अलग–अलग तनाव हैं, अलग–अलग दोनों की प्राथमिकतायें भी।

तो आप और सचिन जी कभी–कभी थर्टी सिक्स भी हो जाते होंगे। वह चाहते होंगे कि आप अपने पत्नी–धर्म का पालन करें– चाहे वह किचेन से

ताल्लुक रखता हो, चाहे घर के रखरखाव से या पारस्परिक मनोरंजन के लमहों से।

नहीं शर्मा जी, नहीं। हम दोनों ही जानते हैं कि सुबह के पाँच बजे से रात के दस बजे तक काम में ही लगे रहते हैं। कभी रोजी–रोटी के काम में तो कभी दूसरे, इसलिए किचेन के काम में अक्सर हम हाथ बटाते हैं, वाशिंग मशीन से कपड़ों का मैल मैं ही भगाती हूँ, वीकली छुट्टियों में लेडी सर्वेण्ट के साथ मैं ही लगी रहती हूँ घर के कोने–कोने की सफाई करने में सचिन मुझे थका हुआ समझकर प्रपोज करते हैं कि डिनर किसी अच्छे होटल में होगी। जायें हम लोग या नहीं, लेकिन उनके ऐसा कह देने से ही सारी थकान दूर हो जाती है। सुकून सा मिल जाता है मुझे।

मैंने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करने का मन बनाया ही था, पर वह खुद ही बोली– देखिये साहब, मैं क्वालीफाइड हूँ, सेल्फ सपोर्टिंग भी, लेकिन इसके मायने ये तो नहीं कि घर को अच्छे से अच्छे तरीके से चलाने की जिम्मेदारी ही ना निभायें...... पति के कंधे से कंधा मिलाकर चलते रहने की वजह से उसके पुरुष होने के अहं को नकारें। लखन जी, मेरी इस बात से तुम्हारे उस सवाल का भी जवाब मिल गया होगा जो पारस्परिक मनोरंजन के बारे में था। ....इस पर हम दोनों काफी देर तक खिलखिलाये थे। ....लेकिन इस दौरान एक बारीक सी हँसी शुभी के कंठ में यूँ फँसी कि खाँसते–खाँसते उसकी बड़ी–बड़ी आँखे सुर्ख होकर छलछला उठीं, यह सुर्खी आँसुओं के सहारे गदबदे गालों के रास्ते से उरोजों पर टपकी थी, तो बड़े अदब से मैंने अपना रूमाल उसकी उंगलियों में पकड़ा दिया था।

अब हम मेन रोड के फुटपाथ पर चल रहे थे। देखते ही देखते ट्रैफिक यूँ बढ़ गया कि बाल्टी उंगलियों से लटकाये दूध लाने वालों, कारखानों में वक्त रहते पहुँचने वालों के लिए सड़क पार करना मुश्किल हो रहा था। तीन–चार ट्रक, कुछ टेम्पो और दुपहिये आमने–सामने से गुजरे थे। खड़े–खड़े देखते रहे हम सड़क पर बहती हुई जिन्दगी–तब तक शुभी के गले की खराश ठीक हो चुकी थी, और चेहरा पहले की तरह ही तरोताजा दिखने लगा था। मेरे रूमाल को अपनी हथेली मे दुबकाये हुए चहकी वह– सचिन से कहा था मैंने, तुम नहीं, तो दो या तीन दिन तक मार्निंग वॉक भी नहीं.... मुझे आफिस का कुछ काम

निपटाने का वक्त मिल जायेगा।

तो ? क्या बोले वह ?

दो तीन दिन दोपहर की चाय–शाय का वक्त इन्स्टीट्यूट के काम में ही लगा देना। कैण्टीन की बेमतलब की चीजें खाने से मार्निंग वॉक का मजा कहीं बढ़िया ! कोई सेहत की दुश्मन तो कोई उसकी गारण्टी।

तो ?

तो क्या ? मैं चुप थी, लेकिन वह आँखों में रूमानियत भरे हुए एक डायलॉग बोले– मैं नहीं तो क्या, तुम्हें बेमिसाल समझने वाला लखन देवर तो है, टहल लेना साथ–साथ, वर्ना अकेले में बुड्ढे भी अपने ओठ चबायेंगे तुम्हें देखकर।.... लखन के साथ रहने में अकेला वही चुगेगा मन मोदक !..... अरे वह सिर्फ सुषमाई का पारखी है, हाथ लगाकर उसे गंदा कर देने या खरोचने वाला खलमानव नहीं !

बताते–बताते शुभी ने कनखियों से मुझे कई बार निहारा था। मैंने दोनों मुट्ठियाँ एक साथ हवा में तान दीं, चिल्लाकर 'यस' भी कहा था। अनन्तर संजीदा होकर मैंने एक डॉयलाग शुभी के हवाले किया– फिक्र न करें शुभी जी, सचिन के अनुमान पर मैं खरा उतरूँगा। ये समझिये कि उसकी ग़ैरहाज़िरी में मैं आपका फेथफुल बाडीगार्ड यानी कि अति विश्वसनीय अंगरक्षक हूँ.... लम्बी अंग्रेजी में कहें तो मुझे अपना रिलायेबल एण्ड हंड्रेड परसेंट डिपेन्डेबुल केयरटेकर समझ सकती हो आप।

आई नो.... आई कैन अण्डरस्टैण्ड।..... शुभी ने सिर नीचे की ओर झुकाकर पलकें ऊपर की ओर कुछ तानकर प्रतिक्रिया ज़ाहिर की।

हम दोनों बड़े ही साफसुथरे अन्दाज़ में रोमैन्टिक हो रहे थे। अपने आप उसने एक लम्बा सिलसिला शुरू कर दिया इस मुल्क के मन मोह लेने वाली जगहों के बारे में। ......अभी मैं सोच रही थी गुजरात के सोमनाथ मन्दिर की ओर बेतहाशा भागती चली आती अरबसागर की लहरों की बाबत। इन्स्टीट्यूट के किसी काम से उधर जाना हुआ तो मन्दिर की समुद्र की ओर मुखातिब दीवार पर बैठ गयी। यकीन नहीं करोगे तुम.... करीब करीब डेढ़ घण्टे तक उठने की इच्छा ही ना हुई। लहरें आतीं, कोई किनारे तक आकर बिखर जातीं तो कोई वापस भी हो लेतीं मौंन आवाज में कहते हुए कि अभी फिर आती हूँ, इस बार

पूरे दल बल से, किसी न किसी बार चूमूँगी जरूर महादेव–मन्दिर की सुरक्षा प्राचीर को।..... काफी दूर से आती हुई किसी लहर को किनारे तक आकर हाँफते हुए मैंने देखा था। एक लहर जैसे कह रही थी– 'आज तो असफल हैं हम सभी लेकिन शुभी जी, पूर्णमासी की रात में आना थोड़ी देर के लिए। हम मन्दिर का स्पर्श ही नहीं करेंगे, पूरे मनोयोग से उछलकर भोलेनाथ की चौखट को भी छू सकेंगे। चांदनी में विलक्षण ऊर्जा वाली हो जाती हैं हम सब। तब आप को लगेगा कि सागर अपनी बाहों में हम उर्मियों को भरे हुए भोलेनाथ का जलाभिषेक करने को आतुर है।' ....जब भी मौका मिले आपको घण्टा भर का समय उनकी दृढ़ता और अडिग निश्चय ....आई मीन फर्मडिटरमिनेशन का जायज़ा लेने के लिए निकालियेगा ज़रूर।

चलते–चलते अपनी विस्मयपूरित आँखों से एक बार शुभी को देखा तो वह एक और प्राकृतिक अनोखेपन का जिक्र करने लगी। 'लखन भाई! हो सकता है पुरी और भुवनेश्वर के रास्ते में 'चन्द्रभागा बीच' तुमने देखा हो। बंगाल की खाड़ी के इस ओर के पानी के अन्दर के जर्रे–जर्रे को न सिर्फ ठीक–ठीक देखा जा सकता है, उसके अन्तर्मन में बनते–बिगड़ते बारीक से बारीक हर्फों को भी बखूबी पढ़ा जाना मुमकिन है। हरी–हरी सी और चमकीली लहरों के बीच में मुबलिग दो मिनट खड़े हो जाने से ही वे बात की बात में तन और मन को शीतलता और शान्ति देती हैं, लगातार गाती रहती है वे आने वालों के लिए स्वागत गीत।

बमुश्किल कुछ लमहों तक रुककर फिर से बोली वह– लखन तुम मेरी बात समझ रहे हो न? क्योंकि हिन्दी में एक्स्प्रेस कर रही हूँ अपने मनोभाव...... वास्तव में हिन्दी बोलने के संस्कार मुझे मेरे फादर से तो अंग्रेजी वाले मेरी मॉम से मिले। इन्स्टीट्यूट में तो जैसे सभी लोग अंग्रेज परिवारों में ही जन्में...., ऊब जाती हूँ मैं वहाँ के वातावरण में।

लेकिन..... ? ,

हाँ लखन, शुरू से ही इंगलिश मीडियम में रही न! और उर्दू तो हमारे रोजमर्रा के चलन की ही जुबान रही है।.... सॉरी, अलग बात करने लगी मैं। हाँ तो बद्रीनाथ श्राइन से लौटते हुए जोशी मठ से काफी पहले गाड़ी से उतरी मैं।.... उस वक्त आसमान को अपने सिर पर थामे हुए कितने ही एक ही ऊँचाई

के पहाड़ देखकर लगा जैसे मैं रसातल के बीचोंबीच किसी गहरे कुएँ में खड़ी हूँ। .....आवाज देती हूँ लेकिन लौट–लौट आती है वह !

इसी दौरान एक बेकाबू वाहन फुटपाथ से रगड़ता हुआ तेज रफ्तार में गुजरा तो शुभी चीखकर मुझसे चिपट ली। इस कदर खबरा उठी थी वह कि उसकी धड़कनों से मेरा सीना भी रफ्तार में आ गया था। हुआ यह कि कोई दूसरा ट्रक उससे आगे निकल जाना चाहता था।.... थोड़ी देर में कई गाड़ियाँ दनादन गुजर गयीं तो शोर भी कम हुआ और तभी हम दोनों एक–दूसरे से अलग हुए। अब मैं..... बाकायदे सुन सकता था उसे। बोली वह– वेरी सॉरी लखन, रियली आई एम वेरी वेरी सॉरी !

आर यू ऑल राइट शुभी भाभी ? दहशत से थरथरा रही हो तुम, ट्रक छू गया था क्या आपके कंधे से ?

लखन ! मुझे लगा कि ट्रक मेरी दाईं ओर धक्का दे सकता है। थोड़ा भी मैं अपना संतुलन खो देती तो कुछ भी हो सकता था, बट.... तुम ये तो नहीं समझ रहे कि जानबूझकर मैं ऐसा कर बैठी !

क्या बात कर रही हो भाभी ! हम दोनों ने इन दिनों एक–दूसरे को ठीक ठीक समझा है। मेरे मन में भी कोई पाप नहीं– आपके मन में भी।.... लेकिन हाथ में छड़ी लिए जांघों से नीचे नीचे नंगे नई उमर वाले मार्निंग वाकर्स ने जरूर.... और ही कुछ समझा होगा। एनी हाउ, वी हैव टु क्लोज द् चैप्टर एण्ड फारगेट इट प्लीज !...... आप सैकड़ों हजार महिलाओं से अलग हैं.... राइट ?

ओ यस ! .....सहमति जाहिर करने के बाद खड़ी होकर खुद को संभालती हुई शुभी बोली फिर– लखन जी ! कल और परसों मुझे बंगलोर रहना है। एक स्पेशल प्रोजेक्ट शुरू हो रही है उधर; इसकी तैयारियों का जायजा लेना है। मिस करेंगे हम एक–दूसरे को।

'को ऽऽऽ ई बात नहीं। अभी तक बेकार तो हूँ लेकिन समझ सकता हूँ नौकरी के सारे ही तौर तरीके। सचिन जी कल भले ही न दिखें पर परसों तो मिलेंगे ही।' ....मेरे विचार से अनायास ही मुझसे चिपट जाने से शुभी के दिलोदिमाग में अपराध का भाव समा गया था तो मैंने एक बार फिर उसे आश्वस्त करने का मन बनाया– अ.... हाँ शुभी भाभी ! मुझसे अगर कोई चूक हो गयी हो तो आई एम एकस्ट्रीमली सॉरी। किसी अच्छे याकि बहुत ही अच्छे

आचरण वाले देवर की तरह ही मैं आपका सम्मान करता हूँ, कभी भी गिरेगा नहीं मेरे मन में आपके प्रति सम्मान का स्तर।.... जानती हो मुझे तुम..... थोड़ा बहुत। मैं किसी दूसरे की अच्छाइयों से खिलवाड़ नहीं करता।..... हाँ, आपको भी समझता हूँ, जानबूझकर ऐसा नहीं करेंगी आप।...... बेसबब ही अपना मन छोटा मत करना।

शुभी ने कुछ कुछ कृतज्ञता भरी नजरों से मुझे देखा था। तुरन्त ही उसी मोड़ से आगे बढ़ लिया था मैं।

६

दूसरी सुबह शुभी सेन्चुरी पार्क में नही दिखी तो मैंने समझ लिया था कि सुबह की फ्लाइट से चली ही गयी होगी बंगलोर।..... तो भी मेरी आँखे उसे देख रही थीं इधर–उधर। इसकी दो और वजहें थीं– ट्रक के बिल्कुल पास से गुजरने से पैदा हुई दहशत को हो सकता है रफा कर रही हो वह धीरे–धीरे ....धीरे। यह भी हो सकता है कि अब भी गैरमर्द से यकायक लिपट जाने से आत्मग्लानि महसूस कर रही हो– कि कहीं लखन यह न सोच ले कि सचिन के प्रति वह निष्ठावान नहीं।

क्या है देवर लखन लाल जी? न दायें देख रहे हो न बायें और ना आगे.... जैसे कोई वेशकीमती चीज को रास्ते में खोजते हुए गुमसुम हो?.... पहचानी सी आवाज लगी तो सवाल के दौरान ही मैंने गर्दन घुमाई– अरे सचिन जी आप? सिर्फ एक दिन का दौरा? आप तो दो दिन का बता रहे थे? और हाँ.... अभी अभी मैं सोच रहा था कि शुभी भाभी कहीं बीमार तो नहीं पड़ गयीं।

ठीक अनुमान है तुम्हारा। वैसे आज बंगलोर जाना था उसे। कल शाम को वापिस भी आ जाती। .....पर यूँ ही कुछ आलस के कारण मार्निंग वॉक का मन नहीं बना पायी। मुझसे बोली– आज आप अकेले ही हो आइये। .....रही बात एक दिन पहले ही मेरे लौट आने की– सो कम्पनी के ही एक मुकदमे में अदालत की छठी मेरहबानी थी।

छठी मेहरबानी? क्या मतलब?

पेटीशनर का वकील ही हाजिर होता है, मुस्कुराते मुस्कुराते जुडीशियल आफीसर से बात करता है और तारीख ले लेता है। मेरा एक दिन तो बचा लेकिन

कम्पनी का खर्च तो हुआ ही।

हफ्ते भर की डेट हुई होगी। हफ्ते–हफ्ते ही यह और अभी जायेगी। मैं जानता हूँ छोटी अदालतों की कारस्तानी। पेटीशनर सिर्फ तारीख लेगा क्योंकि उसके मुकदमें में ज्यादा दम नहीं। उधर...... ज़्यादा तो नहीं लेकिन कोई कोई आफीसर अपने घरेलू खर्चों को खासी अहमियत देते हैं...... और कभी–कभी तो सुनवाई मुल्तवी कराना दोनों ही पार्टियों की मजबूरी होती है।

सचिन जैसे अदालतों के काम करने के तरीके के बारे में और भी कुछ मुझसे जानना चाहता था क्योंकि मुझे सुनते हुए उसकी भंगिमायें ऐसा ही कुछ संकेत कर रही थीं.... तो मैं कहता गया– पेटीशनर हो या प्राजीक्यूशन.... आई मीन अभियोजनकर्त्ता, उसे खुद के द्वारा लगाये गये आरोपों के सबूत जुटाने पड़ते हैं कोर्ट के सामने प्रस्तुत करने के लिए, उनके अलावा उसे गवाह भी पेश करने पड़ते हैं जो बड़ी परेशानी और खर्च की स्थितियाँ पैदा करते हैं, कभी–कभी वे खिलाफ पार्टी के मुलाहिजे में भी आ जाते हैं– नहीं आये तो अदालत से तारीख ही तो लेनी पड़ेगी। कोर्ट के सामने मजबूरी यह होती है कि उसे दोनों पक्षों को अपनी बात कहने और कथन के समर्थन में गवाह या सबूत वगैरह पेश करने के लिए वाजिब या.... गैरवाजिब वक्त देना ही पड़ता है। इसी वजह से जजमेण्ट होने में भी देर लगती है।

सचिन अपनी आखें गोल किये मेरी बातों की रोशनी में अपने मुकदमें की बातों का मिलान करता जा रहा था, क्योंकि तुरन्त ही उसने सवाल किया था– 'तुम्हें इतनी ज्यादा अदालती जानकारी कैसे?' जवाब दिये बगैर अपनी जानकारियों का पुलिन्दा उसके मगज में ठूँसता रहा जिससे बेसबब ही वह किसी जिम्मेदार राजकर्मी पर मन में सन्देह भी न करे। 'सचिन भाई ! सुनवाई मुल्तवी आपके कानूनी सलाहकार जी भी कराते होंगे। उन्हें किसी दूसरे मुकदमें की तैयारी में लगातार कई दिन का वक्त लगाना है, किसी दूसरे शहर की अदालत में पेश होने के लिए ट्रेन या प्लेन का रिजर्वेशन मिल गया....... तो तारीख तो होगी ही।' कहते–कहते मैंने उसकी ओर बड़े गौर से देखा था, फिर पूछा, निहायत मज़ाकिया अन्दाज में – बोर हो गये भाई, मुझे सुनते–सुनते? अरे मैंने तीन साल वकालत पढ़ी है। फर्स्ट क्लास में पास भी किया उसे।

बोला वह–तुम्हारी बातों से तो मैंने सीखा ही; लेकिन बोरियत इस बात

से जरूर महसूस हुई कि शुभी आज साथ नहीं आई। वह भी सीख लेती कुछ न कुछ अदालतों और वकीलों के काम करने के तरीके।

मैंने पूछा– टेम्परेचर है, देह में दर्द, या सिर्फ सुस्ती ? सचिन ने कोई जवाब नहीं दिया। फिर पूछा मैंने– इन्स्टीट्यूट में उनसे किसी से बकझक हुई ? एक बार फिर कोई उत्तर नहीं। आखिरी बार पूछा मैंने– कल वह अपने देवर के साथ टहली थी– उसकी किसी हरकत से नाराज तो नहीं वह ?

बोला सचिन– ऐसे ही क्वेश्चन्स मैंने शुभी से किये.... लेकिन कुछ परेशान सी वह उठी और दूसरे कमरे में चली गयी। मैंने फिर कॉफ़ी तैयार की, उसके स्वाद की ज्यादा से ज्यादा तारीफ भी की लेकिन....

उसने मग को हाथ से छुआ तक नहीं– मैंने सचिन का कथन पूरा किया।

......अस्लियतन शुभी भाभी की असली बीमारी मेरी जानकारी में है– कभी–कभी वह जरूरत से ज्यादा मूडी हो जाती हैं, छोटी सी छोटी बात भी उसके मगज़ में चिपक जाती है। अब देखो ना..... अपने अनमनेपन की कोई वजह न बताकर वह खुद को भी सजा दे रही हैं, आपको भी।..... आर्रे !..... पूरी बात आई अब मेरी समझ में– 'कल ऐसे–ऐसे–ऐसे हुआ था।' मैं जानता हूँ मुझसे लिपट जाना असहज नहीं, ट्रक की चपेट में आने के भय से किसी भी औरत या आदमी की ऐसी ही तुरत प्रतिक्रिया होगी।..... कुछ भी ऐसा नहीं हुआ जो पहले से उसके बुने हुए इरादे का नतीजा हो। तो भी उसे चिन्ता इस बात की है कि लखन ने उसके प्रति कोई गलत धारणा न बना ली हो। और....और दूसरे चश्मदीद मार्निंग वाकरों ने कहीं यह न समझ लिया हो कि हम दोनों में कोई 'अफेयर' चल रहा है। सचिन भाई ! शुभी जी के लिए मेरे मन में ऐसी–वैसी कोई बात ही नहीं। उसके भी दिलोदिमाग में है कि ऐसा कुछ नहीं।.... क्या कह सकता हूँ सिर्फ इसके कि आपकी आज की सुबह और सुबह–सुबह की आपकी फेमिली लाइफ बेकार कर देने के लिए माफी चाहूँगा।

सचिन एक रंगमंचीय डायलॉग–सा बोला– 'चोप्प..... अब बिल्कुल चोप्प। फिर अपनी तर्जनी तरेरे हुए मुसकाया था। इससे मेरा भी मन काफी हल्का हुआ। सचिन की इस प्रश्न वाची प्रतिक्रिया से और भी शान्ति मिली थी– लक्ष्मन का मतलब समझते हो तुम– वही वही.... जो तुम्हारा नाम है और जो राम जी के छोटे भाई का था। शुभी को भी मैं कई सालों से जानता हूँ– परखा भी

है हमेशा। वास्तव में कल की जैसी घड़ी में कोई भी नाजुक–मिजाज महिला चोट लग जाने के भय से अकस्मात पैदा हुई दहशत को अपने किसी आत्मीय की छाती में मुँह डुबोकर ही जज्ब करेगी। असलियतन वह आजाद ख्यालों वाली है, फ्रैंक है, ज्यादा से ज्यादा पढ़ी–लिखी है और नयी संस्कृति से भी जुड़ी है लेकिन उसी सीमा तक अपने पुरातन से भी।...... मैं भी उसी तरह का हूँ।. .... इसलिए 'डोन्ट थिंक मच माई ब्रदर' कहकर दोनों ने अपने–अपने घर की राइ पकड़ी।

७

मामला ही ऐसा था कि सचिन और मैं देर तक उलझे रहे थे। इससे घर पहुँचने में काफी देर हुई। अपने कालेज चली जाने की वजह से कैटी से भी भेंट नहीं हो पायी। टोह ले रहा था कि उसका रिक्शा शायद कहीं आस–पास ही रुका हो कि सचिन लम्बे डग भरता हुआ मेरी ओर आता दिखा तो मैं भी बढ़ा उसकी तरफ। रिलैक्स–रिलैक्स कहते हुए पूछ लिया मैंने– 'कोई खास बात ? सब कुछ ठीक तो है ? इस रास्ते पर कैसे ?

सब ठीक है भाई, बात भी कोई खास नहीं; लेकिन शुभी ने कही थी इसलिए कम से कम मेरे लिए खास ही समझिये। तुमने कभी बताया ही नहीं कि वंशी हलवाई के पड़ोस में ही तुम रहते हो।

सचिन जी ! वंशी हलवाई मेरा निकट का पड़ोसी है। ये सामने वाली कुटिया अपनी ही समझिये।

कुटिया ! रईसी महल है ये तो।

अब जैसा भी कहो भैया। इसी पुश्तैनी महल में रहता हूँ मैं एक कमरे में।

क्यों ?

क्योंकि अभी तो रीडिंग रूम उर्फ स्टडी रूम– कम बेड रूम का ही हकदार हूँ मैं।

अच्छा–अच्छा।

आइये, बैठिये जब यहाँ तक आ चुके हैं।

नहीं लखन, देर हो जायेगी कम्पनी पहुँचने में। कम्पनी की नौकरी में

वक्त किसी करमचारी या अधिकारी का नहीं होता...। इस तरह से भी समझ सकते हो कि सरकारी नौकरी के ठाट कम्पनी की नौकरी में नहीं होते। ....ठीक है, देख ली तुम्हारी रिहाइश, हाजिर होऊँगा जब भी तुमने इच्छा जाहिर की।

लेकिन शुभी भाभी की बात जिसे आप खास समझते हो?

अरे अरे! ओ ऽऽ वंशी हलवाई की दूकान से दो दही ले आने को कहा है उसने.... वही जो वह मिट्टी के बर्तनों.... आई मीन कुल्हड़ों में कुछ मीठा डालकर जमाता है। बहुत पसन्द है उसे ये आइटम। यह भी हो सकता है कि आज पेट को आराम देने के वास्ते सिर्फ दही ही लेना चाहती हो। ....क्योंकि बेड टी भी नहीं ली उसने।

सचिन जी! शुभी की तबियत ठीक है तो कोई बात नहीं, लेकिन कुछ भी तकलीफ है अगर तो मुझे बताने में कोई तकल्लुफ न कीजियेगा। कृष्णा नर्सिंग होम तो पड़ोस में ही है, एक और भी है, उधर राजकीय नक्षत्रशाला की तरफ– वर्तिका–मुक्ता स्वास्थ्य केन्द्र। दोनों के मालिक हैं डा. पारिजात। मेरे अभिन्न मित्र हैं वह। पति–पत्नी दोनों ही डाक्टर हैं; पत्नी तो स्त्री रोगों की बड़ी जानकार है– मोनिका।.... ले चलेंगे उनके पास, यकीनी चेकप भी हो ज़ायेगा– मन का फितूर भी दूर हो जायेगा।

ठीक। तब तो चिन्ता की कोई बात नहीं। वैसे हम दोनों के यहाँ फ्री ट्रीटमेण्ट की सुविधा मिलती है।

हाँ ठीक कह रहे हो, लेकिन आपकी कम्पनी के द्वारा अधिकृत हेल्थ सेंटर्स में ही। उनके इलाज के तरीके तथा उससे मिलने वाली संतुष्टि के बारे में नहीं कह पाऊँगा कुछ। जान पहिचान वाले सेण्टर्स की बात ही जुदा होती है। ....अच्छा, चलो आप, इन्तजार कर रही होंगी वह।

'हाँ' कहकर मन्त्रप्रेरित सा वंशी की दूकान की तरफ बढ़ लिया सचिन। इधर मेरे मन में सचिन और शुभी के पड़ोसी, होने से उपजी खुशी और नाखुशी की ठंढ़ी और गर्म हवायें चलने लगी थीं। .....वैसे सचिन ने शुभी के बारे में कोई ऐसी वैसी इत्तिला नहीं दी– इससे मैं निश्चिन्त हो गया था क्योंकि मेरे द्वारा उसके लिए जरूरत से ज्यादा फिक्र दिखाना भी ठीक नहीं– अभी कितने दिन की है हमारी जान–पहिचान! वह भी दोनों की बाबत आधी–अधूरी।

सोचते–सोचते मैं कंचन मृग उर्फ 'श्यामा सदन' की ओर बढ़ लिया। हाँ

'श्यामा' मेरी माँ का नाम है। उनकी कौशल्या–मानसिकता के बारे में जितना भी कहा जाय नाकाफी ही समझिये। मुख्तसर में वह पुरातन से भी जुड़ी हैं वर्तमान से भी। मेरा तो अपना तजुर्बा है कि परिवार के प्रति अपने हमदर्दी भरे जज्बे के कारण वह जरूरत के लिहाज से खुद को बदल लेती हैं। मेरी शादी के बारे में उन्हें ढेर सारी फिक्र रहती है, एक बढ़िया सी बहू की ख्याहिशमन्द हैं वह। उनके संस्कारों की सुगंध कोठी के कमरे–कमरे में और सभी परिजनों में समान रूप से व्याप्त है।

८

आज की ठंढ़ पिछले तीन चार दिन के मुकाबले कुछ ज्यादा है। हवा में तेजी की वजह से मैंने ऊनी मूजे, हाफ स्वेटर और गरम दस्ताने पहन लिये थे। दिमागी तनाव भी है सुबह के चार बजे से अब तक अपने पूरे रुतबे के साथ। कई कम्पटीशनों के नतीजे आने है न ! इसी हफ्ते–दस दिन में। पता नहीं किधर खड़ा दिखूँ। पीसीयस में या आई.ए.एस. की कतार में..... या किसी में नहीं। तब तो बड़ा बुरा हो जायेगा। अपने ही कहेंगे– 'अरे सिर्फ फार्म भर देने से और पेपर कर आने से क्या होता है। इससे तो शादी और दहेज के तलबगार लोगों का ही भला हो पाता है।'

वैसे रहरहकर दाई–आँख फड़कती है; कभी–कभी तो जैसे उसमें 'सेल्फ' जैसा कोई पुर्जा लगा हो। आज सुबह से ही दायाँ हाथ और ऊपरी ओठ भी बेचैन हैं। पता नहीं किसके फड़कने से कैसा फायदा, कैसा नुकसान ! ऐसे शारीरिक संकेंतों पर मुझे विश्वास तो नहीं लेकिन 'अविश्वास है' कहने के लिए कई बार सोचना पड़ता है क्योंकि माँ और भाभी इन्हें कुछ अच्छा या खराब होने का मुकम्मल संकेत मानते हैं। कोई वजह तो होगी ही– अपना–अपना सोच ! वर्ना धार्मिक ग्रन्थ तो कहते हैं कि सभी लोगों की सभी सफलतायें या विफलतायें पूर्व निर्धारित होती हैं।

बड़े भैया जी कोर्ट के लिए चलते वक्त बिल्ली के रास्ता काट देने, या दायें–बायें, सामने या पीठ की तरफ किसी की छींक हो जाने को चलने से पहले विचार कर लेने वाली बातें मानते हैं। माँ का कहना है– सीता जी, रावण और मंदोदरी को भी अच्छे बुरे शारीरिक संकेत होते थे। जैसा भी हो.....

सफलता पाने के लिए अगर जरूरत के मुताबिक मेहनत न हुई तो मेरे विचार से तो कुछ भी नहीं होना। ऊपर वाले की मंशा के बगैर तो कोई फूल तक नहीं खिलता।

x x x

आज सेंचुरी पार्क में एक नयी टोली के साथ लग गया। इसमें कुछ पुरानी वाली के लोग थे तो कुछ बिल्कुल गैरपरिचित। ये सभी पहले तो परस्पर कुछ फुसफसाये, फिर कुछ ही देर में दूध और पानी–से एक हो गये। बुजुर्ग लोग वानर टोपी से अपने कान सिर और गला ढके हुए थे, एक जनाब तो गांठों से नीचे तक लटकते हुए कोट में थे। शायद उनके गरम–कपड़ों का वजन उनकी देह के कुल वजन से जास्ती था।...... हमारे जैसे लोग तो ठंढ से लगभग बेअसर थे। सभी अपने–अपने सीने की पर्त–दर–पर्त में समाये हुए धुयें को मुँह और नथुनों से निकालते हुए यकायक खड़े हो गये, ...एक–दूसरे से मुखातिब होकर। बात की बात में वे ठहाके भी लगाने लगे। मैं सिर्फ मुसकाता हुआ अलग–थलग खड़ा–खड़ा इन लोगों की स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता की बानगी ले रहा था, हालांकि कइयों ने हाथों से लगातार इशारे किये कि मैं भी ठहाका अभियान में शामिल हो जाऊँ। दस–पन्द्रह मिनटीय इस कार्यक्रम में कई बार इस बात ने मेरे मगज में ठकठक की कि शायद मैं इस फरुक्काबादी मानसिकता वाले दल की कम्पनी करने के उपयुक्त नहीं।...... मैंने बड़ी गौर से देखा कई लोगों के नथुने की अन्दरूनी रोक बेअसर हो जाने से सीलन ओठ के रास्ते से मुँह के अन्दर ढुलकने की उल्टी–गिनती कर रही थी। एक जनाब लगातार खुखुआये जिससे साँस की नली के अंदर थमा हुआ मलवा उनकी टुड्डी से लटकने लगा था। वह खुद को सम्भालें, तब तक सभी ने निर्णय लिया कि ठहाका कार्यक्रम माह में तीन बार, लेकिन ठंढ कुछ और बढ़ जाने पर सप्ताह के आखिरी दो दिनों में नियमित रूप से चलेगा, हरेक सदस्य दो दिन के कार्यक्रम में चाय और विस्कुट के लिए मुब्लिग दस रुपये जनाब जेड.टी. चुगलानी के पास जमा करेगा।

ठहाका कार्यक्रम की एक अहम् विशेषता मैंने देखी– कोई–कोई मजा किया अन्दाज में जनानी आवाज में अपनी भूमिका अदा करते, जिस व्यक्ति में जितनी भी नाटकीयता थी, सभी ने उसका भरपूर इस्तेमाल किया। किराना

मर्चेण्ट केसरवानी के सभी अंग चर्बीदार थे— इतने कि उनके ठहाकों से पूरे जिस्म में भूकम्प समाया दिखता। ऊपर से एक हेलीकोप्टर जा रहा था तो उसे देखते—देखते भी सभी ने ऐसे ठहाके लगाये कि बच्चों को साथ लेकर टहलने वाली कुछ औरतें चौंक पड़ीं। हाँ, वह जनाब जिनके चिबुक से उतरकर कंठ तक जिस्म की शिवर लाइन का जल आ चुका था, बाद में कुछ चकराये, माथा थामकर जमीन पर बैठ भी गये थे।...... पहले ही दिन का इस टोली का सदस्य होने के कारण मैं बिल्कुल मौन था, लेकिन जब कुछ लोगों ने उन बुजुर्ग को किसी डाक्टर के पास ले जाने का मन बनाया— मैं भी उनके साथ हो लिया। सेंचुरी पार्क से कुछ ही कदम आगे एक डाक्टर का घर था। बोले वह— नौं से दस के बीच खोलता हूँ क्लीनिक— लेकिन आप लोग इन बुजुर्ग को लाये हैं तो ड्राइंग रूम में ही देख लूँगा, बस मुझे पाँच मिनट की मोहलत चाहिए। फिर तो उन्होंने लाहौर का सफर किया, लौटकर मुँह खंगाला, वाश बेसिन के दरपन के सामने खड़े—खड़े पिछले चौबीस घण्टे में नकुना के नीचे और गालों पर उगी फसल को नेस्तनाबूत किया। आखिर में मुँह और कंधों में किसी खुशबू का छिड़काव करके मरीज के पास आये। पाँच मिनट की मोहलत माँगकर उन्होंने नौ गुना वक्त लेने की वजह भी बताई— 'भई डाक्टरी मेरा पेशा है, पता नहीं कि मरीज में कितना टाइम लग जाये..... तुरन्त ही कोई दूसरा भी आ जाये.. इसलिए अपनी मार्निंग रुटीन से मैं कतई छेड़छाड़ नहीं करता।..... हाँ, इसे देखते हैं 'अब'— कहकर उन्होंने कान से आला लटकाया, एक फिलास्फर की मानिन्द मेज़ पर धरी संदुखिया से एक रंगबिरंगी हथौड़ी निकाली; मरीज बुजुर्ग के तलवों को कई बार उसी से ठोंका, पीठ और कमर, फिर जांघों पर उसके हल्के प्रहार किये, पेट और पीठ की खाल को कई बार चकोटी से दबाया। शायद ऐसा सब किये जाने से मरीज को कोई तकलीफ नहीं हुई थी।

मैंने डाक्टर के पास जाकर बहुत धीमी आवाज में पूछा— 'क्या ये एनेमिक लगते हैं ?' बोले वह बिल्कुल एनेमिक हैं, डिहाइड्रेशन भी है, होमोग्लोबिन भी कम है इन्हें।

कैसे ?...... मैंने आँखों ही आँखों डाक्टर से पूछा।

बोले वह— ये सिर्फ उमर के लिहाज से कुछ तन्दुरुस्त दिखते हैं, दस साल पहले तक इन्हें चर्बी काफी थी— मतलब फूली हुई थी इनकी देह— यही

फैट अब भी है हालांकि पहले के मुकाबले कम और तकरीबन बेजान। खून की कमी है ही, दोनों तरह का ब्लडप्रेशर भी रहता है इन्हें। ब्लड और बी.पी. का टेस्ट तो इन्हें हर महीने कराते रहना चाहिए।

डाक्टर ! मैं और मेरे साथ यहाँ मौजूद सभी यही समझते हैं कि इन्हें ऐस्थमा और हूपिंग कफ की शिकायत है और अभी आसानी से ये चंगे हो जायेंगे।

नो नो नो ! दवायें ब्लड रिपोर्ट देखकर लिखूंगा, अभी सिर्फ ग्लूकोस का पाउच और इन्जेक्शन दिये देता हूँ.... बट पैथालाजिकल टेस्ट इज ए मस्ट। कल परसों में ले आइये आज अगर मुमकिन ना हो। एक बात और– ये खुशमिजाज तो होंगे लेकिन टेंशन यानी कि बड़े दिमागी तनाव में रहते हैं।

हमदर्दी का अनचाहा दण्ड भोगते हुए हम दो–तीन लोग एक लोहे की बेन्च पर बैठे–बैठे लटकती हुई बोतल से प्लास्टिक ट्यूब में ढुलकते हुए एक एक बूंद को बड़े धीरज से देखते रहे, डाक्टर की दरियाव दिली का गुणगान भी बीच–बीच में करने लगते। आखिर उसने वक्त तो दिया ही, कह सकता था कि सिविल हॉस्पिटल ले जायें।' अपने बारें में मैं सोचने लगा साथ ही साथ, यह कि किसी न किसी विधि विधान के तहत हो रहा है यह। आखिर पटकथा तो चार मुँह वाले ने ही लिखी है।

बहरहाल स्टैण्ड से टंगी बोतल का आखिरी बूंद भी शरीर में समा चुका था। मरीज कुछ रुगरुगाये से दिखे, आँखों में चमक भी उतरी, पुतलियाँ बाकायदे हरकत में थीं। अब मैंने पहचाना इन्हें पहली टोली जिसमें रहकर मैंने ठगों और हरीजन सिद्ध संतों के किस्से जिनसे सुने, वही हैं ये दद्दा जी। क्यों भाई मुन्नन जी। दद्दा ये वही तो है जिनसे आप लोगों ने भी कभी कभी तरह–तरह के किस्से सुने होंगे।

बोला वह– वही, बिल्कुल वही हैं ये। लेकिन डाक्टर तो कहते हैं इन्हें कोई न कोई तनाव रहता है। क्यों दद्दा, तुम्हें कोई दिमागी परेशानी भी रहती है क्या ? हमारी समझ में तुम्हें कैसा तनाव ? न किसी से लफड़ेबाजी न तुम्हें किसी का हक मारना... और न किसी चीज की कमी।

दद्दा बेड पर एहतियात से उठ बैठे, पाँव लटकाकर जूते पहनते हुए बोले– 'तुम्हीं बताओ मुन्नन, रिटायर्ड अफसर हो या कर्मचारी... उसे कौन से

तनाव नहीं होते ? बुढ़ापे में ही तो घेरते हैं सारे जानेबवाल। कभी टेलीफून कटा तो दौड़ना, टेलीफून वालों को गिड़गिड़ाकर समझाना कि उन पर कोई बकाया नहीं, कभी बिजली वालों के पास तक दौड़ना और वैसे ही गिड़गिड़ाना, कभी किरायेदार से मकान खाली कराने की फिक्र। और भैया, रिटायर्ड बाप के लिए कितनी बड़ी टेंशन होती है उसकी कन्या– कौन नहीं जानता। उसकी उपयुक्तता की दृष्टि से वर तलाशना धरती पर आकाश गंगा लाने की तरह दुष्कर होता है!' मैंने फुसफसाकर मुन्नन से कहा– 'दद्दा कमजोर बहुत हैं', बातों में ज्यादा उलझाना ठीक नहीं।'

बहरहाल दद्दा को सहारा देकर जूतों पर खड़ा किया गया, हम लोग बाहर भी लाये उन्हें, फिर एक रिक्शे पर बमुश्किल बैठाया। उन्हें समझाया भी– दद्दा! इस वक्त अपनी किसी भी परेशानी के बारे में कतई कुछ मत सोचो।

बोले वह– अरे भाई, आप सबकी मेहरबानी से अब मैं ठीक हूँ। कभी तो ऐसा नहीं हुआ, आज ठहाके लगाते समय जाने कैसी बुरी घड़ी आ गयी! खाँसने के वक्त लग रहा था जैसे देह में थोड़ी भी ताब नहीं, और दिमाग के दोनों तरफ दस–दस हार्सपावर के इंजन भड़भड़ा रहे हों।

मुन्नन का दोस्त गार्गी बोला– दद्दा जी! सिर्फ परेशान होने से परेशानी रबड़ की तरह बढ़ती है। कुछ करना पड़ेगा– तभी बन पायेगी कोई बात। हम लोग भी बतायेंगे निगाह पर चढ़ गया अगर कोई योग्य लड़का, लेकिन तुम किसी दूसरे के भरोसे रहो ही क्यों? अपनी जान–पहिचान और नाते–रिश्तेदारों में खुद भी चर्चा करो बिटिया की बावत।

तो क्या हाथ पर हाथ धरे बैठा हूँ? हमारी बिटिया से काबिल दिखे तो कोई।..... आखिर शहर के मशहूर कालेज में पढ़ाती है, देखने–सुनने में भी बहुतों में अकेली, अंग्रेजी की लेक्चरॉर होने के बावजूद भारतीय संस्कारों वाली तो भी नये जमाने के साथ? जिला विद्यालय निरीक्षक रहा हूँ तो पिरोये हैं उसमें उत्तमातिउत्तम संस्कार।...... रिक्शे पर बैठे हुए अपनी कन्या की खूबियों की लम्बी लिस्ट सुनाने में लग ही नहीं रहा था कि कुछ ही समय पहले वह किसी डाक्टर की देखरेख में रहे थे।

अब मुन्नन ही था मेरे साथ और सब एक–एक करके फूट चुके थे। दद्दा के दरवाजे तक पहुँचकर तीनों रिक्शा से उतरे। मेरा हाथ पकड़े हुए बोले वह–

किस नाम से पुकारूँ मै आपको ? ....चलो नाम में क्या धरा है, मेरा नाम भी तो प्रसन्न वाजपेयी है– प्रसन्न कुमार, किन्तु बुड्ढा हो जाने पर कुमार तो रहा ही नहीं।..... और प्रसन्न तो पहले भी नहीं रहा– केवल नाम से प्रसन्न हूँ आजतक।

एक स्कूटर को रास्ता देने के उद्देश्य से दद्दा ने मेरी कलाई पकड़कर अपने बगल में खींच लिया, अपनी बात भी जारी रखी– 'मुन्नन, क्या बताऊँ मैं! एक लड़के के घरवालों से बातें काफी कुछ ठीक ठाक चलीं, लेकिन सातवें द्वार तक आते आते उलझ गयीं। बोले– 'हमें तो अच्छी बहू चाहिए लेकिन निकासी इतनी तो करनी ही होगी जो मेरी और मेरे नातेरिश्तेदारों की साख के मुताबिक हो।.... पिछले ही बरस मैंने एक लड़की ब्याही जिसमें शानदार स्वागत सत्कार के साथ यही कोई पच्चीस लाख की निकासी की थी।' इन लड़के वालों की बात खत्म होती, उसके पहले ही मैंने तो जूते पहन लिए, फिर छड़ी लेकर चल भी दिया।

मुन्नन बोला– बस बस दद्दा जी, बाकी बातें फिर किसी दिन। आपको उन्हीं से सम्पर्क करना चाहिए जो मन से छोटे न हों। लड़की वाले से किसी दहेज वहेज की चाहत को रोग या छुआछूत वाला महारोग मानना जरूरी है। ....अरे वह देखो, गुड़िया भी दरवाजे पर खड़ी है आपके इन्तजार में। ....सोच रही होगी कि दरवाजे पर खड़े–खड़े पता नहीं क्या बतिया रहे हैं हम!

दद्दा बोले– यही तो है मेरी चिन्ता के मूल में। इसी के लिए मुझे उन रास्तों में भी भटकना पड़ रहा है जिधर कभी नहीं गया था।.... शायद कालेज रोज से जल्दी जाना है उसे।

दद्दा की पुत्री ने हम लोगों से दोनों हाथ जोड़कर नमस्ते किया था, फिर उनका एक हाथ पकड़कर घर के अन्दर ले गयी। जाते वक्त मैंने कहा था– आज आप कालेज से छुट्टी ले लीजिए, दद्दा जी की तबियत कुछ ठीक नहीं। और हाँ..... कल तक इनका होमोग्लोबिन और शुगर ....और बी.पी. टेस्ट जरूर करा लीजियेगा।.... दद्दा की पुत्री की प्रतिक्रिया जाने बिना मैंने और मुन्नन ने अपनी–अपनी राह ली।

x x x

यही कोई चार बजे कैटी अपने कालेज से लौटी। तुरन्त ही बैग अपने कंधे से उतारकर मेज पर रखा लेकिन जूते और मूजे उतारे बिना ही चिल्लाने

लगी– ग्रैण्डम्मा ग्रैण्डम्मा !

मेरी माँ ने झिड़की पिलाई उसे– ये ग्राण्डम्मा ग्रान्डम्मा कौन है यहाँ, यहाँ तू अपनी बोली क्यों नहीं बोलती, चिड़िया तक अपनी ही बोली बोला करती हैं, सुनी है कभी उनसे अंग्रेजी–वंगरेजी,

तो क्या हुआ दादी ?

इतना तू जान ले कि यह पेट पालने वालों की भाषा है, इसे बोलना विद्वता की बात नहीं। इसके बोलने वाले अपने संस्कारों की हत्या कर देते हैं।

......इसलिए सिर्फ अपने कालिज में बिल्ली सी खौखियाना अबसे।

करेक्ट दादी..... ओह सॉरी..... वेरी सॉरी.... बता यह रही थी कि आज कालेज की सबसे खूबसूरत मैम के फादर अकस्मात बीमार पड़ गये जिससे उन्होंने छुट्टी ले ली थी, तो मेरा इंगलिश का पीरियड यूँ ही रहा... उनका दिया हुआ होमवर्क पूरा करने में मैं तो इस रात सोई ही नहीं थी। मुझे क्या पता था कि वह छुट्टी ले लेंगी।

दादी बोली– चलो, होमवर्क पूरा तो है, कल देख लेंगी वह, लेकिन हुआ क्या उनके फादर को ?

दादी जी, ज्यादा कुछ तो नहीं जानती लेकिन उनकी जगह दूसरी मैम जो क्लास लेने आयीं, हम लोगों को बता रही थीं कि अप्लीकेशन लाने वाला आदमी बोल रहा था कि कोई दो लोग थे जिन्होंने बड़ी हमदर्दी दिखाई, डाक्टर के पास भी ले गये और घर तक भी छोड़ गये।.... कैटी को चुटकी लेने के उद्देश्य से मैं बोला– घर तक छोड़ आने वालों में कैटी का अंकल भी था। और हाँ कैटी, तुमने कहा न कि कालेज की सबसे ज्यादा खूबसूरत है वह। मैंने देखा है उसे– टेढ़ी सी लम्बी नाक, खोपड़ी में मुश्किल से सवा दस ग्राम बाल, वजन मेरे अन्दाज से बयासी से बान्नबे किलो.....

मेरी बात पूरी भी न हो पायी थी कि कैटी के गुस्से की सीमा न रही– झूठ अंकल, बिल्कुल झूठ। इसके मतलब तो यह है कि तुमने उन्हें देखा ही नहीं। शायद उनकी नौकरानी देख ली है तुमने ! ऐसा भी नहीं है अंकल तो तुम्हें अपनी आँखों का चेकअप कराना चाहिए।

मैंने कैटी के सुझाव का उत्तर न हाँ में दिया न ना में। पास ही खड़ी भाभी

ने जरूर मेरी मनोदशा समझ ली थी, मुसकाई थी वह.... तो बात की बात में मैंने गाड़ी निकाली, चल दिये दद्दा जी के घर को, जानने के लिए कि क्या ब्लड और बीपी टेस्ट आज कराये गये ?

'आव बेटे आव।' ड्राइंग रूम से बाहर ही टहलते हुए उन्होंने मुझे देखा और बुला लिया। मैंने बात शुरू की– दद्दा जी याद नहीं मुझे कि सुबह मैंने आपको अपना नाम और पता वगैरह बताया था या नहीं।..... तो मेरा नाम लखन शर्मा है, यहीं चित्रकूट मुहल्ले में रहता हूँ। मैंने सोचा कि मिल आऊँ आपसे और तबियत के बारे में जान लूँ कुछ। अ अ अ.... फिर बाद में तो तकलीफ नहीं हुई किसी तरह की ?

क्या कहने! क्या कहने!! अरे पुत्र, बाद में तबियत कैसे खराब हो सकती, मेरे कवच की मानिन्द तुम थे न साथ सेंचुरी पार्क से मेरे घर तक। जरूर तुम किसी अच्छे खानदान के हो।..... अरे हाँ.... चित्रकूट कालोनी तो मैं जा चुका हूँ.... तीन बार या चार बार। एक बार तो गारद बाबू की कोठी में उनके साथ काफी देर तक बैठा।.... यही कोई दो घण्टे।

अच्छा जी, मुझे पता तक नहीं। मेरे बड़े भैया हैं जिन्हें आपने गारद बाबू कहा।

हरे! इतनी शिष्ट और इज्जतदार हस्ती का भाई मेरी कुटिया में! विश्वास ही नहीं होता.... हालांकि आँखों से मैं बखूबी देख रहा हूँ।

दद्दा जी के इस कथन से मेरा सीना चौड़िया गया था। तो अपने बारे में अब ज्यादा परिचय देने की जरूरत ही नहीं थी। शायद दद्दा की कन्या ने हमारी सारी बातें किवाड़ के पीछे खड़े–खड़े सुनी थीं। यही वजह रही होगी कि बड़े सलीके से हम लोगों के पास आते–आते उसने सुबह वाले अन्दाज से बिल्कुल अलहदा भंगिया में नमस्कार किया था। मैंने झाँका था उसकी आँखों में, तिरछी नजर से छुछुवाया था उसके चंदनी अंग प्रत्यंग। ...बात की बात में शुभी मेरे मानस में तैर गयी तो तुलना करने लगा दोनों की ....एक–दूसरे से। ये कली है, वह कली और फूल के बीच की स्थिति में... यानी एक विकासशील तो दूसरी सुविकसित, अपनी–अपनी जगह पर दोनों लुभावनी किन्तु यह निश्चित रूप से एक अपेक्षाकृत लम्बे भविष्य की स्वामिनी ! इसके मनमस्तिष्क में अभी किसी का नाम नहीं लिखा। पूछ लिया उससे– घर का नाम कुछ भी

हो, आपके एडूकेशनल सर्टीफिकेट्स में क्या नाम लिखा है?

'घर में हम सभी सलोनी कहते हैं और यही है इसका असली नाम'– दद्दा तुरन्त बोले।' 'मैंने अपने बच्चों के दोहरे नाम नहीं रखे, यद्यपि इस रिवाज के विरुद्ध भी नहीं हूँ।'

सलोनी तो बहुत ही उपयुक्त नाम है, लेकिन इनके और भाई बहन? मैंने फिर पूछा। चेहरे पर कुछ खिन्नता बिखराकर दद्दा जी बोले– एक भाई है इसका। अच्छी नौकरी में है वह भी इसी शहर में; उसकी पत्नी भी यहीं है एक विदेशी संस्थान में सीरियर एक्जीक्यूटिव लेकिन.....

आगे की बात सलोनी ने ही पूरी की, कमल दल सी अपनी आँखों को मेरे चेहरे पर टिकाये हुए– 'वास्तव में पापा जी और भाई साहब में वैचारिक भिन्नता है, आपसी मतभेद के कारण ही अलग रहते हैं आपकी कंचनमृग के पास ही कहीं।'

काफी कुछ समझ में आ गयी थी बात, पर उसे रोककर मैंने एक नयी बात शुरू कर दी– दद्दा जी! किसी दिन सलोनी जी का बायोडेटा और होरास्कोप..... हमें दे दीजियेगा। एक पासपोर्ट साइज और एक कैबिनेट साइज फोटो रखे हों तो वे भी साथ–साथ। ....और भी ठीक रहेगा अगर कैबिनेट साइज फोटो दो हो जायें– एक सलवार–कुर्ते और दुपट्टे में तो दूसरी साड़ी पहने हुए। क्यों सलोनी जी! किसी तरह का इतराज तो नहीं आपको?

कोई जवाब दिये बिना वह दूसरे कमरे में चली गयी, लेकिन दद्दा जी ने उत्तर दिया– सब है– टाइप किया हुआ बायोडेटा, होरास्कोप, और तुम्हारे बताये मुताबिक फोटोग्राफ। ....न मालूम कितने बाँटे होंगे जो न तो मैं वापस लाया न लड़के वालों ने वापस किये। ....अब जितने उन्हें बनवाने में खर्च किये उससे ज्यादा पैसा और वक्त लोगों के घर जाने और फोटो वापस लाने में खर्च करूँ– कैसे सम्भव है यह?

इसी बीच सलोनी दो कप कॉफी ले आयी। दद्दा ने अपना कप–प्लेट संभाला, मैंने अपना; फिर तीसरी कॉफी के लिए सलोनी की ओर निहारा। मेरी मंसा समझ गयी वह। बड़ी शिष्टता से बोली– 'मैं केवल चाय लेती हूँ, वह भी कभी–कभी। संयोग ही कहिए, आपके आने से कुछ ही पहले हम दोनों ने ले ली थी। पापा जी साथ दे ही रहे हैं– प्लीज आप लोग...।'

हाँ, दद्दा जी बोले—सचिन तो विवाह के बाद से कॉफी ही लेता है, वर्ना मेरे दोनों बच्चे केवल चाय तक रहे हैं। अब अलग रहता है वह, उसके और किन्हीं शौक की जानकारी मुझे नहीं, पर वे आपत्तिजनक तो नहीं ही होंगे क्योंकि मेरे दिये संस्कार उसके प्रति मेरी भूमिका अदा करेंगे।

इस उत्तर से मैंने कई बातों का अनुमान कर लिया था। एक तो यह कि सचिन और शुभांगी इन्हीं के बच्चे हैं, शुभांगी को शायद यह सचिन का किडनैपर मानते हैं। ज़ाहिर है कि जनरेशन गैप है बहू और अपने ही बेटे से उनके अलगाव की वजह। इसीलिए मैंने इस बात को गोपनीय ही रखा कि परिचित हूँ मैं सचिन से और शुभी से।.... शायद अच्छी ही रही इस बिन्दु पर मेरी चुप्पी।

बाद में नयी—नयी कड़ियाँ विचार शृंखला में जुड़ती रहीं— वर्तमान के नजरिये से कुछ आजाद मानसिकता की है भी वह, वैसे वह अनुशासन की लकीरें मिटाने वाली नहीं, तो भी सचिन को बहा ले गयी अपने साथ, अपनी धारा में। दोनों की विवशता भी हो सकती है यह। आखिर सरकारी अफसर तो हैं नहीं वे, कम्पनियों के तौरतरीके सरकारी दफ्तरों से भिन्न होते हैं।.... अरे हाँ, पूछूँगा मैं सचिन से, या फिर शुभी से कि उनके गठबन्धन में दद्दा की रजामंदी नहीं थी क्या... और अगर थी तो फिर उनसे अलग रहने की वजह?

दद्दा ने मुश्किल से तीन—चार मिनट का वक्त लिया होगा। बायोडाटा वगैरह लाने में। इसी बीच बोली वह— 'सामने वाले सोफे पर आप ज्यादा कम्फर्टेबल फील करेंगे, प्लीज उसी पर बैठिये आकर।' इस अनुरोध को अनसुना करते हुए मैंने सलोनी के मन को टटोला— 'अगर कोई लड़का होनहार हो, एकेडेमिक रिकार्ड भी उसका बढ़िया हो, इज्जतदार खानदान वाला भी हो..... क्या उसे आप..... अ अ अ लगता है नहीं चलेगा वह...... छोड़िये। मैं समझ सकता हूँ...... उपयुक्त नहीं है वह क्योंकि जरूरी नहीं उसका सेलेक्शन किसी अच्छी नौकरी में हो जाये।..... फिर तो कन्या बेचारी रेगिस्तान में भरमाई हुई हिरनी बनकर ही रह जायेगी— हर सुविधा और आराम के लिये तरसना और प्रायश्चित के लिए तिलमिलाना उसकी नियति ही बन जायेगी... ना अ् नहीं चलेगा ऐसा लड़का शर्मा जी।' सोचने लगा—मेरे इस निवेदन और सेलफोन की मिस्ड काल में कोई फर्क नहीं!

इस वक्त सलोनी बड़े पशोपेश में थी कि लखन के प्रस्ताव का वह उत्तर दे तो क्या, अस्वीकार के लिए भी किन शब्दों का इस्तेमाल करे.... सिर्फ पाँव की ऐढ़ी पर चक्रवात सी घूमी थी। उसके अनकहे को फिर भी मैंने थोड़ा बहुत समझा था। शहर से अलग का रहनेवाला हुआ तो पापा जी का क्या होगा, कौन देखभाल करेगा इनकी, अकेलेपन से ही दुखी होकर सिकुड़ जायेगी इनकी जिन्दगी; इधर कालेज की नौकरी भी छोड़नी पड़ेगी, यह भी कह गयी वह कि क़ोई सम्मानजनक सर्विस न मिली उसे तो दैनन्दिन दैन्य भी कैसे झेल पायेगी वह।

मैंने दद्दा को भी बताया कि क्या पूछ रहा था मैं सलोनी से उनकी गैरहाजिरी में। अपनी मजबूरी भी बताई– अपने दोस्तों या जान–पहिचान वालों में ही तो तलाशना होगा सलोनी के लिए कोई उपयुक्त वर....। अपनी मान्यता से भी उन्हें अवगत कराया– दद्दा, एक अंग्रेजी कहावत है– 'मैरिजेज आर सेटिल्ड इन दि हीवेन, ओनली सेरेमनी इज परफार्म्ड हियर।' अब देखिये न– राम जी अगर अपने राजमहल में ही तीर गुलेल चलाते रहते, महामुनी के साथ उनकी यज्ञरक्षा के लिए न चले जाते तो सीता–स्वयंवर में शामिल होने का सवाल ही नहीं था! विधाता ने उनका विवाह मिथिलापति की कन्या से ही होना लिखा हुआ था, इसलिए सही वक्त पर वह पहुँचे और शिव जी का धनुष भी थोड़े ही प्रयास में तोड़ दिया।

बोले दद्दा– ये कुछ भी नहीं बोली होगी– अच्छी तरह से समझता हूँ इसका स्वभाव और इसके मन की बात। ये तेजतर्राक हैं, जमाने की समझ भी रखती है, विदुषी भी है और थारो– प्रैक्टिकल भी। मजाल है कि कोई अपनी मनचाही इस पर थोप सके, पर शादी वादी की बात पर ये चुप्पी साध लेती है– तब मुझे अनुमान ही नहीं हो पाता कि मेरे प्रयासों से ये कितनी संतुष्ट है।

ठीक कहा दद्दा जी। मेरे पूछने पर इस कन्या के बदन पर एक भी इबारत नहीं दिखी जिससे यह समझा जा सकता कि आपको अकेला छोड़कर ये दूसरे घर जाने के लिए राजी है।.... नहीं नहीं, ये मेरा अपना अनुमान है। इसके मन में क्या है, यह मैं कैसे कहूँ।

मुझे सुनते हुए सलोनी ने जितनी भी भंगिमायें बनायीं, सभी की सहज सात्विक और सुग्राहय भाषा थी, मन को छूने वाली भी थीं सभी। उनमें

किसलयी पुलक थीं और मेरे प्रति अगाध सौमनस्य भी। शायद अभी–अभी दद्दा को मैंने जो उत्तर दिया था– उसके मन की किसी न किसी पर्त में था वह। यकायक वह दूसरे कमरे में ढुलक ली। मेरे अनुमान से किवाड़ की ओट में छुपी है वह। समझा होगा कि वहाँ पर उसकी मौजूदगी बहुत जरूरी नहीं, तो मैंने अपनी आवाज कुछ ऊँची की– 'चलता हूँ अब दद्दा जी, इस विनती के साथ कि कुछ दिन तक आप टहलने–वहलने के लिए न निकलें, बुजुर्ग जो लॉन या पार्कों में खड़े होकर ठहाके मारते हैं– मेरे विचार से वह उनका बेहूदा आचरण है क्योंकि पूरी टोली में कोई–कोई ही हँस पाता है, ज्यादातर लोग हठात ठहाके लगाने की कोशिश करते हैं। इससे आपकी उमर वाले बुजुर्गों को कतई फायदा नहीं। बस आप टोली के सभी लोगों को मनोरंजन और संस्कार देने वाले किस्से ही सुनाया करें।

मेरी इतनी लम्बी तकरीर के वक्त सलोनी पास ही आकर खड़ी हो गयी थी। निश्चित रूप से अपने पिता के लिए मेरी सलाह उसे पसन्द आयी, उसकी प्रतिक्रियाओं को दद्दा भी पढ़ रहे थे। फिर बोले– किस्से सुनाते हुए आपने भी सुना है मुझे ?

जी !

क्या करूँ भैया ! टोली में युवा वर्ग में अधिकांश आपस में ही बात–बात में उलझ जाते हैं तो उनका ध्यान दूसरी तरफ आकृष्ट करने के लिए मैं कोई न कोई क़िस्सा सुनाने लगता हूँ। ये भारतीय इतिहास की कुछ चर्चित घटनाओं से सम्बन्धित होते हैं, पंचतंत्र और दूसरी कुछ उपयोगी पुस्तकों से भी।

विवेकानन्द और स्वामी रामकृष्ण के बारे में भी उन्हें आप बताया करें कुछ न कुछ .....मैंने सुझाया।

बताया है लखन जी। देश की कोई राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक विभूतियों के बारे में बताते रहने की सभी ने इच्छा भी कई बार जाहिर की है। लखन...... मैं तो इतिहास और सोशियालाजी का विद्यार्थी रहा हूँ ना !

मुझे बात आगे न बढ़ाने के लिए सलोनी ने अपनी आखों तथा हाथ के सहारे संकेत किये। उद्देश्य था यह बताना कि फिर वह दो घण्टे तक किस्से ही सुनाते रहेंगे। मुझे लगा कि आज इतना समय और इतनी बातें मुझे सलोनी के करीब लाने में बड़ी कारगर रही हैं हालांकि अभी मेरे मन में कतई यह बात

नहीं कि अपने लिए उससे विवाह का स्पष्ट प्रस्ताव करूँ तो वह मान भी जायेगी। मैं चाहता हूँ कि भविष्य में सम्भावित मेरी सफलताओं, मेरे व्यवहार और इस शहर में मेरे खानदान की ख्याति के आधार पर पहले वह खुद अपने मन में मेरे प्रति अपनी आसक्ति के अंकुर पैदा करे। अ..... अच्छा दद्दा, कम्प्लीट रेस्ट प्लीज। आई मीन नो स्ट्रेन ऑफ एनी डिग्री इज एडवाइजेबुल ! वैसे भी डाक्टर लोग सीनियर सिटीजेन और सेहत से कमजोर लोगों को ठंढ़ से बचने की सलाह करते हैं। मेरे ख्याल से पूरी बात आप भी समझ रही हैं सलोनी जी। ......और हाँ दद्दा ! मैं अपना कार्ड छोड़े जा रहा हूँ– बताइयेगा जब भी मेरे लायक कोई सेवा हो।

x x x

उस दिन दद्दा जी के घर से अंधेरा हो जाने के बाद ही वापस हो पाया था। उस वक्त मेरे घर का माहौल अचरज भरा था। अचरज भरा इसलिए कि मुझे किसी प्रसन्नता पैदा करने वाली बात की कोई सूचना नहीं थी। पूजा प्रकोष्ठ में देवी देवताओं के सामने एक डिब्बा लड्डू और एक डिब्बा कलाकंद खुले हुए रखे थे। अगरबत्ती, धूपबत्ती, घी में डुबोई हुई सात बत्तियों वाली आरती ल़गातार घुमाती हुई माँ की आँखें खुशी और संतोष से चमक रहीं थीं, भाभी जी और कैटी भी किसी खुशी विशेष से लबालब थे। वे और रग्घू घंटा–घड़ियाल और शंख बजा रहे थे इस तन्मयता से जैसे सभी की कोई अहम मुराद पूरी हो गयी हो। आरती गायन के दौरान मैं अपनी हथेलियाँ चिपकाये हुए बड़े अनुशासित तौर पर सबके साथ शान्त खड़ा रहा; कनखियों से भाभी तथा कैटी के मनोभाव रह–रहकर पढ़ने की कोशिश कर लेता– यही कि सभी को आज किसी स्पेशल बात की खबर है जिससे हो सकता है मेरा भी कोई सरोकार हो। शंख में आखिरी फूँक मारकर कैटी यकायक मेरे पास आयी। बताया– 'पापा को इलाहाबाद में किसी नये मुकदमें के सिलसिले में कल भी हाईकोर्ट में रहना है... बाकी बात तब बताऊँगी जब मुझे आइसक्रीम खिलाने का वायदा करोगे।

भाभी बोली– चुप भी रह चटोरी, इतनी ठंड़ में आइसक्रीम ! बिना किसी सौदेबाजी के तू असली बात क्यों नहीं उगलती। अंकल तो बिना कहे भी तुझे आइसक्रीम खिलाते रहते हैं।

बोली वह– हूँ ऽऽऽ समझ गयी मैं माँ का इशारा.... तो कोई बड़ी चीज

की फरमाइश करनी चाहिए।... ठीक ! अंकल मुझे एक स्कूटी चाहिए, अब रिक्शे से कालेज नहीं जाऊँगी।

बेटे ! अभी तो मैं तुम्हारी मम्मी से...... और तुम्हारी दादी से ही जेब खर्च लिया करता हूँ।

बोली वह– ज्यादा से ज्यादा एक दो महीने तक और जेब खर्च दिया जायेगा, उसके बाद लिस्ट से अपना नाम नदारत समझो।

......भाभी ने बीच ही में मेरा हाथ पकड़ा– 'चलो, अम्मा जी ही पूरी बात बतायेंगी तुम्हें।' खींच भी लाई वह मुझे माँ के पास।

बड़े गर्वपूर्वक बोली वह– अरे मुये, तू कलेक्टर हो गया है, पढ़ लेना कल सभी अखबारों में। बेटे ने इलाहाबाद से पाँच बजे फोन से ये खबर दी है।

आत्मतुष्ट मैंने माँ, भाभी और भतीजी कैटी के पाँव छुये थे। दण्डवत् लेटकर देवी–देवताओं के भी प्रणाम किये थे। फिर उठकर सभी के चेहरों को छुछुवाता हुआ बोला– अपनी दाई भुजा को आकश की ओर तानकर मैं कैटी का अंकल अपनी कैटी के लिए घोषणा करता हूँ कि सर्विस शुरू करने के दिन मैं कैटी को जरूर से जरूर एक बढ़िया सी नयी स्कूटी भेंट करूँगा.... अरे पैसे अपने भैया से ले लूँगा, वह वापस तो माँगेंगे नहीं; फिर भी सारी रकम अपनी सहूलियत के मुताबिक उन्हें चुकता भी कर दूँगा।

सभी ने देर तक तालियाँ बजाई थीं। रग्घू को तो जैसे तीनों लोक का राज मिल गया था.... तो मैंने उसके लिए भी नया कुरता, धोती, टोपी और गम्छा देने का वायदा किया।

हुँ हुँ हुँ हुँ करके कैटी हँसने की कोशिश कर रही थी, फिर बोली– रग्घू काका जूतों की खातिर क्या करना होगा फिर ?

अरे वेरी सॉरी रग्घू जी, इस लिस्ट में जूते भी जोड़े देता हूँ।

लेकिन भैया जी, रबड़ वाले लूँगा, चमड़े वाले नहीं चलेंगे। रबड़ वाले जूते चाहे दिन में दस बार भीगें.... हफ्ते–हफ्ते साबुन से धुलाई पर वह खिलखिला उठते हैं।

अरे वाह भाई– एवमस्तु।..... समझे क्या बोला है। मतलब चाहे भाभी से पूछ लो चाहे माँ से।

कैटी बोल पड़ी– मतलब है कि तुम्हारी मनोकामना पूरी होगी। इस बात पर रग्घू ने बड़ी खुशी जताई। कैटी ने तालियाँ पीटी थीं।

तुरन्त ही अपने स्टडी रूम आया। सोचने लगा– मेरा कान्टैक्ट नम्बर दद्दा जी के घर में है ही। कल न्यूज पेपर्स में मेरे सेलेक्शन की जानकारी होने पर वह मुझे निश्चित रूप से बधाई देंगे। पास ही खड़ी सलोनी के मन में भी मेरे सांकेतिक निवेदन के प्रति कुछ न कुछ रुचि पैदा होगी। मेरा अनुमान मात्र है यह। ......यकायक रैक में उलझी–पुलझी और बेतरतीब पड़ी किताबों को देखने लगा था। कम्पटीशन की तैयारी के दौरान ये सभी मेरे साथ में रात–रात जगीं, दिन में भी आराम नहीं कर पायीं। बेहोश सी पड़ी ये कलमें, रोशनी करने का ठेका लिए और अपनी जिन्दगी को फुलस्टाप तक पहुँचाने में सतत तल्लीन ये बल्ब और ट्यूब कम सम्मान के पात्र नहीं। गुरुदेव बजरंगबली और ज्ञान..... और सफलता सुलभ कराने वाली वीनाधारिणी माँ भी आशीर्वचनों के कुंडल कवच पहनाती रहीं, इन्हें धन्यवाद करने के लिए मेरे पास शब्द ही नहीं, आजीवन इनका नमन करते रहने का वायदा ही कर सकता हूँ। सोचते–सोचते इनकी प्रतिमाओं के पास पहुँचा, मस्तक रख दिया था उनके चरणों पर।..... फिर माँ के कमरे में गया। पापा की तस्वीर को एकटक निरखती हुई वह खुशी के आँसू ढुलका रही थी। उन्हें उनके ही आँचल से पोंछा, उनसे बालक की तरह लिपट भी गया, भावुकता तथा आसक्तिवश कई बार प्रणाम भी किये उनके।

मोहित याद आया। मोबाइल पर उंगली दौड़ाई तो बोला वह– क्यों भाई, ठीक तो हो ?

ठीक ही हूँ, बिल्कुल ठीक।

पता नहीं, सही है या गलत– कोई कह रहा था पीसीएस का रिजल्ट कल देखने को मिल सकता है।

मैंने बताया– पीसीएस नहीं आईएएस का। एक खुशखबरी है मोहित, बड़े भैया को दिल्ली के किसी दोस्त से किसी तरह पता चल गया है कि मेरा कुछ तो हुआ है।

मेरे लिए नहीं बताया क्या भैया ने कुछ ?

मैं तो घर पर था नहीं, चार–पाँच बजे के करीब माँ और भाभी से उनकी बात हुई थी। मैं होता तो जरूर पूछ लेता। वैसे मुझसे तो वह तुम्हारे लिए खुद

भी बताते।..... अरे घबराने की क्या बात! तुम्हारे तो सभी पेपर बढ़िया हुए थे। मेरा एक पेपर थोड़ा हल्का गया फिर भी नसीब किसी हद तक तो कारगर रहा।

देख भाई लखन, अपना नाम जिसमें भी पहले देखूँगा – उसी को अपना नसीब समझूँगा।

ठीक, हौसला बनाये रख। प्रापर के लिए मुझे भी तो एक चान्स और लेना पड़ सकता है, अगर इस वाले में सफलता नहीं मिल पायी।.....अच्छा ओ के!

x x x

बायोडेटा से लिपटे सलोनी के फोटो देखने लगा था। सोचने भी लगा– अगर ये जरूरत से ज्यादा महत्वाकांक्षी न हुई और मेरे बारे में सोचती भी होगी तो भी अपनी बात मुझसे कहने में उसे संकोच तो होगा ही। मैं स्वयं अगर साफ साफ लफ्जो में प्रपोज करता हूँ तो वह स्वाभाविक रूप से सोच सकती है– आज कल के ये लड़के किसी भी लड़की को किसी न किसी बहाने गर्लफ्रैण्ड बनाने में ज्यादा दिलचस्पी रखते हैं, संयोग याकि दो आत्माओं के मिलन वाली थ्योरी पर बाद में आते हैं, तब जब चार–छः दिलफेंक लड़कियाँ उनके जीवन का काफी इतिहास रच चुकी हों। ..... वैसे मैं ऐसे स्वभाव वाला नहीं लेकिन वह बेचारी जाने भी क्या मेरे बारे में। अभी हफ्ता भी तो नहीं पूरा हुआ हम दोनों को मिले। ......लेकिन कल सुबह के बाद मेरे प्रति उसके व्यवहार में मनमुताबिक तबदीली आ सकती है। उसके बाद देर तक वह बैठेगी मेरे पास, अपने कालेज की लड़कियों और शहर में आयेदिन घटित हो रही युवाओं की मटमैली हरकतों– चेन स्नैचिंग, चेहरे पर तेजाब का छिड़काव, किडनैपिंग और शीलभंग जैसी बातों की बाबत खुलकर बतियायेगी। इसकी जानकारी में नहीं कि अभी मैं कुँवारा हूँ, वर्ना अपने घर पर आने की प्रत्याशा में वह चाय या कॉफी के साथ गाजर का हलवा, बेसन की पकौड़ियाँ, छोले–बटूरे, इडली– दोसा जैसे कोई न कोई आइटम पेश करती; बार–बार आग्रह करती– ये थोड़ा सा और ले लीजिए लखन जी– मन की सारी बातें आँखों–आँखों में ही कह जाती।...... वैसे संघर्षशील है वह। पढ़ी–लिखी और समय की सुनामियों से जूझती हुई औरतों को अपने आप पर यकीन भी होता है, वे मूल्यों के तार पर चलने में भी नहीं डगमगाती। सलोनी वैसी ही मुझे दिख रही है जिसकी बड़े भैया रोज–रोज देवी माँ से प्रार्थना करते हैं– 'पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्यानुसारिणीम। तारिणीम दुर्ग

संसार सागरस्य कुलोद्भवाम।' हँसता हूँ एक सेकण्ड के लिए..... अक्सर सुनते–सुनते मुझे भी याद हो गया ये श्लोक! ओफ् कितनी असरल होती है संस्कृत!..... लेकिन समझ में भी आ जाती है।

मैं पुनः सलोनी की बाबत गुनने लगा– माँ भैया और भाभी जितने पुरातन सोच वाले हैं उतने ही आज के जमाने से जुड़े हैं, उन्हें सलोनी पसन्द आनी चाहिए।...... लेकिन कोई रुकावट सामने आयी, तब क्या होगा?..... आइडिया! आइड्यिा!! कैटी संभाल लेगी पूरे परिवार को। लेकिन सभी तो कल से शुरू होने वाली श्रीमद्भागवत पुराण–कथा की तैयारी में लगे हैं! तो भी कोई हर्ज नहीं– कैटी को पुराण से ही कोई न कोई प्रसंग मिल जायेगा विवाह वार्ता में उत्पन्न गतिरोध को हल करने के लिए।... अक्सर सलोनी की पब्लीसिटी करेगी– दादी! हर तरह से अव्वल है वह। अव्वल से भी अव्वल! संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी भी यूँ बोलती हैं कि सारी टीचरें प्रिन्सीपल, बच्चे और गार्जियन्स उसे देखते ही रह जाते हैं। उसकी जैसी रेपूटेशन की तो कोई दूसरी मैम ही नहीं।

सोचने लगा– कल सुबह ही खास–खास सारे पेपर्स खरीद लाऊँगा, अंग्रेजी के भी, हिन्दी वाले भी। बार–बार उन्हें पलट पलटकर देखूँगा। मोहित, मयंक, पारिजात, नवीन और विजय के रोल नम्बर या नाम तलासूँगा। सेलेक्ट हो जाने वाले साथियों से काम्प्लीमेंट्स का एक्स्चेज करूँगा, मायूसी की फिसलन के शिकार साथियों का हौसला बढ़ाऊँगा– हिम्मत से काम लें, कान्फीडेन्स बनाये रखें, हो सकता है..... यकायक चिन्तन चक्र फिस्स करके रहा गया, ठीक वैसे ही जैसे गर्मी के मौसम में बिजली के विरह में सीलिंग फैन। ....और मैं सो गया।

६

पाँच बचे ही सारी प्रातःकालीन चर्या निपट ली। शेव भी कर ली, कुरते–पाजामा से लिपटी देह शाल से ढककर पहले से ही मालूम एक नतीजे को अखबारों में देखकर गदगद होना चाहता हूँ। मेरा वाला हॉकर सायकिल पर सर्कस करता हुआ एक झोंके की तरह आया। रबरबैण्ड से कसे हुए रोज दिये जाने वाले दो अखबार फेंके। फटाक–फटाक...... जैसे बहेलिये के तीर से घायल दो पक्षी फर्श पर गिरे हों। तुरन्त ही आवाज दी– अरे जोशी, जोशी जी!

और कौन–कौन से पेपर हैं तुम्हारे पास ? चाहिए मुझे।

कौन सा चाहिए बाबू, सभी तो हैं मेरे पास। जागरण तो दिया ही, स्वतन्त्र भारत, हिन्दुस्तान, नव भारत टाइम्स, अमर उजाला, पंजाब केसरी, जनसत्ता एक्सप्रेस ! टाइम्स या पानियर। अरे जल्दी से बताइये वर्ना लेट हो जाने पर मैं सभी बाबू लोगों की डाट खाते–खाते पस्त हो जाऊँगा।

तो सभी की एक–एक कापी, और अंग्रेजी वालों की भी एक–एक कापी निकाल दें। बात की बात में शहर से साया होने वाले सारे ही समाचार पत्र मेरे हाथ में थे। सिर्फ अपना रिजल्ट खोजने लगा। अरे ताज्जुब इलाइड में कहीं भी नहीं हूँ मैं ! ऊष्माशून्य सा हो गया मेरा शरीर। सोचने लगा, भाग्य को सर झुकाना ही पड़ेगा। तब तो बड़े भैया जी की सूचना ही सही होनी चाहिए। अरे अरे अरे .... धन्यवाद ईश्वर, मुझे तो मनचाहे वरदान दे दिये आपने। बड़े भैया और अम्मा वगैरह के लिहाज से कितनी महत्त्व वाली है यह बात। इसे मैं माँ या फिर भाभी से ही उन्हें कन्फर्म कराऊँगा। कैटी से सूचित कराना तो और अच्छा रहेगा।..... तुरन्त अपने स्टडी रूम में गुरुदेव श्री हनुमान, माता सरस्वती तथा शिव परिवार के चरणों में अखबारों की एक एक प्रति डाल आया। एक बार फिर विचार श्रृंखला बनने लगी... 'वाकर्स आज मुझे दूसरी नजर से देखेंगे, मुझे रोज से अलग वाली पहचान देंगे'– इस लालच में जैसे था वैसे ही चल दिया हवा खोरी के लिए। सेंचुरी पार्क के मेन गेट पर पहुँचा ही था कि सक्सेना साहब मिल गये। खुद बताया करते हैं कि बीस साल हो गये उन्हें पेंशन लेते लेते। आज ये पार्क तक स्कूटर से चलकर आये। खुशमिजाजी से लबालब तेज आवाज में बोले– बधाई, तुम्हें मेरी बधाई लखन बेटे। गारद बाबू शहर में वकालत का झण्डा फहरा रहे हैं तो तैने भी अपना झण्डा अफसरी वाला भी लहरा दिया। इतने में ही और चार–पाँच लोग हमारे आगे पीछे और दाये बायें खड़े हो गये। सभी को सक्सेना ताऊ अपने आप बताने लगे– मेरा भतीजा है ये। आज के सभी पेपर्स में पढ़ी होगी आप लोगों ने– ये जिला मजिस्ट्रेटी के सिलेक्शन में आ गया है ! सिर ऊँचा कर दिया इसने हम लोगों का और इस शहर का। बेटे ! आईएएस में फर्स्ट पोजीशन क्यों नहीं लाये ?

ताऊ ! वो तो हमेशा ही फिल्मी हीरो के हिस्से पड़ती है, इस पर किसी दूसरे का कभी भी अधिकार नहीं रहा।

मेरी इस बात पर सभी लोग ठहाका मारकर हँसे थे, फिर आगे बढ़ लिये। आज की बातों से उन्हें उम्दा सा मजमून मिल गया था। मैं भी आगे बढ़ने को हुआ तो घुरघुराते स्कूटर को खड़ा करके वह एक बार फिर मेरे नजदीक आये। बोले– बस, पहले ही प्रयास में सही निशाना मार चुके हो, ऐशोराम की जिन्दगी काटो। अब कोई सालिड बात करो।

सालिड क्या ताऊ ?

यही अपनी शादी की। किसी अच्छी और अपने कद और पोस्ट के लिहाज से सही लगने वाली लड़की से शादी कर लो। मैं बताऊँगा... मैं ही बताऊँगा गारद बाबू को कल शाम तक ऐसी लड़की कुण्डली–पुण्डली भी लानी होगी न!

ताऊ! बहुत ठीक है आपकी सोच, वर्ना मेरी मजाल कि घर के किसी से भी कहूँ कि मैं फलाँ से शादी करूँगा।

ये तुम मुझ पर छोड़ो। क्या है कि एक अच्छा बच्चा है मेरी निगाह में।

ठीक ताऊ जी! मैं अब चलूँ ?

अरे बेटे! मौज करो, तरक्की पर तरक्की करो, हम अपनों के नाम रोशन करो। क्या है कि अगर सही और निभाने वाली लड़की न मिली तो पती और उसके घर के दीगर लोगों की जिन्दगी नर्क बन जाती है। अ.... अ ऽऽऽ मैं बताऊँ तुम्हें, कई किस्से हैं मेरी जानकारी में।

ताऊ आज छोड़िये। रात में तबियत कुछ ठीक नहीं थी तो ठीक से नींद ही नहीं आयी।.... लेकिन आज आप स्कूटर से कैसे ?

कानपुर जाना है न, तो सोचा पार्क में थोड़ा ही टहल लेंगे, इतने रास्ते के लिए कार क्यों निकालूँ।.... और भैया एक बात। सरकार जब पिटरोल के दाम बढ़ाती है तो जैसे कीड़ा मार दवा स्प्रे करती है। वास्तव में उसे सारी प्रजा किचेन के तिलचट्टों की तरह ही दिखती है। ए हे हे हे!

हाथ से मेरी बांह पकड़कर अपनी बात जारी रखी– देर हो जायेगी, उस हालत में नहीं भी जायेंगे क्योंकि कल शाम तक का प्रोग्राम मैंने खुद ही तो बनाया है– गारद बाबू से मिलने का। अब नहीं ही जाऊँगा कानपुर। अब एक ही टारगेट है मेरा।

सक्सेना साहब अपनी बातों में मुझे और भी उलझाये रहते कि मुझे एक

तरकीब सूझी। कुछ लोगों की ओर देखकर हाथ उठाकर जोर से चिल्लाया– आया भाई आया, बस एक मिनट और। सक्सेना साहब से फिर मुखातिब होकर बोला– 'ताऊ, मेरे वे दोस्त मिलना चाहते हैं, मिल आऊँ वर्ना बुरा मानेंगे।' उनके हाँ या ना का इन्तजार किये बगैर तुरन्त ही मैं चल पड़ा उनके पास से।

आगे चार–पाँच लोग वास्तव में मेरी प्रतीक्षा में रुके हुए थे। इनमें सचिन भी था। धीरे–धीरे सभी की जानकारी में आ चुकी थी मेरे रिजल्ट की बात, तो एक--एक करके बड़ी धीमी आवाज में 'कांग्रेट्स' कहकर किसी ने सिर्फ उंगलियाँ मिलाई, किसी ने हाथ। काफी ऊँचे कद वाले एक बुजुर्ग ने मेरी पीठ ठोंकी। सचिन ने उलाहना सा दिया– और मुझसे कैसी बेरुखी भाई ?

माफ करना सचिन, आप तो अपने ही हो। मैंने समझा कि इन लोगों से पहले शिष्टाचार निभा लूँ। ....हाथ जोड़ते हुए मैंने माफी की याचना की। आज शुभी भाभी नहीं दिख रहीं ?

अरे यार, आजकल वह पस्त है अपने आफिस के काम से। शाम को आठ बजे तक आ पाती है, वह भी लैपटाप साथ लेकर।

वैसे सेहत ठीक है ?

ओ यस ! दैट इज देयर। टाइम से उठना, ब्रेक फास्ट तैयार करना, सारा कुछ वही रोज जैसा। लेकिन तुम इस बीच नहीं दिखाई पड़े। क्या बाहर चले गये थे फिर... ?

नहीं, एक नई कम्पनी से बड़ा प्यार मिला तो एक दो दिन उसी के साथ टहलता रहा। एक रिटायर्ड डी.आई.ओ.एस. यहीं एक दिन ठहाके लगाते–लगाते बीमार पड़ गये थे।

तो ?.... सचिन की जिज्ञासा असहज थी।

तो क्या भाई ! साथ था, इसलिए कुछ फर्ज भी बना। हम दो तीन लोग सुबह–सुबह डॉ. सर्वांगी के यहाँ ले गये, ग्लूकोस चढ़वाया फिर उन्हें घर भी पहुँचा आये। कह आये हैं कि उनकी ठीक–ठीक चेकअप् जरूरी है। इन डाक्टर ने होमोग्लोबिन टेस्ट कराने की सलाह की थी। पता नहीं वह क्या कुछ कर पाये। उनके साथ शायद कोई मेल मेम्बर नहीं; कोई रिश्तेदार भी हैं इस शहर में या नहीं– मुझे ये भी पता नहीं। .....उनकी बातों से अनुमान जरूर लगा पाया कि कोई तो है उनका नजदीकी लेकिन शायद कहीं और....। गुजरात या मध्य

प्रदेश में। उनकी बात से कभी–कभी लगा वह कहीं मर्चेण्ट नेवी में है...यह भी सचिन भाई हम ठीक–ठीक नहीं कह सकते क्योंकि बातें वह साफ–साफ नहीं कर पा रहे थे। मर्चेण्ट नेवी में ही हुआ तो अभी शादीशुदा भी न होगा, मजे से उड़ा रहा होगा मच्छी के पकौड़े और बिलायती अंगूरी। ....तो सोचता हूँ आज किसी वक्त जाकर देख आऊँ उन्हें। भले हैं, बहुत ही भले आदमी हैं वह। ....इसके अलावा अब तक रिजल्ट वाला टेंशन था ही– क्या होता है, क्या नहीं; शकोसुबहा तो रहती ही है जबतक....

नैचुरल है..... बिल्कुल स्वाभाविक है ऐसा होना। ....सचिन ने ऐसा कहते हुए उदासी भरे चेहरे के ओठों को हरकत दी। अबतक शुभी पेपर्स देख चुकी होगी। वह तो बड़ी ही खुश होगी तुम्हारी सक्सेज से।

सर..... चलता हूँ आगे नहीं जाऊँगा अब। रात में नींद भी कम आयी। दोस्तों को भी फोन पर सम्पर्क करना है।

ओके..... कहते हुए सचिन ने आगे की राह ली थी। मैं भी घर के लिए लौट पड़ा। अस्लियतन सोचा यह कि आज टहलना कम होगा और बधाइयों के जवाब देने की बात ज्यादा। फिर कैटी के स्कूल जाने के पहले–पहले ही लौटना भी जरूरी है। बड़े भैया इलाहाबाद से शायद कल तक लौटें, मोबाइल पर उनका आशीर्वाद भी लेना होगा। ......मुझे लगा था जैसे सचिन दम्पति को अब तक दद्दा की बीमारी की खबर नहीं। सोचने भी लगा– समझ में नहीं आयी सचिन की बात। टेंशन भी है शुभी को, ...टाइम टेबुल के मुताबिक उसकी डेली रुटीन भी है, उधर मार्निंगवाक भी फिलहाल बंद है। खैर..... मेरी सूचना का बेटे–बहू पर क्या कुछ असर पड़ता है– देखना है अभी।

१०

लखन के घर वापस होते ही किचेन, अम्मा के पूजन-स्थल याकि पूरी कोठी में खुशियाँ फुदकती दिखीं; आँखें खुलते ही रिजल्ट की स्पष्ट जानकारी से सभी और भी ज्यादा खुश थे। मैंने उनके पाँव छुए, कैटी के भी। ऐसा करते ही शुरू हो गयी वह– ये मेरे पाँव बार–बार क्यों छू लेते हो अंकल, स्कूटी हर हालत में ले लूँगी। ....मेरी नज़र में मक्खनबाजी की कोई अहमियत नहीं।

'और मैं अपने कुरता, धोती, सदरी, टोपी और जूते में कोई भी आइटम

कम नहीं करूँगा भइया जी। दही जलेबियाँ खस्ते और चरफरे स्वाद वाली सूखे आलू की सब्जी डायनिंग टेबल पर सलीके से सजाते हुए रग्घू भी वहीं से चिल्लाया। शायद इतने से ही संतुष्ट नहीं था वह..... भाभी, बड़े भैया और अम्मा जी से भी सौ–सौ रुपये लेने का निश्चय जताया।

तुम दोनो बताओ– अपनी बात आज तक कब पूरी नहीं की मैंने ? लेकिन सौ–सौ के नोट लेने वाली बात की चर्चा तो पहले नहीं थी। क्या करोगे ये ?

कुछ पैसे मैंने इकट्ठा किये हैं, तीन सौ और मिलाकर मोबाइल फून ले लूँगा। इसे लेकर चलने से अगल बगल के लोग बड़ी इज्जत से देखते हैं।

अम्मा बोली– लो इसे मोबाइली इज्जत की पड़ी है। कलेक्टर लखन की गाड़ी में बैठने से जैसे इज्जत ही नहीं कोई।

नहीं अम्मा जी, मैं रहूँगा यहीं,

ठीक है, कभी–कभी तो जायेगा लखन के बंगले।

हाँ अम्मा जी, किसी नगीच के जिले में हुए तो अक्सर मैं जाकर इनकी गाड़ी पोछ आया करूँगा। किसी को पास नहीं फटकने दूँगा तब।

बात का रुख बदलने के सबब से अम्मा जी बोली– दही कम लाया तू, जलेबियाँ ज्यादा मीठी ! मेरे लिए थोड़ा दही फ्रिज से भी दे देना बहू।

आपका रग्घू दे देगा माँ जी, इतनी सी बात के लिए कैटी बिटिया की मम्मी क्यों परेसान हो ?

तुरन्त बाद कैटी चिल्लाई अखबारों को आसमान की तरफ ताने हुए– कालेज में आज मेरा नक्शा रहेगा। प्रिंसीपल और सभी एक ही बात करेंगे दिनभर।

कालेज के लिए रिक्शे पर बैठने से पहले ही मैंने कैटी से कहा कि वह रोज से दस मिनट बाद पहुँचे। उधर वहाँ सभी का मुँह मीठा करने के लिए रग्घू से दो किलो मोतीचूर के लड्डू भी मँगवाये। एक–एक किलो के दो डिब्बे। बिल्ली की चाल में वह लौटा भी। अपनी रणनीति के तहत ही मैंने कैटी से कहा– जो मैम तुझे ज्यादा अच्छी लगती हों उन्हें दो–दो लड्डू दे सकती हो। तुरन्त भाँप गयी वह मेरा आशय। बुदबुदाई– बेकार में सभी में बाँटना मेरे रुतवे को कम करेगा तो चुपके से दूसरा वाला डिब्बा मैं सलोनी मैंम को दे दूँगी। दबे पाँव मेरे

पास आकर छेड़ा भी मुझे– कैटी सब जानती है बच्चू.....ए..... लो, रिक्शा वाले ने जल्दी चलने की घण्टी भी बजा दी।

सोचने लगा– बीमार होने की शाम को दद्दा जी को देखने गया था। सलोनी थी तब। उसी ने कैटी को दिया होगा पूरा वृत्तान्त। ...तो रिक्शा वाले ने पैडिल पर पाँव मारा ही था कि मैंने रिक्शे को पकड़कर पीछे घसीट लिया। कैटी से बोला– 'मैंम के फादर की बीमारी वाली शाम को हालचाल जानने के लिए मैं गया था। यह भी कहने कि वह होमोग्लोबिन का टेस्ट जरूर करा ले, तब उसके आधार पर ही किसी बढ़िया डाक्टर से बात करना ठीक रहेगा! पता नहीं कराया ये टेस्ट या.... ! बहरहाल पूछ लेना उसे डिब्बा थमाते वक्त।'

कैटी ने मेरी बात सुनी तो ध्यान से लेकिन कोई प्रतिक्रिया जाहिर न करके रिक्शेवाले से कुछ खीझ में बोली, 'चलो ना भाई, देरी करके क्लास में दाखिल होने से कितनी बेइज्जती होती है, इसका अन्दाजा तुम्हें नहीं शायद। यह बात उसने मेरे लिए कही थी जिससे कि उसे ज्यादा देर तक बातों में न उलझाऊँ। मैंने हाथ की उंगलियाँ हवा में लहरा दीं। फुसफसाने लगा मन ही मन– भतीजी है, तेजतर्राक है लेकिन व्यवहार में ज्यादा परिपक्व नहीं, इसलिए सलोनी की बात कैटी से बड़े एहतियात से ही कहना ठीक था।

बड़े भैया से बात करनी ज़रूरी थी। अब वह होटल सम्राट् के सूट में नहाधोकर हाईकोर्ट जाने के लिए तैयार हो चुके होंगे– बढ़िया वक्त है यह! मोबाइल पर तर्जनी फुदकने लगी– इन्गेज्ड– आवाज आई– दि नम्बर यू आर ट्राइंग इज प्रेजेन्टली नाट रीचेबल। प्लीज ट्राई आफ्टर सम टाइम। मेरा ही मोबाइल एकायक संगीतमय हो उठा– जी बड़े भैया! प्रणाम.... आप ही का नम्बर मिलाने की कोशिश कर रहा था। हाँ जी जी जी... आपका ही आशीर्वाद काम आया। माँ भाभी ने रिजल्ट वाली आपकी बात बताई, पर यकीन नहीं हो रहा था कि ठीक–ठीक सुनी।

लखन! मैंने सुप्रीम कोर्ट के अपने एक मित्र से सम्पर्क किया था, मैं भी सोच रहा था कि उनकी इन्फार्मेशन ठीक है तो सब कुछ ठीक है, लेकिन कहीं उन्हीं की बात थोड़ी भी गलत हुई तो बड़ी निराशा की बात हो जायेगी। वैसे घुमाफिराकर कहा वही जो आज पेपर में तुम लोगों ने पढ़ा। अच्छा ये बताओ कि माँ और अन्नपूर्णा ने कैसा फील किया। खुश तो हुए ही होंगे लेकिन कितना

....और कैटी तो जा चुकी होगी।

बड़े भैया जी !माँ, भाभी रग्घू और कैटी की खुशी का कोई ठिकाना नहीं था। मैंने रग्घू के लिए कपड़े और कैटी को एक स्कूटी देने का वचन भी दे दिया है। कैटी तो अपनी टीचरों को खिलाने के लिए दो डिब्बे लड्डू भी ले गयी है।

ठीक है ठीक, चलता है ये सब। अच्छा जा रहा हूँ कोर्ट, रात में घर पहुँच जाऊँगा। टेक केयर। अरे हाँ, जस्ट ए मिनिट। ये सलोनी कौन है। कोई टीचर है शायद।...... अच्छा ठीक है..... लौटने के बाद बात करूँगा तुम लोगों से।

बड़े भैया के आखिरी वाक्यों का रहस्य मैं समझ नहीं पाया। शायद शहर के किसी आदमी ने, खासकर उसने जो दद्दा जी या सलोनी से किसी नाखुशी की वजह से मेरे उसके घर जाने–आने की बाबत कुछ कह दिया होगा। 'सलोनी कौन है ? शायद कोई टीचर है।' इस कथन से बड़े भैया की नाराजगी का इशारा मिलता है। लेकिन भैया का मोबाइल नम्बर उनके दोस्त ही जानते हैं.... मेरा मतलब उनके अक्सर मिलने जुलने वाले। शायद बड़े भैया के कान में कही गयी बात उन्हें कुछ तल्ख लगी है। देखते हैं वह क्या कहते हैं इलाहाबाद से लौटकर।

फिर सोचने लगा। कैटी की बाबत। लड्डू खिला चुकी होगी सभी टीचरों को। दूसरे डिब्बे वाले लड्डुओं का निस्तारण कैसे किया होगा, स्कूल से लौटकर ही बतायेगी। ....कहीं उसी ने या फिर भाभी ने बड़े भैया से तो नहीं कह दिया कुछ....।

एक बार फिर मोबाइल संगीतमय हो गया। बोला मैं– हलो। दद्दा जी थे दूसरी तरफ। अरे लखन जी ! मैं हूँ वकील तुम्हारे, तुम्हारा दद्दा– मेरी बधाइयाँ स्वीकारो बेटे। तुमने तो इस शहर का नाम रोशन कर दिया। बहुत उन्नति करो।

सलोनी का नाम मात्र का उल्लेख नहीं किया तो मैंने ही अपने ढंग से बात चलाई– कल शाम को या आज सुबह डायग्नास्टिक सेण्टर ह्यूमोग्लोबिन टेस्ट के लिए सलोनी ले गयी थी क्या ?

अरे वह कहाँ ले जा पायेगी। मेरा ही जब मन बनेगा अपने आप चला जाऊँगा। बताऊँगा तुम्हें। .....अरे वो आये थे जगत ताऊ अपने सक्सेना जी। शायद मिले थे तुमसे सेंचुरी पार्क के गेट पर। मैं तो तुम्हें बाल बच्चेदार समझ

रहा था, वैसे तुम्हारे लुक से मुझे यूँ नहीं सोच लेना चाहिए था।

वो तो कानपुर जाने वाले थे।

बता रहे थे। वह कुछ जल्दबाज किस्म के जरूर हैं पर हैं बड़े बढ़िया और अच्छे–अच्छों से रसूक वाले। मेरा तो सौभग्य ही होगा तुम्हारे परिवार से सम्बन्ध होना। .....हुआ ये कि उन्होंने बात की बात में गारद बाबू का मोबाइल मिला लिया, फिर फुलवारी की तरफ जाकर खुले में बतियाते रहे। लौटकर सिर्फ इतना बोले कि उनके कान में डाल दी है अपनी बात।..... अरे वह राजा भोज का परिवार है। पता नहीं इतने तेजस्वी व्यक्तित्व वे मेरे लिए क्या सोच रहे हों! प्रसन्न हुए हों या सक्सेना जी के माध्यम से जोर डलवाने की बात सोच रहे हों मेरे लिए। ....पता नहीं, मेरे पुत्रवत तुम भी मेरे बारे में क्या धारणा बनाये हो।........ तुम कुछ बोल नहीं रहे– मन ही मन बुरा तो न माने होंगे तुम्हारे बड़े भैया ?

दद्दा जी, बुरा क्यों मानेंगे। संस्कारी परिवारों को वह बड़े सम्मान से देखते हैं। एक बात पूछूँगा– आप में बिना किसी कारण के अपराध बोध क्यों। मैं तो खुद ही जानता हूँ कि आपने इस मुद्दे पर सक्सेना ताऊ को माध्यम नहीं बनाया।...... फिर आपका भी बड़ा सम्मानित परिवार है यह! खुद को कम क्यों समझो आप।

बेटे! ....दद्दा जी के स्वर में खुशी और करुणा का समिश्रण था।

इतना जरूर कहूँगा कि मुझे अपने साथ तो समझो लेकिन तयतारे का पूरा दारोमदार मेरे घर वालों पर ही है। तो भी एक विनती है कि सलोनी की रजामंदी जरूर ले लें। पढ़ी लिखी है, समझदार ही नहीं टैलेण्टेड भी है। मन से उसकी रजामंदी हो जाये तभी बड़े भैया से सम्पर्क करें।

किससे बात कर रहे हैं डैड? दद्दा जी के कमरे में प्रवेश करते ही सचिन ने पूछा। शुभी और वह कुछ ही देर पहले आये थे। आते ही सचिन ने इस बात पर नाराजगी दिखायी कि सेहत खराब होने की इत्तिला न उन्होंने दी न बहन सलोनी ने– पता चल पाया तो किसी दूसरे से। दद्दा जी ने कहा था– वह कोई गैर नहीं, मुसीबत में मदद करनेवाला सामान्य आदमी नहीं होता.... मेरे लिए उसे ईश्वर समझो।.... अंततः दोनों संतुष्ट थे उनके उत्तर से।

भैया और भाभी के आ जाने के कारण सलोनी ने प्रिंसिपल मैम को फोन

कर दिया था– दो बजे तक आ पायेंगी वह। उसने कॉफी और कुछ स्वादिष्ट चीजें दोनों के सामने रखते हुए कहा था– 'आप दोनों भी तो लगता ही नहीं कि इसी शहर में रहते हो। सोचना चाहिए ही कि कोई छोटी बहन भी है यहाँ और उसके सुख–दुख टेलीफून पर ही जान लिये जायें। खैर अब आप ये हलवा पहले खायें जिससे हमारी भूल की खटास खत्म हो जाय। आप से सॉरी–सतत्तर बार बोल सकती हूँ। आप गैर तो नहीं आखिर।' इन बातों के दौरान ही लखन और दद्दा की बात-टेलीफून पर शुरू हुई थी। तब सचिन के सवाल पर दद्दा ने इतना ही कहा था– है एक कोई। सलोनी की बाबत तो अपनों से चलती ही रहती है बातें।

इसी बीच दरवाजे की कालबेल बजी। सलोनी चली उस ओर तो शुभी ने कहा– तू बातें कर अपने भैया से, देखती हूँ मैं। रिक्शावाले ने अटैची बरामदे तक पहुँचाई ही थी कि लम्बी छरहरे बदन वाली एक औरत ने भावविभोर होकर शुभी को अपनी छाती से चिपका लिया– अरी मेरी सलोनी बिटिया ! तेरी सुध करते करते ही कोलकाता से लखनऊ तक के अठारह–बीस घण्टे बिताये।... हें यें..... तेरे हाथ पीले हो चुके और मांग में सेंदुर भी। जीजू की जादती है ये। कहाँ हैं वह ?.... उनसे पहली लड़ाई तो इसी बात पर करूँगी। ....अरे निमन्त्रण कार्ड न भेजना था तो टेलीफून पर ही बता देते।

आव आव शारदा। जिसे तुम सलोनी समझ रही हो वह शुभी है, तुम्हारी बहू। हमारी तुम्हारी लड़ाई अब अपने आप समाप्त..... या नहीं फिर। लेकिन अब बोलो– बिना कोई चिट्ठी–पत्री भेजे या टेलीफून किए अकस्मात इधर कैसे ? बताकर आती तो मैं स्टेशन पर ही स्वागत करता।

जीजू ! तो भी कोई परेशानी नहीं हुई। रिक्शावाले को सिर्फ बताना पड़ा– ग्रेन मार्केट वाले चौराहे पर चलना है। ले आया। तू एक चाय बना ला बहू तब मैं जीजू को बताऊँ कि सलोनी के लिए कोलकाता से कुछ लड़कों के फोटू लाई हूँ। शुभी के किचेन की तरफ जाते–जाते बोली वह– लौट ले बहू, तू भी रहेगी तो बालक पसन्द करने में आसानी रहेगी। क्या बताऊँ बहू, दीदी के नहीं रहने से मेरा मन कोलकाता में रहते हुए भी अपनी सलोनी के पास ही रहे। रातों में जाग–जागकर सोचती रहूँ कि कैसे अपनी बिटिया को अपने पास बुला लूँ। ......देख बहू, यह बालक मिसरा है, कानपुर देहात का रहनेवाला

लेकिन पूरा परिवार अब हाबड़ा मे रहे। धोती और बनियान थोक में बेचे। चौकी भर की जगह पर बैठे–बैठे ही तीनों लोकों के धन का मालिक बन चुका है। उम्र छब्बीस साल, ऊँचाई पाँच फुट तो होगी ही। ....और यह वाला अलीपूर तक जाने वाली मेट्रोटेन का ड्राइवर है– पहले ट्राम चलाता रहा। पिता पेठे और नमकीन का व्यवसाय करें, रसगुल्ले के सीलबन्द डिब्बे भी बेचें। उसका सामान पूरे बंगाल में मशहूर समझो। इज्जतदार आदमी हैं, सीधे–साधे और अपने काम से काम रखनेवाले। और हाँ बंगाल में रहकर भी मच्छी–मुसल्लम का स्वाद तक ना जाने। पर लहसन–प्याज खावें। धाँसू पार्टी है। दोनों में ही कोई बात मैंने ना छुपाई न किसी को लाट साहब की औलाद ही बताया।

शुभी बोली– जी।

क्या चाहिए औरत को या जिन्दगी में? दस हजार की साड़ी और दस लाख के जेवर से लदी फँदी बैठी रहे, नौकरानियों से हाथ–पाँव दबवाये, अपनी ससुराल को बाल–बच्चों और रुपिया–पैसा से भरापूरा बनाये रखने के लिए देवी देवतन से दुआ करे। ....जीजू! बहू और आप आपस में विचार कर लो फिर जैसा कहो। दोनों ही बालक अपने हाथ में समझो।

शुभी के मन की असली बात का पता न चलते देखकर शारदा फिर बोली– जीजू.... बहू को तो सांप सूंघ गयो, अब आप तो बोलो कुछ। मैं तो इतना जानूं कि मेरी बहन की बच्ची किसी गलत सलत हाथ में पहुँच गयी तो उसकी जिन्दगी ही बरबाद समझो। इसलिए जाना–पहिचाना और सीधा–साधा परिवार ज्यादा अच्छा मानो। अरे बहू, मैंने किसी रिक्शे वाले के लिए तो बात नहीं चलाई जो घोड़े की तरह दो बांसो के बीच में गली–गली दौड़े। आदमी हैं।.... अरे कहाँ है सलोनी।.... उसी से पूछूँ।

दद्दा बोले– शारदा, वह कालेज जाने की जल्दी में है। भागने ही वाली होगी। निर्णय लेने के लिए हम लोग तो मौजूद हैं। कमरे में पर्दे के पीछे खड़ी–खड़ी सुनी थी सारी बातें सलोनी ने। अपनी मौसी के पिछड़े सोच पर उसे बड़ा तरस आया था। सोचती रही– बात जनरेशन-गैप की ही नहीं, सोच से कई जनरेशन पीछे हैं मौसी। अपनी बहन की संतान के प्रति उसकी निष्ठा उसकी समझ के अनुरूप है, इसलिए हम सभी को हर हालत में पूर्ण मर्यादित भी रहना है। अपने गुस्से को काबू में किये रहने के प्रयोजन से उसने चाय लाने

में कुछ ज्यादा ही वक्त लगाया। ....फिर एक बार सचिन और शुभी ने चाय ली मौसी का साथ देने के लिए।

सभी के चेहरे छुछुआते–छुछुवाते मौसी प्रतीक्षा में थी उनपर उभरने वाले अक्षरों की। फिर पूछ ही लिया कि क्या कहना है क्योंकि उसे आज ही कोलकाता लौटना भी है। दो दिनों में उसे इन लड़के वालों को हाँ या ना भी बोलना ही है। सलोनी की भंगिमायें सभी ने अनमनी सी देखीं। वह चाहती थी कि कोई तो पहल करे मौसी को दो टूक जवाब देने में। दद्दा बोले– जिन्दगी भर का साथ निभाने की बात में इतनी जल्दबाजी ठीक नहीं शारदा। लड़के वालों को कितनी ही जल्दी हो, इतनी दूर अपनी कन्या भेजने में मेरा भी कलेजा चीत्कार करने लगता है। बोझ सी माँ–बाप के कंधे पर बैठी लड़की और मेरी सलोनी में फर्क है। इसके पास रूप–स्वरूप है, व्यक्तित्व है, बुद्धि की देवी सी दिखती है यह किसी को भी। दोनों फोटू तुम छोड़ जाओ, हफ्ते दो हफ्ते में हम अपना सोच–विचार कर लिया गया निर्णय चिट्ठी में लिखकर भेज देंगे।

जीजू मैं आपकी बात को टालू मिक्स्चर समझूँ क्या ?

क्यों सोचती हो तुम ऐसा ? दो और लड़के हैं विचार करने के लिए। एक जयपुर का है, असिस्टेंट इन्जीनियर है वह। दूसरा बंगलौर में एक साफ्टवेयर कम्पनी में।

दो ही तो हैं, चारों में एक साथ निर्णय लेना कोई मुश्किल काम तो नहीं।

तू समझ क्यों नहीं रही मेरी बात शारदा ! सलोनी को अपनी नजर से इतना दूर भेजकर मैं चार महीने भी तो नहीं जी पाऊँगा। आखिर क्या चाहती है तू ?... तू कल सुबह तक आराम करके कोलकाता लौट। औरत जात के लिए इतनी मशक्कत और हिम्मत दोनों ही गलत हैं।

शुभी और सचिन ने अपनी–अपनी कलाई में वक्त पढ़ा, भौंहे उछालीं और उठ पड़े– सल्लू ! मौसी का जैसा प्रोग्राम बने बताना, अगर हममें से किसी को भी वक्त मिला तो रेलवे स्टेशन तक पहुँचा देंगे। अब जानती है तू प्रायवेट नौकरी का हाल ! छुट्टियाँ तक कम्पनी के काम से लदी होती हैं। अच्छा बाबू जी, आज्ञा दीजिए। जब जैसी जरूरत पड़े किसी भी रंज को बिसराकर हमें बुला लेना।

मौसी के लफड़े की वजह से सलोनी कालेज नहीं जा पायी। उसके

यकायक टपकने से वह दुखी रही क्योंकि पता नहीं चल रहा था कि क्या और कैसी शक्ल लेगा उसका भविष्य। .....उसके लिए आज की संतोष देने वाली बात यही रही कि भैया और भाभी आये, सक्सेना ताऊ ने भी उसकी उम्मीदवारी लखन के बड़े भैया के दिमाग में दर्ज करा दी है। वह मन बना रही है कि बाबूजी से साफ–साफ शब्दों में भी कह दे कि शारदा मौसी के पक्ष में वह भावुकता से कतई काम नहीं लेंगे।

११

कैटी जी ! कैसा रहा आज का दिन तुम्हारे कालेज में ? रिक्शा से जमीन पर कूदते वक्त लखन ने कैटी को इस सवाल से लपक लिया। बैग को कंधे से लटकाये हुए बोली वह– 'ऐज एक्स्पेक्टेड अंकल। लड्डू भी कम नहीं पड़े। पर हाँ, सलोनी मैम आज पूरे दिन नहीं दिखीं। उन्हें एक डिब्बा मिठाई आप खुद जाकर दे आना। नाशुकरी ऐसा कहकर एक मिनट भी नहीं थमी मेरे पास। तो मन ही मन कई चिन्ताओं ने मुझे घेर लिया– कहीं दद्दा की तबियत ज्यादा खराब तो नहीं हो गयी–ं सलोनी को डाक्टर बुलाना पड़ा हो। लेकिन कुछ घण्टे पहले मैंने उनसे बात की थी। उनके लहजे में कोई बदलाव नहीं था। वह तो सक्सेना जी की बड़े भैया से हुई बातों का हवाला भी दे रहे थे। तो अवश्य ही कोई दूसरी वजह है सलोनी के कालेज से गायब रहने की। मेरी सफलता के विषय में भी चुप रही है वह, शायद वह स्वयं के प्रति कोई हीन भावना या संकोच से ग्रस्त हो। जो भी कारण हो, सलोनी की बड़े भैया से किसी चर्चा के बिना उसे उसके घर नहीं जाना चाहिए, इसलिए भी कि माँ और भाभी भी शायद भैया के संकेत पर ही इस बारे में मौन लगते हैं।...... और कैटी भी ज्यादा हेल्पफुल नहीं। तो....तो फिलहाल चैप्टर बंद ही समझना ठीक रहेगा।

शाम को यही कोई आठ बजे बड़े भैया इलाहाबाद से लौटे। गाड़ी लेकर मैं रेलवे स्टेशन गया था। रास्ते में वह इधर–उधर की बातें तो करते रहे– सलोनी का जिक्र तक नहीं किया। शायद तीन दिन बीत जाने तक भी वह चुप ही रहें.... उन्हीं के रुख को देखते हुए बकिया सभी भी....। हुआ भी ऐसा। एक वजह और भी। दूसरे ही दिन से कई मुअक्किल बड़े भैया के आगे–पीछे लगे रहे। एक कानूनी फीलास्फर की तरह अपने चैम्बर में वह सभी को सुनते,

मुख्तसर में कभी–कभी कोई सवाल कर देते फिर किसी जूनियर को संकेत कर देते कि वह किसी हाईकोर्ट या फिर सुप्रीमकोर्ट की रूलिंग इकट्ठी करे। माँ सुबह–सुबह बादाम का हलवा डायनिंग टेबल पर रखकर रग्घू से उन्हें बुलवाती, तो भी भूल जाते वह अपने किसी न किसी मुकदमें की पेचीदगी से जूझते–जूझते।

मैं लगातार चिंताग्रस्त रहा कि किसी अहम सोपान तक पहुँच चुकी सलोनी से रिश्ते वाली बात खटाई में न पड़ जाये। कुछ ही दिनों में ट्रेनिंग के लिए बुलावा आ जायेगा, उसके बाद पता नहीं तैनाती कहाँ हो, घर से दूर या खुशकिस्मती से नज़दीक। होमटाउन तो मिलने से रहा। ठीक किया जो कैटी को कह दिया कि खुद ही वह अपनी मैम के घर जाकर मिठाई का डिब्बा पहुँचा दे। सम्बन्धों की एक कड़ी बनी तो कम से कम। कम्यूनिकेशन गैप मेरी भाभी जिसे सम्पर्क शून्यता कहती हैं, से बचने की एक कोशिश तो हुई।

विचार की कड़ियाँ जुड़ती रहीं। उस दिन सलोनी से मैंने पूछा था न। नौकरी खोजने वालों की लाइन में खड़े हुए बढ़िया एकेडेमिक रिकार्ड वाले लड़के के बारे में क्या राय है उसकी। कुछ संकोच में पड़ गयी थी वह। अब उसकी जानकारी में है ही कि मैं प्रशासनिक सेवाओं से जुड़ रहा हूँ, तो भी ऊहापोह में पड़ी है शायद कि बधाई देने में शर्मा पक्ष स्वार्थ की गंध का एहसास न करने लगे। मजबूरियाँ हैं उसकी भी..... क्या कर सकता है कोई ! चलो, ट्रेनिंग पर जाऊँगा– हो सकता है कहीं न कहीं दिख जाये उसकी पसन्द का कोई दूसरा जो कम से कम नौकरी शुदा हो, रहनेवाला भी हो इसी शहर का।

नहीं माना मन। स्थूल रूप से मुझे साथ न लेकर अकेले ही पहुँच गया सल्लू के पास। एकान्त पाकर उसने उसकी सर्वांगीण सुषमाई की नज़र उतारी, किसी मंतर से मुतास्सिर सी उसने भी सिर झुका लिया। पलकों को उठाने की कोशिश करती रही तो भी वे बार–बार गिरीं तभी ऊपर के ओठ, नासिका, चिबुक, झलकते हुए कंठ और कपोल कुण्डों पर शील के पारदर्शी मोती छितर उठे थे। बाद में दोनों ने ही आँखों ही आँखों हरेक आकार वाली बातें भी कीं। कहने लगी थी– 'मेरी हार्टी कांग्रेचुलेशंस स्वीकारें, कैसी लगी आपको इतनी बड़ी कामयाबी। आपसे ज्यादा अंतरंगता नहीं थी इस कारण फोन पर बधाइयाँ देना मैंने ठीक नहीं समझा। .....ट्रेनिंग में कभी भी जा सकते हो, अपना ख्याल

रखना वहाँ।

'और तुम भी'– मैंने कहा था', मेरा ख्याल रखना। बड़े होशोहवास से कालेज जाना। आजकल के यूथ में बड़ी बदमग़ज़ी है।..... दद्दा जी पर उम्र का असर तो है, लेकिन काम भी बहुत करते हैं।

बोली वह– हाँ मार्किट से तेल, नमक, सीरियल्स, सब्जियाँ और साबुन वही तो लाते हैं। समझाती हूँ– बहुत जरूरी सामान लाना हो तभी निकलो वर्ना इतवार को मैं ज़रूरत की सभी चीज़ें खुद ही ले आया करूँगी। लेकिन वो मेरी सुनें तब न।

यही तो चाहता था मेरा मन..... कि वह बोलती रहे, अपने मन में छुछुआती और आकुल–व्याकुल करती बातों को बतावे। कहने लगी– अध्यापकों के साथ उनकी जिन्दगी का एक लम्बा हिस्सा बीता तो सरलता, सादगी, सात्विकता, किसी पर असन्देह जैसे कितने ही मूल्य उनकी जीवनशैली में रच–बस गये... उन्हीं को मैंने भी आत्मसात किया है लखन। हँसीखुशी के क्षण बिताने के लिए टीचर मित्रों के साथ ही कभी शापिंग के लिए निकलती तो कभी उनके बच्चों की बर्थडे, मुण्डन, छेदन, जनेऊ या ऐसे ही मौकों पर शुभकामनाओं के गुलदस्ते के साथ सर्वे भवन्तु सुखिनः की भावना को चरितार्थ करने। ऐसे मौकों में मौजूद न होऊँ तो अच्छा भी नहीं लगता, इसलिए यह सब अपने भविष्य को दाँव पर लगाकर ही कर पाती हूँ।

ऐसा क्यूँ?

हँसती हुई बोली– देखते नहीं आप! साइन्स पढ़ लेने का कितना लुथ्फ उठा रहे हैं आजकल के लड़के। उन्हें पता है तेजाब के असर का– इसलिए मनचाही किसी भी लड़की के बदन पर फेंककर नर्क बना देते हैं उसकी जिन्दगी। विकलांग हो जाती हैं तब उसकी सारी ही अपेक्षायें–मनोकामनायें .....या तो फिर पहले ही ढल जाये वह दुनिया के साचे में। रूप और गुणों वाली नारी उपयुक्त आदमी से विलग रही तो तुम्हीं बोलो..... उसका सम्पूर्ण जीवन गारत हुआ या नहीं।.... इसीलिए मैं हेल्मेट लगाकर अपनी स्कूटी से किसी तीर की तरह चलती हूँ।

कोई विकल्प भी तो नहीं?

अरे वाह लखन जी, विकल्प अनेक हैं लेकिन किसी एक को भी कारगर बनाने के लिए स्वयं नारी जाति को अगुवाई करना होगा। शहर के जिस क्षेत्र में भी ऐसी वारदातों की आशंका हो, औरतों को छद्म रूप में चौकसी करनी होगी इसलिए कि सरकारी खाकिये बड़े जालिम और गैर जिम्मेदार होते हैं, उनके भरोसे समाज को ज्यादा नहीं रहना चाहिए।

हाँ, ठीक कह रही हो तुम। कितनी ही वारदातें तो पुलिस वालों की मिली भगत से ही होती हैं, और बहुत सी उनकी गफलत से!.... या अत्याधुनिक सुविधाओं की कमी से।

लखन जी, यही वर्ग है अनगिनत अपराधों के मूल में। लेकिन कठिनाई यह है कि हम नारियों को ही नारी जाति के खुशनुमा भविष्य के लिए स्वयं की इच्छाओं–आकांक्षाओं को स्वाहा करना होगा।

किससे बतिया रही हो बेटी ? ....दद्दा जी ने प्रश्न किया।

लखन जी से, क्योंकि यही कुछ कर पायेंगे प्रशासनिक अधिकारी के रूप में बदबुये समाज को बदलने के लिए।

लेकिन यहाँ लखन तो नहीं। फि......।

अच्छा हुआ नहीं, पापा जी, यूँ ही शायद भावावेश में थी मैं।

१२

सामान्य हुआ तो मुकम्मल तौर पर मैं घर में ही अपने स्टडी रूम में था। कुछ ही लमहों में कालेज से वापस आ जाने पर घर में खटर–पटर बढ़ गयी। मैंने आवाज दी– 'कैटी !' आंधी सी आई वह मेरे पास, 'किस जल्दबाजी में हो तुम कैटी बेटे ?'

अंकल जी, थोड़ी देर के लिए यूँ ही स्कूल से लौटी, तुरन्त ही वापस भी जा रही हूँ।

यूँ ही वाली बात समझ में नहीं आयी।

अंकल ! यूनीफार्म और सैण्डल बदलने के लिए चली आयी। मुझे लगता है– जबसे आपके ओहदेदार बनने की बात पक्की हो गयी– मेरी थोड़ी सी भी खटरपटर आपको डिस्टर्ब करने लगी है।.... ऐसा ही है न बच्चू ?

ना ऽ ना ऽ ना ऽ, ऐसा बिल्कुल नहीं मेरी अम्मा। तेरी यूँ ही वाली बात इसकी समझ में नहीं आयी थी इसलिए इस बच्चे ने पूछ लिया था। मॉफी माँग रहा है ये।.... अस्लियतन कालेज से लौटकर तुरन्त ही वापस जाने की बात मैंने पहली बार देखी। कोई खास वजह तो होगी ही?

लीजिए अब बड़ी मुश्किल हुई। अंकल जी आज मैं कालेज गयी ही नहीं तो जल्दी लौट आने की क्या बात। ये सवाल तो तुम्हें डेढ़ घण्टे, दो घण्टे पहले करना चाहिए था जब मैंने इसी कमरे में तुम्हारे भोजन की व्यवस्था की थी। तुमने कहा था न– यहीं ले आव थाली बेटे– आज तबियत कुछ ढीली लगे।

सॉरी कैटी जी।

इसमें सॉरी की क्या बात अंकल!..... इन दिनों होता ही है यह सब.... लेकिन एक सूचना देना चाहूँगी तुम्हें.... एक बहू मूल्य सूचना! चार बजे मेरे कालेज में एक नन्हा सा फंक्शन है– लघू समारोह जिसके चीफ गेस्ट होंगे श्रीमान् आपके बड़े भैया अर्थात् मेरे आदरणीय पापा जी। मुझे ले जाने के लिए ठीक ३ बजे उनकी गाड़ी आयेगी, मैं उन्हें लायर्स क्लब से लेकर कालेज के ऑडीटोरियम में पौने चार बजे पहुँच रही हूँ। इसलिए अगर तुम्हारी तबियत सिर्फ थोड़ा सा खराब हो तो हमारे साथ भी चल सकते हो। वैसे शिष्टाचार के लिहाज से बाद में आना ही तुम्हारे लिए उचित रहेगा क्योंकि अब तुम उनके छोटे भाई कम हो एक आला अधिकारी ज्यादा। ये जरूर है कि बाद में आने पर वहाँ पीछे ही बैठने की सुविधा मिलेगी अगर मेरी दृष्टि आप पर ना पड़ी।

क्या बोली तू?

यही कि मेरी एक मैम का कहना है– श्रेष्ठ पुरुष काकचेष्टा और बकुल ध्यानी होते हैं। इसलिए कृपया गृह त्यागो और साढ़े तीन बजे तक अपने आप जगह खोजकर बैठ लेना कहीं बच्चों की जमात में...... चुपचाप।

मंत्रणा के लिए आभारी हूँ, किन्तु परम प्रिय बच्ची, मैं पाँच बजे तक ही पहुँच पाऊँगा क्योंकि उसके पूर्व तो चीफ गेस्ट महोदय की मक्खनबाजी और तिरियाबतकच्चर ही चलेगा। ठीक है न?....अरे अरे, अब रहस्य भरी दृष्टि से क्यों घूर रही है मुझे?

रिक्शे से चला यह सोचकर कि पूरी देह में खुली धूप भी लगेगी और हवा भी। पर मेरे देखते–देखते ही रेलवे क्रासिंग बंद हुई तो तकरीबन बीस मिनट का वक्त बेकार गया। आडीटोरियम में पहुँचा ही था कि संचालिका मुग्धा पटनायक एक घोषणा कर रही थी– हमारे आदरणीय मुख्य अतिथि ने कार्यक्रम की शुरुआत में छोटे–छोटे कुछ सांस्कृतिक कार्यक्रम देखे, एक लघु नाटिका भी देखी जिसके बारे में इण्टर सेकेण्ड इयर की छात्रा हेमांगी ने दो ऐसे प्रश्न भेजे हैं जो उसके अनुसार नाटिका में अनुत्तरित रहे हैं। जब तक डिबेट आई मीन वादविवाद प्रतियोगिता और सभी कल्चरल आइटमों के नतीजे तैयार हो रहे हैं, इस विद्या भवन की सर्वप्रिय सलोनी शर्मा जो इण्टर सेक्शन्स की अंग्रेजी की अध्यापिका हैं, से आग्रह करूँगी कि वह माइक पर आकर हेमांगी के इन प्रश्नों के अपने नाम की तरह ही सलोने से उत्तर दें। संचालिका के अनुरोध पर वह शालीनता से आई, दो तीन बार माइक को अपनी तर्जनी पटककर परखा, फिर बोली– हेमांगी का पहला क्वेश्चन–असली उम्र को क्यूँ छिपाती है महिलायें? अभी–अभी नाटिका की एक महिला पात्र को आप सभी ने देखा। वह बालों में डाई कराती है, ब्लीच फेसियल करती है, हर हफ्ते पार्लर जाकर अपने हेयर स्टाइल बदलती रहती हैं, जिससे कि उसे देखकर लोग आकर्षित हों, उसे युवती ही समझें। उसके इस प्रयास को अगर किसी ने सन्देह से देखा तो वह अपनी कम उम्र दिखाने की कोशिश को झूठ का सहारा लेकर साबित करती है। निश्चित रूप से उसे इस बात से मनःसुख मिलता है ।

खिलखिलाई थी, फिर अपनी तकरीर को आगे बढ़ाया– आप लोगों ने अनेक चुटकुले भी पढ़े या सुने होंगे। पन्द्रह साल की बेटी की उम्र हो जाने के बावजूद माँ उसी की उपस्थिति में अपनी उम्र पच्चीस साल ही बताती है। मेरी समझ में अपनी बढ़ती उम्र और वृद्धावस्था से वह मन ही मन भयभीत है, उसे जानकारी है कि महिला समाज शायद ही उसकी क्रत्रिम सुषमा की प्रशंसा करे इसीलिए वह पुरुषवर्ग को सकारण अथवा सर्वथा अकारण ही आकर्षित करना चाहती है। एक बात और। महिलायें किस व्यवसाय से जीविकोपार्जन करतीं हैं, कहीं किसी होटल की रिसेप्शनिस्ट हैं वे, अभिनेत्री या मॉडल या बार गर्ल

हैं, विवाह की उम्र पार कर रहीं या पार कर चुकी हैं– तो भी वह श्रृंगारवर्द्धक रंगरोगन का प्रयोग करेंगी, असहज सौन्दर्य की छाँव में किसी राजकुमार की चाहना में बड़े विश्वास के साथ झूठ बोलेंगी। मैं आपको बताऊँ– लोकट ब्लाउज और बाबहेयर स्टाइल भी महिलायें एक लम्बा गार्हस्थिक जीवन व्यतीत करने के बाद स्वयं के प्रति कुछ न कुछ असंतुष्टि के कारण ही अपनाती हैं।

एक बार फिर प्रसन्न मुद्रा में हँसी थी सलोनी, फिर बोली– यह विडम्बना नारी जाति के साथ ही नहीं, इन दिनों पुरुष वर्ग भी स्वयं को सुन्दर और स्मार्ट दिखते रहने के उद्देश्य से पार्लर जाता है, यदि खल्वाट दिखने में कुछ वक्त शेष है तो भी अपनी पाकिट में कंघा अवश्य रक्खेगा। टेलीविजन के विज्ञापन भी सुझाव देते हैं कि पुरुष महिलाओं से भिन्न व्यूटीफायर इस्तेमाल करें जो पार्लरों में सुलभ भी हैं। किसी युग में ययाति नाम के एक भोग विलासी नरेश ने अपने पुत्र का यौवन ही अपने....दैहिक आकर्षण को बरकरार रखने के उद्देश्य से ले लिया था। इसलिए मेरे विचार से नारी हो या नर किसी के लिए भी असहज अथवा अप्राकृतिक जीवन जीना अनपेक्षित है।"

इस उत्तर से देर तक तालियाँ बजी थीं।

सलोनी ने फिर एक पर्चा पढ़ा। हेमांगी का ही दूसरा प्रश्न है यह। 'आप स्वतन्त्र विचार वाली हैं, काजमेटिक्स का कभी भी सहारा नहीं लेती'– कैसी पत्नी बनना चाहेंगी।' प्रश्नों का गुच्छ सा लगा होगा आपको यह प्रश्न।..... मैंने पहले ही कहा आपसे, किसी को बनावटी जीवन कतई नहीं जीना चाहिए; प्रयास करें ईश्वर प्रदत्त रूप–स्वरूप का सत्यानाश करने वाले इन केमिकल बेस्ड काजमेटिक्स के प्रयोग से बचने का। सिम्पल लिविंग एण्ड हाई थिकिंग की बात अनेक महापुरुषों ने भी कही है– मैं पहली नहीं हूँ ऐसा उपदेश करने वाली।....... जहाँ पर मेरे स्वतन्त्र विचार वाली होने का प्रश्न है, मैं हमेशा ही अपने स्वतन्त्र सोच पर अपने सांस्कृतिक औचित्य, मानवीय मूल्यों और नैतिक विवेकशीलता के अंकुश का इस्तेमाल करती हूँ। आप छात्राओं को भी मन वचन और कर्म से मूल्याधारित जीवनशैली को अपनाना चाहिए। माता–पिता तथा परिवार के अन्य छोटे और बड़ों के सामने ज्यादातर लड़कियाँ जीन्स और टॉप पहनकर उठती बैठती हैं, उन्हीं के सामने असात्विक याकि कुत्सित संस्कारों को बढ़ावा देनेवाली मैग्जीन्स पढ़ती हैं, वेलेन्टाइन डे के मौके पर हममें से बहुत सी

शर्मसार करनेवाली हरकतों से अपने जन्मदाताओं की कैटागरी से दुनिय़ा को परिचित कराती हैं। यूँ वे जीवन में अपनी दुर्दशा और बाजारू जीवनशैली को वरीयता देती हैं।...... जरूरत इस बात की है कि हम अपने हृदय पर हाथ रखकर खुद से ही पूछें कि पतन की ऊँचे से ऊँची चोटी उन्हें श्रेयष्कर है या सुख–आत्म सम्मान, आत्मतुष्टि और स्वाभिमान, स्वदेशाभिमान के निमित्त चौरस और शश्य–श्यामला धरती।

तालियों की गड़गड़ाहट के खत्म होते ही एक छात्रा बीच से खड़ी होकर पूछती है– वेलेन्टाइन्स डे और लड़कियों के रोजमर्रा के पहनावे के बारे में क्या आप दकियानूसी सोच वाली नहीं ? दुनिया जिस रफ्तार से आगे बढ़ रही है उसी रफ्तार से आप उसे पीछे घसीटना चाहती हैं। आखिर पुरातन से कबतक चिपकी रहेगी भारतीय नारी ?

'मैं अधुनातन की विरोधी नहीं हूँ शिल्पा !..... किन्तु इसमें हमें पारिवारिक, सामाजिक तथा राष्ट्रीय गरिमा की दृष्टि से सडांध और संजीवनी के अन्तर को समझना होगा। आप खुद ही तब अधुनातनता में कितना स्वीकार्य है और पुरातन में कितना अस्वीकार्य– विषयक निर्णय लेने की क्षमता हासिल कर सकोगी। संस्कृत की एक उक्ति है ज़िसका अर्थ है कि पुराना पूर्णरूपेण अच्छा नहीं किन्तु नये में भी सब कुछ स्वीकार्य नहीं। इस नजरिये से दायित्व आपका है, और विवेक भी आपका– वर्जनायें यदि आपका भविष्य सुखमय बनाती हैं, तो किसी को क्या कहना ! तालियों की गड़गड़ाहट खत्म होते ही एक बार फिर बोली वह– बताऊँ शिल्पा, नारी अपने विवेक और शिष्ट जीवनशैली के प्रति जितनी भी उदासीन रहेगी, हेय और प्रेय के फर्क को समझना मुश्किल होगा उसके लिए– तब अपहरण, बलात्कार, शीलभंग, शोषण, बेमेल विवाह, तेजाब छिड़के जाने जैसी घटनायें तथा कत्ल हो जाने जैसी जरायम बातें– वारदातें रक्त बीज की तरह बढ़ती रहेंगी। बाद में जगहँसाई और पश्चात्ताप के साथ ही नारी की इहलीला का अवसान हो जायेगा। जगहसाई अगर वह अपनी प्रशस्ति समझती है तो यश की महादेवी सरस्वती शायद ही उसका भला कर पाये।

सलोनी का स्वर क्षणिक विराम लेता है तभी तालियों के बीच हेमांगी सलोनी को अपने दूसरे प्रश्न का स्मरण कराती है– मैम ! कृपया मेरे दूसरे प्रश्न का भी उत्तर दें।

बैठिये। मेरी प्रियतम छात्रा हेमांगी ने पूछा है कि मैं विवाह के बाद कैसा नारी–जीवन पसन्द करूँगी। नाटिका की नायिका जैसा या डाट डाट डाट ? स्पष्टतः ये व्यक्तिगत प्रश्न है, किन्तु पूछा गया है तो उसे उत्तरित करना मेरा दायित्व बनता है, इसलिए भी कि शायद मेरी जैसी मानसिकता वाली कोई भी बालिका या युवती इससे प्रेरित हो सके।.... कथित नायिका से मेरी कोई समानता नहीं। वह अप्राकृतिक सौन्दर्य और चरित्र विरुद्ध विकारों से जिस तृषा को शान्त करना चाहती हैं, मैं उस तृषा वाली मृगी नहीं। पति के प्रत्येक सोपान के साथ गतिमान रहकर मन वचन और कर्म से पति परायण बनने की भूमिका में ज्यादा रुचि रखती हूँ।.... जीवन और इस धरती पर जन्मने की इससे श्रेष्ठतर कोई भी सार्थकता नहीं। पारस्परिक एवं पारिवारिक कड़ियों से विरत न होना ईश्वरीय प्रसन्नता ही समझिये।

एक पत्रकार ने पूछ लिया– रूप सम्पदा, सरलता, सहजता, स्पष्टवादिता और सत्संस्कारों से समृद्ध आप संस्कृत और हिन्दी भी बहुत बढ़िया बोल लेती है, अंग्रेजी की विशेषाधिकारी हैं ही– आपके विचारों में किसी प्रकार के विजातीय तत्व क्यों नहीं ?

आपके प्रश्न में ही सम्भावित उत्तर भी समाहित है। भारतीय भाषाएँ दो तिहाई बहुमत से हावी है न। ये हमें आत्मनियन्त्रण, अनुशासन और वर्जना की ऊष्मा प्रदान करती हैं। यह ऊष्मा अभिभावकों से संस्कारों के रूप में प्रदत्त कृपा के कारण ही किसी को मिल पाती है। मेरी माँ अब तो नहीं है लेकिन पूरे जीवन काल में सुबह–सुबह अपनी आँखें अपनी हथेलियों में ही खोलती एक श्लोक पढ़ते हुए– **कराग्रे वसते लक्ष्मी कर मध्ये च सरस्वती। कर मूले च गोविन्दम् प्रभाते कर दर्शनम्।**' यही नहीं, पलंग से अपने पाँव भू माता पर उतारते ववत वह एक और श्लोक पढ़तीं जिसका अर्थ है हमारी पृथ्वी माँ जिसका वसन समुद्र है, जिसके स्तन मण्डल पर्वत हैं, सर्वेश्वर विष्णु की पत्नी यानी कि लक्ष्मी हैं जो, वह अपने ऊपर मेरे पावों के स्पर्श के महा अपराध को क्षमा करे। ऐसे ख्यालों वाली माँ को समाज का एक वर्ग दकियानूसी विचारों वाली महिला कहकर कितनी ही आत्मतुष्टि पा जाये, मुझे अभिमान है कि मैं एक आदर्श दम्पत्ति की आत्मजा हूँ। तब किसी राक्षस तत्व के लक्ष्मण वृत्त के अतिक्रमण करने का प्रश्न ही नहीं मेरे बन्धु !

विराम लेने से पूर्व इतना अवश्य कहूँगी कि प्रगतिशीलता का अर्थ यह कतई नहीं कि हम भारतवासी अस्मिताहीन बनें, और आसपास की दुर्गन्धि को इत्र की संज्ञा देने लगें। आज के समारोह की मंचासीन अध्यक्ष श्रीमती उज्जला जिलाधिकारी जैसी प्रशासनिक विभूति की सम्मानित पत्नी हैं, सही अर्थों में सब प्रकार से प्रगतिशील। एक नारी उन्नयन मंच की निदेशिका भी हैं ये जबकि इन्हें जीन्स और टॉप याकि रंगबिरंगी क्लाथ कटिंग्स वाले पहनावे से अरुचि है क्योंकि ये भारतीय गरिमा को चमकार प्रदान करने वाले वस्त्र नहीं। अपने मंच की नारी सदस्यों को भी वह अपने अंतरंग और बहिरंग से भारतीय दिखने की शिक्षा देती हैं। ......इनकी वेणी और भौहों के बीच छिपा हुआ बुंदा, माँग में शोभा पाता हुआ सेंदुर और साड़ी में लिपटी हुई ये किसी विराट शक्ति सी दिखती हैं। यह सब इनके जन्मदाताओं के स्तर से इनमें पिरोये गये पारम्परिक मूल्यों का प्रसाद है।

इस भाषण के दौरान छात्राओं, अध्यापिकाओं एवं शहर के संभ्रान्त नागरिकों ने रह रहकर तालियाँ बजाईं। इसका समापन सलोनी ने इन शब्दों के साथ किया।.... 'अरे! बड़ा समय ले लिया मैंने माननीय मुख्यअतिथि का, माननीया अध्यक्षा का तथा आप सभी का। तदर्थ हाथ जोड़कर क्षमा प्रार्थना करती हूँ।

अध्यक्षा तुरन्त उठीं और सलोनी को अपनी छाती से चिपका लिया था। इधर मैं सोचने लगा.... देखिये, कुछ ही दिनों में हाई कोर्ट के जस्टिस की कुर्सी संभालने वाले मेरे भैया अभी क्या बोलते हैं.... कि वह माइक के पास आ गये। वह सलोनी के उत्तरों से, संस्कारपरक उसकी मान्यताओं से परम प्रसन्न दिख रहे थे। बोले– मेरी बेटी तुल्य सलोनी ने अपनी तकरीर से मुझे तो अपूर्व खुशी प्रदान की। काश, देश की युवा पीढ़ी पाश्चात्य संस्कृति के आत्मघाती प्रवाह में न पड़कर स्वयं को सलोनी की तरह ही ढाल सकती....।

बड़े भैया का आगे का भाषण न सुनकर मैं चुपके से सभागार से बाहर निकल आया क्योंकि इतने से ही सलोनी की तारीफ भी जाहिर थी, हमारा भविष्य भी पटरी पर दिख गया था। अब गेंद गारद बाबू के ही पाले में थी।

१४

छात्राओं को सम्बोधित करती हुई सलोनी का छाया चित्र शहर के सभी समाचार पत्रों में आया था। बड़े भैया सभी के पन्ने पलट रहे थे। इतने गदगद थे वह कि डायनिंग टेबल पर नाश्ते के लिए कई महीने बाद पहुँचे थे। कैटी, माँ और भाभी के सामने वह सलोनीशुदा अपने चित्र से यह कहने की कोशिश कर रहे थे कि यदि सभी सहमत हों तो उसका लखन के लिए पूर्व निवेदन कर लिया जाये। मैं जानबूझकर उनके पास पहुँचा था लेकिन पूरी स्थिति की अनदेखी करता हुआ बोला– भाभी मैं थोड़ा सा ही वाकिंग कर आऊँ .... आज देर से उठा हूँ न। चलता हूँ बड़े भैया!

बोले वह– अरे हाँ लखन! कोई बता रहे थे कि तुम्हारे काल लेटर्स जल्दी ही इश्यू हो रहे हैं, शायद एक हफ्ते के अन्दर ही सभी को मिल जायें और तुम्हें ट्रेनिंग के लिये चल देना पड़े। सो, मेकअप योरसेल्फ, आई मीन गेट प्रिपेयर्ड मेंटली। कुछ गार्मेन्ट्स मयंक संस के यहाँ से ले लो या फिर जहाँ से भी तुम चाहो। बेस्ट फिटिंग की दरकार हो तो आज ही तन्मय शाह वालों के यहाँ से कपड़ा भी ले लो, अर्जेण्ट ड्रैपिंग भी करा लो। ठीक समझो तो अपने साथ अपनी भाभी और कैटी को ले लेना।

भाभी के पास ये उत्तर पहले से ही कैसे तैयार था, समझ नहीं पाया। तुरत फुरत बोली– नये–नये फैशन के जमाने में मेरी कैसी पसन्द। फिर मुझे इसकी तैय्यारी में कम से कम एक हफ्ते के नाश्ते के लड्डू, कुछ शकरपाले–नमकपाले वगैरह भी तो तैयार करने होंगे। कम है यह काम! खाते–पीते घर का बच्चा वहाँ के भोजनालय में कैसा खाना पाये, किसे पता है भला? उधर कल से दो–तीन दिन एक्स्ट्रा क्लास भी लेने होंगे, पढ़ाई भी करनी होगी उसकी खातिर।

माँ बोली– तू ऐसा कर बेटे, कैटी को साथ ले जा, और किसी अपने खास दोस्त को भी जिसे तुझ जैसे बड़े अधिकारी पर फबने वाली पोशाक को चुन पाने का ज्यादा सलीका हो। तू हम लोगों के भरोसे मत बैठ।

माँ के इस सुझाव से मेरा रोम–रोम फुदक उठा था, तो कैटी की ओर निगाह की। मेरा आशय समझकर बोली वह– खास दोस्त और अंकल के कबाब

के बीच मैं ! देखेंगे अगर मुझे वक्त मिला। वैसे ही ग्यारह तक सो पाती हूँ, सुबह सूरज से पहले उठ भी लेती हूँ, फिर भी अगर अंकल बहुत कहेंगे तो निकालूँगी ही इनके लिए वक्त। अभी मुझे स्कूटी भी तो मिलनी है इनसे।

बात–बात में नौटंकी नहीं करते कैटी। सण्डे को तो छुट्टी ही रहती है पढ़ने लिखने से.... बारह बजे तक चल देंगे।

अंकल ! मैं डिनर लेने के बाद बताऊँगी कि रेडीमेड गार्मेन्ट्स के बारे में तुम्हारा कौन सा दोस्त ठीक सलाह कर सकेगा।.... अभी तो लंच टाइम में भी चार घण्टे बाकी हैं...... उसके बाद और छः सात घण्टे। क्या है कि अच्छे काम में जरूरत से ज्यादा जल्दबाजी बिल्कुल फिजूल होती है।

'कैटी..... !' 'तू जरूरत से ज्यादा मत बोला कर।

तो देख भी तो रहे हो अंकल मेरा स्कूल बैग तैयार है, रिक्शा भी आ चुका है.... और अभी मैं अपनी बूटें ही पहन रही हूँ।

x x x

मैं चला आया वहाँ से जिससे कि बड़े भैया को अपनी मंशा का खुलासा सभी से करने का वक्त मिल सके। वैसे कैटी की बातों से वह यह सोचकर डगमगाये थे कि हो सकता है लखन की जिन्दगी में पहले से ही कोई अन्य लड़की हो। कैटी को रिक्शे तक लाकर रुख्सत किया और मैं भी चल पड़ा बंशी हलवाई वाले चौराहे की ओर.... लेकिन एक बार फिर सचिन को बंशी की दूकान पर देखकर कुछ परेशान हुआ। शायद आज फिर शुभी के लिए मीठा दही चाहिए।..... क्या आज तक जारी है उसकी आंशिक भूख हड़ताल ? ....अगर ऐसा है, तो उसकी वजह ? पूछ लिया– अभी तक शुभांगी भाभी बिल्कुल स्वस्थ नहीं हुई शायद ! उसके लिए दही ही लेने आये होंगे आप ?

लखन का हाथ पकड़कर बोला वह– 'चल तू आज ही पूछ उससे कैसा टेंशन है उसे। 'चलो भाई, मैं ही पूछ लूँ ? कहकर मैं तुरन्त ही सचिन के साथ हो लिया। देखता रहा कुछ देर तक शुभी को– क्या है, कैसी तबियत आपकी है भाभी ? ......कई बार मैने देखा– सचिन भाई बंशी की दूकान पर ही खड़े रहते हैं। कोई प्रायश्चित कर रही हो क्या आप ?

हाँ ठीक समझा तुमने।

लेकिन किस बात के लिए ?

डगडबाई आँखों से निहारते हुए बोली वह– 'उस दिन की घटना से शायद तुम्हारी नजर से उतर गयी हूँ मैं।...... लखन, तुम मेरे मानस को पढ़ने की कोशिश करो– आई अगेन इम्प्रेस ऑन यू दैड आई नेवर इन्टेन्डेड दैट।'

अरे भाभी, उस दिन वाली बात जब आप एक हेवी विहिकल की चपेट से बचने के लिए मुझसे लिपट गयी थीं।..... आज तक खुद को उसी में निर्जीव बनाये दे रही हैं। आपने तुरन्त हीं आई एम सॉरी कहा था, वैसा होना अन इन्टेंशनल भी बताया था। मैंने समझी थी आपके मानस की व्यथा। सचिन जी से छोटा हूँ तो हमारे रिश्ते में कितनी पवित्रता है, यह तो समझो।

लखन, आज हल्का हुआ मेरा मन।

लेकिन मेरे मन में कभी भी भार जैसी कोई बात नहीं रही। जिस दिन आप वार्किंग के लिए नहीं निकली थीं, मैंने खुद सचिन भाई को बताया था यह वाकिया।

इज दैट सो ? सचिन पर निगाह टिकाकर वह कुछ ज्यादा रोने लगती है। मैंने विषय बदलकर माहौल को खुशगंवार बनाना चाहा। भाभी जी, अब हम लोग कुछ काम की बात कर लें। ....बैठिये सचिन भैया।

जी बोलें..... शुभी ने बात जानने की उत्सुकता दिखायी।

इन दिनों थोड़ा सा मैं दद्दा जी के नजदीक आ सका हूँ। सचिन जी को मैंने पूरी तफसील से पहले ही बतायी है यह बात। उसके बाद आप दोनों गये भी उनके पास। मुझे अच्छी लगी आपकी यह प्रतिक्रिया; दद्दा और सलोनी तो आप दोनों के प्रति कितना प्रसन्न थे– कोई भी समझ सकता है। ...अ अ अ ऽऽ दद्दा जी मैं आप दोनों के पिता और कानूनी पिता को श्रद्धावश कहता हूँ... उनकी इज्जत आफजाई में कहता हूँ, वैसे ही जैसे अपने भैया को मैं बड़े भैया कहता हूँ।

सचिन बोले–लखन ! मैं तुम्हारा बड़ा थैंकफुल हूँ। तुमने मुझे मेरी ही ड्यूटी याद दिलाई उस दिन।...... तुम्हारे व्यंग्य तीरों ने तो मेरे दिलोदिमाग को छलनी कर दिया था ! शुभी की ओर देखकर वह उसे याद दिलाने लगा– शुभी बताया था न तुम्हें इस बारे में ? डा. सर्वांगी की कारगुजारी बताने के बाद

कहता है ये– 'दद्दा जी के घर में शायद दूसरा कोई मेल मेम्बर भी नहीं, शायद कोई रिश्तेदार भी नहीं है इस शहर में। लड़का होगा भी तो शायद किसी दूसरे शहर में–शायद मध्य प्रदेश या राजस्थान में..... या फिर गुजरात में। हो सकता है वह मर्चेण्ट नेवी में हो बिलायती अंगूरी के साथ मच्छी के पकौड़े.....।' बताते–बताते सचिन कुछ हँसा था, फिर बोला– 'मिनट दो मिनट में मेरे 'इगो' की गुरिया–गुरिया अलग कर दी थी इसने।... बस लखन। अब हम दोनों ही तुम्हारे 'जेश्चर' के लिए शुक्रगुज़ार हैं। शुभी तो मेरे पीछे ही पड़ गयी– 'चलो सचिन ! एक दिन की छुट्टी ही ले लें और पापा की सेहत की खैरखबर कर लें।

मैं सारी बातें जानता हूँ आप लोगों के बताने के पहले से ही। सचिन जी ! इसमें रंचमात्र सन्देह नहीं कि आप दोनों दद्दा जी और सलोनी के लिए बड़ा आदर–भाव रखते हैं। भाभी ! पता नहीं क्यों मेरे मन में आप लोगों तथा उनके लिए इतनी आसक्ति है कि चारों को एक ही घर में साथ–साथ रहते हुए देखना चाहता हूँ। दोनों किसी दूसरे शहर में होते तो अलग बात थी। एक ही शहर में हजारों रुपये किराया देकर रहने में तो कोई भी समझदारी नहीं।.... आप चारो ही आत्मनिर्भर हैं यूँकि दद्दा को भी अपनी जरूरतें पूरी कर लेने के लिए पेंशन मिलती है तो भी सलोनी बेचारी कब तक रहेगी उनके साथ। कन्या का जनम ही अपने माता–पिता से अलग रहने के लिए होता है।

मुझे सुनते हुए सचिन ने शुभी को बड़ी पैनी नजर से देखा था। मैंने अपनी सलाह जारी रखी– सात हजार या आठ हजार किराया देते हो, इसकी बचत करो, इसमें से हर महीने अपने पिता के इलाज में सिर्फ एक हजार भी खर्च कर दोगे तो उससे दस लाख की कीमत के आशीर्वाद मिलेंगे।

कह चुकने के बाद लगातार.... लगातार मैं पढ़ता रहा उन दोनों के चेहरे की भाषा। शुभी बोली– ठीक ही कह रहे हो तुम, लेकिन बाबू जी से कैसे कही जाये यह बात कि उनके मन में हम लोगों के लिए जो भी कड़ुवाहट है, वह उसे थूक दें.... हम सभी साथ–साथ रहना चाहते हैं, आपस में कर लेंगे ऐडजस्टमेंट।

मैं उछल पड़ा– आपने तो खुद ही सारा कुछ कहने–सुनने का मजमून तैयार कर लिया भाभी। मैं भी तो हूँ... बाकी काम मैं कर लूँगा।

१५

आज रविवार होने के कारण सलोनी को कालेज नहीं जाना। सेंचुरी पार्क से वापसी का रास्ता उसी के घर की तरफ से निकल सकता है यह सोचकर दायीं गली में मुड़ ही रहा था कि दद्दा ने पीछे से आवाज दी। बुदबुदाया मैं– अच्छा ही हुआ.... ये रास्ते में ही मिल गये वर्ना सलोनी तक पहुँचने का बहाना बनाना पडता।.... रुक गया– दद्दा जी! मैं तो कुशल क्षेम जानने के लिए आपके पास ही पहुँचने वाला था। संयोग तो देखिये दद्दा!

कई दिन बाद आज से ही तो शुरू किया मैंने आउटडोर वाकिंग। लखन जी! मैंने आउटडोर वाकिंग इसलिए कहा क्योंकि सेंचुरी पार्क तक पहुँचने की हिम्मत नहीं पड़ी, हालांकि ठंढ़ से निजात के लिए बंद गले का कोट वर्स्टेड का पैंट, दस्ताने और मंकी कैप पहन रखे हैं।.... ये ठंड युवा लोगों को बुड्ढों की तुलना में कुछ कम महसूस होती है।...... सौभाग्यशाली हूँ जो तुम्हारे स्तर का युवा मेरी खैरखबर रखने वाला है!...... फिर बोले वह, भैया जी! आज भी मेरी सेहत मार्निंग वॉक के लायक नहीं। क्या कर सकता हूँ! अरे सलोनी बेटे! दद्दा की आवाज सुनकर सलोनी बाहर आयी तब मेरे और उसके हाथ नमस्ते–नमस्कार के उद्देश्य से साथ–साथ उठे थे।..... तारीफ की झड़ी लगा दी मैंने– अरे वाह सल्लू जी! योग्य पिता की परम प्रवीन पुत्री हो आप, परम विदुषी विवेक और संस्कृति के प्रति आसक्ति से सुसमृद्ध। अपनी संस्कृति को जिस सलीके और शब्दावली के सहारे आपने ध्रुवतारे के बगल में बिठाया, निहायत काबिलेतारीफ है वह!

सलोनी हँसी थी। फिर बोली, 'धन्यवाद लेकिन आप तो बच्चों के उस कार्यक्रम में आमन्त्रित थे नहीं?

मुझे कैटी ने बताया कि आपकी एक एक बात पर हजारों हजार तालियाँ बजीं थीं। जिले की प्रथम नारी ने भी खुश होकर आपको अपने सीने से चिपका लिया था और.....

और..... ?

अगले ही हफ्ते जस्टिस के पद की शपथ लेने वाले माननीय चीफगेस्ट तो खुशी के मारे अपनी प्रतिक्रिया जाहिर करने के लिए शब्द ही ढूँढते रह गये।

सलोनी पर मेरा कैटी के माध्यम से चलाया गया तीर बहुत सही जगह पर लगा। शायद सोचने भी लगी थी वह कि उसे खुश रखकर वह दो परिवारों के बीच संवाद की गति बढ़ा सकती है।

इस बीच दद्दा जी ने अपनी छड़ी दीवार की खूंटी से टांग दी थी, अखबार के कुछ शीर्षकों पर दृष्टि भी दौड़ा चुके थे, फिर यकायक किसी चिन्ता में लीन हो गये। बोले– आप ही बताओ लखन जी, एक सुशिक्षित और नौकरी खुदा कन्या के लिए किसी व्यापारी के घर से सम्बन्ध जोड़ना समझदारी की बात तो नहीं ?

क्यों ? व्यापारी परिवारों से रिश्ते किसी ने सुझाये हैं क्या ?

इसकी मौसी घोड़ी पर सवार होकर आई थी, उसी पर बैठे–बैठे ही बात चलाई, तुरन्त ही मन मुआफिक बात न सुन पाने के कारण कोलकाता वापिस हो ली। सलोनी ने शिष्टाचारवश खाने के लिए पूछा– तो साफ मनाकर दिया– बेटी जी ! आजकल के जमाने में किसी होटल में बैठकर पेट भर लेने से पैसा खर्च हो जाने का मलाल नहीं रहता, लेकिन अपनों की बात के अपनों ही द्वारा टाल मटोल करने पर मन दुखी हो जाता है। छोड़ गई है फोटू–जनम चक्र वगैरह, ...हुँ..... सोचना चाहिए कि बिजनेस फेमिली में बिजनेसमैन बाप की लड़की ही फबती है– पकाये–खाये, गहनों से लदी बैठी रहे, पेट और वजन बढ़ाये, सोते वक्त भी प्रपंच और आपसी जलन से खुद जले–मर्द को भी जलाये।..... सलोनी ने इस बीच दो कप कॉफी दद्दा और मेरे सामने रखी ही थी कि सचिन और शुभी आ गये। बड़े सम्मान से उसने दोनों को बिठाया। दद्दा ने भी स्वागत किया– आओ, आओ, दोनों के लिए कॉफी लाव बेटे।..... अरे हाँ, ये लखन है, मेरे एक आत्मीय के छोटे भाई।

मैं अचरज में कुछ कहना ही चाहता था कि शुभी बोली– पापा जी ! हम दोनों इन्हें अच्छी तरह से जानते हैं।

बल्कि हमें ये बड़े भाई वाला आदर देते हैं। इन्हीं के लिए तो आप कह रहे थे– गैर नहीं है वह, परेशानी में मेरी मदद की, इसलिए.....

वही वही ! ठीक बताया सचिन तुमने– दद्दा जी बोले। मन ही मन शायद सोचने लगे थे– आज भी हालचाल जानने के लिए ही आये दिखते हैं, नाश्ता करेंगे, सिर के बाल सहेजते हुए लौट भी लेंगे। चलो, आये दोनों, यही क्या कम !

दद्दा से इसी बीच सचिन ने कुछ कहना चाहा– हम दोनों आपसे माफी माँगते हुए कुछ कहना चाहते है पापा जी।

पता नहीं तुम क्या–क्या कह चुके हो पहले। उससे खराब तो कुछ होगा नहीं। इसलिए बोलो। अनुमति है मेरी।

पता नहीं कैसी घड़ी थी वह कि खुद ही आपकी छत्रछाया से अलग चले गये हम। इस भूल को ठीक करना चाहते हैं।

शुभी बोली– प्लीज मुझे ना समेटिये अपनी भूल में। पापा जी समझ लेंगे कि मेरा ही किया कराया था सब।

मैंने बीचबराव किया– भाभी, अब भी क्या बिगड़ा है, हम दोनों सचिन भाई की भूल को ठीक कर सकते हैं। बेटे को अपने किये पर अफसोस है, इससे बड़ा प्रायश्चित क्या होगा भला। (कहते–कहते मैंने सलोनी की भंगिमाओं को बखूबी पढ़ा था) मेरी समझ में सलोनी को यह घर छोड़ना ही होगा। आज कल में नहीं तो कुछ ही वक्त बाद। फिर बाद में कौन संभालेगा दद्दा को। अकेलापन ही डस लेगा इन्हें।

मेरे इस कथन से दो तीर साथ–साथ चले थे। यह कि सलोनी असमंजस में बनी रहे मेरे सम्मिलन के बारे में क्योंकि मैं चाहता हूँ कि अपने आप ही बने यह सम्बन्ध। बड़े भैया ही माँ, भाभी वगैरह की राय से वाजिब या मन मुताबिक निर्णय लें। मेरी भूमिका सिर्फ इतनी ही ठीक है कि मैं उनके प्रयासों को परोक्ष रूप से दिशा देता रहूँ। दूसरा तीर सचिन के लिए था कि वह दद्दा जी के ज्यादा से ज्यादा करीब आये। दोनों ही बाप–बेटे के रूप में एक–दूसरे से खुलें।

इसी बीच शुभी बोली– पापा जी, हम दोनों आपके साथ ही रहेंगे, सलोनी के सम्ब्ध के लिए भी दौड़धूप करेंगे और किसी भी स्थिति में आप पर किसी तरह का भार नहीं बनेंगे।

शुभांगी ! मैंने जब तुम लोगों को घर से जाने के लिए नहीं कहा तो लौटने के लिए मेरी स्वीकृति की क्या जरूरत। घर तो तुम्हारा ही है। यह भी जानता हूँ कि तुम लोगों को मुझसे कोई व्यक्तिगत स्वार्थ भी नहीं, और साथ-साथ रहेंगे तो मेरा ही भार हल्का करेंगे। मेरी सुरक्षा भी बढेगी।

इस प्रतिक्रिया पर सचिन दम्पति, सलोनी और मैंने अंगूठे मिलाकर प्रत्याशित प्रसन्नता का जश्न मनाया।..... बेहद खुश थी सलोनी, ड्राइंग रूम से

बराण्डे की ओर जाते हुए चहकी थी– इसी बात पर मैं फर्स्ट क्लास कॉफी बनाकर लाती हूँ, आप लोग इस खुशी से मुझे ज्यादा देर दूर रखना चाहें, तो सूजी के हलवा की तैयारी भी कर सकूँगी।

सचिन ने मना किया। सल्लू...... सिर्फ कॉफी।

मैंने बात आगे बढ़ाई– आज वैसे भी अट्ठाइस है, आखिरी तारीख तक मैं इन लोगों का सारा सामान भी लाता हूँ।

दद्दा ने जानी–पहचानी अपनी मुसकान से कमरे में खुशफहमी का उजाला भर दिया था। बोले– न..... ही लखन बेटे, पैकर्स होते हैं, वही अपनी गाड़ी से माल भी लाते हैं, अनलोडिंग भी करते हैं, सामान को सही जगह लगाकर फर्श पर पोछा भी कर देते हैं। उन्हीं से कर ली जायेगी बात।

मैं चाहता था कि दद्दा की प्रसन्न मुद्रा यूँ ही बनी रहे, यूँ ही कुछ न कुछ बोलते रहें वह। पूछ लिया मैंने– अभी अभी और भी कुछ कहने की इच्छा थी शायद......।

अरे यही कि तबादले वाली नौकरी में तीन दशको से कुछ अधिक ही रहा लेकिन तब ये पैकर और ट्रान्सपोर्टर वगैरह नहीं हुआ करते थे। इनकी सेवायें तो इन्हीं दस सालों से शुरू हुई जब सरकारी अधिकारियों की संख्या में भारी वृद्धि हुई, उद्योग धंधे भी बढ़े, आई टी की ओर..... मैंनजमेंट की ओर ,हमारे युवाओं ने रुख किया। लखन जी, सर्वत्र क्रान्ति आ गयी ! हमारे वक्त पुलिस, सिंचाई–पी.डब्ल्यू.डी. स्वास्थ्य, शिक्षा, पंचायते, खेल–कूद न्याय और कर विभाग ही थे।

जी दद्दा जी

ये चपरासी मेरे किसी दबाव से या बेगार समझकर नहीं करते थे कुछ। अपने अधिकारी के प्रति ये सेवा भाव अपना नैत्यिक दायित्व समझते।

लेकिन आज दद्दा जी। आज के दिन उनका रवैया बिल्कुल अलग है। अपने अधिकारी को या विभाग के ही किसी करमचारी को पानी पिलाने में भी ये अपनी तौहीन समझें। अब तो ये सेवक या फिर चतुर्थ श्रेणी अधिकारी कहे जायें।

तो भी फील्ड अफसरों का काम आज भी करें अगर उनसे इनकी

स्वार्थसिद्धि की गुंजाइश हुई।.... मैं समझता हूँ– ये कसौटी भी पक्की नहीं– सेवा भाव के कारण आज भी एक वर्ग पहले जैसा ही है उस स्थिति में ज्यादा जब अधिकारी उनके किसी जाती दुःख से संवेदित हो और सुख से प्रसन्न। .....बहरहाल, चपरासियों का किसी कारण से असहयोग भी पैकर्स और ट्रान्सपोर्टर्स के उद्‌भव और उत्कर्ष के मूल में है।..... लेकिन बेटे, अधिकारियों के सबसे ऊँचे वर्ग में नियुक्ति की वजह से तुम्हें इन कठिनाइयों से भेंट नहीं होगी।

दद्दा के ऐसा कहते ही सभी एक–दूसरे को देख देखकर कुछ लमहों तक हँसते रहे।...... इसी बीच सलोनी कॉफी लाई, ट्रे में एक प्लेट में समोसे और बिस्कुट भी। प्रसन्नचित्त मुद्रा में दद्दा ने सचिन के अतीत में डुबकियाँ लगानी शुरू कर दीं। ये सचिन पाँच साल का रहा होगा शुभी। सलोनी शायद तब उत्पन्न नहीं हुई थी, मेरी नियुक्ति आज के उत्तराखण्ड के एक जिले में हो गयी। पता चला कि वहीं का निवासी एक चपरासी अभी एक माह की छुट्टी पर गया है– वह दो या तीन माह की छुट्टियाँ और भी लेगा।..... मन ही मन मैं कुछ खिन्न तो हुआ, यह सोचकर कुछ–कुछ परेशान भी कि ज्यादातर कार्यालय कर्मी उसके प्रशंसक थे। मैंने कुछ झुंझलाकर टिप्पणी की– काम के वक्त जो सहायक नदारत रहे, उसकी तारीफ!.... तो बिल्कुल फिजूल कर्मी की क्या परिभाषा देंगे आप लोग?

मैं मैदान का निवासी था न– इस बात की बड़ी खुन्नस थी उसे, तो मैंने कार से गुजरते हुए एक लड़के को देखा जो लड़खड़ाकर मार्ग पर गिरने ही वाला था।

सोचने लगा मैं– नशा–वसा कर लिया होगा। ठंढ की वजह से पर्वतवासी करते हैं ऐसा। किसी निराशा, असफलता या अभाव में भी ऐसा होता है।

मेरा ड्राइवर गाड़ी से उतरा, समीप ही बह रहे एक बम्बे से जल लाया, इसे मैंने उसके पूरे मुँह पर छिड़का।... तो उसे अपेक्षित चेतना आई।

कोई तकलीफ है तुम्हें? मैंने प्रश्न किया।

नहीं, ...कहकर रोने लगा वह। फिर बोला कई दिनों से खाना नहीं खाया, आठवीं तक पढ़ा हूँ। यहाँ के इम्प्लायमेंट इक्स्चेंज तक आया था।

तो ठीक। आज से ही तुम मेरे दफ्तर में नौकरी करोगे।..... मेरी इस बात

का असर तो देखिये– बड़ा खुश हुआ वह, सदैव बड़ी निष्ठा से काम करता रहा, मुझे देखते–देखते उसे पूजा–पाठ के संस्कार भी मिले। अपने तबादले से पहले मैंने उसकी मुश्तकिली के आदेश भी कर दिये थे।'..... 'अस्लियतन वह जरूरतमंद था, ईमानदार और संस्कारी। आज के दिन बिरले ही कर्मचारी मिलेंगे इस किसिम के।' मेरी इस प्रतिक्रिया पर बोले वह– नहीं मिलेंगे, कतई नहीं मिलेंगे। ....उसकी उंगली पकड़कर आपके बगल में बैठा हुआ यही सचिन सुबह–सुबह चौराहे वाली मिठाई की दूकान में कड़ाही में पकने के लिए फुदकती जलेबियों को देखकर बड़ा पुलकित होता।

इन संस्मरणों के सहारे रेगिस्तान की जिन्दगी जी रहे दद्दा जी के चेहरे पर आज अपूर्व तरावट और ताजगी दिखी। मैं समझ रहा था कि पिटारी में और संस्मरण तो होंगे ही जिन्हें अगली मुलाकात में सुनाने के लिए सहेज रहे होंगे लेकिन..... डबडबाते नेत्रों से वे आज ही बह निकले– सलोनी की देह में तेलफुलेल उसकी माँ न कर पाती। चौका–बर्तन के काम से निपटकर नन्हीं सी इस पुड़िया को राम कटोरी अपने पावों पर लिटा लेती– उन दिनों कोई विदेशी तेल मिलता था.... कोई मछली का तेल– उसी से बार बार पूरी देह की मसाज करती। मेरी बुद्धि में एक बात आई– क्यों न इसे इसका कुछ पारिश्रमिक दे दिया जाया करे.... मुझे सुनकर तुरन्त बोली– इस तेल से मसाज करने में जब कोई मेहनत ही नहीं पड़ती तो मेहनताना कैसा बाबू जी ? वैसे भी सलोनी की इस सेवा को वह सिर्फ अपनी जिन्दगी की बही में दर्ज कराना चाहती है।... कन्या की सेवा का कोई पैसा लेगा भला ! लखन जी... एक अहैतुकी सेवा होती है न, रोज किया करती वह सल्लू की चार–पाँच साल तक की उम्र तक।

सलोनी का यह अतीत उसकी आँखों में काफी देर तक तैरता रहा था, इससे उसके कपोल, कंठ और वक्ष तक तदजन्य स्फुरण से प्रभावित थे।..... तो कार्डिगन की अगल–बगल की थैलियों में अपनी उंगलियाँ डुबोकर खड़ी हो गयी, फिर बोली– अब भाभी और भैया को जाने भी दीजिए। आखिर सामान की पैकिंग, लोडिंग के निमित्त लेबर की व्यवस्था भी इन्हें करनी है, मकान मालिक से भी एनओसी देने की बात करनी होगी।... मैं साथ चलूँ भाभी आपका काम कुछ न कुछ हल्का करने के लिए।

शुभी बोली– नहीं, पप्पा की देखरेख के अलावा तुझे कुछ भी नहीं

करना। ननद से सुलभ होने वाले सौहार्द और सेवाभाव में मैं सौहार्द को वरीयता दूँगी।

लीजिए फिर थोड़ी सी हरी सौफ और लौंग या इलायची नोश फरमाइये। तो सलोनी के इस लखनवी अखलाक पर मुझे विशेष हँसी आई थी।

x x x

मैं भी निकल आया था सचिन और शुभी के साथ। हमारी गाड़ियाँ अगल–बगल खड़ी थीं तो हम तीनों थोड़ी देर तक खड़े ही खड़े बतियाते रहे। तुम्हारा लेटर कब तक आ रहा है ट्रेनिंग के लिए ?.... सचिन ने पूछा।

यही दो–तीन दिन में या इसी हफ्ते आ जाना चाहिए, वैसे मैं अपनी तरफ से तैयारी कर चुका हूँ। आगरे की एक फ्रेण्ड है, वो भी सेलेक्ट हुई है, फोन आया था कि उसे लखनऊ में कुछ काम भी है, इसलिए लेटर मिलते ही चल देगी, फिर दोनों साथ–साथ जायेंगे ओटीसी।

शुभी और सचिन ने मुझे सुनकर कनखियों से एक–दूसरे को देखा था। प्रतिक्रिया में शुभी ने पूछ लिया– फ्रेण्ड ही है या लाइफ पार्टनर–आई मीन वुड बी लाइफ पार्टनर ?

अभी तक तो हम लोग दूसरी स्टेज तक नहीं आये। दोस्ती के 'लखन चक्र' में ही बांध रखा है उसे।

ये हमारी सलोनी तुम्हें कैसी लगती है, आई मीन.... कैसी लगेगी अगर ये तुम्हारी लाइफ पार्टनर बने ?

मैं चुप रहा..... बिल्कुल चुप।

शुभी बोली– मैं समझ सकती हूँ कुछ न बोलने की तुम्हारी मजबूरी। ..... सचिन ! हम दोनों क्यों न चलें एक दिन लखन के बड़े भैया जी के पास। बात करने के लिए प्रॉपर चैनल ही ठीक रहेगा। घर के बड़े बुजुर्गों के मन में ये कतई नहीं आना चाहिए कि उनकी उपेक्षा की जा रही है।

एब्सोल्यूटली राइट ! शिफ्टिंग के दूसरे ही दिन चलेंगे हम दोनों। मेरा अन्दाजा है कि मन ही मन पापा भी चाहते हैं ऐसा। उन्हें शायद कहने में संकोच है कुछ। ....और लखन जी ! स्वागत, सत्कार में कोई कमी नहीं करेंगे हम। इसकी गारण्टी अभी से ले लीजिये।

सचिन की आखिरी बात पर हम तीनों ही खिलखिलाये थे। मन में आया तो लेकिन तनिक भी जाहिर नहीं होने दिया कि दद्दा जी किसी की मार्फत बड़े भैया तक अपनी अर्जी पहुँचा चुके हैं और मैं चाहता हूँ कि इन्हीं लोगों में से कोई उनसे मिले क्योंकि सक्सेना ताऊ की बात तो लग्गी से चुग्गा खिलाने जैसी हुई– हो सकता है ऐसा ही चाहते हों बड़े भैया जी।

अब आप लोगों की आखिरी वाली बात का उत्तर भी– मैं जानता हूँ पहले से ही ये बात मेरे सरकार! फिर भी आप लोगों की जैसी भी इच्छा हो, करने के लिए स्वतन्त्र हैं– बिना नमक की सब्जियाँ खिलायेंगे तो भी चलेंगी। ....पर एक चीज मैं कतई नहीं छोड़ूँगा– सलोनी, बशर्ते ऊपर वाले ने अपने बहीखाते में हमारी जोड़ी बना रखी है।' थोड़ा सा हँसे हम इस बात पर।.... गाड़ी भी तुरन्त ही स्टार्ट कर दी।

एकाएक ध्यान आया– सलोनी से शापिंग के लिए साथ करने को कहना था।.... लेकिन क्या बड़े भैया के स्तर से कोई इरादा साफ हुए बिना मेरा उसे साथ–साथ घुमाना या शापिंग के लिए ले जाना उचित रहेगा, ऐसा करने से वह यह मानकर भी चलेगी कि हम उससे जोड़ी बनाने का निर्णय ले चुके हैं। ....यह सोचकर निर्णयात्मक स्थिति पर भी पहुँचा कि जब तक दद्दा की ओर से बड़े भैया को सगाई सम्बन्धी कोई प्रस्ताव नहीं जाता, सलोनी के साथ सार्वजनिक रूप से घूमना फिरना मेरी कमजोरी होगी। ....शायद वह भी आज की स्थिति में ज्यादा फ्रैंक होने में संकोच करे.... तब मेरी बात भी खाली निकल जायेगी।..... तो गाड़ी अपने घर की तरफ ही घुमा दी। कर्तार पर ही छोड़ दी सारी होनी–अनहोनी।

x x x

कैटी! ...... घर में दाखिल होने से पहले ही मैंने आवाज दी जो निश्चित रूप से सभी ने सुनी होगी, क्योंकि मां तक पहुँचने पर कैटी उनके पास खड़ी थी।.... चल.... पन्द्रह–बीस मिनट में तैयार हो ले। हम दोनों ही आपसी सोच–समझ से शापिंग कर लेंगे।

कि....यों? .....इस प्रश्न से कैटी जानना चाहती थी कि सलोनी मैम से बात नहीं हो पाई क्या। तुरन्त बोली– तब तो दादी को और माँ को भी लिए चलना बेहतर होगा.... चलो दादी जी..... और माँ, ज्यादा से ज्यादा दो घण्टे की

ही बात तो है....।

भाभी– अरे.... कहा था न मुझे क्या–क्या काम करने जुरूरी हैं। सवाल ही नहीं उठता मार्किट चलने का।

माँ भी बोली– मुझे बाजार में काम तो था, मनकामेश्वर भगवान् को शीश नवा करके अमीनाबाद के गड़बड़झाले से चूरन–चटनी ले आती, फिर वहीं हनुमान जी के सामने अपने मन की कुछ बातें कह लेती.....।

कैटी ने अपनी बात और जोड़ दी– और दादी जी श्री रामरोड पर नेकराम की दूक़ान पर लौकी का रायता और कचौड़ियाँ भी तो खानी थीं.....।

माँ ने कैटी के सुझाव का वाजिब समाधान प्रस्तुत किया– कैटी ! कल आधी रात के करीब से मुझे बड़ी देर तक खाँसी आयी।.... और चूरन चटनी भी अभी हफ्ते–दस दिन भर के लिए तो है ही..... इ...स....लि.....

कैटी खीझ उठी दादी की टालमटोली बातों से। बोली– अंकल क्यों बरबाद कर रहे हो वक्त। मैं चलती हूँ तुम्हारे साथ। हो सका तो मैं ही किसी जानकार दोस्त को साथ ले लूँगी।

चल चल। ....हम दो ही क्या कम हैं ! वैसे भी तीन का आँकड़ा ठीक नहीं होता। माँ जी को खाँसी और पीठ का दर्द है तो बात ही खत्म। भाभी के काम भी जरूरी.... क्या किया जा सकता है तब ! ....मजबूरी का मतलब मजबूरी यानी....।

गांधी जी.... कैटी ने मेरी बात पूरी की।

चुप। जानती नहीं वो महाशय हम देश वासियों के बापू हैं... इस पर हम दोनों ही कुछ देर खिसियाई हँसी हँसे थे। अंत में सॉरी कहा कैटी ने।

x x x

बात की बात में हम हनुमान् सेतु पर थे.... यकायक यूँ हवा का झोंका आया कि ठंढ से मन काँप उठा.... तो चिल्लाया– कैटी शीशे को उठा दे, गर्मी का मौसम नहीं ये, खुद भी कोई गरम कपड़े नहीं पहने– अकारण बनी है रामलीला की बानर।

अंकल ! सिकन्दर बाग के पास ही तो है सलोनी मैम का घर। बंद शीशों में उनके घर का रास्ता समझ में नहीं आयेगा।

ये बेचारी क्या जाने कि कितने ही बार उसके घर जा चुका हूँ। खैर,

समझाया उसे– मैम के घर के लिए तो नहीं निकले हम लोग ! तू तो जानती है– अपने घर के बड़े लोगों की मर्जी के बगैर पत्ता तक नहीं हिल पायेगा–इसलिए सलोनी से अभी मिलना–जुलना अच्छा नहीं होगा। ये तो खुद ही परेशानी ओढ़ लेना हुआ ना !

लेकिन मैंने तो उनसे फोन पर बोल दिया था। पहले से ही तैयार भी होंगी वह।

क्या साफ–साफ कहा था उसने हमारी कम्पनी करने के लिए ? मैं समझता हूँ तुझे ज़्यादा आशावादी नहीं होना चाहिए। वह एक बहुत ही समझदार लड़की है।

थोड़ी सी चुप्पी के बाद बोली वह– लेकिन अंकल, मना भी तो नहीं किया।......

कैटी के इस खुलासे ने मेरे लिए समस्या पैदा कर दी। कुछ झुंझलाकर बोला मैं– सलोनी के स्वीकार के बिना उसके घर पहुँचना मेरा हल्कापन होगा, अपने घरवालों के प्रति अननुशासन भी। इस स्थिति से तुम्हारी मैम दुखी होंगी। अगर वह शापिंग के लिए साथ न देने की बात कहती है तो मैं भी स्वयं को बेइज्जत समझूँगा।

मेरे समझाने पर कैटी परेशान तो दिखी लेकिन बात आगे नहीं बढ़ाई। श्री राम टावर तक पहुँचते–पहुँचते ट्राफिक की ना पूछिये। उसके पहले तक शक्ति भवन के कर्मी झण्डियाँ ताने हुए धरने पर बैठे सेब–संतरे खा रहे थे, कुछ कुल्हड़ वाली चाय की चुस्कियाँ लेते दिखे। उनके सामने डिवाइडर तक सड़क मलाइका की कमर बन चुकी थी– बमुश्किल एक एक इंच सड़क नापनी पड़ी टॉवर तक पहुँचने में। बुदबुदाने लगा– सलोनी परेशान होगी इस वक्त। शायद मेरे कहने से वह खुशी–खुशी चल देती, अपने बाबूजी से अनुमति भी ले सकती थी। अब तो खोई–खोई सी वह कभी किचेन तक जाती होगी ....तुरन्त ही लौटकर ड्राइंग रूम.... फिर दरवाजे तक। अपने बाबू जी को भी निहारती होगी अनस्थिर मन से बार–बार..... बारम्बार। इस मौसम में भी उसके उभरे हुए माथ, गालों और होठों पर पसीने की मोतियाँ शक्ल ले रहीं होंगी, कुछ देर ठहर कर ही बिखर भी जाती होंगी.... या फिर..... थोड़ी–थोड़ी देर में उन्हें पोछ लेती होगी वह अपने दुपट्टे से।..... शायद कुछ जरूरत से ज्यादा ही कैटी उत्साह दिखा

गयी और अब पछता रही है....अपराधी सी।

धीरे धीरे धीरे मेरी सोच का विस्तार होता रहा।.... सलोनी रूप–स्वरूप में पद्मिनी है, इसलिए उसके दिलोदिमाग में विकृति नहीं आ सकती। तो भी उससे मुझे जानना ही होगा कि उसके मन में पहले से ही तो कोई मौजूद नहीं, मैं कहीं एकतरफा आसक्ति की रेत पर तो नहीं खड़ा। वैसे विदुषी और आत्माभिमानी है तो सामान्य लड़कियों या युवतियों की तुलना में उनसे अलग ही होगी।

लेकिन अगर पहले से ही कोई है उसके मन में ? इस आशंका के दिमाग में आते ही मेरे शरीर में पसीना छलछलाया था।.... दिमाग में जैसे कुछ पकने लगा था, आँखों के सामने रह रहकर कुछ धुंध भी उपजी थी– फिर लगा कि किसी दड़दड़ाते बड़ी शक्ति वाले इंजन के पास उसके धुयें में मैं लगातार लड़खड़ाता हूँ, गिरता हूँ– गिरकर उठता हूँ बार–बार इसी जद्दोजहद में हूँ.... लेकिन बाहर निकलने का रास्ता नहीं दिखता।

मुझे ध्यान ही नहीं कि कैटी मेरे साथ है और कार के स्टेयरिंग पर मेरे हाथ। ....एकाएक गाड़ी आगे की कार से थोड़ा टकराई.... लमहों में ही मैं होशोहवास में आया..... तब देखा और सुना था उसके ड्राइवर को उतरकर चिल्लाते हुए– अबे, अपनी आँखें घर में ही छोड़ आया है क्या ?

मैंने साफ–साफ सुनी थी उसकी बदजुबानी। बहुत आहत हुआ था मैं इससे। कैटी का चेहरा भी तंबिया उठा था। बोला उससे–बेटे आज का दिन हमारे लिए कुछ अच्छा नहीं दिखता। तुमने देखा उसे, ...सुनी है तुमने उस ड्राइवर की गुस्से से लबालब बदमिजाजी। हालांकि गल्ती मेरी ही थी, कोई भी गल्ती कर सकता था ट्रैफिक से ठसाठस ऐसी सड़क में। ....सुनकर कैटी ने बड़े गर्व से मेरी ओर देखा था, फिर प्रतिक्रिया में बोली– अंकल, चलिए अब वापस। रास्ते ने वैसे ही काफी वक्त ले लिया है..... जल्दबाजी में हम लोग गार्मेन्ट्स का ठीक–ठीक चुनाव भी नहीं कर पायेंगे। एक बात और अंकल।

क्या– मैंने पूछा।

अच्छा हुआ जो हम लोगों ने सलोनी मैम को साथ नहीं लिया। उनका मन कुछ ज्यादा ही दुखी हो जाता ऐसे भीड़–भड़क्के और शोरगुल में। .....मैंने कैटी को केवल देखकर उसके कथन पर मुहर लगा दी....। .....अब मन हल्का

था, इसलिए गाड़ी की रफ्तार अपनेआप तेज हो गयी थी। लौट लिया फिर स्टेडियम के रास्ते से।

x x x

माँ और दादी पूछेंगे– क्या किया मार्किट में, क्या–क्या खरीदा, कोई चीज नहीं भी मिली क्या ?.... कैटी काफी चिन्तित लग रही थी इन सवालों से जो माँ–दादी और उसके पापा कर सकते थे।

मैं बोला– इसमें इतना परेशान होनें की क्या बात ! असली बात बताऊँगा हर्फ–ब–हर्फ और यह कि वक्त नहीं बचा तो लौटने के अलावा विकल्प ही क्या था !

ठीक। मेरी साफगोई से कैटी की आँखों में चमक भर उठी थी, तो बोलने लगी वह लगातार शायद इसलिए कि मैं बिजली भवन के पास हुए वाकिये को देर तक मन में न पालूँ। भूल जाऊँ उसे आपस में हँस बोल कर। कहने लगी– अंकल ! एक तरह से मेरे लिए अच्छा भी रहा आज का दिन। घूम ली इतना शहर वर्ना पापा के लिए तो मुमकिन ना था मुझे यहाँ तक लाना। तीन महीने पहले माँ के साथ निकली थी कुछ वक्त के लिए। तब भी मजा किरकिरा ही रहा। लगातार पानी जो बरसता रहा। कहकर देर तक खिलखिलाई थी वह। लीजिए शायद डाकिया है वह गेट पर सिक्योरिटी वाले से बात करते हुए।

नमस्ते बाबू जी।

'नमस्ते'.... मैंने जवाब दिया। 'हाँ.... कोई खास चिट्ठी लाये क्या ?'

जे तो खुद जानो बाबू जी। मेरे लिए तो सभी चिट्ठियाँ खास होवें। अ.....हाँ, यहाँ इस जगह सिगनेचर कर दीजे।

गाड़ी पर बैठे ही बैठे मैंने लिफाफा खोला। खुशी से फुदक उठा, कैटी के कान में फुसफुसाया– खुद पढ़ ले तू। ये मेरा काल लेटर है।

कब पहुँचना है अंकल ?

खुद ही पढ़ ले न.....

फर्स्ट को....। आज पच्चीस है। तो यही कोई पाँच दिन बाद। अ....पर मेरी स्कूटी अंकल।

ठीक, मिलेगी। मैंने मना तो नहीं किया। लेता हूँ आज ही बड़े भैया से

उधार...तुम्हारी स्कूटी के लिए..... नहीं तो पहली तनख्वाह मिलने पर।

गेट बन्द करता हुआ रग्घू भी बोला– छोटे भैया जी ! मेरे कुरता–धोती वगैरह ?

सदरी और जूते भी वगैरह में क्यों जोड़ दिये। मिलेंगे मिलेंगे....मिलेंगे। माँ और भाभी के पास आया, उनके चरण छुये। बताया भी कि ट्रेनिंग के लिए काल लेटर आ चुका है। ममतामयी भाभी ने तुरन्त पूछा– क्या शापिंग की ?

कैटी और मैं एक–दूसरे को देखने लगे थे। फिर कैटी ही बोली– माँ एक कार वाले को मेरी गाड़ी सिर्फ छू गयी कि उसका ड्राइवर आपे से बाहर हो गया, ऊलजलूल बकने भी लगा। इससे हम लोगों का मूड खराब हो गया और यूँ ही लौट लिए। जवाहर भवन से कॉफी हाउस तक इतना ट्राफिक था कि सभी गाड़ियाँ सिर्फ रेंग रहीं थीं। इससे भी पुड़िया भर ही वक्त था हमारे पास।

माँ ने पूछा– बेटे लखन ! तुममें से किसी को चोट तो नहीं आयी।

दादी माँ ! चोट–चपेट की कोई बात ही नहीं, अपनी कार को भी खुरच तक नहीं।.... कैटी की इस सूचना से माँ सन्तुष्ट हुई; लेकिन देवी–देवताओं को आभार कहने के लिए पूजा कक्ष की तरफ भागी थीं।

१६

शुभी और सचिन शायद शिफ्टिंग में ही लगे रहे, बड़े भैया से मिलने नहीं पहुँचे। ट्रेनिंग के लिए जाते वक्त मैंने फोन से सम्पर्क किया था। शुभी ने बताया कि बड़ी मजबूरी में सचिन को कम्पनी के काम से ही देहरादून, दिल्ली और मुम्बई जाना पड़ा– तीस तक लौट पायेंगे।

फिर शिफ्टिंग कैसे कर पा रही हो ?

लगी हूँ, मैंने लीव ले रखी है। हाँ लखन जी, इसी सबसे हम लोग बड़े भैया जी से नहीं मिल पाये। अब तो उनके वापस होने पर ही सम्पर्क करेंगे। होप यू वोन्ट फील, लखन।

ठीक है भाभी। जैसे ठीक समझो।

शुभी से बात होते वक्त सलोनी भी वहीं थी, क्योंकि दद्दा जी के पुकारने पर 'जी आयी पापा' की आवाज मुझे सुनायी दी थी। मैंने शुभी को बताया भी नहीं कि आज ही मैं ट्रेनिंग के लिए जा रहा हूँ। बेकार में..... क्यों परेशान करता

इन लोगों को।

वैसे दो बातों ने मेरा मूड खराब कर दिया था। शुभी ने जानना तक नहीं चाहा कि मैं कब शहर छोड़ रहा हूँ, उसने दद्दा जी से भी बात नहीं कराई, दद्दा जी ने भी उससे नहीं कहा कि 'मैं भी बात करूँगा'। स्वयं सलोनी ने फोन के पास अपनी मौजूदगी तो जाहिर की लेकिन मुझसे बात नहीं की; उसने कुशल क्षेम और आगे के प्रोग्राम के बारे में भी कोई जानकारी नहीं लेनी चाही। इसमें शरमाने की भी कोई बात नहीं थी, आखिर सभी से लगातार मेरा सम्पर्क रहा है और फिर उसके पढ़े–लिखे होने का अर्थ ही क्या!

समझ लिया मैंने– किन्हीं कारणों से ये लोग मुझमें रुचि नहीं रखते, इसलिए बेकार है खुद को बार–बार छोटा दिखाना। शायद ये लोग सलोनी के लिए मेरे खिंचाव को कुछ ज्यादा ही महत्वहीन समझ रहे हैं। मगज में ये बात भी हो सकती है कि शहर का नामीगरामी परिवार होने के कारण उसकी अपेक्षाएँ ज्यादा ही होंगी। ऐसा सोचकर शुभी और सचिन असहयोग कर रहे होंगे।

शुभी से बात होने के दौरान अपनी कापी–किताबें सहेजते–सहेजते कैटी सुन रही थी सब। बाद में मुझे बुदबुदाते हुए सुनकर वह परेशान भी दिखी थी। मुझसे बोली– किस चिन्ता में डूबे हो अंकल?

यही कि आगरे से झरना अभी तक नहीं आयी। आज शाम छह बजे तक चल भी देना है। फोन तक नहीं किया उसने। हुंह.... अरे कैटी! बड़े भैया से भी भेंट नहीं हो पायेगी शायद। वैसे उन्हें मालूम है कि आज साढ़े छह वाली गाड़ी से मेरी रुख्सती है।

सब मालूम है.....लेकिन डियर अंकल जी, आपको पहले से ही पता है कि अब वह एडवोकेट नहीं हाईकोर्ट के जस्टिस हैं। और..... अंकल, सलोनी मैम सहित उनके परिवार वालों के बारे में अच्छा–अच्छा ही सोचें। मैम ने कभी बताया था मुझे.... पाजीटिव थिंकिंग इज वेरी मच रिक्वायर्ड। लार्ड बुद्धा ने कहा है– जैसा सोच वैसा ही आदमी का वर्तमान। हमारे प्रत्येक वर्तमान की सामग्री है हमारा सोच। इसलिए वर्तमान को संभालों मजबूत भविष्य के लिए।

क्यों कर रही है बेकार के उपदेश?

उपदेश बड़ों के एक्सपीरिएन्स पर आधारित होते हैं, फिर वे बेकार कैसे

हो सकते हैं।..... सलोनी मैम....

कैटी की बात सलोनी के बारे में शुरू ही हुई थी कि कालबेल बज गयी। रग्घू काका देखिये कौन आया है ?..... लो ! अटैची और एयर बैग से लदी फंदी ये तो झरना है।..... कांग्रेट्स झरना मैम। इसी बात के लिए मैंने कई बार कोशिश की लेकिन बात नहीं हो पायी।

अपना वह लैण्डलाइन वाला सरकारी न। विलावजे ही मम्मी को मोह है उससे।

विलावजे का मोह ! बात समझ में नहीं आयी।

लखन ! दसियों बार कही कि इस सरकारी चूहे को फेंको अलग.... लेकिन कभी गम्भीरता से लेती ही नहीं मेरी बात को।.... बहरहाल सॉरी.... आई एम सॉरी– उन्हें कुछ कहने के लिए।

वह तो तुम्हारी ही काल आ गयी, तब बधाइयों की अदला–बदली हो पायी। मैंने यूँ कहकर बात पर विराम लगाया।

लॅकी ! तुम्हारी हमेशा ही आदत रही है किसी भी बात पर बेकार का टेंशन पालने की। लखनऊ में मुझे कुछ काम निपटाने थे न ! सुबह आयी वही करीब आठ बजे– एक जान पहचान वाले थे, उनके यहाँ गयी।... अ अ आपको जानते हैं वो। फिर वहीं कुछ खा–पीकर इधर खिसक ली। भई, मुझे भी तो मालूम है आगे का प्रोग्राम।.... कैटी को देखती रही, फिर बोली उससे– ये तो तुम्हारी कैटी ही लगे.... खैर, अपनी मदर से नहीं मिलावोगे ?

माँ से मिलाने की बात पर लकी कुछ कहता कि कैटी झरना से उखड़ गयी। मेरा कैटी नाम दुनिया भर के इस्तेमाल के लिए नहीं, सिर्फ घर वाले बुला सकते हैं मुझे कैटी कहकर.... वर्ना मेरा नाम वृन्दा है।

ठीक बाबा ठीक। अगर मैं घर वाली नहीं, बाहरी हूँ तो तुम्हें वृन्दा ही कहूँगी। लेकिन तू यूँ कैसे देख रही है।.... जैसे मुझे पहचानती है।

जी, एक बार आप मेरे कालेज में सलोनी मैम से मिलने आयी थीं..... और मैंने ही उनसे आपकी भेंट करायी थी.....

करेक्ट ! आई कुड रिकलेक्ट दिस।.... अरे ये जो आ रही है माँ जी और उनके साथ तुम्हारी भाभी होंगी.... न लकी ? एम आई करेक्ट ?

मैंने झरना को सभी से परिचित कराया। माँ शुरू–शुरू में यानी हाईस्कूल तक हम दोनों साथ-साथ पढ़े– सेन्ट फ्रांसिस में। तभी से ये मुझे लकी कहती है लखनऊ का रहनेवाला होने के कारण।

मुझे बहुत बुरा लगा जो झरना ने माँ या भाभी को प्रणाम भी नहीं किया। क्या समझा जाये? यूँ ही चूक हो गयी उससे या फिर उसे ऐसा करने की तमीज ही नहीं।

भाभी बोली– हम लोग तो सुबह से इन्तजार कर रहे थे आपका।

जी भाभी। मेरी एक दोस्त है यहाँ– गलती ये की कि पहले उसी के यहाँ चली गयी। लोवर क्लासेस की टीचर है वो.... सल्लोनी!.... आपकी ये कैट आयी मीन कैटी जानती है उसे।

हाँ हाँ.... भाभी की जिज्ञासा आसमान पर थी। वैसे कैटी को कैट कहना बुरा लगा था उसे।

मुझे पता नहीं था उसके घर के ऐटमास्फियर का। ताज्जुब! सलोनी और उसकी भाभी बुरी तरह झगड़ रहे थे। मेरे पहुँचने पर ही सीजफ़ायर किया।

फिर..... माँ और भी कुछ जानना चाहती थीं।

मुझे अच्छा नहीं लगा यह सब तो मन किया कि अपनी अटैची लादफांद कर चल दूँ, लेकिन उसके पापा रुकावट बन गये। बड़े ही जेन्टिल है बेचारे, कोई छोटे आफीसर रहे थे कभी।.... जिद करने लगे कि खाना खाकर ही जाना है। अच्छा खाना तो खाया लेकिन पूरे दौरान सलोनी के मूड का स्विच ऑफ था। मैंने कह दिया जो....

क्या?

माँ जी यही कि मैं लक्की साथ–साथ पढ़ी हूँ।..... देखा जाय तो..... वी आर मेड फार ईच अदर।..... वैसे उसकी भाभी ब्यूटीफुल हैं, गुडनेचर्ड और हाइली क्वालीफाइड! उसने जस्टीफाई किया मेरी मेड फार ईच अदर वाली बात को।

कैसे?

मॉम, यही कि दो आई.ए.एस. की आपसी मेल जोल साथ–साथ उठना–बैठना और शादी करना बेहतर होता है।

कैटी ने अध्याय बन्द करने के प्रयोजन से झरना को आराम देना चाहा। उसने समझ लिया था दादी और माँ दोनों को ही झरना मैम की बात अच्छी नहीं लगी। बोली– अच्छा चलो दादी और मम्मी, फिर से एक बार देख लो– अंकल के लिए की गयी तैयारी में कोई कमी तो नहीं। इस बीच ये मैम कुछ आराम कर लेंगी।

आराम कैसा कैटी !.... कहकर झरना मुझसे मुखातिब हुई, अच्छा लक्की, आओ, बैठें हम दोनों कुछ देर। मुझे तो बाहर रहने का ज्यादा तजुर्बा नहीं इसलिए दोनों समझ लें कि हम लोगों के पास डेली यूज के क्या–क्या आइटम होने चाहिए– क्या हैं और क्या नहीं। और हाँ, कई आइटम तो मेरी मॉम ने जानबूझकर डुप्लीकेट कर दिये। दो टॉवेल, दो–दो पेस्ट और टूथ ब्रश, तुम्हारे लिए एक पेयर सिल्केन लुंगी और ये बाथरूम चप्पल्स।..... अब बताओ, मॉम की मर्जी पूरी होने में छोटी–छोटी और क्या चीजें रह गयीं ? आई मीन चीजें जो बहुत ज़रूरी है और पहुँचते ही जिन्हें मार्केट से लेना पड़ सकता है।

अच्छी तो नहीं लग रहीं थीं झरना की बातें लेकिन उनकी तिक्ति के प्रति बेपरवाह उसके ताम्रवर्णी बदन की लुनाई आज मुझे कुछ–कुछ लुभा रही थी। एक मजाक किया उससे–जो आइटम डुप्लीकेट में नहीं हो सकता वह भी तो मॉम ने मेरे लिए भेजा।

कुड यू प्लीज एक्सप्लेन दिस

अरे कल से इस मुल्क की होने वाली एक जिम्मेदार लेडी आफीसर ....इसके अलावे सिंगिल आइटम क्या होगा भला ! तुम्हीं तो हो जिसकी दूसरी कापी मिल पाना नामुमकिन है।..... मेरे ऐसा कहने पर इज्जत, एहसान और भरोसा भरी आँखों से झरना ने मेरे पूरे शरीर का जायदा लिया था। फिर बोली– थैंक्स लक्की ! अपने आगरे की तपती हवा, भुलभुल भरी ज़मीन पर आग बरसाते आसमान का तो मुझे पता है, इनसे मुतास्सिर तिलमिलाते ताज को भी मैंने अक्सर देखा है, लेकिन तुम्हारे लखनऊ में पुरानी और बेमतलब की इमारतें, चौराहें, चौराहे पर बन्दूक और भाला वगैरह लादे हुए मूरतों, अंगुली उठाकर भटके को रास्ता बताते बुतों के अलावा शायद कुछ भी नहीं है।

क्यों ? मैं हूँ, लखनऊ में हूँ..... ये छोटी बात है क्या ? इस शहर के लिए और कुछ जानना चाहती हो, तो तुरन्त बोलो।..... और हाँ, ये बुत ही हमें सोचने

की शैली देते हैं। सभी आदर्श हैं हमारे।

वक्त नहीं था इन बातों का तो मैंने इश्कीली आँखों से हल्का सा मुस्कराते हुए कहा– चल ही रहे हैं अब, कुछ वक्त तो साथ–साथ रहेंगे ही, तब बतायेंगे तुम्हें कि आगरे में राज्यपाल और राजभवन नहीं, विधानभवन और हाईकोर्ट नहीं, हजरतगंज और अमीनाबाद नहीं, अच्छी–अच्छी सड़कें भी नहीं।

बस बस लक्की, इतना बता दिया कि बाद में भी कुछ बताने की जरूरत नहीं।

सच कहूँ झरना, जब कभी तुम यहाँ की डी.एम. बनकर आओगी ये शहर बैकुण्ठ लोक से बड़े सऊर से काटकर लाया गया एक टुकड़ा लगेगा। इसे सजाने के लिए किसी ताजमहल की जरूरत नहीं। लखनऊ की खूबियों का बखान करने के दौरान ही कॉफी और कुछ नाश्ता दोनों हाथों से थामे हुए रग्घू आ गया। लेव बिटिया जी.....

ह्वाट बिटिया जी ? स्टूपिड ! तुम मुझे झरना नहीं कह सकते। इस घर के पुराने नौकर लगते हो, फिर भी तहजीब..... में बिल्कुल निल !

बस बस झरना, लीव इट। फार योर इन्फार्मेशन, यह इस घर का नौकर नहीं, आदर से हम लोग इन्हें रग्घू काका कहते हैं.... जाव आप काका। माँ, भाभी या बड़े भैया की मौजूदगी में मत कह देना इसके लिए कुछ। इस परिवार का रहने और सोचने का तरीका जिसे तुम 'लाइफ स्टाइल' कहती हो, आगरे से ही नहीं, पूरे देश से अलग है।

स्ट्रैन्ज एनफ !

नथिंग स्ट्रैन्ज। मैं गुस्से को हजम करते हुए कुछ कहने को था कि रग्घू दो कलेण्डर लाया। छोटे भैया जी, ये अम्मा जी ने दिये हैं। बोर्डिंग हाउस के अपने कमरे में हनुमान जी को आप टांग लेना, अउर गणेश जी को ये बिटिया जी। तुरन्त ही गिड़गिड़ाकर बोला वह– माफ करना बिटिया जी ! ध्यान ही नहीं रहा कि तुमकौ मुझे झरना जी कहना चाहिए था। अब से यह भूल नहीं होगी। फिर झरना जी झरना जी के हिज्जे लगाता–लगाता चला गया वह।

देखो माई डियर ! टेक इट इज़ी। अभी ले चलूँगा पूरे घर में जहाँ किसी भी कमरे में फिल्मी हस्तियों, खिलाड़ियों और आज के दीगर देवताओं की पहुँच नहीं। इसलिए समझिये पहले इस घर के तौर तरीके......।
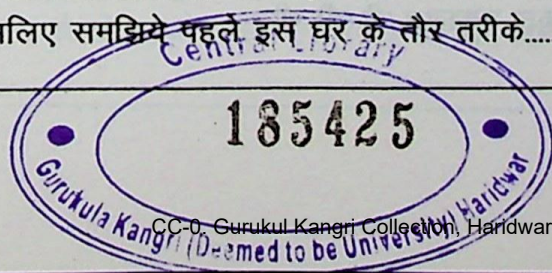
सॉरी लक्की– कहकर झरना ने बात को वही खत्म कर देना चाहा। मन ही मन तय किया कि ये सभी बातें वह लक्की की बेटरहाफ बन जाने के बाद, अपने मनमुताबिक ठीक कर लेगी... दूसरे उसे रहना ही कहाँ इस नवाबी मकबरे में; नोएडा या दिल्ली में खरीद लूँगी कोई बढ़िया सी रिहाइश। अच्छा लक्की, मैं थोड़ा आराम कर लूँ। जब जैसा प्रोग्राम हो या फिर स्टेशन की रवानगी से पन्द्रह मिनट पहले बता देना मुझे।

हाव भाव से औरत का आचरण ज्यादा देर तक रहस्य नहीं रह पाता है। कही गयी बात भी गोली की तरह वापस नहीं आती, कर जाती है कुछ न कुछ असर। रग्घू काका का प्रकरण कैटी की मार्फत बड़े भैया को छोड़कर सभी की जानकारी में आ चुका था। सभी चिंतित थे कि अगर लखन मनमानी कर गया, झरना से ही ब्याह रचा लिया तो गारद बांबू की ख्याति और इस परिवार का क्या होगा!..... और अगर झरना की बात सही माने कि सलोनी अपनी भाभी से लड़झगड़ रही थी तो भी इस परिवार का भला नहीं लगता।

वृन्दा! तेरा क्या कहना है?

मॉम, मुझे तो थोड़ा भी यकीन नहीं होता झरना मैम वाली बात पर। उसने सलोनी मैम को ही अपना निशाना बनाया। उसने यह भी तो कहा था अंकल का नाम लेकर 'वी आर मेड फार ईच अदर।'

माँ बोली, 'ठीक, इसके मतलब तो यह है कि किसी न किसी तरह से आगरे में यह खबर पहुँची है कि सलोनी लखन के लिए उम्मीदवार हो सकती है और अगर कुछ भी हुआ है सलोनी के घर में तो उसकी जड़ में झरना ही थी.... इसमें दो बातें नहीं कि ये बिल्कुल ही झूठ बोल रही है।.......

कैटी बेटे तू खुफियागीरी कर इस बारे में।..... लेकिन सब लखन और झरना के चले जाने के बाद।

इधर मैं भी सोच रहा था कि सलोनी की आदत झगड़ालू तो नहीं लगती, लेकिन अगर झरना सही कह रही है तो पत्नी के रूप में पता नहीं वह कैसी रहे। बात–बात में झगड़ेगी, चपरासी अर्दली वगैरह सुनेंगे..... शायद सलोनी हमारे परिवार और मेरे साथ जीवन बिताने की उचित पात्र नहीं। मेरी सोच गलत भी नहीं लगती क्योंकि उसने अपने कालेज में भाषण करते समय औरत की आजादी की कुछ–कुछ वकालत भी की थी।

इसी बीच माँ आई– बेटे! ये झरना किस फेमिली से है?

माँ, इसके बारे में बड़े भैया ज्यादा बता पायेंगे। इसके डैड ने भैया के साथ लखनऊ से ही एलएल.बी. की थी। इस वक्त आगरे के बड़े वकील हैं वह।

मैंने ध्यान नहीं दिया था कि भाभी भी हैं माँ के साथ। वह कुछ जल्दबाजी में बोली–माँ इस वक्त यह बाते नहीं। जज साहब की गाड़ी लगता है आ चुकी है। हाँ लखन, अब भी वक्त है, देख ले क्या–क्या चीजें रखनी रह गयीं हैं और झरना के पास उसकी जरूरत के सभी आइटम हैं या नहीं। गाड़ी पहुँचने में लेट भी हो सकती है.... इसलिए सुबह–सुबह की जरूरी चीजें तो एयर बैग के पाकेट में ही रख लेना.... आसान होगा तब उनका इस्तेमाल और रखरखाव।

१७

प्लेट फार्म नम्बर–१ से गाड़ी छूटने से पहले मेरे कुछ दोस्त पड़ोसी और मार्निंग वाक के दौरान सम्पर्क में आये नये चेहरे विदा देने के लिए पहुँचे थे। बड़े भैया, भाभी, माँ, अर्दली वगैरह और कुछ कान्स्टेबुल तो साथ ही साथ आये। मेरे मन में थी यह बात कि दद्दा जी और उनके परिवार के लोग कहीं नहीं दिख रहे। सिगनल हो गया तो मैंने और झरना ने बड़े भैया वगैरह से विदा ली थी। न चाहते हुए भी फिर एक बार भारी भीड़ और वेंडरों के हुजूम में मेरी आँखें कुछ खास चेहरों की तलाश में थीं.... और शायद झरना भी इसी मनःस्थिति में थी कि गाड़ी गार्ड की व्हिसिल के साथ रेंगने लगी। हम दोनों दरवाजे पर एक ही तरह से लटके हुए थे कि झरना ने काफी ऊँचे अपना हाथ उठाकर उंगलिया लहराईं, फिर तर्जनी से संकेत करके कहा– लक्की देख ले– सलोनी और उसके सभी घरवाले दूर वहाँ बुक स्टाल के पास.....।

मैं बोला– हाँ कैटी भी सलोनी के बिल्कुल बगल में उसका हाथ पकड़े हुए....।

झरना ने बात को आगे बढ़ाया– बट लकी! वे लोग एक सेकेण्ड के लिए भी पास नहीं आये। हाऊ कैन दे बी सो इण्डीसेंट! हालांकि कैटी ने वहाँ से जेश्चर दिया था।.... दूर दूर की दोस्ती में किसी का नेचर ठीक–ठीक समझ में नहीं आता।.... वो तो आज पहली बार मैंने इनके घर जाकर सभी का लिविंग

स्टैण्डर्ड देखा। छिः दे आर सब–स्टैण्डर्ड। ऐब्सोल्यूटली दैट !

क्या बात कर रही हो झरना ? शुभी और सचिन दोनों का टोटल मंथली पैकेट चार लाख से ऊपर है। सिम्पल लिविंग है, दिमागी तौर पर ये लोग ऐडवान्स्ड भी हैं। मेरी इस प्रतिक्रिया को झरना ठीक से समझ नहीं पायी.... तो चुप कर गयी।

अब तक हम अपनी–अपनी बर्थ पर आ चुके थे। लेकिन थोड़ी देर तक हम दोनों रास्ते से सटी 'साइड बर्थ' पर जुड़े बैठे रहे। यही वजह रही होगी कि पूरी बोगी में न ठण्ड थी न गर्मी ! लेकिन निश्चित रूप से इसके मूल में था झरना का शरीरी सानिध्य.... और लगातार कैटवॉक करती हुई बोगी की अप्सरायें। गली बिल्कुल साफ होने के बावजूद कुछ ने तो कहा भी 'एक्सक्यूज मी प्लीज' महज इसलिए कि वे लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर सकें।

कुछ देर बाद झरना सुस्त सी लगी तो हम दोनों अपनी अपनी बर्थ पर चले आये।

मुझे नींद नहीं आयी काफी देर तक। लगभग एक महीने के रियालिटी शो का एक एक लम्हा दिमाग में किसी फिल्म सा आता रहा। सलोनी की पर्सनैलिटी, उसकी शहद भरी आवाज, तीन तीन भाषाओं में लगातार बोलते रहने की उसकी महारत..... कौन भुला पायेगा अगर किसी ने उसे देखा है.... सुना है। उधर झरना एक ओहदेदार तो है पर उसके जैसी सात्विकता सहजता, शालीनता और जरूरत भर का खुलापन जैसी नायाब मिसाल तो बिरली ही कही जायेगी। चलो.... इच्छा ऊपर वाले की; उसका माकूल इन्तजाम तो देखिये, एक दूसरी को ही लगा दिया मेरे साथ।.... बुदबुदाने लगा चलो, लगता है उससे छुट्टी मिली !

किससे लक्की ! मेरा बुदबुदाना सुन लिया था उसने।

मैं बोला– 'किसी से नहीं। यूँ ही कोई बात मन में आई... मुझे याद भी नहीं.... कि किस कारण वह याद आयी.... और बुदबुदाने लगा। लगता है कि डिस्टर्ब किया तुम्हें।' फिर एकायक दूध और पानी मिले दूध की बाबत सोचने लगा– झरना जरूरत से ज्यादा वाचाल है, नाक–नक्श और रंग..... और शरीर गठन के नजरिये से सलोनी से ज्यादा अच्छी नहीं हालांकि उसका कापर कलर,

मोटी मोटी आँखें और गालों तक बार–बार बिखर जाती चमकीली चटकीली लटें तभी किसी को मुतास्सिर करती हैं जब वह उसके आई.ए.एस. होने के चरफरेपन पर साथ साथ सोचे।... मुझे लगता है कि ट्रेनिंग के लिए जाने की तिथि और बाकी बातें दद्दा जी– परिवार को न बताने के कारण सभी समझ रहे होंगे कि झरना मेरे ज्यादा करीब है और मन भी बना लिया है उसी से शादी करने का। .....मैं ठीक ठीक कह भी नहीं सकता कि ऐसा ही है जब तक मेरे दिलोदिमाग से सलोनी बिल्कुल ही खारिज न हो जाए। पता नहीं क्यों– यहाँ तक सोचकर यकायक हँस पड़ा था। इससे झरना की पलकें उठकर एक बार फिर मेरे चेहरे पर टिक गयीं थीं। बाद में लेटे ही लेटे वह मैगज़ीन की कुण्डली बनाकर उससे अपना गाल रगड़ने लगी थी।.... मैंने ज्यादा देर तक नहीं देखा उसे.... और कैटी के बारे में सोचने लगा– "चलते वक्त वह मेरे पास क्यों नहीं आयी ? सलोनी की उंगली पकड़े ही क्यूँ खड़ी रही आखिर ? हो सकता है झरना का बर्त्ताव और उससे मेरी निकटता देखकर फिनक गयी हो। माँ और भाभी ने भी उसकी तारीफ में कुछ भी नहीं कहा। शायद तीनों ही किसी गुप्त मन्त्रणा के तहत काम करती रहीं। तीनों ने ही झरना के विरोध में मुझे मनोवैज्ञानिक प्रभाव में बाँधने की कोशिश की है।... जो भी हो, वे मेरी भलाई के लिए ही कर रहे होंगे सब कुछ !

x x x

ऊपर की ओर हाथ पसारकर मैंने लेटे ही लेटे अंगड़ाई ली कि एक कॉफी वेंडर दिख गया। घड़ी देखी। यही कोई चार बजे का वक्त.... तो रात के इतने घण्टे मैंने अपनी किताब के पिछले पन्ने पलटते रहने में ही बिता दिये ! ट्रेन से इन व्यक्तिगत बातों...... किसी के दुःख–दर्द..... सफलताओं या विफलताओं और आह्लाद–अवसाद के लमहों से क्या मतलब ! इसलिए अब भी वह बेतहाशा रपट रही थी पगली।

कॉफी की चुस्कियाँ लेते लेते मैंने झरना को उसके कान में फुसफुसाकर छेड़ा– बिल्कुल चुप हो तुम, अपने नाम के बिल्कुल खिलाफ है तुम्हारा आचरण। क्या मेरी कम्पनी से ज्यादा खुश नहीं तुम ?

लुक लॅकी ! ऐसा कभी मत कहना ! सोच भी कैसे सकते हो इस तरह ! वी आर मेड फार ईच अदर !

तो..... ?

तो क्या ! मैं जो सोचती हूँ उससे अलग कुछ सोचते हो क्या ? लम्बा अरसा हुआ... तरस गयी मैं तुम्हारे इतने करीब होने के लिए।

अच्छा.... अब मैं तुम्हारे सवाल का जवाब देता हूँ।

कौन सा मेरा ? लखनऊ की बाबत जो था ?

चलो वही सही, लेकिन.... कभी होस्टल में। क्योंकि उतना लम्बा जवाब देने में बोगी के लोग बुरा मानेंगे, नींद उचट जायेगी न.... और सुबह का यही वक्त होता है जब सफर करते समय किसी को झपकी आती है... मेरे जवाब से झरना किसी झरनी सी खिलखिलाई थी।

१८

झरना के पैदा होते ही उसकी माँ ने आँखे मूंद ली थीं। पता नहीं किस जात–धरम के थे उसके माँ–बाप ! किशन मिश्रा लखनऊ से वकालत पढ़कर आगरे लौटे तो तुरन्त ही उनकी तकदीर ने छलांगे भरनी शुरू कर दी, कुछ ही वक्त में वह अपने शहर के जाने–माने वकील बन गये। अब तक निःसन्तान थे वह। उनके एक डाक्टर मित्र से बिना माँ की बेटी झरना की खबर मिली तो उस बेबी को वे अपने साथ ले आये, क्लीनिक की नर्सों, कम्पाउन्डर वगैरह को लड्डू खिलाकर। पुत्री रूप में इससे किशन और उसकी पत्नी के मन को बड़ी शांति ताउम्र रातोदिन मिलती रहे, इस निरंतरता की चाह में उन्होंने शिशु का नाम झरना रखा। अपनी सगी बच्ची सी पालापोषा, अच्छे स्कूल कालेज और विश्वविद्यालय में पढ़ाया–लिखाया। इससे वह आई.ए.एस. की कुर्सी तक का सफर कर पा:ई।

बड़े भैया ने यह रहस्य भाभी जी को बताया था हमें स्टेशन से विदा देने के बाद रास्ते में। इस बात का पता मुझे कैटी की एक चिट्ठी से चला।

कैटी ने हफ्ते भर बाद ही एक दूसरी चिट्ठी लिखी– अंकल ! हर नजरिये से सलोनी मैम से अच्छी कोई भी तुम्हें नहीं मिलेगी। वह जितनी जमाने के साथ है, उतनी ही पुरातन से जुड़ी।.... मतलब घरेलू भी है और अल्टामाडर्न भी। तुम चाहोगे तो तुम्हारी इच्छा के सम्मान में वह और भी ज्यादा अल्ट्रामार्डन बन सकती है, तब भी वह तुम्हारी बनाई रेखाओं से बाहर नहीं निकलेगी। दादी और

माँ सिर्फ एक ऐसी बात से दुखी हैं जो सच नहीं। मैम और उनकी भाभी में कभी किसी किस्म की बकैती नहीं हुई। बुरा ना मानना, लेकिन उसने यह बात मैम के प्रति इस परिवार में नफरत पैदा करने के लिए गढ़ी। इसके बावजूद मैम आपकी दोस्त की तारीफ के पुल बाँधती रहती हैं।

मैं इस चिट्ठी पर ठीक से गौर करता, फिर कैटी, भाभी या माँ की प्रतिक्रिया की बात करता कि अगले हफ्ते ही कैटी की एक और चिट्ठी मिली– अंकल, तुम्हें मेरे लेटर्स मिले होंगे, ये तुम्हारे दिये हुए पते पर ही मैंने भेजे थे।

दादी जी का दयालु स्वभाव तुम्हारी जानकारी में है ही। यूँ ही एक बार कहने लगीं– झरना साफ सुथरी, अच्छी नाक–नक्श और बड़ी–बड़ी आँखों वाली है, अपने से बड़ों को इज्जत देना भी सीख जायेगी।..... हँसोड़िया भी है। इसकी मूल जात–वात का पता नहीं ....तो क्या हुआ ? सबका बनाने वाला तो एक ही है। हम सभी में एक जैसे मटीरियल का ही इस्तेमाल हुआ। काबिल है, ओहदेदार भी है। उधर मेरी मॉम अपने तर्क का इस्तेमाल करती हैं। उनके मुताबिक भी किसी भी धरम–करम के रहे हों उसके माँ–बाप...., तो भी बेइज्जती की क्या बात !.... लेकिन इतनी बात तो चिन्ता वाली है ही कि किसी को यह पता नहीं कि उसकी माँ बच्चे को जन्मने के तुरन्त बाद कैसे मर गयी। कोई बड़ा रोग था उसे, या और कुछ..... या फिर आपरेशन करते वक्त डाक्टर की कोई गल्ती.... लेकिन अगर सिर्फ एनेमिक थी वह तो भी क्या वजह थी एनेमिक होने की। उनका कहना है कि माँ की बीमारियाँ और आदतें लड़की को विरासत में मिलती हैं।'.... बड़ी लम्बी चिट्ठी थी यह, तो भी एक ही झटके में पूरा पूरा पढ़ लिया इस कारण नाश्ते–वाश्ते के लिए मेस तक नहीं पहुँच पाया.... क्योंकि ट्रेनिंग क्लास पहुँचने में पहले ही कुछ देर हो चुकी थी। झरना के पिता के बारे में आखिरी पैराग्राफ में लिखा था– 'अंकल झरना मैम का पिता मशहूर शराबी था। उसे न अपनी पत्नी से कोई लगाव था न उससे जनी अपनी संतान से। तभी बच्ची की तुलना में उसने कुछ हजार रुपयों को ज्यादा अहमियत दी। उसने हो सकता है जान–बूझकर ऐसी स्थिति पैदा की हो। किसी क्राइम एक्स्पर्ट से पूछेंगे तो यही कहेगा वह कि अस्पताल के करमचारियों को दिखाने के लिए नन्हीं बच्ची को प्यार करते करते उसने जच्चा की गर्दन दबा दी।.... शायद वह हिस्ट्रीशटर भी था, लेकिन यह बात पुलिस रिकार्ड से ही पता चल पायेगी।.... मेरी ये चिट्ठी आपको भले ही बेजायका कर दे लेकिन मुझे अपनी

जिम्मेदारी तो निभानी ही है।

एक साथ कई गिलास पानी सुरक गया इस चिट्ठी को पढ़ते–पढ़ते। आखिरी कुछ लाइनों में दिये गये सुझावों का संक्षेप है– मैं विचार कर लूँ इन बातों पर। चाहूँ तो किसी तरकीब से कहीं से पूछताछ भी कर लूँ.... उसके बाद ही तय करूँ कि झरना मैम और तुम्हारे कैसे रिश्ते रहेंगे।

ट्रेनिंग क्लास में पहुँचा ही था कि सेंटर के अडीशनल डाइरेक्टर रावल भी दाख़िल हुए। झरना के ठीक़ बग़ल वाली चेयर पर आज मेरे नाम की पर्ची चिपकी हुई थी। तिरछी नजर से देखते हुए आँखों–आँखों ही पूछा उसने– कहाँ रहा मैं इतनी देर ? मैंने सिर्फ सिर हिला दिया था। तुरन्त ही फिर ए.डी. साहब की ओर एकटक देखने लगा था।

करीब डेढ़ घण्टे की तकरीर से फुर्सत मिली तो झरना बोली– लॅकी ! लुकिंग सो स्मार्ट !....... आई फील हाइली इम्प्रेस्ड !

ओह, थैंक्स, झरना।..... मेरे कहने में कुछ बेरुखी और आवाज में नीरसता का अनुमान लगाते हुए पूछा उसने–कोई सीरियस प्राब्लेम ?'

नहीं, कोई प्राब्लेम नहीं..... अभी एक महीना भी तो नहीं गुजरा यहाँ। मुझे सुनते हुए अपने मन में वह कोई सन्देह टटोलने लगी थी। कैटी का मेसेज था यार..... कि दादी बहुत याद करती हैं, किसी किसी दिन सिर्फ तुलसी की पत्तियाँ और दो बताशे खाकर ही चौबीस घण्टे बिता देती हैं। माँ... और मेरी भाभी वगैरह लंच और डिनर से पहले मुझे जरूर से जरूर याद करती हैं। वगैरह वगैरह। .....आज तुम्हारी भी आवाज कुछ कुछ ....क्यों स्वीट हार्ट ! ठीक तो है सब कुछ ?

बोली वह– कुछ भी तो नहीं, थोड़ी सी खराश जरूर महसूस हो रही है .....हरारत और हल्का सा बाडी-एक.... बस।

तो किसी मेडिकल एक्स्पर्ट के पास चलें ?

क्या जरूरत है ? ये तो अक्सर ही होता रहता है, खासकर जब जिगरी दोस्त में भी कुछ बदलाव दिखता है.... या फिर मुझे आराम नहीं मिलता। अब देखो न..... रोज रोज पूरे दिन यहाँ बैठे ही रहना होता है, या फिर चलना, सीढ़ियाँ फाँदना और उतरना। लिफ्ट कभी ठीक है कभी बिल्कुल बेमुरौव्वत और बेदम। चूँकि जानती हूँ न अपना नेचर, खुद ही कर लिया करती हूँ अपना इलाज !.... जरूरत

ही नहीं किसी फिजीशियन के पास फटकने की।..... लकी, अमेजिंग फार यू.... कुछ दवायें तो मेरी मॉम ही प्रेस्क्राइब कर देती हैं.... और उन्हीं से मुझे फायदा भी हो जाता है।

समझ नहीं पाया मैं उसकी बातों का अर्थ, कि खुद ही वह कैसे अपना इलाज कर लेती है और मॉम उसके लिए जो दवायें प्रेस्क्राइब करती हैं, वे किन मर्जों से ताल्लुक रखती हैं.... और यह कि उसे किसी फिजीशियन की सलाह से गुरेज क्यों?.... शायद.... कोई फेमिली फिजीशियन ही होगा आगरे में जिसके अलावा किसी से सलाह नहीं लेती।.... बहरहाल इन सभी बातों की मैंने तफसील भी नहीं माँगी।

साढ़े सात–आठ के बीच कमरे से बाहर काफी सर्दी के बावजूद पहुँच गया मैं उसके यहाँ। पूछा उससे– ये तो फोर बेडरूम है, बाकी तीन आफीसर कहाँ है डियर?

बोली वह– प्रीती, सुधा और स्मिता कल से प्रोग्राम बना रहीं थीं इवनिंग शो के लिए। किसी से टिकट भी मंगवा लिए थे, मुझसे पूछा तो था पर मैंने साफ मनाकर दिया।.... अरे लक्की! इन दिनों बेडरूम में लेटे ही लेटे टीवी में जितना कुछ देखा– फिल्म ही तो है.... उधर शहरों में चेनपुलिंग, किडनैपिंग और छेड़छाड़ के इतने ज्यादा मामले सुनने में आ रहे हैं कि डर लगता है मुझे बाहर निकलने में। अभी हम लोगों के पास कोई लॉ एण्ड आर्डर पावर्स भी तो नहीं। ....मॉम ने सख्त हिदायत की है कि सेंटर–कैम्पस से बाहर निकलना हो तो लॅकी के साथ ही निकलना वर्ना कतंई नहीं। .....वैसे और भी कई लोग कहीं बाहर निकले हैं।..... आज कल तो मुल्क के बड़े–बड़े शहरों में ही नहीं, कैपीटल्स में ब्लास्ट हो रहे हैं.... भले ही हममें से किसी को कोई नुकसान न पहुँचे, लेकिन इतना जोखिम उठाने का फायदा भी क्या? पूरी लाइफ पड़ी है मस्ती करने के लिए....। गलत कह रही हूँ लकी?

मैं सिर्फ सुनता रहा था झरना को। कहती रही वह– अ अ हाँ लक्की, जब जिन्दगी ही साथ बितानी है– तुम से क्या छुपाना।.... 'थोड़ी सी स्कॉच है मेरे पास।' कहते कहते उसने मदिरा की एक अद्धा निकाली अपनी अल्मारी से। जुकाम वगैरह या फिर सिर या देह दर्द में यही मुझे फायदा करती है– ले लेती हूँ एक या ज्यादा से ज्यादा दो पेग। आव.... एक और गिलास है मेरे पास।

नो थैंक्स्। जानती तो हो तुम कि मैंने कभी भी इसका सेवन नहीं किया।

अरे बिल्कुल लिटिल क्वान्टिटी। अब आफीसर्स भी इससे परहेज करेंगे तो उनकी पब्लिक लाइफ आधी–अधूरी ही तो हुई। इसलिए कम ऑन डियर। मुश्किल से चुटकी भर वक्त है हमारे पास।... पता नहीं कब कौन मक्खी की तरह टपक पड़े।

नो अ्.... नो अ्...... नो झरना, सवाल ही नहीं इसका। मैं ठीक भी हूँ। वैसे ये बताओ, तुम्हारे मॉम और डैड जानते हैं कि तुम ये औषधि इस्तेमाल में लाती हो?

लक्की! कोई बात नहीं। मैं फिर लिए लेती हूँ जरूरत भर की। सिप किया, पलकें लगातार पटपटाती, फिर अपनी नंगी बाहों और स्तन मंडलों को निहारती हुई..... किसी सागर की तलहटी से जैसे कोई पन्द्रहवाँ रत्न निकाल लाई हो, बोली– मैं अपने पैरेन्ट्स का बड़ा लिहाज करती हूँ। उधर मॉम भी जाने कैसे–कैसे उपदेश किया करती हैं– क्या करने से मानव जीवन सुखी होता है, क्या करने से इस जनम में और बाद में नरक मिलता है– इसलिए क्या करना चाहिए और क्या करने से बचना चाहिए।... इसे जानने के लिए विवेक यानी कान्सिएंस का इस्तेमाल बहुत जरूरी होता है। वह यह भी कहती हैं कि बड़ी मुश्किल से कोई आदमी का जनम पाता है तो ज्यादा विवेक और बहसबाजी में न पड़कर गल्तियाँ भी कर लेनी चाहिए जिससे कि परम आत्मा को यह अफसोस न करना पड़े कि उसने किसी प्राणी को बेकार ही आदमी बनाया।

ओ के..... यू डू इट, कैरी आन.... एन्ज्वाय। मेरा यह कहना ही था कि उसने दूसरे किस्त की तैयारी शुरू कर दी। उससे भी निपट ली, तुरन्त ही मुँह के अन्दर किसी खुशबू का स्प्रे किया। यकायक पीछे से आकर मेरा गाल भी चूम लिया बदमाश ने। फिर बोली– 'अपने पति के सामने उसकी जानकारी से किया गया कोई भी काम पाप की कटागरी में नहीं आता।'..... मुझे कतई पसन्द नहीं आई उसकी हरकत और उसकी बात। तब मैं मन ही मन लगातार झरना और सलोनी की अच्छाइयों और खराबियों का लेखाजोखा करता रहा था। हरेक दृष्टि से सलोनी का पलड़ा भारी दिखा। सलोनी खानपान में शुद्ध विशुद्ध है, वह न तो मदिरापायी है न औरत जात के प्रति घिन उत्पन्न करने वाली किसी भी हरकत की हामी।....

दो पेग नशे की गहराई में डूबती–इतराती झरना की चेतना कुछ कुछ

वापस आई तो भविष्य की दुहाई देने लगी– 'छोटी छोटी बातों को फील करते रहना सही नहीं, उनसे परहेज करने की प्रवृत्ति भी ठीक नहीं।.... किसी न किसी दिन हमारी दोस्ती पति–पत्नी का रूप लेने वाली है तो छोटे–छोटे रिहर्सल चलते रहने दीजिए। इस तरीके से दोनों की आपसी समझ बढ़ती है।..... चलो डियर, ठीक हूँ अब, गरम कपड़े पहने ही हूँ.... थोड़ा सा कैम्पस के अन्दर ही चहलकदमी कर लें।.... झरना के ऐसा मंसूबा जाहिर करने के दौरान ही बिजली कहीं छुप गयी तो वह खिलखिलाई थी– 'लकी, अब तो वैसे भी बाहर ही टहलते रहने के अलावा कोई चारा नहीं। अच्छा ही है.... जब तक अंधेरा है।'

मैं अपने दिलोदिमाग से दुरुस्त था– इसलिए उसकी किसी भी बात पर किसी भी तरह की टिप्पणी नहीं की। डर लगा– कहीं शाउट न करने लगे वह..... और मैं अपने नये–नये साथियों में बेइ़ज्जत हो जाऊँ.... और बैठे बैठाये दूसरे दिन अखबारों में पढ़–पढ़कर सारा शहर थू–थू करने लगे।

इस बीच मेरी कमर में उसने अपना हाथ लपेट दिया और बरामदे में ले आयी, हम बार–बार यहीं टहले–तब तक सब कहीं के बल्ब खिल उठे..... झरना के रूम पार्टनर भी ठीक उसी वक्त आ पहुँचे।

हलो... सभी एक साथ बोलीं।.... मैंने रेसीप्रोकेट किया।

फिर वे झरना से बोली– हलो झरना ! हैव यू टेकेन कोल्डारिन ऑर एनी अदर पेन रिलीवर ?

ओ एस ! आई एम फीलिंग फाइन प्रीती, स्मिता एण्ड सुधा..... कैसे लौट आई तुम लोग। दस बजे तक आना चाहिए था। भई, नाइन थर्टी तक तो पिक्चर ही छूटती है।

स्मिता बोली– तुम्हें खलल पहुँचाने का बड़ा दुख है झरना। ऐक्चुअली किसी ने कह दिया कि हॉल में एक बम प्लान्ट किया हुआ है.... तुरन्त ही प्रीती बोली– 'किसी ने सिनेमा के मैनेजर को फोन पर खबर दी थी। हाँ.... स्मिता बोली– तो पिक्चर देखने वाले और इधर–उधर की भीड़ पैलेस के बाहर जमा हो गयी। मैनेजर ने बताया– पुलिस को सूचना दे दी गयी है, वे लोग जब आयेंगे.... छानबीन करके क्लियरेंस देंगे तब शो शुरू किया जा सकेगा– क्या करते फिर.... चले आये हम लोग।

झरना बोली– लखन से अभी अभी कर रहे थे यही बात। आज तो

मन्दिरों में, रेलगाड़ियों और भीड़भाड़ वाले सभी इलाकों में ब्लास्ट हो रहे हैं। सरकारी मशीनरी हाथ पर हाथ धरे बैठी हैं, मंत्री अपने ही तैयार कराये गये आंकड़ों की दुहाई दे रहे हैं..... पिछले साल की तुलना में कम हुई जारिहाना गतिविधियाँ। हुई....! मरे लोगों के परिवार वालों को बाँट दिये गये लाखों के चेक। भला इससे क्या होना। गौरतलब और अफसोस की बात तो ये है कि अबोध बच्चों और निर्दोष लोगों की जानें गयीं.... जो नुकसान बेहिसाब है।... लकी, मुझे तो रेलजर्नी से बड़ा डर लगता है। ट्रेनिंग पूरी होने पर घर तो ट्रेन से ही जाना है, लेकिन कैसे मुमकिन होगा यह ? क्या तुम मुझे आगरे तक साथ दोगे ?.... झरना की इस फिक्र को सुनकर तीनों लेडी आफीसर अपने अपने मुँह में मुट्ठी लगाकर देर तक हँसीं थी।

मुझसे न रहा गया। हँसा तो नहीं लेकिन झरना से पूछने लगा– मेरे साथ रहने से हादसा तो नहीं रुक सकेगा। तुम्हारे साथ मैं और जाने कितने लोग घायल होंगे और जान से भी हाथ धोयेंगे। क्या चाहती हो फिर.... साथ–साथ विकलांग होना या एक–दूसरे की उंगली पकड़े हुए मरना ?

स्मिता बोली– इसलिए बोल्ड बनो.... यू सी.... कामन कैलेमिटी इज नो कैलेमिटी..... क्यों सुधा ?

उचित है तुम्हारा सुझाव। विपत्ति अनामंत्रित होती है। अतएव उसके आगमन की आशंका में जीवन का कार्य–व्यापार बाधित नहीं होना चाहिए।

सुधा की इस ठेठ हिन्दी अभिव्यक्ति से स्मिता के कथन को बल भी मिला था, देव भाषा की प्रथम पुत्री अपनी मातृभाषा को हिंगलिशियत से क्षण भर के लिए छुटकारा भी। स्मिता और प्रीती हल्का सा हँसी थीं, इसी बीच इनकी दैहिक भंगिमाओं को मैंने बकायदे परखा था।.... स्मिता की नुकीली नाक उसके चेहरे से बड़ी दिखी, हँसते वक्त उसकी ठुड्डी गुम थी क्योंकि अभी तो दुबली–पतली है न, कद भी लम्बा। प्रीती निहायत चुलबुली और बहुत ही प्रेटी या कि स्ट्राइकिंगली प्रेटी, तो सुधा मुकम्मल तौर पर विद्योत्तमा। चौड़े बार्डर वाली साड़ी में दिख रही थी सलोनी की रूपरेखा से कुछ कुछ मिलती जुलती। ....तब झरना के चेहरे तक नजर खिसकी। अपनी कतरी हुए अलकों को बार–बार उंगलियों से उलझाती, सुलझाती और संवारती सफेद दुपट्टे को कोकाकोली कलर के कोट से दबाये हुए वह कुछ कुछ जमीन से ऊपर खड़ी

थी। ट्यूब लाइट के और कुछ करीब पहुँचने पर ताम्रवर्णी वह कुछ कुछ पियाजी दिखी थी। कई बार उसके कपोलों के बीच बहुत बारीक सी लहरें उपजीं, नाक के निकट तक की यात्रा करते--करते वे विलीन भी हो गयीं.... और हर बार मैंने उसके कपोल कुण्डों में गोते लगाये। अस्लियतन झरना की मनःस्थिति दूसरी आफीसरों की तुलना में धीरे–धीरे असामान्य हो रही थी... और बिना किसी कारण किसी सीमा तक मेरी भी।.... शायद अब मेरा उस जगह ठहरना ठीक नहीं था... तो चाभियों का गुच्छा उंगलियों पर नचाते हुए मैंने कहा– झरना, चलते हैं अब, मेस में सभी इन्तजार कर रहे होंगे। मेरे इस संकेत को सभी लेड़ी आफीसरों ने समझा–तुरन्त बोली वे– हम भी चल रहे हैं लखन। चलना तो झरना को भी था लेकिन वह कुछ कुछ खीझ भरे स्वर में बोली– आप लोग चलें, फ्रेश होके तुरन्त आई मैं भी।

मैं जानता था क्यों लौट रही है वह अपने कमरे। फ्रेश होना तो बहाना था सिर्फ–स्कॉच की बाटल वह टेबल पर खुली ही छोड़ आई थी, सम्भव है एक छोटी सी किस्त और लेकर वह देह का पूरा पूरा दर्द आज ही नक्की कर लेना चाहती हो।.... लेकिन बाटल को अल्मारी के सुपुर्द करके वह तुरन्त ही लौटी थी। मुझे अचरज हुआ यह देखकर कि मेस से लौटने तक उसने सभी साथियों के सामने बिल्कुल सामान्य होने का सफल अभिनय किया।

x x x

सोते वक्त मैंने 'आउटलुक' को पेपरवेट से दबाकर टेबल पर रख दिया, लैम्प भी गुल कर दी, हथेलियों को आपस में रगड़ता रहा, फिर तो दिन भर का किया कराया किसी फिल्म की मानिन्द मेरे दिलोदिमाग में आता रहा–हफ्ते पर हफ्ते बीते लेकिन किसी भी दिन ठीक से पूजा पाठ नहीं कर पाया। आखिर क्या करूँ!

आज सुबह मन बनाया कि पिछली कमी भले ही पूर न कर पाऊँ लेकिन आज की पूजा अर्चना तो पूरी की पूरी करूँगा..... ऐन वक्त पर भास्कर आ धमका।... जे.पी. भास्कर.... हलो शर्मा !... मैंने सोचा, क्लास में आपसी मेल–मुलाकात बिल्कुल फार्मल होती है– पर्सनल कान्टैक्ट्स् से आत्मीयता पनपती है तो आपको डिस्टर्ब करने चला आया.... कृपया माफ करेंगे।

नो नो माई डियर ब्रदर। नाट दि लीस्ट डिस्टर्बेन्स। वेलकम।.... वेलकम ! ......आपका आइडिया बड़ा माकूल है, मैं भी दो–चार दिन बाद थोड़ी थोड़ी देर

के लिए सभी साथियों से मिलूँगा।... पर भास्कर! आपका आइडिया भले ही उम्दा है.... एक परेशानी भी आयेगी इसमें।

क्या..... ? कैसी परेशानी ?

लेडी ट्रेनीज़ शायद हम जेन्ट्स की इस जज्बादिली को ज्यादा अहमियत न दें। आपकी या हमारी यही शिकायत डायरेक्टर (ट्रेनिंग) से कर दें कि वह कमरे में अकेली थी..... फलाँ–फलाँ बिना नॉक किये अन्दर तक चले आये और उनके इरादे ठीक नहीं थे।..... मेरी इस बात पर भास्कर ने भी जोर का ठहाका लगाया था.... लेकिन इसका भय भी उसके सीने के किसी कोने में समा गया था। तुरन्त ही कहने लगा खुले रूम में नॉक करने की जरूरत ही क्या... और अगर आने वाले ने कोई नागवार हरकत की तो वह क्या थी– इसका खुलासा किये जाने का तर्क पेश किया जा सकता है। यह भी हो सकता है कि इस अभियान में हम चार–पाँच आफीसर साथ–साथ चलें।' उसने ट्रेनिंग के दौरान बहुत ही पोशीदा तरीके से कहे गये कुछ वाक्यों का सहारा भी लिया। बोला– लखन जी! मेरे मन में किसी लेडी आफिसर के लिए रंचमात्र पाप का भाव नहीं.... बाकायदे शादीशुदा भी हूँ मैं तो भी अगर ऐसी नौबत आती है– ट्रेनिंग सेण्टर के निर्देशानुसार ही जवाब होगा हमारा।

क्या भास्कर भाई ?

एक लेक्चर की बात याद करो– नन ऑफ यू शुड बिकम हंड्रेड परसेंट ब्रह्मचारी, ह्वाट इज इम्पार्टेन्ट इज दैट यू हैव टु चूज टाइम एण्ड प्लेस।.... लखन जी! मेरा, आपका या किसी भी मेल आफीसर का ऐसा स्पष्टीकरण बड़ा ही यूजफुल रहेगा। .....कमल सिन्हा अब तो शायद रिटायर हो चुके हैं– अपनी ही उम्र वाले तीन चार दोस्तों के साथ बैठे हुए वह अपने ट्रेनिंग पीरियड की बात बताने लगे– एक बहुत ही मूडी ट्रेनी को कुछ प्रोबेशनरों ने किसी अनैतिक काम के लिए राजी कर लिया..... फिर सामूहिक रूप से उन्होंने उसकी हालत भी बिगाड़ दी। घटना की शिकायत किये जाने पर इन्स्टीट्यूट के चीफ ने सभी प्रोबेशनरों को एक बड़ी नेक सलाह की– शुड चूज बियरेबल नम्बर ....इट शुड नेवर एक्सीड टू।

मैंने तो नहीं सुनी किसी भी लेक्चर में ऐसी बात। उधर आपके मिस्टर कमल भी पता नहीं किस सर्विस के थे और कौन था उनका ट्रेनिंग सेन्टर भास्कर! तुम्हारी ये बातें मन गढ़ंत हैं, सौ फीसदी मनगढ़ंत। इस बात पर भास्कर की कही ये बातें सही थीं या गढ़ी हुई... हम दोनों रह

रहकर जोर जोर से हँसते रहे..... काफी देर तक हँसते रहे।.... बाद में अपने अपने सिर झुकाये दोनों ने अपने अपने सीने के रोयें भी गिने, फिर एक–दूसरे को देखा। मैंनें बात आगे बढ़ाई।

देखो भास्कर, इन्स्टीट्यूट चीफ की यह सलाह अगर प्रामाणिक है तो भी यकीन करने वाली नहीं। बहुत पुरानी तो है ही। उन्होंने मामले को रफादफा कर लिया क्योंकि वह समय आजकल से अलग था, तब मीडिया भी बहुत जागरूक सक्रिय और ताकतवर नहीं था। आज तो न्यूज चैनल गली–गली में सूंघते रहते हैं ऐसी घटनायें। हर दस मिनट पर नयी नयी चुहलबाजियों और रंगरेलियों का खुलासा करते हैं, ऐसे कामों में शिरकत करने वालों के चेहरे दिखाते हैं, उनके बयान भी लेते हैं.... मतलब कि थू–थू करा देते हैं..... यह थू थू कहीं ज्यादा होती है अगर आरोपी कोई आफीसर हो।

इसलिए...... ?

इसलिए वहाँ तक तो सोचो ही नहीं क्योंकि हम सभी लोग एक जैसे संस्कारों वाले हों... जरूरी नहीं। हमारे पैरेन्ट्स भी ज्यादातर मामलों में अच्छी हैसियत वाले होते हैं.... हमें उनकी इज्जत–आबरू का ज्यादा ख्याल करना होगा।

तो तू चाहता क्या है फिर.... अपनी योजना का खुलासा तो कर...।

लंच टाइम के बाद डायनिंग हॉल में ही हम सभी एक मीटिंग कर लें। इसमें एक कार्यक्रम की बात करें.... सांस्कृतिक कार्यक्रम की। पता लगावें कि कितनी लड़कियाँ डांस कर सकती हैं, कितनी किसी ड्रामा में रोमैन्टिक रोल कर सकती हैं, कितनी सिंगर हैं और कितनी किसी म्यूजिकल इन्स्ट्रूमेंट के बजाने की महारत वाली। इसी बहाने इन्स्टीट्यूट में हम लोगों के कुछ छाया चित्र लग जायेंगे। ....कल्चरल ईव की हम सभी एक हफ्ता पहले से ही पब्लीसिटी भी कर लेंगे।

लेकिन ?

लेकिन क्या लखन ? हममें से कुछ दोनों तरह के आफीसरों को साथ लेकर तुम डायरेक्टर इन्स्टीट्यूट के पास जावोगे, आमन्त्रित करोगे उन्हें, फिर सभी लेक्चररों से भी इस बारें में विनती कर ली जायेगी। मतलब.... यहाँ के अधिकारियों को यह नहीं लगना चाहिये कि इस साल का प्रोबेशनरों का बैच

जिन्दादिल नहीं।

सुनकर जंगली मूवी के हीरों की तरह याहू करते हुए दहाड़ा मैं, भास्कर ने भी जुगलबन्दी की। याहू की इस दहाड़ के तुरन्त बाद हमारे मंसूबे को आकार मिल गया था। उधर रात भी काफी हो चुकी थी, और देर तक बैठे रहने से सुबह समय से उठ पाना नामुमकिन हो जाता।.... तो हम उठ खड़े हुए थे; भास्कर के कंधे पर हाथ धरे हुए बोला मैं– तो ....भास्कर, भाई तुम कभी भी न खुद आराम करते हो और न सोते हो लेकिन मुझे तुम अपने जैसा क्यों बनाओ ?.... तूने मेरे इस याराना डॉयलॉग का बुरा तो नहीं माना ?

मेरे लहजे में ही वह भी बोला– जे कहके अलबेले तूने मुझे लूट लिया। अब मेरे सामने प्राब्लंम ये है कि इस बाबत एफ.आई.आर. कराने के लिए रात में कैसे निकलूँ।.... अच्छा, शुभरात्रि ! गुड नाइट.....

मैंने बातचीत को आखिरी आहुति दी– अरे कमरे के अन्दर नहीं... बरामदे पहुँचकर हम गुडनाइट और शुभरात्रि का आदान–प्रदान करेंगे..... चल रहा हूँ मैं भी वहाँ तक। भास्कर ! इन लफ्जों में हाय–बाय, सी यू, प्लीज, थैंक यू और धन्यवाद जैसे लफ्ज जोड़ लें तो ये आम आदमी ही नहीं, बड़ी से बड़ी सुविधाओं से सम्पन्न आदमी के लिए रेज़कारी या छुट्टा पैसे वाली भूमिका अदा करते हैं।

बड़ी खुशमिजाजी में बोला वह– यार, कुछ ही महीने पहले की बात समझ। किसी काम से बंगलोर गया था। सुख सागर इण्टर नेशनल होटल के सामने की बात है। मेरी चप्पल की एक कील चुभ रही थी– सड़क के दूसरी ओर फुटपाथ पर बैठा हुआ एक अभियन्ता दिखा, मैंने उसे अपनी प्राब्लेम बताई हिन्दी में भी और हिंगलिश में भी। उसने चुभती कील को निकालकर चार–पाँच नयी कीलें ठोंक दीं। पाँच रुपये मेहनताना माँगा। पाँच का नोट या सिक्का मेरे पास था नहीं, छोटी औकात वाले दूसरे सिक्के भी नहीं थे तो दस का नोट उसे थमाकर बोला मैं–पाँच रुपये इस नोट से ले लो। इस नोट को अपनी जेब में रखकर उसने चप्पलों के चारों ओर जगह–जगह दस पन्द्रह कीलें और ठोक दी, चप्पलें मेरी ओर फेंककर दूसरी ओर देखने लगा जैसे उसे मुझसे कोई मतलब ही नहीं। एक कान्सटेबल की मदद ली मैंने। उसने पूरी स्थिति समझकर मुझे टूटीफूटी भाषा में बताया कि आपके पास चेन्ज नहीं था, तो आपने ही उससे बाकी पाँच रुपये की कई कीलें ठोक देने को कहा था।..... अब एक और

वाकिया सुन– सन् ६२ में फादर के साथ मैं मदुरै गया। मीनाक्षी जी के मन्दिर तक जाते और लौटते वक्त रेजगारी की समस्या हो गयी नतीजन रिक्शावाले को वाजिब मेहनताने से दो से तीन गुना पैसे देने पड़े।

मेरे सामने समस्या थी कि दूसरे भास्कर के दर्शन होने तक सोने के लिए मेरे पास बहुत कम वक्त बचा है तो मैंने उससे कहा– यार तू भी बता..... कितने पैसे लेगा अब यहाँ से अपने रूम तक जाने के लिए ?.... मेरे पास रेजगारी है। सुनते ही उसने बिजली के बल्ब की तरफ उंगलियाँ लहराई और अ हा हा हा करता हुआ रुख्सत हुआ।

१६

तुम..... ? तुम झरना यहाँ.... इस वक्त ?

क्यों ? नहीं होना चाहिए मुझे यहाँ ?

दो वजहें हैं। पहली तो यह कि अभी एक मिनट पहले ही भास्कर गया है और तुम कहाँ थी जो कुछ ही लमहों में यहाँ तक आ सकी। दूसरी यह कि हम लोग अच्छे दोस्त हैं। हमारे पैरेन्ट्स् भी एक जमाने से दोस्त रहे हैं– इसलिए रात के ग्यारह बजे तुम्हारा यहाँ होना ठीक नहीं था। क्या सोच रही होंगी तुम्हारे रूम की और आफीसर !

तुम उनकी फिक्र मत करो। मेरी बाटल की सारी ही उनने आपस में बाँट ली है। सो चुकी हैं अपने अपने चौपाये बेंचकर। कोई चित्त हालत में है तो कोई पट्ट। हममें–तुममें किसी भी करवट में कोई परहेज नहीं। कोई देखे भी तो क्या ! बता चुकी हूँ सभी को कि हम दोनों पति पत्नी होने वाले हैं.... मुश्किल से दो महीने के भीतर।

देखो झरना....।

इसमें देखने की क्या बात ! मेरी मॉम बता चुकी हैं मुझे.... कि डैड को साथ लेकर लखनऊ जाने की एक फार्मेलिटी ही करनी है, वह लोग बात पक्की भी कर चुके होंगे अब तक।...... मैं तुम्हें चाहती हूँ और तुम मुझे, फिर देखना–सुनना क्या ?.... आई आलवेज हैव कन्डोम विद मी।

विकट समस्या.... मेरे सामने..... सूझ ही नहीं रहा था कि इस वक्त मैं क्या करूँ क्या नहीं, कैसे बचाऊँ इस छद्म सुन्दरी से अपनी और अपने परिवार की

अस्मिता ! इसी बीच वह मदमक्खी मेरे सीने से चिपक गयी, लटक भी गयी मेरी गर्दन से।.... इस मुसीबत ने मेरी सोच–समझ भी लगभग खत्म कर दी थी। डाट फटकार करता हूँ तो उसकी भले ही न हो, मेरी बदनामी होती है; दूसरी स्थिति मुझे कुबूल ही नहीं थी।.... अंततः एक नयी चाल चल ही गया मैं।

आधी रात हो रही है झरना.... आई थिंक समझ रही हो तुम।..... हाँ कुछ बातें तुम्हारे दोस्त होने के नाते कहना चाहूँगा। नम्बर वन.... यह मानकर चलना सही नहीं होगा कि तुम्हारे मॉम और डैड हमारे–तुम्हारे बारे में बात पक्की कर चुके होंगे। यह काम इतने आसान नहीं होते। नम्बर टू– तुम्हें दोस्ती की सही परिभाषा की बिल्कुल जानकारी नहीं। शायद .....इसकी जो डेफीनीशन तुम्हारे दिलोदिमाग में है– मैं उसमें फिट नहीं हूँ। मदिरा के इस्तेमाल की अपनी आदत को पोशीदा रक्खो वर्ना यह मर्द हो या औरत उसके कैरियर को पूछ पर खड़ाकर देती है। 'स्नेक्स एण्ड लैडर्स' खेल तुमने बहुत खेला है, ज्यादा कुछ तुम्हें समझाने की जरूरत नहीं।

मुझे उपदेश मत करो लखन– आवाज दबाकर चीखी वह।

एक बार तुम्हारी रेपूटेशन गड्ढे में आ गयी तो कोई क्रेन भी शायद ही उसे उससे बाहर निकाल पाये। तब.... पूरी दुनिया के लिए तुम इस्तेमाल की वस्तु बनकर रह जावोगी..... क्योंकि अपने को उबारने के लिए जितना भी उछलोगी अपने ही पावों के निशानों पर गिरोगी.... बार बार गिरोगी उन्हीं पर।.... विनती है कि अपनी तरह मुझे खिलौना न बनाओ। दोस्त होने के नाते मैं तुम्हें बार बार समझाऊँगा कि हाथ–हाथ का खिलौना बनने में तुम किसी न किसी वक्त टूटकर बिखर जावोगी।

एकायक मेरा मोबाइल चमका अपने म्यूजिक के साथ। जी.... नमस्कार। .....अच्छा अच्छा.... कम्पनी के किसी काम से। वेलकम, कल दोपहर के बाद मेरा ऑफ भी है। गुड.... वेरी गुड ! वेरी गुड !!

कौन था यह, तुम्हारी बात से कुछ समझी ही नहीं।..... पूछा उसने।

एक दोस्त !..... अरे तुम जानती तो हो.... तुम्हारा रिश्तेदार वो.... सचिन। दो–तीन बजे के बाद उसे और उसके कुछ दोस्तों को कम्पनी देनी पड़ेगी मुझे। तुम तो शायद किसी आफीसर्स वाइव्ज फंक्शन में चीफ़गेस्ट बनने की रिहर्सल में जावोगी।.... अपने भाषण में क्या क्या कहोगी.... उसका होमवर्क कर लो।

गुड लॅक....। अरे.... सॉरी !..... चलो तुम्हें छोड़ आता हूँ तुम्हारी ब्लॉक में। स्मिता वगैरह होश में होंगी... इन्तजार कर रही होंगी तुम्हारा।

गुस्से में कहने लगी– मैंने देख रखा है रास्ता, चली जाऊँगी, थैंक्स।

निर्लज्ज !..... क्षमाशीलता को यह मेरी कमजोरी समझती है।..... अब तक की सभी कसौटियों में नाकाम, बिल्कुल नाकाम, शून्या रुख्सत तो हुई, लेकिन मेरे मुँह के अगल–बगल का बलात्कार करके। दोनों गालों को चूसने के बाद चुटकियों से मसला भी था उन्हें। मैंने अपने संस्कारों के सहारे संयन से काम लिया। हो सकता है यह किसी के लिए सुख हो, लेकिन नामानुरूप मेरी वर्जनाओं की सूची में पहले क्रम में। ....स्फ्ष्टतः झरना का मेरे प्रति एकांगी पागलपन है यह....। राँग नम्बर डायल कर रहो है बार बार।.... सोचने लगा– दद्दा जी और सचिन जैसे परिवार से कैसे कैसे लोग जुड़े हैं।...... लेकिन ये उनकी या उनके परिवार की ही गल्ती क्यों.... मैं तो बिना रिश्तेदारी का ही रिश्तेदार बना हूँ...... किसी भ्रमवश या फिर सर्वथा बलात्।

सोचते–सोचते डेढ़ बजे तक की रात बीत गयी। इस बीच तिपहियों और ट्रकों के आनेजाने की आवाजें कानों में छन–छन कर पड़ती रहीं, रेलवे स्टेशन भी नजदीक ही था तो गाड़ियों के साइरन आदमी की जिन्दगी पटरी पर होने का संकेत देते रहे। यहाँ इतनी रात तक कभी नहीं जगा था– इसलिए ये आवाजें रोज रोज की होते हुए भी नई लग रहीं थीं। .....अनायास ही पलकें चिकप गयीं– सो गया फिर।

२०

सचिन आया, साथ में दद्दा जी, मेरी माँ और भाभी को भी लाया। मैंने सभी को यथायोग्य सम्मान दिया। सिर्फ औपचारिकतावश ही कहा– होटल में ठहरने की क्या जरूरत थी– होस्टल में ही चलना ज्यादा उचित होता। वहाँ की सुविधायें स्टैण्डर्ड के नजरिये से बहुत खराब या दिक्कततलब नहीं। कहते कहते दिमाग में कसाव पैदा कर रही थी रात की घटना.... इसलिए यह भी ध्यान न रहा कि वहाँ प्रोबेशनरों के परिजनों और सम्बन्धियों को ठहराना नियम सम्मत नहीं था.... वरन् नियम व अनुशासन के बिल्कुल ही विरुद्ध।

सचिन ने मेरी बात का उत्तर दिया– होस्टल में न तो तुम्हें ज्यादा वक्त

मिलता न हम अपने आने का मक्सद ही बता पाते।..... माँ जी ! कुछ कहिये आप भी। गलत तो नहीं कहा मैंने ?

बेटे हमने सलोनी की न तो कभी सूरत देखी थी न उसकी सीरत का ही कोई अनुमान था। इन लोगों ने तुम्हारे भैया को अपने व्यवहार, सोचने की शैली तथा सात्विकता से खुश किया तो वह भी सलोनी में खूबियाँ ही खूबियाँ बाँचने लगे।

माँ की बात में भाभी ने भी अपनी मान्यता जोड़ दी– लखन ! तुम्हारी और सलोनी जैसी जोड़ी ईश्वर ने बड़े मनोयोग से बनाया है– उसकी सर्जना का तिरस्कार मत करना। हमारे परिवार के लिहाज से भी वह फर्स्ट क्लास है।

भाभी ! आपको मिलाकर मेरी दो माँयें हैं।...... मेरी अपनी कोई पसन्द नहीं। आपकी पसन्द मेरे लिए हुक्म है। वैसे सलोनी को मैंने दो चार बार देखा है– एक बार कैटी के कालेज के फंक्शन में तो एक–दो बार दद्दा जी की बीमारी के वक्त उन्हीं के घर में।

नहीं लखन, हम लोगों ने सोची– कहीं झरना की ओर तुम्हारा रुझान न हो।... वैसे लड़की वह भी खराब नहीं– रुतबेवाली भी है..... लेकिन कह नहीं सकती कि..... अ अ अ... हम चाहते हैं कि तुम्हारी पूरी जिन्दगी एक उत्तम गृहस्थ के रूप में भी सुख–शान्ति से बीते। जहाँ तक झरना का सम्बन्ध है हम परिवार वालों को तुम्हारी खुशी के लिए उसे भी बर्दाश्त करना होगा।

माँ बोली– बेटे, कैटी ने झरना की बात पर खुफियागीरी की थी। असत्य भाषण कर रही थी वह सलोनी और शुभी की बाबत।.... मुझे सन्देह हो रहा है कि अपनी माँ की गढ़ी हुई योजना के अनुसार वह किसी भी हालत में हमारे परिवार से जुड़ना चाहती है। तो भी..... जैसी मर्जी हो, हम सभी तुम्हारी खुशी चाहते हैं।

माँ ! झरना आपके लायक इसलिए भी नहीं, कि वह लखनऊ में ही पोस्टिंग के बावजूद आपके लिए वक्त निकाल पायेगी..... सन्देह है मुझे। फिर रहेगी भी लखनऊ में तो कितने दिन। जहाँ तक कैटी की रिपोर्ट की बात है– वह मेरी भतीजी ही नहीं, दोस्त भी है, अच्छा और खराब की समझ भी है उसे– हर तरह से विश्वास करने के काबिल भी है वह। इसलिए हम दिली तौर पर

अपने पूरे परिवार से बंधे हैं।

सचिन–लेकिन अपनी दोस्त से कैसे निपटोगे? बुरा तो मानेगी ही।

भाई साहब! क्या कहना चाहंते हो फिर? उसकी खुशी के लिए अपने परिवार वालों को दरकिनार कर दूँ?...... बस उसे हम लोगों की आज की बातों की जानकारी नहीं होनी चाहिए।...... अरे वेटर!..... माँ भाभी और दद्दा जी! होटल के मेनू के मुताबिक क्या क्या खाना पसन्द करोगे।

दद्दा जी ने पहले से ही जवाब तैयार कर रखा था– पुत्र! मैं कैसे खा पाऊँगा अपने होने वाले जामाता की वस्तु।

मुझे बड़ा अचरज हुआ जब दो बैरों की अगुआई करती हुई कैटी– जैसे अकस्मात प्रकट हुई हो। बोली– अंकल जी को मेरा प्रणाम स्वीकार हो।.... हाँ, आज हमारे इन्तजाम में लाई जा रही प्रत्येक वस्तु प्रत्येक व्यक्ति ग्रहण करेगा क्योंकि सम्पूर्ण व्यवस्था मेरे होने वाले मामा जी की है।

माँ बोली– अच्छा अच्छा! सचिन और मेरे समधी जी ने कैटी को मुख्तारनामा दे रखा है।

टेबल के चारों ओर बैठ बैठे सभी अपने अपने मन पसन्द व्यंजन खा रहे थे तभी कैटी बोली– कन्या पक्ष और वर पक्ष से मेरी विनती है कि पाणि ग्रहण यानी विवाह कार्यक्रम कुछ महीने बाद शुरू किया जाये जिससे कि वर को पर्याप्त वक्त मिल सके उन दिनों कम से कम पन्द्रह दिन के अवकाश की व्यवस्था करने का, साथ ही साथ सभी के कंधों पर विराजमान अनचाही आत्माओं को तंत्र मंत्र से भगाने का काफी वक्त भी मिल सकेगा। .....इतना जरूर है कि मुद्रोत्सव यानी रिंग सेरेमनी शीघ्र अतिशीघ्र होना आवश्यक है।

दद्दा बोले–'ठीक है.... बिल्कुल ठीक है बेटे लखन, हम लोग तुम्हारी तीनों ही माताओं से दैनन्दिन सम्पर्क बनाये रखेंगे क्योंकि गारद बाबू तो मेरी पहुँच. से बाहर हो चुके हैं।' दद्दा को सुनकर सभी की आँखे खुशी से मुसकाईं थीं। ....मैंने माँ, भाभी, कैटी, सचिन और दद्दा जी को एक एक करके देखा...., फिर उठ खड़ा हुआ, बोला– माँ, शायद शाम को ही मिल पाऊँगा अब, सचिन! चलता हूँ फिर।....

२१

सीढ़ियों से उतर रहा हूँ क्योंकि लिफ्ट का इस्तेमाल करने के दौरान कोई न कोई जान–पहचान वाला मिल सकता है।..... यकायक अपना नाम सुनकर मैं चौक उठा.... इसलिए भी कि यह झरना की आवाज लगी। बुदबुदाया– माँ अपनी रामायण में ठीक ही पढ़ती है कि उसके रचने वाले ने उसे लिखते हुए हर तरह के आदमी जिनमें दुष्ट भी शामिल हैं की खुशी हासिल करने के लिए विनती की थी, क्योंकि बिलावजे ही वे छाया की तरह आगे–पीछे लगे रहते हैं। बुदबुदाता रहा– 'इस समय तो इसे चीफगेस्ट की प्रैक्टिकल ट्रेनिंग में होना चाहिए था।' तब तक मेरी पीठ पर हाथ पटककर बोली वह– एक लेडी मेम्बर की अचानक मौत हो जाने की वजह से फंक्शन ही रद्द कर दिया गया.... तो होनी ही थी.... अपनेआप मेरी छुट्टी। अ...हाँ, क्या हुआ अभी की मीटिंग में... सचिन, तुम्हारी मॉम और तुम्हारी भाभी जी से क्या गुफ्तगू हुई... और कैटी भी तो आई है.... सलोनी के बाबू जी भी। यूँ ही वक्त बरबाद किया इन लोगों ने या हासिल भी किया कुछ ?

मुझे देखने आये थे कि इस शहर में जब से आया, यहाँ की क्लाइमेट का कैसा असर पड़ा.... और यह जानने भी कि किसी दोस्त ने चूसते चूसते मेरे गालों को दागदार तो नहीं कर दिया....., शराबखोर तो नहीं हो गया मैं उसकी सोहबत में।

लेकिन वे लोग मेरी आदतों के बारे में क्या जाने ?

दो तरह से जाना उन्होंने। भाभी की नजर पड़ गयी थी घर में जब तुम हम लोगों के डेली यूज की चीजें मुझे दिखा रही थी, उसमें उन्होंनें अंगूरी जी के दर्शन कर लिये थे। दूसरे, तुम जानती हो कि मैं अपने परिवारीजनों से बहुत लगाव और सच्चाई वाला व्यवहार रखता हूँ, मेरी शादी का फैसला भी तो उन्हें ही करना है– इसलिए तुमने जब जब जिन जिन मेहरबानियों और मनमानियों से मुझे नवाजा, मैं अपने मोबाइल से बताता रहा। खैर..... होस्टेल से दूर यहाँ होटल में तुम ?... वैसे तो तुम्हें बाजार या सिनेमा हाउस तक जाने में किडनैपिंग ....ईव टीजिंग, चेन स्नैचिंग जैसी बातों से दहशत महसूस होती है, रेल सफर के दौरान मुझ जैसे किसी दोस्त की तलाश में भी रहती हो जिससे

कि दोनों के परिवार वालों को हादसे का शिकार होने पर लाखों रुपये मिलें।

ओह ! लखन आज भी मैं तुम्हारी ही सिक्योरिटी में रही। डायनिंग हॉल के बिल्कुल कोने बैठी–बैठी मैंने सब कुछ देखा और :....अन्दाजा भी लगा लिया कि सचिन एण्ड कम्पनी के आने का क्या मकसद था। फ्रेण्ड ! सोच–समझ लो, बराबरी का रिश्ता ही ठीक होता है, हम और तुम एक ही हैसियत वाले हैं, मेरे पापा आपके 'दि सो काल्ड बड़े भैया' के दोस्त भी हैं....।

फिर क्या कर रही हो, उतना ही सोचकर तुम्हें इन ओछी हरकतों से बचना चाहिए था।

मैं भी अपनी माँ को मोबाइल पर कान्टैक्ट कर रही थी, लगातार स्विच्ड ऑफ इन्फार्म किया जा रहा है। जरूरी लगा उन्हें बताना कि यहाँ कैसी खिचड़ी पक रही है।

लगी रहो.... लगी रहो, बाथरूम में होगी इस वक्त....। कभी कोई हैण्डसेट लेकर अन्दर बैठा रहता है, दस मिनट नहीं तो पन्द्रह मिनट में बाहर आ रही होंगी।

जी... लगी ही हूँ, वर्ना आगरे जाना पड़ेगा, अपने फ्यूचर के लिए कुछ तो करना ही होगा।

मेरे इस सुझाव से झरना कुछ खीझ में दिखी। मोबाइल को फर्श पर पटक दिया। मैंने उसके टुकड़े फिकवा देने के लिए गेट पर खड़े कर्मचारी को इशारा किया। ....झरना की तरफ गुस्से से घूरता हुआ मन ही मन कहा था– तुम्हें मुश्तकिल तौर पर आगरे में ही होना चाहिए।

बोली वह, 'मुझे किसी की हमदर्दी या मदद की जरूरत नहीं।' फिर खुद ही उसने उसके टुकड़े बटोरे और अपनी पर्स में डाल लिया। यकायक बुदबुदाते हुए सिसकने भी लगी वह– मॉम से बात हुई थी, उन्हें इतने जरूरी काम को कर डालने की फुर्सत ही नहीं मिली। डैड को लेकर उन्हें लखनऊ पहुँचना ही था।.... कोई खास वजह भी नहीं बताई।

मैं बताता हूँ– क्या वजह रही होगा उनके लखनऊ न जा पाने की। कम से कम तुम्हारे डैड को सन्देह रहा ही होगा कि उनकी प्रिय कन्या लखन के घर के लिए कितनी उपयुक्त है। मतलब यह कि इसी कारण उन्हें मेरे बड़े भैया, मॉम वगैरह से बात करने में संकोच रहा होगा या उन्हें किन्हीं जरूरी मुकदमों

की सुनवाई करानी होगी, उनके लिए रातोदिन की माथापच्ची करते रहे होंगे, जगह–जगह ट्रेन हादसों का सिलसिला चल रहा है, बड़े बड़े शहरों में भीड़भाड़ वाले इलाकों में जगह जगह ब्लास्ट भी हो रहे हैं– सो उनके थमने के मौसम का इन्तजार कर रहे होंगे वह, अमरीका को बिना मूछ की दाढ़ी और साफेवाले चुप्पा लादेन के मिल जाने का भी इन्तजार कर सकते हैं वह।..... हँसते–हँसते फिर मैंने कहा– ये वहजें अगर ना होंगी तो वह सद्दाम हुसैन की फाँसी के सिलवर जुब्ली साल के इन्तजार में होंगे। ....हर महीने पेट्रोल की घरेलू कीमतों में इजाफे से भी तिलमिलाये होंगे क्योंकि इससे लखनऊ तक की रोड का सफर महँगा होता जा रहा है।.... एक वजह और भी.... तुम जैसी सेक्सी लुक वाली बेहतरीन लड़की के लिए मुझ जैसे खूसट से बेहतर वर तलाश रहे होंगे।

तीर सी चुभने वाली बातों से वह कुछ तिलमिलाती सी दिखी थी। आटो पर मैं भी बैठा उसके साथ, तब वह मुँह को अपने दुपट्टे से ढाँपकर किसी मरीज की तरह मेरी जांघों पर ही लेट गयी। इतना अच्छा था कि इस शहर में मेरी कोई जान पहचान नहीं थी वर्ना लोगों को मेरे परिहास का एक उम्दा सा मुद्दा मिल जाता।

थोड़ी देर में ही अपने आप उठ बैठी वह। अपना रूमाल जेब से खींचकर मैंने उसके आँसुओं से आधे बदन में हो रही सीलन को पहले तो पोछा, फिर रूमाल उसी के हाथ में थमा दी। उसका मन हल्का करने व ध्यान बटाने की गरज से बोला– भले ही ड्राइविंग एक्सपर्ट हो तुम..... इसके लिए इन्स्टीट्यूट के प्रोग्राम के मुताबिक तुम्हें शरीक तो होना ही पड़ेगा। राइडिंग और स्वीमिंग की आर्ट मुझमें बिल्कुल नहीं, ...मुझे भी इन्हें सीखना ही पड़ेगा।

बोली वह... जेन्ट्स और लेडी आफीसर्स को अलग–अलग दिनों में इस तरह की ट्रेनिंग के लिए क्यों बुलाया..... बिल्कुल ही अजीब सोच है अथारिटीज की।

जाहिर है।..... हो सकता है तुम लोगों के लिए उन दिनों लेडी ट्रेनर्स ही हों। अगर ऐसा नहीं हो तो होशियार रहियेगा झरना जी, मर्द जात का कोई भरोसा नहीं, मेरी तरह सभी विरागी नहीं होते। .....एक वाकया याद आया कुछ वक्त पहले का। फोर्सेज की एक आफीसर ने किसी सीनियर आफीसर पर बदनीयती का आरोप लगाया था, उसकी किसी ने नहीं सुनी..... उल्टे उसे अनुशासन

तोड़ने की सजा भी भोगनी पड़ी।

कुछ घबराई सी झरना ने मुझे कुछ देर तक देखा था।

कमॉन झरना! बी ब्रेव, फेस दि म्यूजिक। दूसरी आफीसरों से कहीं बोल्ड हो तुम।..... तो भी सुलझे दिमाग से काम लेना होगा।

छोड़िये.... देखा जायेगा। तुम्हीं जब बनी बनाई बात को बिगाड़ने पर आमादा हो, तो मेरे लिए इससे बड़ी बात और क्या हो सकती है; लक्की.... आर यू रियली सीरियस एबाउट सलोनी?

नो नो नो नो..... नो झरना। आज छोड़ो इस बारे में बात करना। किसी दिन तुम्हारा मूड देखकर खुद ही बतियाऊँगा तुमसे। का...रेक्ट मैम?

२२

उस दिन डिनर लेने के नाम पर कैन्टीन पहुँचा सिर्फ इसलिए कि सभी साथी मुझे कहीं गया हुआ न समझें और... लखनऊ से माँ वगैरह के आने का पता भी न चले वर्ना मैं तरह तरह के सवालों से घिर जाता, और सभी झरना के होस्टल और इन्स्टीट्यूट से गायब रहने का वास्ता भी मुझसे ही जोड़ने लगते।.... बहरहाल थोड़ी दाल और चावल खाकर तौलिये से हाथ पोछ लिये थे। मेरे कमरे के दूसरे साथी भाई सी.एल. हंस ने कुछ व्यक्तिगत कारणों से किसी दूसरे साथी के कमरे में अपनी व्यवस्था कर ली थी, नतीजन डबल बेड वाला यह कमरा मुझे अकेले ही भोगने के लिए मिल गया था। साथियों के एक वर्ग में इसीलिए शुरू–शुरू में खुसफुसाहट चली कि बड़े भाई के जस्टिस होने के कारण आज तक दूसरा वाला बेड किसी दूसरे प्रोबेशनर को नहीं दिया गया। आखिरकार सभी से मेरे मेलजोल तथा सहृदय् बर्ताव के कारण थोड़े दिनों में अपने आप ही लोगों ने भुला दी यह बात।..... बहरहाल किवाड़ों को अन्दर की सिटकनी से चिपकाकर बिल्कुल निःस्वर वातावरण में सोचने लगा था– कैटी और सचिन जी की पूरी टीम दिन भर होटल में आराम करके स्टेशन पहुँच चुकी होगी। मुझे प्लेटफार्म पर सभी को विदाई देने के लिए होना ही चाहिए था लेकिन इन्स्टीट्यूट की अनुशासन नियमावली में मेरे लिए पूर्व अनुमति लेना जरूरी था उधर.... कोई भी बात झरना की जानकारी में आने से बचाये रहने के लिए भी नियम का फायदा उठाना गैरजरूरी लगा.... तो कैटी के पास

मोबाइल होने का फायदा उठा लिया, कह दिया था उससे कि मेरी ओर से सभी से माफी माँग ले। इसका सचिन वगैरह ने बुरा भी नहीं माना।....

हाँ.... कुछ लेटर्स कैटी ने मुझे भेजे थे, सभी में लिखी हुई बातें माँ और भाभी वगैरह की जानकारी में थीं– इसीलिए वे सधी हुई भाषा में थे।.... और हाँ... होटल से आटो लेने से पहले झरना पर छोड़े गये व्यंग्य तीर कम असर वाले नहीं थे।..... तिरिया चरित्तर तो देखो आगरेवाली का.... आटो पर मेरी जांघों पर ही मुँह ढापकर लेट गयी थी। तिरियाचरित्तर मैंने इसलिए कहा क्योंकि मैं जानता हूँ वह मुझे फिलहाल कूल डाउन करना चाहती थी, मेरी उत्तेजना को काबू में करने का उसका उद्देश्य है अपनी मॉम को इतना वक्त देना कि वह लखनऊ जाकर मेरे घरवालों से मिलकर कोई रास्ता निकाल सकें।

मैं भाभी को उनकी दृष्टि के लिए दाद दूँगा जो कुछ ही क्षणों में समझ गयीं कि नित्यप्रति के इस्तेमाल वाले सामान में एक अंगूरी बॉटल भी थी।... हालांकि झरना ने उसे मुझसे भी छुपाना चाहा था। बिल्कुल ही दुष्ट! पहली मुलाकात तक में इसने माँ और भाभी के पांव नहीं छुये थे। ये बुरा भी लगा था मुझे।

अरे, कहाँ तक गिनूँ उसकी बेवकूफियों को। इसके साथ अपने भविष्य के बारे में सोचकर ही अजीब सा डर लगता है। दिलफेंक है, सेक्सी भी और जमाने से भी आगे–आगे चलनेवाली। सांस्कृतिक प्रदूषण का झण्डा उठाये ये शायद किसी की भी न हो। जड़ ही तो होती हैं सागर और उसके सीने पर तैरती लहरें, तटबन्ध से टकराकर तुरन्त ही आत्मसात कर लेती हैं स्वयं को सागर के वैराट्य में.... किसी भी दशा में अतिक्रमण नहीं करती उसकी मर्यादा का।..... किन्तु ये झरना शायद ही इस जनम में किसी को अपना बना पाये, किसी भी एक की तो नहीं ही ....और किसी अस्मिता सम्पन्न पुरुष को तो बिल्कुल ही नहीं।.... नारी रूप में ये किसी भी कुत्सित क्रिया में अजेय रहेगी।.... अब से मुझे हरेक स्थिति को परखते रहना होगा, तदनुसार ही जीत हासिल करनी होगी। सलोनी मेरे लिए सुख शान्ति एवं संतोष की कोष है, जैसे भी हो मुझे उसे संजोना है।...... कभी–कभी यह सोचना कि झरना मेरी बेहतर लाइफ पार्टनर होगी.... निश्चित रूप से मेरी भूल रही है, कोई इसे मेरा दृष्टिदोष भी कह सकता है,..... रियायत ही समझिये कि अब तक मैंने उसकी नाक नहीं काटी।

किस गरीब के सत्यानाश के लिए अपनी छुरी तेज कर रहे हो लखन ? ......इस आवाज से अकस्मात चौक उठा मैं। अनुमान के मुताबिक झरना ही थी वह, बंद किवाड़ों से होकर कमरे के अन्दर दाखिल हो चुकी थी। पूछनेवाला था कि खुद ही बोल पड़ी– 'आपकी सिटकनी धोखेबाज है, बाहर से मैंने थोड़ा ही किवाड़ों को अपनी ओर खींचा कि वह फिसल गयी और मेरे लिए दरवाजा खुल गया। एक लम्बी हँसी हँसती हुई उसने अपना वाक्य पूरा किया... 'वर्ना मैं कोई भूतनी या चुड़ैल नहीं।'

मन ही मन कहा मैंने, शायद उसने मेरी भंगिमाओं को पढ़ भी लिया होगा भूतनी और चुडैल तुम्हारे मुकाबले क्या हैं झरना ! तुम किसी के कंधे पर बैठती हो तो उतरती ही नहीं, बड़े-बड़े ओझा तक पास आने में पचास बार सोचें...। अच्छा डियर ! मेरी तबियत कुछ ठीक नहीं, आराम करना चाहता हूँ, आँखें और मुँह बंद करके। तुम चाहो तो सिर्फ दो मिनट के लिए बैठ सकती हो।

फ्रेण्ड ! दो मिनट तुमने दिये.... तो अट्ठारह–बीस मिनट मेरी ओर से समझो। इतना वक्त काफी होगा शादी से पहले की रिहर्सल के लिए। अरे ऽऽ तुम्हें पता नहीं चल रहा है मेरे जिस्म के एक एक सेंटीमीटर से पूरे कमरे में फैल रही खुशबू का।.... तुम्हें पलकों पर सजाये रखूंगी लक्की, आगरे की हूँ तो तुम्हें शाहजहाँवाली शोहरत भी दिलाऊँगी... खुद के साथ तुम्हें भी अमर कर दूँगी।

ऐसा कहते कहते वह पावों से भी कई बार लड़खड़ाई थी– जबान से भी। इस क्षण मैंने होशोहवास से काम लिया। समझाने लगा– प्लीज झरना, तुम एक पब्लिक सर्वेण्ट हो.... पब्लिक सर्वेण्ट की एथिक्स होती है.... तुम्हारी ख्याति खराब चरित्र वाली हो जायेगी.... इसे बचाओ.... बचाओ..... वर्ना वाद में चाहते हुए भी हम एक नहीं हो पायेंगे। मेरी निगाह में इतना गिर जावोगी तुम कि मुझे ही नहीं, किसी को भी घिन लगेगी तुम्हें देखकर। .....कहने के बाद उसे कंधे का सहारा दिया, कमरे से बाहर लाया..... प्रीती और स्मिता को बराण्डे में खड़ी देखकर काफी हिम्मत बंधी। शायद वे सुन रही थीं बाहर से पूरे वाकिये को। अपनी कुछ सफाई देनी चाही तो वे ही बारी–बारी बोली–

यू आर ग्रेट लखन,

सर्टेन्ली ग्रेट

इसने ड्रिंक किया है,

ड्रिंग करते ही वाचाल हो उठी थी–

लक्की मेरा है, सलोनी उसे नहीं छीन सकती

वगैरह वगैरह !

आभार भरी आँखों से देखते हुए मैंने निवेदन किया– आप तीनों को मेरा धन्यवाद, थ्री थाउजेण्ड थैंक्स ! इसे सद्‌बुद्धि से काम लेने को कहें.... सही रास्ता दिखावें।.... कल होश में होगी.... तब मैं भी बैठूँगा आप लोगों के साथ।..... समझाऊँगा कि वह दिल से कम और दिमाग से ज्यादा काम ले.... अपने डैडी और मॉम को बदनाम न करें।.... ट्रेनिंग इन्स्टीट्यूट को भी टीवी चैनलों की स्टोरी बनने से बचाये।

राइट.... आलराइट, आप रूम में अन्दर से ठीक से सिटकनी लगालें, निश्चिन्त रहें, इस भटकी–अटकी अपनी दोस्त को रास्ते पर लाने की कोशिश करेंगे हम।

झरना इस दौरान शान्त थी। उसके कान में सुधा कोई मंत्र पढ़ती है, फिर कहती है पृथ्वी की तरह की तुझमें आकर्षण शक्ति नहीं, इसी कारण अपने नाम के अनुरूप पतन ही तेरी नियति है। क्यों रखा तेरी माँ ने ये झरना नाम ? राधिका नाम कहीं उत्तम होता तेरे लिए।

इनके जाते–जाते कहीं कभी पढ़ा हुआ दोहा तो याद नहीं आया, उसके भाव को ही बुदबुदा सका– यही कि हमेशा औरत ही रही है स्वयं की अधोगति के मूल में।

२३

आज डॉ. जगलानी का लेक्चर था; उनके बजाये लेक्चर हाल की तरफ इन्स्टीट्यूट के डायरेक्टर तेजी से आते दिखे। पीछे–पीछे कई लोग हैं डॉ. जगलानी के अलावा।..... मैं चिन्ता में पड़ गया.... क्या होगा अब तो मेरी ही नहीं, मेरे साथ मेरे प्रतिष्ठित परिजन भी परिहास के पात्र बनेंगे। कैटी को क्या जवाब दूँगा, कैसे देख पाऊँगा उसे निष्पाप नजर से। ......मुसीबत के लमहों में स्मिता, प्रीती और सुधा तो मदद करेंगे ही। इन सभी तथा झरना देवी को मन ही मन नमस्कार करके अपनी चेयर पर बैठ गया। झरना देवी का नमस्कार इसलिए इस भाव से किया कि वह अपनी भी इज्जत बचाने की कोशिश करे।

पहले से ही किसी अपराधी की मुद्रा में बैठी बार–बार अपनी जीभ सूखे ओठों पर फिरा रही थी। शायद अन्दर ही अन्दर उसे भी किसी अनपेक्षित बात के घटित होने की आशंका थी। मैंने तय किया कि ईश्वर को मेरे पक्ष में होना ही चाहिए इसलिए वह किसी भी बात पर आवेश को हावी नहीं होने देगा।

निदेशक व उनके साथी क्लास से मुखातिब होकर बैठे कि मेरी आँखें, गाल, गर्दन, कंधे, ओठ तथा कान रह–रहकर फड़कने लगे, ए.सी. की सारी कूबत भी बेअसर हो गयी जब मेरे पूरे चेहरे पर पसीने की बूंदे उग आईं, पुलओवर के अन्दर कमीज और बनियान तरावट से लथपथ थे।

इस अतंरात में डायरेक्टर पहले तो अपने सहयोगियों से मुड़ मुड़कर कुछ मशविरा–सा करते रहे, फिर चमकती आँखों से पूरे क्लास से मुखातिब होने के लिए माइक पर आये– 'जेन्टिल मेन, आप सभी ही नहीं, हम सभी के लिए बड़े हर्ष की बात है कि आप सभी यहाँ से बड़ी संक्षिप्त सी दीक्षा लेकर पहले से निर्देशित समय से पहले ही कस्बों और ग्रामीण अंचलों की ओर जायेंगे जिससे कि आप देश–प्रदेश के जनजीवन, उसकी व्यक्तिगत और सामूहिक समस्याओं, अभावों तथा उन्हें आर्थिक तंगी से उबारने वाली भारत सरकार और प्रदेश सरकार की योजनाओं से भलीभांति परिचित हों, उनसे सम्बन्धित कार्यक्रमों में महसूस हो रही कमियों के प्रति अपने आई.क्यू का इस्तेमाल भी कर सकें।

अब तक मैं पूरा–पूरा सामान्य हो चुका था। खुद ही खुद पर थोपा गया तनाव भी नक्की हो चुका था, चेहरे पर उभर रही परेशानी की बूंदे, अंग-प्रत्यंग के फड़कने और धुंध भरे भविष्य की आहट..... जैसी चिन्तायें भी अपने आप बीते वक्त की बातें हो चुकी थीं। डायरेक्टर ने डॉ. जगलानी की ओर इशारा करते हुए कहा कि आप लोगों से अब हमारे सहयोगी श्री जगलानी बात करेंगे। इन्स्टीट्यूट के इस सत्र की अंतिम क्लास में आप लोग इनसे किसी भी बिन्दु पर मार्गदर्शन ग्रहण कर सकते हैं।

माइक पर आते ही डॉ. जगलानी ने सबसे पहले एक सूचना दी– फिफ्टी परसेंट बैच को आज ही जरूरी कागजाद प्राप्त करा दिये जायेंगे, ये लोग कल प्रातः से अपने–अपने गन्तव्य स्थानों के लिए मूव करेंगे। शेष आप लोग कल कार्य दिवस न होने की वजह से परसों यहाँ से अपना अभिलेख प्राप्त करके

होस्टेल छोड़ेंगे। नोटिस बोर्ड पर लगी लिस्टें आप सभी जरूर पढ़ लें। अब मैं सबसे पहले श्री लखन शर्मा से आग्रह करूँगा कि वह अपने मन में उठ रहीं किन्हीं समस्याओं के बारे में प्रश्न करें।

आज के दिन दुनिया के ज्यादातर देश आतंक की समस्या से परेशान हैं। आये दिन आतंकी वारदातों में सैकड़ों–हजारों इन्सान मारे जाते हैं, देश की सम्पदा भी ऐसी घटनाओं में नष्ट होती है। आतंकियों से खेल–क्षेत्र भी प्रभावित है, भारतीय प्रर्यटन भी। इनसे आयेदिन देश में सम्पन्न होने वाले चुनाव भी काफी मुतास्सिर हैं। मेरे कहने का मतलब यह नहीं कि देश की सीमाओं के बाहर से संचालित होने वाली हरकतें ही आतंकवाद के दायरे में आती हैं। देश के अन्दर भी बाम्ब ब्लास्ट, साम्प्रदायिक उन्माद और अलगाववादी मानसिकता लगभग सभी राजनीतिक पाटियों में माफियों की मिलावट होने की वजह से सब कहीं दहशत का अखण्ड राज है। कुछ कहें आप इन मुद्दों पर।

बहुत अच्छे प्रश्न रहे हैं आपके दिलोदिगाम में। इन पर अपने नियमित लेक्चर्स में मैंने परिचयात्मक बातें कही हैं, लेकिन इन मुद्दों पर एक जिला प्रशासक की भूमिका में आपको क्या करना है, क्या कार्रवाई करने से बचना है– मैंने इनका आलेख तैयार कर लिया है, और यह अभी सभी में वितरित हो जायेगा। समस्या के समाधान के लिए इन बातों पर कड़ाई से ही अमल करना होगा– ऐसी भी बात नहीं। किसी प्रशासक को कहाँ और कब बिल्कुल सख्त होना है, कब बीच के रास्ते पर अमल करना है, स्थिति परिस्थिति के मुताबिक ही सोचना होगा।

एनी अदर क्वेश्चन..... नो......नो क्वेश्चन..... ?

झरना....! ऐनी प्राब्लेम ?..... नो.... आल राइट। हाँ शायद यहाँ से प्रस्थान करने के लिए आप बाद वालों में हैं।..... जिस जनपद के लिए आप और सभी की रवानगी होगी वह विवरण नोटिस बोर्ड की सूचियों में देखा जा सकता है।

मैं माइक के पास फिर गया एक बार। भास्कर साथ खड़ा है। मैं बोला– सभी से मेरी एक विनती– आज शाम को मेरी तरफ से कैम्पस लॉन में 'स्वल्पाहार' का कार्यक्रम है। मुझे यकीन है कि मेरे सभी साथी–सहयोगी और यहाँ की अथारिटीज इसमें शामिल होकर मुझ पर ज्यादा से ज्यादा कृपा करेंगे।

और कुछ कहता या न भी कहता– भास्कर ने माइक पकड़ लिया– लखन शर्मा ने स्वल्पाहार की बात कहकर हम सभी दोस्तों को सुझाया है कि क्यों न हम लोग मिलकर एक ग्रैण्ड रात्रिभोज आयोजित करें। इस कार्यक्रम को ग्रैण्ड डिनर या शानदार रात्रिभोज नाम किस लिए दिया गया– यह बताने की नहीं, वरन देखने की बात होगी। इसलिए आप सभी गुरुजन तथा इन्स्टीट्यूट कर्मी पधारें जरूर। यकायक तालियाँ बजी थीं इस घोषणा के बाद।

x x x

पूरे हॉल में नजर दौड़ाई, झरना नदारत है। वह प्रोग्राम का बायकॉट करेगी, दूसरी महिला अफ़सरों को भी इसकी जानकारी नहीं थी। स्मिता कह रही थी– झरना जरूरत से ज्यादा मूडी है, पता ही नहीं चलता उसके दिमाग का, कब क्या और कैसा चाहती है वह, कब क्या नहीं– बताती भी नहीं। प्रीती ने कुछ कुछ चुटकी लेते हुए कहा– हम लोग तो सिर्फ रूम मेट्स थीं, लखन जी तो उसके खासुलखास.... ताज्जुब है इन्हें भी उसने इस कार्यक्रम से अपनी गैर हाजिरी का इशारा तक नहीं किया।

मैंने दबी जुबान से आँखें सहज ही तरेरते हुए सिर्फ इतना कहा– प्रीती ! ..... जिसका अर्थ था कि सारी जानकारी के बावजूद ये कटाक्ष ? ....उचित नहीं है यह। तुरन्त ही सुधा बोली– 'अस्लियतन उसके मस्तिष्क में यह एक बार भी नहीं आया कि उसी के कारण उसके जीवन का कोई प्रिय अध्याय सहसा ही बंद हो सकता है।' गनीमत थी कि यह बात उसने पीछे से आकर मेरे कान में धीमी आवाज में कही। ....वर्ना ट्रेनिंग सत्र के आखिरी दिन मैं बहुतों के कटाक्ष का पात्र बन जाता। यकायक स्मिता बोली– डायरेक्टर ने कुछ कर्मचारियों को उसे तलाशने के लिए जरूर भेजा होगा। लखन जी ! धीरज से काम लो आप। .... तीनों इसके बाद रहस्य भरी हँसी हँसीं थीं।

मैं सोचने लगा– मोबाइल पर अपनी मॉम से बात कर रही होगी, कमरे में या कैम्पस में कहीं खड़ी हुई। क्या बता रही होगी वह ? ....यही ना कि पढ़ाई के दिनों की दोस्ती नौकरी में आ जाने के बाद भी दोस्ती ही बनी रही.... जरा भी नहीं बढ़ा उसका कद। माँ और सचिन एण्ड कम्पनी के आने का भी जिक्र

कर रही होगी, फिर कह रही होगी कि आखिरी क्षण वाली कोशिश जरूर कर ले वह। हुँह......... झरना का विचित्र स्वभाव है, कभी भी उसके दिलोदिमाग में उमड़ते–घुमड़ते मंसूबों का पूर्वानुमान सम्भव नहीं होता। स्मिता वगैरह का भी तो यही कहना है।..... तो अधपगली सी..... अकेले ही पैदल भटक रही होगी बिल्कुल एकान्त में क्योंकि मॉम पर दबाव बनाने के सबब से उसे इन आखिरी मिनटों की कोशिश करनी लाजमी है। मेरे सोचने का सिलसिला आगे भी बढ़ता रहा।

हो सकता है रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म पर बुक स्टाल के इर्दगिर्द टहल रही हो.... या फिर पत्रिकाओं के पन्ने पलट रही हो, तंत्रमंत्र की किताबें भी... क्योंकि मुझे किसी दिन बताया था– मॉम किसी बाधा के निवारण के लिए किसी–किसी दिन गलियों के अगल–बगल या बीच में दीया जलाती हैं, नीबू भी काटती हैं, माँ के ये अनपेक्षित संस्कार कुछ न कुछ तो कन्या में भी आये ही होंगे। वैसे मेरी हाँ में हाँ मिलाकर मुझे खुश करने के लिए यही कहा था– उसे भी ऐसी बातों या विश्वासों पर कतई यकीन नहीं।

किसी भी सीमा को पार कर सकती है वह जिससे कि सलोनी या कोई दूसरी लड़की उसकी विकल्प न बन सके। वैसे नाअक्ल तो कतई नहीं वह जो अपना जनम ही बेकार कर देने की बात सोचे।

इसी क्षण मंच से घोषणा हुई– हाज़रीन। दिल और दिमाग थामकर बैठिये और देखिये एक खूबसूरत अदाकारा का उससे भी खूबसूरत नृत्य.... और हाँ... पहिचानिये भी कि ये है कौन।.... लीजिये मैं ही बताये देता हूँ– हमीं लोगों में एक.... यह है कुमारी झरना।..... भास्कर की इस घोषणा के साथ ही तालियों की गड़गड़ाहट के बीच झरना ने नाचते हुए मंच में प्रवेश किया था। कई साथियों ने मिमिकरी और गायन के आइटम पेश किये, फिर घोषणा हुई– दीनबन्धु मीटिंग हॉल में कृपया सभी चलें डिनर के लिए।

झरना आई मेरे पास। पूछ लिया.... कैसा रहा मेरा डान्स?

लोग इतना आनन्दित रहे कि सभी पलक भांजे बिना देखते रहे तुम्हें। इन्स्टीट्यूट के सभी अधिकारी थोड़ी देर पहले ही कह रहे थे– यहाँ कभी भी नहीं हुआ इतना ब्रीफ बट ब्यूटीफुल कान्सर्ट।

ट्रू या सिर्फ मुझे खुश करने के लिए ऐसा बता रहे हो लकी ?

स्मिता एण्ड कम्पनी पास ही थीं। तीनों ने बताया कि लोगों का कहना है कि हमेशा ही बाहरी कलाकार तो आये लेकिन पहली बार किसी प्रोबेशनर ने नृत्य प्रस्तुत किया और वह बढ़िया भी रहा।

ठीक लकी, लेकिन तुमने अपनी बात नहीं कही। तुम्हें कैसी लगी मेरी परफार्मेन्स ?

लग रहा था जैसे सूरज के रथ के घोड़े देर तक इसी शहर के आसमान पर ठहरे रहे.... कलाई में बंधी सभी की घड़िया निर्जीव हो उठी थी जब तुम किसी स्वच्छन्द परी सी मंच पर आई थी और यूं नाचने लगी जैसे किसी महासागर की लहरों पर गतिमान हो.... इस वक्त तुम किसी भी महादेव की साधना खण्डित करने में सक्षम थी।

क्या लखन शर्मा नाम के इस महादेव की साधना पर कोई असर पड़ा..... जिससे बात कर रही हूँ मैं ?

झरना तारीफ तो तुम्हारी रूममेट्स भी कर रही हैं, मैंने भी तारीफ ही की। बस.... सभी के लहजें में फर्क है।.... शायद तुम्हारा मनचाहा उत्तर मेरे पास नहीं।

x x x

आज के एक एक मिनट के खोया–पाया का लेखाजोखा देर तक करता रहा। यूँ खुशी और तनाव के लमहों को तौलने के दौरान यकायक मोबाइल का हुक्मी म्यूजिक हुआ– फिर तो देखना और सुनना ही था– अरे.... बड़े भैया प्रणाम। मैं आपसे थोड़ी देर में बात करता ही। बताता कि आज से.....

मुझे मालूम है सब। इसीलिए तुम्हें शान से ले जाने के लिए आया हूँ– कैटी, उसकी माँ और अपनी माँ के अलावा तुम्हारे लिए एक स्पेशल सरप्राइज भी साथ है। तुम्हें होस्टेल से पिकअप करने के लिए दस बजे तक पहुँचेंगे हम सब। तैयार रहना। अच्छा शुभ रात्रि और गुडनाइट।

सोचता रहा कि मेरे लिए क्या स्पेशल सरप्राइज लाये होंगे बड़े भैया, समझ ही नहीं पा रहा था– क्या हो सकता है वह ! बात होने के दौरान उनसे पूछने की हिम्मत भी नहीं थी, इसलिए भी कि कल सुबह वह यहीं आ भी रहे हैं।.... यही सोचते–सोचते आज भी चिपक गयीं आँखें।

२४

पता नहीं इन्स्टीट्यूट से मेरे प्रशिक्षण मुक्त होने की सूचना कैसे मिली जो मुझे साथ ले जाने के लिए बड़े भैया लोग आये !.... उधर ठीक दस बजे इन्स्टीट्यूट के कुछ अधिकारी, गुरुजन और होस्टेल के कई दोस्त स्वागती कक्ष में पहुँच चुके थे। उसी के बगल में कुछ ही कदम आगे है मेरा कक्ष। अपनी अम्बैसडर से बड़े भैया जी पहुँचे, तो आर्डरली मुकम्मल वर्दी में साथ–साथ था। अपना–अपना परिचय देते हुए सभी ने उनका खैरमकदम किया। मैंने भी माँ भाभी और बड़े भैया को प्रणाम करते हुए इन्स्टीट्यूट के सभी लोगों को नमन किया।

पर झरना बेटी कहाँ है ?... बड़े भैया के इस सवाल का आखिर क्या जवाब देता मैं ! प्रीती ने मेरी मदद की– हम लोग चले तब वह रूम में नहीं थी, हो सकता है टॉयलेट में रही हो।.... अभी फिर देखती हूँ।

लेकिन सर। मेरी प्यारी–प्यारी कैटी कहाँ.... और शायद कोई सरप्राइज भी लायें हैं आप मेरे लिए।...... इसके बाद और भी कुछ पूछता कि भैया ने कैम्पस के गेट की ओर तर्जनी तान दी। बोले– 'वो रहा तुम्हारा सरप्राइज.... और कैटी।' ....इस बात पर मैं न उन्हें धन्यवाद दे सकता था न खुशी जाहिर करने का दीगर कोई तरीका ही अपना सकता था, सिर झुकाये संकोच भरी भंगिमा में खड़ा रहा। इसी बीच प्रीती ने आकर सूचना दी कि झरना कमरे में नहीं है,... तो कुछ क्षण शान्त खड़े रहे सभी, सहसा भैया ने ही चुप्पी तोड़ी– जेन्टिलमेन एण्ड प्रेटी लेडी आफीसर्स ! लखन की नाजानकारी में मैंने... और ये मेरी और इसकी माँ ने एक गुस्ताखी की है। कह नहीं सकता ये इस बात से खुश होगा या नहीं .... अभी अभी ये लर्नेड लड़की जो मेरी बिटिया की उंगली थामें आप लोगों के सामने खड़ी है, उसे हम लोगों ने इसके लिए चुना है– सलोनी नाम है इसका। सूचना अभी दी है, वेडिंग के वक्त आने के लिए आप सभी से अनुरोध भी करूँगा– होप यू विल ओब्लाइज अस।

सलोनी ने थोड़ा सा मुस्काते हुए सभी को हाथ जोड़कर नमस्कार किया था। मैं भी शिष्टाचारवश उसके पास पहुँचा– दोनों में नमस्कार का आदान–प्रदान हुआ। इस पर सभी साथियों–सहयोगियों ने कांग्रेट्स लखन, मुबारक लखन, बधाइयाँ लखन, माई बेस्ट विशेज लखन वगैरह कहते हुए खुशी जाहिर की

थी। इस पर तिरछी निगाह से कई बार मैंने सलोनी के सलोनेपन को छुआ था।

स्मिता, प्रीती और सुधा आगे बढ़ीं– आप लोग थोड़ी देर के लिए बैठ लीजिए, तुरन्त व्यवस्था करती हूँ एक एक कप चाय की। अनुरोध पर एक जोरदार ठहाके के साथ बड़े भैया ने खुशी जाहिर की, फिर बोले– बेटे! आप लोगों की ओर से आपके ही डायरेक्टर साहब हमें पहले ही यह इज्जत बख्श चुके हैं। बड़ा खुशनसीब हूँ कि लखनऊ यूनीवर्सिटी से मैंने इनके साथ ही एम. कॉम. और लॉ किया था.... और आज तक कायम है हमारी दोस्ती। अच्छा हाँ. ... शाम तक हम लखनऊ भी पहुँचना चाहते हैं।.... इसलिए आइन्दा कभी मैं आपसे चाय माँगकर पियूँगा.... आज इजाजत दीजिये आप लोग। मुझे यकीन है कि आप लोग कतई बुरा नहीं मानेंगी।... बैठते–बैठते सुधा ने सलोनी से हाथ मिलाये और मेरी ओर देखते हुए एक बार फिर शुभकामनाएँ व्यक्त कीं– अच्छी पत्नी के समान पुरुष के लिए अन्य कोई उपलब्धि नहीं। दिशा देती है वह अपने पति और सन्तति के भविष्य को। .....ऐण्ड लखन, योर सलोनी इज यूनीक....।

चलती कार में मैं दायें–बायें नजर दौड़ाता रहा कि शायद कहीं चलती–फिरती दिख जाय..... लेकिन झरना दिखी ही नहीं कहीं। बड़े भैया अवश्य ही मेरे चेहरे को पढ़ सके। बोले–अपनी आगरे वाली को तलाश रहे हो लखन!......उसे हम लोगों के यहाँ आने की खबर कल ही लग चुकी थी.... इसलिए मुँह छिपाने के लिए कहीं निकल गयी होगी। दोस्त होने के बावजूद तुम उसे थोड़ा भी समझ नहीं पाये।

माँ ने आगे की बात कही– 'परसों तुम्हारे दद्दा जी ने हम लोगों को ताज में लंच दिया था। तभी झरना से बात हुई। तुम लोगों के निर्णय से वह प्रसन्न तो बहुत हुई। यह जानकर कि दोनों परिवार साथ–साथ ही हैं तो सलोनी से बात भी की। बधाइयाँ भी दीं इसे।..... कहने लगी– आप लोगों से शायद मैं भेंट न कर पाऊँ– किसी जान पहचान वाले के घर में एक ब्रीफ फंक्शन है। अगर वह वास्तव में वहीं गयी है तो लौट भी रही होगी। माँ के इन मर्म वचनों को सभी ने समझा था।.... यकायक उन्होंने एक सवाल किया। सवाल के बाद एक अबोध–सी हँसी भी हँसी थीं– फंक्शन के मायने तो समझती हूँ लेकिन ये 'ब्रीफ' क्या होता है। बेटे?

कैटी ने ही उत्तर दिया– 'दादी माँ! यह सवाल एक आई.ए.एस.

आफीसर से क्यों कर रही हो। मैं बताती हूँ– ब्रीफ फंक्शन का अर्थ होता है, ज्यादा से ज्यादा एक या डेढ़ घण्टे में खत्म हो सकने वाला उत्सव जिसमें बहुत ही आपस के लोग आमन्त्रित होते हैं।' कैटी के मुख से निकला यह वाक्य भी मर्म वचन ही कहा जायेगा।

क्यों बेटे! झरना से तू नाराज है क्या?

नाराज क्यूँ होऊँगी..... लेकिन पापा जी! उसकी एक बात मुझे अच्छी नहीं लगी– अंकल जब उन्हें दादी माँ और माँ से परिचित करा रहे थे.... और प्लेटफार्म से गाड़ी रवाना होने के वक्त तक उन्होंने किसी के प्रणाम नहीं किये।

माँ बोली– कोई बात नहीं मेरे बेटे। खुशी इस बात की है कि एक बात ही तुझे खराब लगी।

नहीं दादी! किसी भी नजरिये से उसने आप लोगों को इम्प्रेस नहीं किया था।

छोड़ भी अब। पापा के दोस्त की लड़की है वह.....

माँ का कथन पूरा भी नहीं हो पाया था कि कैटी ने लपक लिया उसे– तो दादी माँ, कभी मैं ऐसा अपराध करूँ तो क्या सिर्फ इस आधार पर उसे माफ कर दिया जायेगा कि मैं झरना मैम के पापा के दोस्त की बेटी हूँ?..... दादी माँ, आप भी खराब को खराब कहने से परहेज करतीं हैं तो फिर आपके बाद की जनरेशन को तहजीब कैसे सीखने को मिल पायेगी?

भाभी ने बात को खत्म करना चाहा– वैसे खुशमिजाज है, चुलबुली है, पढ़ीलिखी है ही। भले ही तेरी सलोनी मैम की तरह आई.एस.आई. मार्क वाली नहीं।

बड़े भैया ने कैटी को छेड़ा– कैटी, आज का तेरा आयोजन सलोनी कैसा रहा? सच ही बोलना, सच के सिवाय कुछ भी नहीं।

मैं क्या बताऊँ पापा जी, दादी की कृपा से तो मेरी मुरादें पूरी की पूरी पूरी हो गयीं हैं।

दादी बोली– मैंने क्या किया भला! अपनी माँ से ही पूछ ले। जब लखन ने तुझे ही मुख्तार बना दिया और तू ही अपने मन मुताबिक सारा कुछ करती रही तो हम लोगों के पास मूड़ी हिलाने के अलावा था भी क्या।..... इतना अच्छा

रहा कि तूने भी मेरे मन की भूमिका निभाई। अब तेरी आण्टी मेरे बुढ़ापे की लाठी तो बन ही गयी।

बड़े भैया बोले– माँ अपनी छोटी बहू से पूछपाछ कर ही कोई उम्मीद करना।

बेटे! मुझे जमाने की नजर में दोषी क्यों ठहराये। ये दोनों खुश रहें.... यही मेरी भी खुशी है। जब चाहे दोनों साथ रहें जब चाहें अपने घर में। दाल–भात में मूसलचंद नहीं बनूँगी मैं। मेरी बड़ी बहू तो है ही। जब चाहेंगे... अपनी–अपनी अटैची उठाई और चल दी लखन और उर्मिला के यहाँ, जब चाहा लौट भी आई।..... मुझे कभी कोई तकलीफ होगी तो अस्पताल भी दौड़ेंगे दोनों मेरी हालत जानने के लिए। .....तू, लखन और वसुन्धरा– तीन बेटे थे अभी तक, अब चौथा भी हो रहा है। हाँ.... या ना कुछ भी बोल कैटी क्योंकि आँखें गोल किये मन ही मन जाने क्या गुन रही है तू!

बताऊँ दादी, ...सोच रही थी कि जिस फंक्शन में अंकल चीफगेस्ट होंगे, मैम भी साथ रहेंगी। ज्यादातर जलसों में तो मेरी आण्टी ही चीफगेस्ट होंगी। इनके भाषणों से उस शहर के अखबार रंगे रहेंगे आयेदिन टीवी पर इनके इण्टरव्यू भी होंगे।....

कैटी को सुनते–सुनते सलोनी अकस्मात ही खिलखिलाई थी, तुरन्त ब्रेक भी लगा ली थी।

माँ ने तुरन्त ही कैटी से पूछ लिया– तू मैम कब तक कहती रहेगी कैटी?

हाँ.... सॉरी.... फार दिस आ'म फिफ्टी परसेंण्ट सॉरी दादी क्योंकि अभी ये मेरी फिफ्टी परसेंट ही चाची हैं, शादी हो जाने के बाद हन्ड्रेड परसेंट होगी। ....क्या है कि अभी चाची कहने की आदत पड़ गयी तो क्लास में भी चाची कह देने की भूल हो सकती है। इसलिए रिंग सेरेमनी के दिन ही सभी को पता चलना चाहिए कि अब मैम को मैं आण्टी या चाची भी कह सकती हूँ।

ठीक कह रही है मेरी पोती। बहुत पहले से लोगों को पता लग जाने में तेरा भी खर्च बढ़ जायेगा और सलोनी का भी।.... हमारी पोती बड़ी समझदार है न्यायमूर्ति.... अहहह

'क्यों नहीं, पोती तो आप ही की है।' भैया ने माँ की बात पर खुशी और संतोष जताया।

भाभी ने विषय बदलना चाहा–लखन जी, वे तीनों लड़कियाँ अच्छे स्वभाव वाली लगीं.... लगता है वे बहुत अच्छे परिवारों से हैं। इस प्रश्न को सलोनी ने भी सुना लेकिन किसी तरह की प्रतिक्रिया के बिना सिर झुकाये बैठी रही। कैटी के पास जैसे दूसरा कोई काम ही नहीं था–वह हम दोनों को बड़े चाव से देखती, कभी मुसकाती कभी अपनी मैम को कोई महान् उपलब्धि की मानिन्द देखती हुई संतुष्टि से गदगद हो उठती। मुझे भाभी के सवाल का उत्तर देना ही था– जी भाभी जी, धन- दौलत की दृष्टि से पूरे बैच में तीस पैतीस परसेंट आफीसर ही हरे भरे हैं, ये लड़कियाँ मिडिल क्लास की जरूर हैं लेकिन तहजीब और हरेक अच्छाई वाली कही जा सकती हैं, रिजर्वेशन वालों में चालीस परसेंट ऐसे हैं जिनके परिवार में पिता, भाई या बहन आई.ए.एस. हैं, करीब करीब दस परसेंट वे जो अपनी लगन, मेहनत और धीरज..... और महत्वाकांक्षा की बदौलत चयनित हुए, वर्ना निर्धन परिवारों से हैं।

लखन ! मैंने उन तीन लड़कियों के बारे में पूछा है।

परिचय तो सभी से हुआ लेकिन हम सभी खाने–पीने की आदतों में ही आत्मीय रहे, आंतरिक आत्मीयता के स्तर पर तनिक भी नजदीक नहीं। वेजेटेरियन्स वाली टेबल पर साथ–साथ बैठते। उनमें से एक किसी संस्कृत के विद्वान् के घर से है, इसने भी संस्कृत से एम.ए. किया, आपसी बातचीत में भी वह वेदों–पुराणों की ही बात करती है। किसी से कभी मैंने विशेष जानकारी नहीं चाही...... बुरा भी मान सकती थी न, लेकिन तीनों बहुत ही शिष्ट, शालीन तथा अच्छे संस्कारों वाली दिखीं। कुल मिलाकर ये एकदूसरे के साथ उठने बैठने लायक समझिये।.... बहुत ज्यादा दौलतमंद आदमी की मैं हाईरेटिंग नहीं करता और माँ आप ही तो कहती हैं कि अच्छे संस्कारों से कीमती कुछ भी नहीं होता किसी आदमी के पास।

तुरन्त ही कैटी बोली– अंकल ! दादी ने मुझसे कई बार कहा– अब तो बड़ी मजबूरी हो गयी कैटी। गीता के श्लोकों में किसी भी फसन्त को अकेले ही सुलझाना पड़ेगा।

चुप कैटी, बड़ी बाचाल है तू। तुझसे तो विश्वास में कोई भी बात मुँह तक लाना भी नासमझी है। अरे भई.... सलोनी बहू जब कभी लखनऊ आयेगी.... एक साथ पूछ लिया करेंगे सभी.... वर्ना तेरी माँ से कहेंगे कि वह मोटे

मोटे अक्षरों में छपी भावार्थ वाली गीता ला दे।

बड़े भैया बोले– माँ ने खुद ही निकाल लिया भरोसेमंद रास्ता। कैटी, तुम सलोनी को लेकर कभी श्रीरामरोड के कंठीमाला मार्केट चली जाना। अपनी बड़ी माँ के मनमुताबिक गीता भी ले आना। कल जावो तो अपनी गाड़ी लखन ही ले जा सकता है।..... जैसा ठीक समझो।

ठीक पापा।

ठीक नहीं...... बिल्कुल ठीक वर्ना माँ को दुबारा याद दिलानी पड़ी तो तेरी नाक चुटकी से दबाकर लम्बी कर दूँगा। सभी एक साथ हँसे थे भैया की बात पर। यकायक हुक्म किया उन्होंने–लखन ! अभी लखनऊ दूर है, अगले मोड़ पर टैक्सी स्टैण्ड है... कोई एक ले लो, कैटी और सलोनी और अपने लिए। वास्तव में इस गाड़ी पर हम सभी तकलीफ में है। दूसरे..... संकोच के मारे सलोनी लगातार चुपचाप भी है। ये और लखन एकदूसरे को बातों ही बातों समझेंगे भी।

सलोनी ठुनठुनाती हुई बोली– 'नहीं भैया। मैं दीदी और माँ के पास ही रहूँगी।' बात को लपक लिया माँ ने– 'बे......टे ! दो दिन से आराम नहीं मिल पाया, थोड़ी देर के लिए मैं लेट भी लूँगी' .....माँ की इस व्यवस्था की अपील भला किस अदालत में होती !.... तो सलोनी चुप हो गयी।.... लेकिन इससे भाभी को भी हमारे साथ आना पड़ता....। क्योंकि माँ ने कैटी को भी अपने ही पास रोक लेना चाहा आपस में बतियाने के लिए।

तुरन्त ही न्यायमूर्ति ने अनुरोध किया कि कैटी की माँ को कुछ जरूरी विचार विमर्श के लिए इसी गाड़ी पर रखना चाहूँगा– इसलिए कैटी मेरी पूर्व योजना के अनुसार काम करेगी। आखिरकार माँ शान्त रही।

x x x

मोबाइल बज उठा– अरे.... हलो !..... कोई बोल ही नहीं रहा। कई बार ऐसा ही हुआ, हलो के जवाब में कोई नहीं बोला।..... इस बार सलोनी ने मोबाइल कान से लगा लिया। यही तो चाहती थी झरना तो उसने उसकी आवाज पहचाना, फिर बमक उठी– 'सल्लू ! मैं तुम्हें देख लूँगी, तुम्हें किसी लायक नहीं छोड़ूँगी।' आगे की बात सुनने के लिए सलोनी ने मोबाइल मुझे ही थमा दिया। तब झरना की आवाज को मैं खुद सुनता–समझता रहा– 'सुन रही हो ? यह झरना भी रात–दिन में फर्क नहीं करती, ये सत्यानाश कर देगी

तुम्हारा।' तुम्हारे लिये खुशी की बात यह है कि इस दुर्दशा तक पहुँचने के लिए तुम्हें ज्यादा इन्तजार भी नहीं करना पड़ेगा।..... मैंने बंद कर दिया मोबाइल लेकिन सलोनी और कैटी ने मेरे चेहरे पर उभरती झरना की बातों को पढ़ा था। .....सलोनी किसी अनहोनी के घटित होने की आशंका से डरी हुई दिखी। उसकी आँखों में कुछ कुछ नमी हो आई थी जिसे कैटी ने अपने रूमाल से सुखाया। ....टैक्सी ड्राइवर गैर पहिचान का होने के कारण हम लोगों ने मोबाइल काल से सम्बन्धित कोई बात भी नहीं की।..... अलबत्ता झरना की मोबाइल वार्ता से लखनऊ तक के सफर में अजीब सी उदासी छा गयी तो..... दायें बायें और सामने दूर तक फैली प्रकृति की लुनाई बेमतलब और बेजायका लग रही थी।

मैंने दोनों से सिर्फ इतना कहा– कोई फिकर की बात नहीं, वह बरसती नहीं कभी भी। पत्थरों से प्रकट होकर पत्थरों पर ही अपना सर पटकना स्वभाव है उसका।

x x x

हाँ भाभी, जरा वेंकट से बात कराइये, देखें क्या कर रहा है इस वक्त। ......अच्छा अच्छा...... लाहौर गया है, जरूरी भी होता है चौबीस घण्टे में कम से कम एक बार वहाँ का सफर, वर्ना पूरे दिन आदमी के दिलोदिमाग उखड़े–उखड़े रहते हैं।.... कोई बात नहीं, छोड़िये... और आप दोनों की सेहत तो ठीक हैं।..... चलो ठीक है, पिछले हफ्ते हम बात कर ही चुके हैं। अच्छा, एक बहुत जरूरी विनती है– जरा झरना बेटी को संभालो.... थोड़ा–थोड़ा वैम्प हो रही है वह। ....भाभी तुम तो जानती हो– विधाता बच्चों के पैदा होने से पहले ही तय कर देता है कि उनकी सगाई किससे होनी है। बात शिष्टा की है,..... अब तुम भी तो इतनी बेहतरीन नाकनक्श और गोरी–चिट्टी होने के बावजूद वेंकट जैसे खब्बीस से जुड़ी। अ ह ह ह ह..... मजाक में कह रहा हूँ भाभी, मेरा मकसद सिर्फ तुम्हारी तारीफ करना है; बुरा मत मानना..... वर्ना मेरा दोस्त तो लाखों में एक है! अच्छा..... लगता है लाहौर से वापस आने वाली गाड़ी अभी लेट है.... बाद में तुरन्त ही भगना होगा उसे अपने चैम्बर...... तो बंद करता हूँ..... नमस्कार।

झरना की मॉम और बड़े भैया की पूरी बात के दौरान भाभी उनके पास ही थी।.... मैं भी बगल वाले कमरे में बैठा हुआ साफ–साफ सुन रहा था उनकी बात! माँ अपने पूजा कक्ष में रोज रोज की तरह पिछले चौबीस घण्टे में हुई प्रभु

कृपा के लिए आँखे–मूंदे हुए आभार व्यक्त कर रहीं थीं।....... दोनों जानते थे कि मैं बगल वाले कमरे में मौजूद हूँ, इसलिए उन्होंने जानबूझकर मुझसे की गयी बात का खुलासा नहीं किया।.... मेरे दिमाग को गैरजरूरी तनाव से बचाने के लिए भाभी जी मेवेदार खीर, कुछ नन्ही नन्हीं पूड़ियाँ और बाद में चाय लेकर आई; आदेश किया– कल सुबह ही तुझे चले जाना है इसलिए अभी जाकर पिक्चर की एडवान्स बुकिंग करा लाना, सलोनी को बता भी देना जिससे कि वह तुम्हारे पहुँचने से पहले तैयार रहे।.... देवर जी, समझना होगा एक–दूसरे के मनोभावों को, एकदूसरे की शौक और आदतों को।

भाभी बोलती गयी– अच्छी और बहुत ही नेक लड़की है वह, घरेलू भी है और माडर्न भी। वो झरना निहायत झुट्ठी और झंझटी, मक्कार और बदमिजाज़ है। उसकी माँ के पास भी बढ़िया संस्कार कहाँ थे जो वह इस लड़की को दे सकती।' कहते–कहते उन्होंने मेरे हाथ को चम्मच पकड़ाया, फिर बड़े तैश में कमरे से बाहर भी चली गयी।

भाभी ने झरना और उसकी मॉम के बारे में जितना भी रोष दिखाया उसी से मोबाइल पर हुई बातें स्पष्ट थीं। उनके सुर्ख चेहरे से भी जाहिर था कि झरना के बारे में कुछ भी कहना शब्दों का दुरुपयोग होगा। मन ही मन मैंने भी कहा था कि होस्टेल में उसका आचरण तो बहुत चौकाने वाला था। ये सब अगर किसी घर से बाहर वाले को बताऊँ तो मैं ही छोटा लगने लगूँ.... उसकी दृष्टि में। कोई भी कहेगा– ऐसी क्या बात है कि तुम उसकी हर वाहियात हरकत बर्दाश्त करते रहे। लड़की वह.... तुम्हारे पुरुष को इतनी हद तक कैसे दबा पाई..... कि तुमने जरा भी प्रतिरोध नहीं किया।

वैसा मेरा स्पष्टीकरण तो इतना सा है कि खुद को बचाते हुए मैंने उसकी कुचेष्टाओं को सफल नहीं होने दिया।... अपनी ख्याति को बचाये रखना जरूरी था न!

बहरहाल...। गैरेज से गाड़ी ली, सलोनी को उसके घर से लेता हुआ निशिगंधा चित्र महल की तरफ चल दिया। कैटी को कालेज से लौटने में देर हो जाती, इसलिए पहले ही वह बड़ी समझदारी से सलाह कर गयी थी कि उसका इन्तजार न किया जाये, टिकट भी उसके लिए न लिया जाय। फिर तो मुझे किसी की किसी भी तरह की सलाह की जरूरत ही नहीं थी। ....निशिगंधा

अभी कुछ दूर है; तीन–बीस के पहले मेटनी शो शुरू होने की बात ही नहीं थी, इसलिए मुखर्जी फुहार रेस्टोरेण्ट के फुटपाथ से चिपकाकर गाड़ी खड़ी कर दी– क्या लोगी सल्लू ? कहने के लिए मौसम जाड़े का है, लेकिन दोपहरी की इस धूप में कम तीखापन नहीं– तो चलेगी आइसक्रीम ?.... अरे कपूर ! कोई बढ़िया आइसक्रीम !

दो ? कपूर ने अपने काउण्टर से खड़े होकर पूछा।

तो फिर ?

सॉरी !... ये लीजिए साहब।

पैसे दिये, तुरन्त ही गाड़ी लेकर रुख्सत हुए रेजीडेंसी की तरफ। बोला– सल्लू ! ये क्या बात है, ...मैं गाड़ी रोककर ही तो इसे चख सकता हूँ.... जो इस रूट पर सम्भव नहीं। क्या कर सकता हूँ फिर ?

तो ठीक है, मैं भी तभी चखूँगी अपनी। ....आपके साथ–साथ।

नहीं, एक तरीका हो सकता है। किनारे–किनारे मैं बहुत धीमी रफ्तार में गाड़ी ले चलता हूँ।

फिर.... ?

तुम अपनी चखो फिर अपने ही हाथों से मुझे भी चखाती रहो।

लजाई तो ऐसा करने में किन्तु खुशी की बात यह कि किसी मदन मंत्र के प्रभाव में उसने मान ली मेरी बात। आखें नीचे की ओर झुकाये कनखियों से देखती हुई उसने एक बार तो आइसक्रीम मेरी नाक पर ही लगा दी थी। दूसरी बार मेरी टुड्डी में !

.....इस दौरान बहुत मध्यम स्वर में कैसेट से एक गीत चल रहा था–

कस्तूरी मन पढ़ते रहे नयन की भाषा
सारी रात नयन
उफनी कादम्बिनी शिरायें। रंगगंध गीताली
लिपटी तरु से उत्तेजित है
बल्लरियाँ मतवाली
मुखरित रहे कामनाओं की सरगम पर मृदु तन।

फिर गीत को आगे बढ़ा दिया मैंने। सल्लू जी ! इसे सुनो अब–

कुमुदनी खिलखिलाई गंध पूरित रात की रानी
अनंगी चितवनों में हो गये प्रतिबन्ध बेमानी
उगीं मनुहार की बातें जगीं अभिसार की रातें
बढ़े स्वच्छन्द बंधन को– न जाने क्या हुआ मन को।
झुका आकाश वसुधा पर
अधर अमृत उतर आया, लजाई वल्लरी
होने लगी उन्मादिता काया
हँसी संगीतमय खनकी। प्रणय की रागिनी छनकी
मिला सुरताल चंदन को–न जाने क्या हुआ मन को!

अरे अरे सल्लू! मैंने, यूँ कहते हुए गाड़ी रोकी– तुम्हारी टुड्डी से भी लटक रही है और अंगिया पर टपकने ही वाली है आइसक्रीम! इसलिए थोड़ा भी हिलना मत। मैं अभी–अभी चटकारे ले रहा हूँ इसे। अ हाँ.... ठीक है अब। सल्लू! बुरा तो नहीं मान गयी ? शरारत तो थी ही ये मेरी लेकिन मेरे पास दूसरा रास्ता भी तो नहीं था। दिल ने कहा– हाथ लगाकर चाँद को गंदा कर देना कतई गलत होगा तो.... ऐसे मौके पर दिमाग ने जैसा भी हुक्म किया, जीभ ने उसका अनुपालन किया। तुम भी तो....

अपनी बड़ी बड़ी आँखों से उपजती अनंगी चितवन से जाने कैसी कैसी सुनामियाँ प्रक्षेपित कीं सल्लू ने कि मेरी सारी ज्ञानेन्द्रियाँ निष्क्रिय हो उठीं। लेकिन जीवन की पहली अनुभूति थी यह इसलिए मेरे सीने के अन्दर का स्पन्दन यही चाह रहा था कि देर तक बनी रहे यह स्थिति।

श्यामली ने जैसे मेरे मानस की बात सुनी-समझी हो, बोली– और मैं भी। भिन्न कुछ नहीं चाहती थी मैं भी।

सहसा मेरी चेतना वापस लौटी– सल्लू! ये रूमाल .....मेरे रूमाल का इस्तेमाल कर लो। मैं ही अगर करता हूँ ऐसा तो पता नहीं क्या समझो तुम.... मन ही मन कहोगी कि लखन शर्मा का पुरुष उनके काबू में नहीं..... मौके का अनुचित लाभ लेने के लिये यह तत्पर रहते हैं!

जैसे खामोश भाषा में कह रही थी वह– तीन गुना ज्यादा उद्वेलित हुई मैं शर्मा जी। कहते हुए आँखे एक बार फिर टिका दी थीं मेरी आँखों में.... फिर

साफ–साफ बुदबुदाई भी– हम दोनों कुछ संयमित रहें तो अच्छा होगा श्रीमान, समाज की विधि सम्मत अनुमोदन मिलने तक। प्रतीक्षा और वर्जना को आस्वाद के कहने ही क्या!

बिल्कुल ठीक, किन्तु ऐसा करने के मेरे अनुरोध पर तुम्हारे सविनय विरोध से मुझे निःसीम सुख मिला, मेरे मन में तुम्हारे लिए सम्मान भी बढ़ा। सुनते हुए सल्लू सिर नीचा किये अपनी नजर को छाती से टिकाये बैठी रही। इस क्षण झरना याद आयी। शालीनता में सल्लू सौ है लेकिन वह सिर्फ शून्यांकी। दोनों के व्यक्ति में बड़ाई और क्षुद्रता के इस अनुपात को देखकर मेरा सीना संतोष से फूल गया। संतोष केवल इस बात का कि हमने सलोनी का चयन करके बहुत सही फैसला किया।.... यकायक सल्लू की आंखों में कुछ रेशमी बूंदें दिखीं। वे जैसे तुरन्त ही छलककर कृतकृत्य होना चाहती हों। मैंने पूछा– ठीक तो हो तुम? ये आँसू क्यों, कोई जघन्य नासमझी हुई मुझसे जो माफी के लायक नहीं?

, कोई रोष नहीं था उसके चेहरे पर। सवालों को सुनकर उसने मुझे देखा भर ....फिर कंधे से अपना माथा टिका दिया था।.... सोचने लगा– निश्चित रूप से कौमार्यकालीन उसकी पहली खुशी थी यह जिसके उद्रेक को कुछ देर तक अंकुशित करने में स्वयं को अक्षम पा रही है। कहने लगी– मैं तो पहले से ही आपको समर्पित हूँ लखन.... लेकिन किसी किसी क्षण झरना के झंझावात से थरथरा उठती हूँ।

ओह सल्लू! तुम अगर मेरे कहे पर विश्वास करो तो बताऊँ– मैंने उसे शायद ही कभी अपनी गर्लफ्रेण्ड से ज्यादा कुछ समझा हो। उसके प्रति हमेशा ही कुत्सित चेष्टाओं से परहेज किया। बस–यूँ समझो कि मैं उसका याराना भी बमुश्किल झेल रहा था। अपनी मॉम के निराधार आश्वासनों से उसने जरूरत से कुछ ज्यादा ही इच्छायें पाल ली थीं तो कई मौकों पर उसने.... मुझपर अपना पूरा–पूरा हक भी जताया। अपनी मॉम के कहने से वह मान बैठी थी कि उसे मेरी होना ही है।..... स्मिता को तुमने देखा है, नाइस पर्सनैलिटी शी इज बट झरना की नजर में वह 'मोटी नाक वाली त्रिजटा की तीसरी पोती लगती है।' प्रीती के लिए भी वह कहती 'शादी होते ही वह मोटी होकर अजीब सी दिखेगी क्योंकि उसकी दैहिक बनावट ठीक नहीं।' एक बार सुधा के लिए भी इसने बड़ी वाहियात भविष्यवाणी की थी–'इसका पति खुदकुशी कर लेगा। असमय ही

इसका विधवा होना तय है।'.... सारी बयानबाजी का एक ही मकसद सल्लू कि मैं उनमें जरा भी दिलचस्पी न लूँ।.... हुंह, यही काम था जैसे मेरे पास कि सभी लड़कियों में दिलचस्पी लेता रहूँ।

लखनऊ मेल के कोच में एक लावण्या को देखकर बिलावजे ही बेकार की टिप्पणी करने लगी। अपनी बेटी को वह लैवेटरी की ओर ले जा रही थी– 'लकी! इस बनावट वाली औरतें जिस्मानी सम्बन्धों से तृप्त नहीं होतीं..... क्योंकि ये गरिष्ठ भोजन ज्यादा पसन्द करती हैं।..... यही नहीं, इनकी मौत दो महीने तक 'कोमा' में रहने के बाद होती है।'..... क्या कहता मैं, अच्छी–खासी औकात वाले लोगों के बीच।..... इतना तो समझ रहा था मैं कि इसके दिमाग में कोई और बात मुँह के रास्ते से बाहर आने के लिए हुम्मा मार रही थी।

एक बात पूछूँ? सल्लू ने प्रश्न किया

स्वीट हार्ट! सवाल करके सवाल करना कहाँ की बात है?.... तो वह खनखनाती हँसी के बाद बोली– 'नहीं नहीं' मैं सोच रही थी कि बड़े भैया वगैरह की सलाह यही होती कि झरना ही उनके घर की बहू बने तो उसकी बातों को लगातार कैसे झेल पाते आप?

दो तरीके थे सल्लू! ....पहला– उसके बोलने के दौरान मैं बिल्कुल चुप रहता। दूसरा– एक ही शहर में कभी भी पोस्टिंग न लेते। ....वैसे शादी होने की बात ही हमेशा टालते रहते..... जब तक घर के सभी लोग मेरे पक्ष में न आ जाते। 'सुनते ही बड़ी देर तक झूम झूमकर हँसी थी वह, तो मैं उसके मोहक हास तथा मुँह से बाहर उमड़ती कुमारी साँसों के सम्मोहन में किसी भंवरे की तरह कैद हो गया था।

आप अपने एक्स्प्रेशन में अंग्रेजी को क्यों मिक्सअप कर देते हैं?

बिल्कुल तुम्हारी ही तरह ना!..... इसलिए उत्तर जानती हो तुम।

मेरी बोली तो आपसे ही प्रभावित है।

और मेरी झरना की बोली से। हुआ ये कि वह भी शुरू से ही इंगलिश मीडियम से रही, लेकिन गबड़ी बोली उसकी आदत में है, कुछ पारिवारिक वजह भी हो सकती है, मेरे साथ भी कुछ ऐसा ही समझो।

सल्लू ने बड़ी शालीनता से मेरे उत्तर ग्रहण किये लेकिन इस बात का

संकेत भी किया कि झरना को सन्दर्भित करने की कोई जरूरत नहीं थी।

बोलने से सम्बन्धित मेरी परेशानी को सलोनी ने ओठों और बड़री चमकीली आँखों से मुसकाकर रफा किया.... यह निर्णय लेकर कि हम दोनों ही बहुत जरूरी होने पर ही मिली जुली या खालिस अंग्रेजी का सहारा लेंगे।

मैंने या.....हू कहकर इस निर्णय के लिए खुशी जताई ही थी कि सलोनी के मुँह से एक बात और निकली।...... इस दौरान वरानना की बदनमुद्राओं को मैंने ठीक ठीक पढ़ा था। वह अगर्भीर नही, सम्मान के काबिल शक्सियत के सामने गैरजरूरी और ज्यादा बात भी नहीं करती।.... कहीं फिर से झरना की नौटंकी की धुंध इसके दिलोदिमाग में न छा जाये, इसलिए मैंने विषय ही बदल दिया– तुम्हारी शुभांगी भाभी और सचिन दोनों ही मुझे 'मेड फार ईच अदर' लगे। शुभांगी जितना तनबदन से खूबसूरत है उतना ही मन से। किसी को भी उचित सम्मान देने में वह बड़े लिहाज से काम लेती है, दोस्त सी व्यवहार भी करती है, निर्मलमना है वह।. ... उधर सचिन भाई.... खुले दिलोदिमाग वाली बिरली सक्शियत!

सलोनी मेरी चिन्तनधारा में साथ साथ थी– 'दोनों ही आपकी बहुत तारीफ करते हैं। कहते हैं कि आपने ही घर की जिम्मेदारियों से भाग लेने की उनकी भूल को दुरुस्त किया, पूरा परिवार एक जगह किया। लखन जी !.... सच कहती हूँ, मैं भी आपकी एहसानमंद हूँ इस बात के लिए।'

देख सल्लू, ये लखनवीपने वाली बातें हम लोग न करें तो अच्छा रहे! ......इसलिए भी कि हम दोनों ही लखनऊ की माटी में पैदा हुए, पनपे और पढ़े–लिखे.... और अब जीवन के एक खास पड़ाव पर पहुँचने वाले हैं।... एहसानमंद तो गैरों के लिए हुआ जाता है मेरी होने वाली बेगम।.... गलत कह रहा हूँ क्या ? दद्दा से मेरी मुलाकात बहुत पुरानी तो नहीं, सचिन और शुभांगी भी लगभग उन्हीं दिनों परिचित हुए...... आत्मीय हुए, तो भी सभी को मैंने ऐसे समझा जैसे कई जनम पहले से साथ साथ रहे हों।

मैं गाड़ी चला रहा था अपनी बात कहते कहते.... और सलोनी पलकें ताने हुए सिर्फ मुझे देख रही थी। अब बोली– आपके ट्रेनिंग के लिए जाते वक्त विदा देने के लिए हम सभी प्लेटफार्म पर थे। आप शायद कुछ खिन्न थे हम लोगों से..... इसलिए पास आकर विदा देने का साहस नहीं जुटा पाये।

इसीलिए तुम लोग अलग खड़े रहे! झरना ने हमारी नाराजगी की स्थिति पैदा तो की थी, इसीलिए मैंने जानबूझकर बेरुखी दिखायी। नहीं चाहता था कि चलने के आखिरी लमहों में झरना कोई नयी बदमगजी पैदा कर दे। लेकिन मुझे इस बात का कम संतोष नहीं था कि तुम लोग आये, मैंने देखा भी था तुम्हें कैटी के साथ खड़े हुए।... एक बात और। उस वक्त तक तुम्हारे लिए बड़े भैया की रजामन्दी भी नहीं मिल पायी थी.... ऐसी हालत में मुझे हर बात और हर स्थिति को अपनी तरह से निपटना जरूरी था।.... मुझे खुशी है कि हर मोड़ पर कैटी का नैतिक समर्थन तुम्हारे साथ रहा है।..... तुम जब ट्रेनिंग इन्स्टीट्यूट से मुझे वापस लाने के लिए आई थी, उससे पहले दद्दा, सचिन, माँ और कैटी भी आये थे। मालूम ही होगा तुम्हें; साफ–साफ कह दिया था मैंने– कैटी की हर बात मुझे माननी है।

और मेरे बाबू जी ने कैटी को शामिल करते हुए मेरी तीन माँतायें होने की बात कही थी। इतना कहकर सलोनी किसी परीकन्या सी हँसी थी।.... तब मैं उसकी अवयवी सुषमायी के उत्कर्ष का ग्राफ बनाने लगा था मन ही मन।

क्या देख रहे हो लखन जी?

तुम्हारे रोम रोम की और अंतस की निरुमता। सौन्दर्य के स्वामी कामदेव की पत्नी कितनी ही सुषमा सम्पन्न हो– बहुत ही दुःखी रहा करती है जब से वह अनंग हुआ। दूसरी देवबाला भी कम दुखी नहीं क्योंकि उसके पति के सम्पूर्ण शरीर में आँखों की भरमार है– इससे दम्पति का पारस्परिक संस्पर्श ही सम्भव नहीं। मैं.... तुम्हारा लखन.... निराकार नहीं, केवल दो आँखों वाला भी हूँ– पता नहीं तुम्हारे मन को सुख देता हूँ या दुख।

कोई मौखिक उत्तर दिये बिना श्यामली ने चन्द्रमा की तरह मुझे निरखा था, मुँह में समाये हुए मोतियों को उघारकर छाती में छुपाये सुगन्धि की अदृश्य अल्पिकायें मेरे दिलोदिमाग की पर्त दर पर्त तक प्रवाहित की थीं...... अनन्तर बेसुधबुध सी लपेट लिया था मेरे वक्ष को अपनी बाहों में।..... मैंने अपनी उपद्रवी उंगलियाँ उसके बाल–संजाल में डुबोई ही थीं कि मेरे सीने से पुलक के फव्वारे फूटे थे.... और लगा था हम अनगिनत आसमानों की धुन्ध और रोशनी के बीच से होकर एक ऐसी जगह पर पहुँच गये हैं जहाँ से पृथ्वी पूर्णतया अदृश्य है,

या फिर बिल्कुल ही बारीक किसी बिन्दु सी। ....पीछे खड़ी सैकड़ों चौपहिया गाड़ियों की गुहार सुनकर यकायक होश में आये, तो कलाई की घड़ी पढ़कर सल्लू बोली– 'निशिगन्धा में पिक्चर तो कब का शुरू हो चुका होगा।' तुरन्त मैंने कहा– अहर्निशगन्धा मेरे साथ है तो निशिगन्धा चलने की जरूरत ही क्या। ....किसी ठीक जगह कॉफी लेकर लौटेंगे अब। अह्.... हाँ सल्लू! मन तो तुम्हारे स्नेहपाश में है ही, तो मैं उससे अलग कैसे! .....तो भी ये छोटी सी भेंट स्वीकारो ....मेरी अनुपस्थिति में इसी के बहाने मुझे याद कर लिया करना।

क्या है यह?

तिलोत्तमा के लिए एक अदद साड़ी। न भी समझ में आये ये तो मुझे नासमझ मानकर ही कभी–कभी पहन लिया करना।

अच्छा! ....तो आप मुझे साड़ी बन्धन में बाँधना चाहते हैं। कोई बात नहीं। इसे स्वीकारने से मेरी किंचित्मात्र बेइज्जती भी नहीं किन्तु इसके लिए मैं अनुमति किसकी लूँ?

क्या परेशानी है इसमें? अपने मन से पूछ लो।

जो आपके पास है। आपने यह कैसे समझ लिया कि मैंने ही आपका मन कैद किया है।

मैं देखता रहा सल्लू को। थोड़ी देर के लिए पहेली सी लगी वह लेकिन तुरन्त ही उसने अपनी बात का खुलासा किया– लखन! अभी नहीं, यह तो आपको करते ही रहना है कुछ समय बाद। स्वयं को मुझे सौंप दिया तो है ही क्या आपके पास जो आपसे ज्यादा अच्छी हो। कृपया अपने पास ही रखे रहो ....सही समय पर मैं खुद माँग लूँगी इसे। ....ठीक? बुरा मत मान लेना मेरी बात का।

लेकिन कोई और तरीका है क्या जिससे मैं तुमसे मनवा लूँ अपनी बात?

लगता है मुझे निकालना ही होगा कोई रास्ता। अच्छा निशिगन्धा की फिल्म तो गयी ही, अब चलिए मेरे घर यानी अपनी होने वाली ससुराल की तरफ। शुभी भाभी भी आ चुकी होंगी, वहीं थोड़ी सी चाय–शाय चलेगी, हँसी मजाक भी। अभी उन्हें एस एम एस किये दे रही हूँ।

x x x

हमारे पहुँचते–पहुँचते शुभी भी पहुँच चुकी थी, सचिन भी। रास्ते में उन्होंने नाश्ते के कुछ आइटम भी ले लिए थे। मैंने कहा– अरे भाभी, अभी अभी सल्लू ने कॉफी पिलाई, कुछ स्नैक्स भी मैंने लिए, पहले से पता होता तो सिर्फ हवा खाकर लौट आते। ये रसगुल्ले, बादाम बर्फी, गुलाब जामुन और मोहन खीर... और ये गरमागरम समोसे..... इनके बाद चाय या कॉफी का तो सवाल ही नहीं.... सलोनी जी।

लेकिन एक ही शर्त पर नहीं होगा सवाल

क्या है वह– मैंने सलोनी से जानना चाहा।

हमारी चीज जो गाड़ी पर भूल आये हो... ले आइये उसे।

ओ... यस ! सॉरी....वेरी सारी.... अभी अभी लाया उसे। बात की बात में ले भी आया साड़ी का पैकेट। सभी देख देखकर उसकी तारीफ भी करने लगे। सल्लू बोली–भाभी बहुत समझाया मैंने, लेकिन नहीं माने।.... इसी सब में फिल्म भी नहीं देख पाये।

आँखों के प्याले खुशी से लबालब किये हुए शुभी चहक उठी– तू बड़ी लकी है सल्लू लखन ने तुझे जो ऐसा बढ़िया उपहार दिया ....ग्रेट जेश्चर, कांग्रेचुलशंस !

कॉफी तैयार हो जाने के इन्तजार में सलोनी किचेन के दरवाजे पर खड़ी मेरी आँखों से उपजा गीत–संगीत सुन रही थी–

चन्दनी चरित्र हो गया,
मैं किसी का मित्र हो गया।
जिन्दगी संवर गयी मेरी,
फूल से मैं इत्र हो गया।

x x

पूर्णिमा है ज्वार उठ रहा,
सिन्धु सा चरित्र हो गया
कामना की पूर्ति हो गयी
मन मेरा पवित्र हो गया।

सचिन और शुभी डाइनिंग टेबुल पर प्लेटों और चम्मचों को सजा रहे थे

इसी दौरान टेलीविजन पर कोई दो गाना चल रहा था, जैसे हम दोनों की ओर से ही थी वह गज़ल–

हम निकटतम हुए धन्यवाद आपका।
आपके हम हुए धन्यवाद आपका।

आपने मेरी वीणा को छू भर दिया
तार सरगम हुए धन्यवाद आपका।

पात्रता से नहीं, आपके स्पर्श से
लघु महत्तम हुए धन्यवाद आपका।

प्रीति की चूनरी ओढ़कर मैं सजी,
शब्द रेशम हुए धन्यवाद आपका।

सल्लू का साड़ी स्वीकारने का यह विकल्प मुझे बहुत मर्यादित लगा। उसके संस्कार तो देखिये– एकदूसरे की गरिमा का कितना ख्याल है उसे; जानती है वह कि किसी की भावना के प्रति उसकी भावना का क्या बर्ताव होना चाहिए। मन ही मन यही सब बिसूर रहा था कि यकायक शुभी से बोला– 'अच्छा भाभी ! और सचिन भाई !... चलूँ अब। कल के प्रस्थान के लिए तैयारी करनी है; दद्दा जी सो रहे हैं, उनकी तबियत भी ठीक नहीं इसलिए उन्हें जगाइयेगा नहीं.... जल्दी में हूँ ही।'

बाहर आया। गाड़ी स्टार्ट की, फिर सबसे यथा योग्य करके विदा ली। एम चैनल पर एक गजल का आखिरी मिसरा चल रहा था' **सारे आलम में उनकी खुशबू है। ऐसा लगता है वो इधर पहुँचे।। पाँव दरिया में जब वो धोते हैं उनके छूने को हर लहर पहुँचे।।**

गजल चुकते–चुकते मेरे घर का रास्ता भी चुक चुका था। माँ जैसे इन्तजार ही कर रही थी, बोली– झरना आई थी, अभी–अभी तो गयी है। पूछ रही थी तुम्हें तो मैंने कह दिया.... सलोनी को साथ लेकर कोई फिल्म देखने गया है।... तुरन्त ही लौट ली, कोई दूसरी बात किये बिना।

'ओह, ठीक किया माँ। अब से जब भी आये, उसकी खातिरदारी वगैरह की कोई जरूरत नहीं। हाँ, माँगने पर एक गिलास पानी जरूर पिलवा देना।' कहते–कहते थोड़ा सा बुदबुदाया था– 'बेकार का सस्पेंस पैदा कर रही है

नासमझ।' माँ से फिर कहा था– 'वह शो छूटने तक निशिगंधा पहुँची होगी, वहाँ से हम दोनों के लिए हजरतगंज के एक एक रेस्ट्राँ छुछुवाती हुई वह छछूंदर सलोनी के घर भी पहुँच रही होगी।.... मैं जानता हूँ न उसकी आदत।'

तकरीबन दो घण्टे पर सचिन का फोन आया– अभी झरना आयी थी। निशिगंधा में नहीं मिल पायी थी न!

फिर..... ?

फिर क्या!... शुभी और सल्लू लग गयीं उसके स्वागत–सत्कार में।.... जो भी डिश पेश की जाती– वह कह देती– रखिये... बहुत खा चुकी हूँ, बेकार के तकलुफ में क्या धरा है।

फिर....?

फिर एकायक उठी, अपना बैग कंधे से लटकाया–चलती हूँ कहकर चल भी दी। हम लोगों ने कहा– वह चाहे तो रात भर के लिए यहीं ठहर जाये और कहीं और जाना ही हो तो कार से पहुँचा दिया जाय......।

तो...... ?

लीव इट लखन।.... हम लोगों को उससे कोई शिकायत नहीं।

फिर भी.......?

वह खुद ही बतायेगी तुम्हें..... चुगलखोरी का अपराधी हमें क्यों बनाओ यार ?.... हम लोग उसका स्वभाव पहले से ही जानते हैं न!.... तुम तैयारी करो, समय रहते पहुँचना भी है तुम्हें। चलने के दस मिनट पहले बताना– मैं सी ऑफ कर आऊँगा तुम्हें।

क्यों भाई...... भैया, माँ और भाभी लोग तो रहेंगे ही। कभी जरूरी ही हुआ तो भला और किसे तकलीफ दूँगा!.... अच्छा हाँ..... सल्लू से कुछ बात कर सकता हूँ?

अरे यार, उजाला तो सूरज निकलने से पहले ही हो जाता है। दोनों की शादी का सूरज निकलना है तो साढ़े छः और पौन सात में कोई फर्क नहीं। .....लो सल्लू से बात करो।

जी, सलोनी बोल रही हूँ।

ये बताओ, झरना ने तुमसे या किसी से कोई अपमानजनक बात तो नहीं

कह दी।

जी, बल्गोरिया के उत्तर में रूमानियाँ, दक्षिण में तुर्की, और ग्रीस, पश्चिम में यूगोस्लोवाकिया और पूरब में काला सागर है। कृषि प्रधान देश है यह।

क्या बोल रही हो तुम सल्लू ? ये मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं।

जी, बल्गोरिया की घरेलू खपत के लिए लकड़ी रूस से मंगाई जाती है।

'सल्लू !' इस बार मेरी आवाज में कुछ झुंझलाहट थी। 'जानबूझकर टाल रही हो बात। अच्छा, तुरन्त ही आ रहा हूं मैं।'

सलोनी ने बड़े लहजें से समझाने की कोशिश की– क्यों तकलीफ करोगे, हवा–बयार का काम ही है चलना, इस वक्त प्रसन्न मन से जाइये। वास्तव में हम लोग उसके आज के शुभागमन का अध्याय ही बंद कर देना चाहते हैं।

नहीं संतोष हुआ मुझे तो सलोनी वगैरह से साफ–साफ वाकिया समझने के लिए चला आया। बैठते ही पूछा– सल्लू जी ! बल्गोरिया से हमारा क्या लेना देना ? ये भी साफ–साफ नहीं कह रही कुछ भाभी, ...क्या बातें कहीं उसने ......मेरी जानकारी में तो आना चाहिए ही न ?

कहने लगी– अस्लियतन उससे तकरार हमारे लिए अच्छी नहीं होगी।... तरह तरह की परेशानियाँ पैदा करने की धमकी दे गयी है।

आप लोग भी..... लिफ्ट ही न दीजिए उसे। उसे पाले रहना भी तो गलत है। कहते हुए मैं थोड़ा सा हँसा भी– 'वैसे सपनेखा की धमकियों ने उसी का नुकसान किया था।'

शुभी बोली–लखन जी, हम लोग दूर की रिश्तेदारी में भी हैं– इसलिए उसके इस परिवार में शरीक होने के पहले से ही जानते हैं इसका स्वभाव। उस परिवार से हमेशा ही आतकित रहे हैं हम..... लेकिन कोई बात बढ़े नहीं, इसलिए उसकी सुनने के अलावा कभी कुछ नहीं कहते।

मैं सिर झुकाये हुए उंगलियों पर चाभी घुमाते–घुमाते चिन्ताग्रस्त रहा, फिर बोला– छोड़िये, देखा जायेगा, बड़े भैया ही निपटेंगे उस परिवार से।.... लेकिन सल्लू जी ! तुम तो बल्गोरिया का ऐसा बखान कर रही थी जैसे घूमी–फिरी हो वहाँ।

बोली वह 'जी', लेकिन बाकी उत्तर लड़खड़ाते हुए चले आ रहे दद्दा ने

दिया– अभी साल भर ही तो हुआ, कालेज की दस लड़कियों का स्टडी टुअर ले गयी थी। बीस दिन रही वहाँ।

नहीं पापा जी ! सिर्फ पन्द्रह दिन। बाकी पाँच दिन रूस में खर्च किये थे। ये भी घूमने फिरने वाला देश है।

अच्छा अच्छा.... पन्द्रह दिन ही सही। कहती है ये कि वहाँ की गुलाब की इत्र बड़ी नायाब होती है।

सलोनी खुद ही बताने लगी– यह इत्र संसार के करीब करीब सभी मुल्कों में जाती है। वहाँ पर दस ग्राम इत्र दस ग्राम सोने की बिक रही थी। वहाँ का सजावटी गुलाब तो फुटपाथों पर बिकता है, घरेलू फुलवाड़ियों के गमले–गमले में सब कहीं गुलाब ही गुलाब दिखेंगे। ....अच्छा, अब चलें आप, कैटी वगैरह परेशान होंगी। बड़े भैया भी आ चुके होंगे।

ठीक.....ठीक ! क्या करता..... आप लोगों के बिना बतायें ही मैं भाँप गया था कि उसने कुछ न कुछ उत्पात जरूर किया होगा। लेकिन आप लोगों की सहिष्णुता, क्षमाशीलता और मानसिक खुलेपन के कहने ही क्या !'..... सोफे से उठा ही था कि मोबाइल बज उठा–

हेलो...... लखन शर्मा जी ! .....मैं झरना की एक दोस्त बोल रही हूँ।

जी.. कहिये

झरना किसी होस्पिटल में है। उसके रिक्शे को किसी ने टक्कर मार दी। ......आप लखन ही हैं न ?

मेरे मोबाइल पर और दूसरा कौन होगा ?

ठीक.... ।

मैंने सचिन को इस काल का पूरा ब्योरा दिया। शुभी बोली– तो किस हॉपिटल में खैर–खबर की जाय उसकी। प्लीज उस दोस्त के नम्बर पर काल कर लें।

भाभी ! आप किसके चक्कर में पड़ना चाहती हैं। झूठ लगती है सारी खबर। मैंने पहचान लिया है उसकी आवाज। देखियेगा– अभी अभी मुझे वह रास्ते में किसी न किसी नुक्कड़ पर खड़ी मिलेगी..... मैंने आप लोगों को इस खबर की बाबत इसलिए बताया कि [illegible]–दो दिन तक ऐसे ही फोन करती

रहेगी अतः उन पर विश्वास करके रात–विरात घर से न निकलियेगा।.... और अपने इन्स्टीट्यूट ज़ाते वक्त सलोनी को उसके कालेज तक पहुँचाकर ही आगे बढ़ें। शाम को वापस लाने के लिए मैं अपनी ओर से इन्तजाम किये देता हूँ। कैटी उससे मिलेगी। ठीक ?

मेरा अनुमान गलत नहीं था। जिस जगह से मेरे घर का मोड़ है, ठीक वहीं खड़ी मिली वह एक रिक्शे पर हाथ टिकाये हुए, बिल्कुल पास पहुँचने पर वह दौड़ी भी थी मेरी गाड़ी की तरफ लेकिन उसे अनदेखा करता हुआ मैं आगे निकल आया।

क्यों, अपने घर की ओर क्यों नहीं मुड़े ?

भाभी–तब तो वह रिक्शा मेरे घर की ओर ही मोड़ देती। ....इसलिए प्लीज.... जैसा मैंने बताया– वही व्यवस्था सिर्फ दो तीन दिन.... क्योंकि उसके बाद तो वह आगरे होकर नयी जगह पर ज्वाइन करने चली जायेगी।

यकायक किसी की कही हुई एक शेर मुझे याद आयी- मालूम हैं घिनौने सब तेरे कारनामें। तू खैर मान– हमने नंगा नहीं किया है।....

मेरे सोचने का सिलसिला जारी रहा– हुँह..... कहा जाता है कि हर मर्द की उन्नति में औरत का हाथ होता है।.... कहने वाले को मैं क्या कहूँ कम से कम ये झरना जिससे जुड़ेगी उसे दो क्षण का भी सुकून हराम कर देगी, चाहेगी वह कि उसकी तरह ही उसका मर्द भी पत्थरों पर सिर पटक पटक कर बिखरता रहे। ....उसकी हरकतों को ज्यादा महत्व देने से कोई फायदा नहीं..... अपनेआप ही पटरी पर आ जायेगी.... आज नहीं तो कल या फिर निकट भविष्य में।

x x x

मेरी तैनाती शुरू शुरू में लखनऊ के अरीब–करीब एक जिले में हुई। चार पाँच दिन जिला मुख्यालय पर रहा, फिर कुछ वक्त के लिए एक तहसील संभालने का आदेश मिला। करीब–करीब एक महीने में घर आया तो कैटी ने नाक में दम कर दी– मेरी स्कूटी दीजिये अंकल अगर मुझसे कोई खुशी की बात सुनना चाहो।

श्योर श्योर..... श्योर कैटी। आज ही चलेंगे मार्केट, लंच और थोड़ा सा आराम कर चुकने के बाद।.... वही कोई तीन बजे। अचल ऑटो एजेन्सीज को

फोन भी किये देता हूँ। ब्रज बिहारी मेरा दोस्त है, ...कि मिले वह अपनी दूकान पर। .....ठीक ? ....अब बोलो, वह दूसरी बात क्या है जिसे तुम मेरी खुशी समझती हो ? ......चिल्लाई वह– दस मार्च को लखन–सलोनी वेडिंग सेरीमनी तय हो चुकी है।

ओह ! तो हथकड़ियाँ और बेड़ियाँ लगने वाली सेरीमनी को तू मेरी खुशी समझती है। चल, तेरी खुशी से तेरा अंकल कतई अलहदा नहीं।

माँ बरामदे में ही बैठी थी। बोली– पता है बेटे कि दस मार्च के बाद शुक्कर डूबा रहेगा, फिर उधर जुलाई में जब पावस भी शुरू हो जाती है– तब भी तीन या चार दिन की तिथियाँ मिलेंगी– तो हम लोगों ने सोचा कि दस मार्च ही ठीक रहेगी– न ज्यादा गर्मी न ज्यादा लू वगैरह..... और तब तक साग सब्जियाँ भी सभी मिलेंगी। जस्टिस साहब ने हम लोगों की बात को ठीक भी बताया। कहा भी उन्होंने कि गर्मी बढ़ जाने पर होटल वाले एसी कमरों का किराया भी बढ़ा देते हैं– इसलिए मार्च की शुरू शुरू की तिथि ही उचित है, वसुन्धरा तुम लखन से माँ की बात करा देना जिससे कि वह पहले से ही लीव ऐप्लीकेशन लगा दे।

भाभी भी बताने लगीं– अगली नवम्बर के लिए पहले हम लोग सोच रहे थे लेकिन सलोनी के पिताजी इस बीच बहुत बीमार हो गये, तुम्हारे भैया देखने गये थे उन्हें। चाहते हैं कि जीते जी वह अपनी कन्या का विवाहोत्सव देख लें। तुम्हारे साले और सरहज भी दो बार यहाँ आये इस बारे में।

सोचने लगा– तो दद्दा की बीमारी की वजह से उन लोगों की इतने दिन तक काल नहीं आई। उन्होंने मोबाइल पर भी चुप रहना ठीक समझा।..... अभी बात करता हूँ, छुट्टी का दिन है, घर पर ही होंगे सभी। .....तो मोबाइल पर दस बार उंगली चुभोई– सलोनी, दद्दा जी की सेहत अब कैसी है ?..... तुमने बताया तक नहीं कि वह बीमार है ?

लेकिन पाँच–छः दिनों से वह बिल्कुल दुरुस्त हैं, खुद ही पूछ लीजिए। करवा दूँ बात ?

नहीं नहीं, आराम करनेदो। मैं चार बजे तक खुद ही आऊँगा तुम्हें ले भी चलूँगा कहीं, तैयार रहना।

यू आर ग्रेट सर !

२५

मुझे ग्रेट और सर कहकर मल्लिका–ए–लखन ने अकस्मात ही मेरे मन का सम्पूर्ण रुतवा लूट लिया था। जेब पर हाथ रखा तो आज के प्रोग्राम में कुछ तबदीली बहुत जरूरी लगी। ब्रज बिहारी से बोला कि स्कूटी को बारह बजे या एक बजे तक ठीक से चैक करके मेरे घर पर पहुँचा दे। कैशमीमों पर वृन्दा शर्मा और मेरे घर का पता ही रहेगा। वह वृन्दा शर्मा केयर आफ लखन शर्मा भी बिल या कैशमीमों में कर दे तो ठीक रहेगा। .....मान भी गया वह।

नतीजन पौने तीन–तीन बजे ही दद्दा के पास जाकर जम गया। शुभी और सचिन के सत्संग में कॉफी की चुस्की ले ही रहा था कि सादगी और शिष्टता की जीती जागती मिसाल–सी सल्लू बायें सोफे के बगल में खड़ी दिखी; तैयार थी वह, शायद उसे पूर्वानुमान था कि मैं चार बजे से पहले ही आ जाऊँगा।

कैसे हो सकता था कि दद्दा जी कोई किस्सा न सुनावें। मैं चलने के लिए उठने वाला ही था कि बड़ी खुशमिजाजी में बोले– लखन जी, मैं बहुत परेशान था सलोनी की शादी के लिए। जिस दिन मैं पूरी कम्पनी के साथ होटल में तुमसे मिला था– दो दिन पूर्व एक सपना देखा– किसी गली के मोड़ पर बने हुए साधारण से एक मन्दिर में मैं देवी माँ की प्रतिमा के सामने बिल्कुल शान्त बैठा हूँ। तन्मय मुद्रा में निहार रहा हूँ उन्हें; सहसा ही उनके सभी हाथ हिलने लगे, उनके अस्त्र–शस्त्र भी चलायमान हो चुके थे। आँखें चमक उठी और तब उनके ओठों की ममतामयी मुस्कान किसी को भी लुभावनी लग सकती थी। मेरे बिना कुछ कहे ही, उन्होंने मेरा दुख समझा, फिर बोलीं– इतना ज्यादा क्यों चिंतित हो बेटा! सब हो जायेगा तुम्हारे मन मुताबिक, भरोसा करो मुझ पर।.... और नतीजा देखो– उन्हीं की कृपा से आज मुझे कोई तनाव नहीं। सारा तनाव इतिहास बन चुका है।.... मेरा आशीर्वाद है बेटे, खूब उन्नति करोगे।

क्या कहता मैं! सचिन और शुभी की ओर देखा– हाथ जोड़कर बोला– अच्छा दद्दा, हम लोग कहीं जायेंगे। चार बजे के बाद से ही अंधेरा होने लगता है आजकल– इसलिए कुछ जल्दी ही निकलना चाहते हैं। इजाजत दीजिये। .....कहकर सलोनी और हम घर से बाहर हो लिये।

कोई फिल्म देखने का इरादा है– सल्लू ने पूछा।

इतनी काबिल लड़की हो तुम। इसलिए यह सवाल ठीक नहीं है तुम्हारे मुख से। बताऊँ सल्लू जी! तुम्हारी पर्सनैलिटी हजारों हजार लड़कियों की कतार में पहले क्रम में है, अब कुछ ही हफ्तों में हम पति पत्नी रूप में सामाजिक मान्यता भी पाने वाले हैं तो उससे पहले फिल्म देखने में तीन घण्टे बर्बाद करना बहुत गलत होगा।

तो क्या फिल्म देखने वाला मेरा सवाल गैरजरूरी या बेमतलब था?

क्योंकि फिल्म देखने का प्रोग्राम मैं तभी बना सकता था जब उसकी नायिका किसी भी नजरिये से तुमसे श्रेष्ठतर होती।...... और हीरो भी जनाना हरकतों से अलग कुछ करे। आई मीन वह पूर्ण पुरुष हो।

अर्थात ?

आँखें और कमर मटकाता कोई लड़का हीरो तो कहा जायेगा लेकिन पूर्ण पुरुष नहीं। मर्दों की इस किस्म में मुझे कोई भी रुचि नहीं।

और कोई कमी ?

इनेगिने ही होंगे जिन्हें ऐक्टिंग की जानकारी है। खैर छोड़ों भी, तुम्हारे घर से कार स्टार्ट करते ही मुझे मुगल बादशाहों की अपनी प्रेमिका या पत्नी को नया नाम बख्सने का चलन याद आया। सल्लू! मुझे तुम यूनीवर्स की इनीगिनी सुषमाओं में लगी, इसलिए अगर तुम्हें बुरा न लगे तो... आज से सलोनी के बजाय मैं तुम्हें श्यामली कहूँ।

मैं आपको सांवली दिखती हूँ जनाब? आँखों से ही पूछा उसने।

मैं अपने जज्बात के मुताबिक चाहता हूँ तुम्हारे लिये यह नाम वर्ना तो पारदर्शी मरमर हो तुम! चाय पीती हो या पानी या जब तुम कुछ खाती हो कण्ठ के रास्ते से पेट में उतरते हुए ये सभी साफ साफ दिखायी पड़ते हैं।

अतिशयोक्ति ?

अतिशयोक्ति मेरे स्तर पर सम्भव है लेकिन मेरा अन्तःकरण शीशे सा है। ये जैसा देखता है, वैसा ही बोलता है।.... श्यामली नाम देने से मुझे लगता है कि बुरे लोगों की नजर से तुम बची रहोगी। ....इतना और समझ लो कि मेरी व्यक्तिगत जिम्मेदारी है तुम्हारी रक्षा–सुरक्षा। इसलिए कभी भी मन में ये बात लाना तक नहीं कि मैं तुम्हें नजरबन्द कर रहा हूँ।.... तुम यही समझ लो कि तुम्हें

मैं अपनी ही नजर लगने से बचाना चाहता हूँ।

इसलिए.... ?

आज से ही तुम्हें मैं श्यामली सम्बोधित करूँगा। तुम चाहो तो कहीं भी अपने परिचय के दौरान किसी को भी श्यामली नाम ही बता सकती हो। गौराननी होने के बावजूद तुम्हें श्यामली कहा जाना तुम्हारी सुषमाई की विशिष्टता ही मानी जायेगी।

अच्छा ? अलौकिक बनाये दे रहे हो मुझे ?

निगाह अपनी–अपनी ख्याल अपना अपना। इसमें किसी विवाद की गुंजाइश ही नहीं। मुझे लगता है कि रोज रोज नई नई उषा तुम्हें ही देखने के लिए आती है। चिड़ियाँ तुम्हारे लिये ही गाती हैं, हल्के से हवा के झोंके से अंचल की सम्पूर्ण प्रकृति की जीवन्तता में तुम्हारा ही पढ़ा हुआ है कोई मन्त्र !.... सूर्या हो तुम।

प्रतिक्रिया में श्यामली किसी विलक्षण उन्माद के वशीभूत लगातार खिलखिलाती रही थी। मेरे हृदय की धौंकनी ने अपनी भूमिका निभाते–निभाते तन्मयता में अपने नयनों की पलकें बंद कर लिया था।

विश्वास करो मेरा। पत्नी की मेरी पूर्व कल्पना की साक्षात् हो तुम। मुझे खुशी है कि एक पंख वाला पक्षी नहीं हूँ अब। तुम दूसरे पंख के रूप में जुड़ गयी हो मुझसे। अब हम दोनों कल्पना के अनन्त आकाश पर विचरेंगे साथ साथ।...... चांद पर उतरेंगे... देखेंगे कि अकेला चांद ही तुम्हारे जैसा है या उस पर रहने वाली कोई और भी।..... अब अगर मेरे मानस में रची बसी अपनी छवि के विवरण से प्रसन्न हो तुम तो तुमसे एक प्रश्न का उत्तर चाहूँगा।

किस प्रश्न का, कैसा है आपका प्रश्न ?

तुम्हारी अब तक की सबसे बड़ी कौन सी मनोकामना रही है ?..... आई मीन जिन्दगी में क्या करने की तुम्हारी इच्छा रही है ?

अपने कर्त्तव्य का ठीक ठीक निर्वाह। यूँ भी समझ सकते हैं आप– छुटपने से ही चाहती रही हूँ अपने कर्त्तव्य को ठीक ठीक सम्पन्न करने का अधिकार।

'ठीक है।' कहकर सोचता रहा मैं कि श्यामली से मेरे प्रश्न का उत्तर अभी भी नहीं मिल पाया। शायद मुझे समझनी होगी उससे कर्त्तव्य की परिभाषा।

बोला मैं– तुम चाहती तो किन्हीं कम्पटीशंस में सफल हो सकती थीं लेकिन तुमने अध्यापन को वरीयता दी। जरूरी तो नहीं लेकिन अगर जिन्दगी में कभी इस काम को छोड़ने की जरूरत पड़ जाय..... स्वाभाविक रूप से तुम दुखी होगी।..... पति होने के नाते मेरी जिम्मेदारी होगी तुम्हें प्रसन्न रखना, तुम्हारी देखरेख करना.... और जरूरत की हर चीज सुलभ कराना...... घर की अनिन्द्य साम्राज्ञी का दर्जा देना भी।

तो मेरा भी तो कर्त्तव्य होगा आपको सदा प्रसन्न रखना, स्थिति–परिस्थिति के मुताबिक आपकी इच्छा का आदर करना जिससे कि गृहस्थी का रथ बिना किसी रुकावट के चलता रहे।

ठीक! तुम एक सफल अध्यापिका हो, लोकप्रिय भी हो इस रूप में। गृहस्थी के अन्य कर्त्तव्य जिनका तुम्हें पूर्व ज्ञान भी है, के अलावा अध्यापन कार्य से जुड़े रहना भी एक अधिकार समझो..... जब तक याकि जितनी अवधि तक तुम चाहो। इज्जत का काम है यह, जस्टिस की धर्मपत्नी होकर भी मेरी भाभी माँ अध्यापिका ही हैं। अपने बड़े भैया की तरह मैं भी स्वयं को इस बात से गौरवान्वित महसूस करूँगा कि मेरी श्यामली देश के भविष्य को शिल्प देने वाले नारी वर्ग के एक बहुत बड़े अंश की शिक्षिका रही है।

मैं कह नहीं सकता कि मेरी इस बतकही से श्मामली प्रसन्न हुई या अप्रसन्न.... क्योंकि उसके बदन पर दोनों ही बातों के कोई अक्षर नहीं दिखे। ....उसका जायका बदलने की बाबत सोच ही रहा था कि वह बोली– नयी नौकरी के नये–नये अनुभव कुछ बताइये? ....ऐसा कहते वक्त वह काफी कुछ आश्वस्त लग रही थी कि लखन जी यथासम्भव उसे ज्यादा से ज्यादा खुश रखेंगे। बोला मैं– ठीक श्यामली सुनो सरकारी मुलाजिमों से ताल्लुक रखने वाली एक बात जो प्रदेश और देश के प्रत्येक विभाग में पाई जाती है।

क्या है वह? कहकर वह सिर्फ मेरे मुँह की ओर एकटक देखती रही।

मुलाजिमों का मध्य और निम्न वर्ग ज्यादातर पिछली रात से ही बीमार पड़ता है। एक या दो दिन किसी को दफ्तर न आना हुआ तो अर्जी में अपनी बीमारी की शुरुआत 'पिछली रात' से ही लिखते हैं। सफरिंग फ्राम डिसेन्ट्री/फीवर/कफ एण्ड कोल्ड सिंस लास्ट नाइट इनकी पारम्परिक भाषा होती है।.... सुनकर खूब हँसी श्यामली.... लगातार हँसी कुछ मिनटों तक। मेरे

सीने से अलग होकर भी बैठ गयी, अपनी केशराशि को उंगलियों और हथेली से सहेजा। अनन्तर पूर्व मुद्रा में ही आ गयी इस प्रत्याशा में कि मैं और भी कुछ बताऊँगा उसके मनोविनोद के लिए।.... लेकिन खुद ही बोली वह– आप दफ्तरी कर्मचारियों को ही क्यों लांक्षित कर रहे हैं.... जब डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट बन जायेंगे आप सर्वत्र ऐसा ही देखेंगे। विकास कार्य से सम्बन्धित ज्यादातर महिला और पुरुष कर्मी दोनों ही घर से केवल अपना वेतन लेने के लिए निकलते हैं। मेरी पहिचान की एक स्वास्थ्य कर्मी का वेतन तो प्रत्येक पहले हफ्ते एकाउन्टेंट ही दे जाता है। लखन जी, सार्वजनिक निर्माण विभाग के एक कैशियर की बावत मैंने सुन रखा है। किसी ठेकेदार को अपना भुगतान लेना होता है तो वह अपनी कार से उसके घर आता है, दफ्तर से कृतकार्य हो जाने पर कैशियर को वह घर भी वापस पहुँचा जाता है।.... इस बार हँसने–हँसाने की बारी मेरी थी लेकिन श्यामली भी साथ–साथ हँसी थी।

लखन जी.... हमारे यहाँ.... और दूसरे विद्यालयों के सातवीं आठवीं क्लास तक के टीचर्स भी वैसी ही अर्जियाँ भेज देते हैं। इस तरीके से टीचर का इरादा साफ रहता है कि वह ज्यादा से ज्यादा दो दिन अवकाश पर रहेगी। दूसरी ओर प्रिंसिपल भी यही समझकर 'टीचिंग अरेन्जमेंट' यानी उसके पीरियड में पढ़ाने के लिए दूसरी शिक्षिका की व्यवस्था कर देते हैं। तो भी प्रिंसिपल हो, या फिर अतिरिक्त शिक्षिका या बच्चे– परेशानी तो सभी को..... हो ही जाती है। मेरी समझ में गलत है यह।..... हरकत कही जायेगी यह।

श्यामली जी, कस्टमरी है यह, रीति या परम्परा, इसलिए इसे हरकत ना कहो।... मैं बताता हूँ आपको..... किसी प्रकार का वित्तीय अग्रिम, लम्बी छुट्टी या फिर ट्रान्सफर रुकवाने के लिए जिस शब्दावली का वे इस्तेमाल करते हैं वह लेडी टीचर्स लिखने से परहेज करेंगी। लिखते हैं– 'लखनऊ के फलां फलां लेडी डाक्टर से मेरी पत्नी का लगातार छः महीने इलाज चला। इससे काफी फायदा भी हुआ, लेकिन अब हम लोग लखनऊ से दूर होने की वजह से उन लेडी डाक्टर के तजुर्बे का लाभ नहीं उठा पा रहे हैं, इसके फलस्वरूप पत्नी की सेहत फिर बिगड़ गयी है.... इसलिए मुझे लखनऊ शीघ्र अतिशीघ्र वापस करने की कृपा की जाये।' मुझे यकीनी तौर पर पता चला है कि कार्यालय कर्मी जानबूझकर अपनी पत्नी को बीमार बना रहा है– क्या कोई लेडी टीचर तुम्हारी

जानकारी में है जो पति को मृत्यु शैय्या पर फर्जी तौर पर इस तरह लिटाकर अपने ट्रान्सफर का अनुरोध करे।.... यही नहीं, हफ्ते दस दिन की छुट्टी चाहिये, इसलिए कोई–कोई अपनी मृत माँ को बार–बार मरणासन्न दिखाता रहेगा।

हँसी–खुशी की इन बातों से श्यामली के चेहरे पर खुशी तो छहरी, किन्तु भाभी के एक सन्देश से गायब भी हो गयी। मुझे आदेश हुआ था कि सलोनी को उसके घर छोड़कर जल्दी से जल्दी घर पहुँच जाऊँ।

x x x

बड़ी हड़बड़ी में भाभी जी के हुक्म की तामील की। रास्ते भर भी परेशान रहा, श्यामली भी इस बात से चिंतित कि क्या खास बात हो गयी जो ममतामयी ने इतना कठोर आदेश किया। सोचने लगा– कोई बात ऐसी है जरूर जिसने उनकी मनःस्थिति को इस हद तक तबदील किया। स्पष्ट रूप से पूछा श्यामली से– तुम्हारे अनुमान से.... क्या बात हो सकती है श्यामली ?

झरना जी ने कोई बवाल किया होगा। हो सकता है उसने माँ या भाभी से कोई अनुचित व्यवहार किया हो।

कुछ कहा नहीं जा सकता। रग्घू काका सुबह कुछ लंगड़ा रहे थे, कहीं किसी गाड़ी से या स्कूटर से धकिया गये हों। सारे घरेलू काम निपटाता है, तब तो बड़ी मुसीबत हो जायेगी। अरे अभी मैंने उसे कुरता–धोती वगैरह नहीं दिये। इसी सदमें में बुखार तो नहीं हो आया उसे....। सोचता रहा होगा– कैटी को स्कूटी दिला दी– घर के सेवक की जरा भी परवाह नहीं।

तो कल ही कपड़ा कोठी से दिला दो सारा सामान जिस जिस का वायदा किया है.... लेकिन मेरी सोच तो झरना और उसके पापा और मॉम तक ही जाकर ठहर जाती है। कहते–कहते आँखे मूंद ली उसने, कुछ बुदबुदाने भी लगी।

किससे क्या बुदबुदा रही हो, या फिर मंत्र पढ़ रही हो कोई श्यामली ?

भगवान् श्रीराम से कह रही हूँ– 'मंगल भवन अमंगल हारी। द्रवउ सो दशरथ अजिर बिहारी।' बाद वाली अर्द्धाली कहने में मैंने सल्लू का साथ भी दिया था। बड़े सात्विक भाव से हँसा भी था फिर।

आपको ईश्वर पर विश्वास नहीं है क्या जो हँसने लगे।

मुझमें सारे सत्संस्कार मेरी माँ ने दिये हैं। उनमें आस्तिकता भी है। हँसा

तो मैं तुम्हारी सहज सरलता पर..... जबकि जानता भी हूँ कि तुम आत्मबली हो। ....आँखों ही आँखों सल्लू ने मेरे स्पष्टीकरण पर संतोष जाहिर किया था।

उसे समझाया– भाभी के फोन की चर्चा अभी शुभी भाभी और सचिन या किसी से करना उचित नहीं होगा। अकारण ही परेशान हो जायेगे सारे लोग।.... वास्तविकता जो भी होगी– मैं बताऊँगा ही तुम्हें।

x x x

पहुँचते ही ड्राइंगरूम में बड़े भैया, झरना के डैड और मॉम को देखकर मैं स्तब्ध रह गया। मॉम ने ही बात शुरू की– बेटे ! हम लोगों ने इस परिवार को हमेशा अपना ही समझा, इसलिए चाहती हूँ कि झरना और तुम दाम्पत्य सूत्र में बंध जावो। इसीलिए आये थे हम।

वह और आगे कुछ कहती है कि मैंने बड़ी सहजता से कहा– मॉम आपका आइडिया बहुत सही था, लेकिन इस बारे में आप लोगों ने काफी देर कर दी। वास्तव में मेरा और झरना का व्यवहार आपस में दोस्तों जैसा ही रहा, एक–दूसरे को आदर तो देते रहे हैं लेकिन कम से कम मैंने उसे कभी भी होने वाली पत्नी के रूप में नहीं देखा।

तो बिगड़ा ही क्या फिर ? अब सोच सकते हो उस तरह। दोनों एक ही स्टेटस वाले हो, तुम्हें चाहती भी है वह।

मॉम ! आप परेशान न हों, मेरी बात पर गम्भीरता से सिर्फ विचार कर लें– काफी पहले मैंने सलोनी को अपनी पत्नी बनाने का मन बना लिया था। आईएएस का रिजल्ट भी नहीं आया था–तभी उससे खुद ही इच्छा जाहिर की थी, अपने सलीके से निवेदन भी किया था उससे–पत्नी बनने के लिए। यूँ मेरी निवेदिता है वह। संयोग ही कहिये कि मेरे भैया, भाभी जी और माँ जी को भी उसके संस्कार पसन्द आये।..... आप जानती भी हैं– झरना के और मेरे संस्कारों में बहुत फर्क है।..... तब क्या हम दोनों एक–दूसरे के साथ सुख–शान्ति से रह पायेंगे। दोनों को कानूनी रिश्ते से बांध देने मात्र से हम किस तरह के पति पत्नी बनेंगे– इसका अनुमान तक बड़ा डरावना लगता है।

बेटे...... !

मॉम ! सलोनी और मेरी केमिस्ट्री में कोई ज्यादा फर्क नहीं। स्वभाव से घुलमिल चुके हैं हम, अब मेरा पीछे लौटना खुद के साथ–साथ बहुतों का दिल

दुखाना होता।.... कुछ महीने पहले आपकी ऐसी इच्छा होती तो नीलकंठ बनने के लिए तैयार भी हो सकता था।

हाँ, निश्चित रूप से हम लोगों से कुछ लापरवाही तो हुई।

फिर क्या कर सकता हूँ मैं......सिवा इसके कि भगवान् से विनती करूँ कि झरना का जीवन सुखमय हो– और आप मुझसे और इस परिवार से पहले जैसे ही सरोकार बनाये रहें।

कहीं और कुछ न बोल जाऊँ जो उन लोगों की मर्यादा के खिलाफ हो, यह सोचते हुए बड़े भैया ने मुझसे कहा– ठीक लखन, अन्दर जाओ, कैटी अपनी गाड़ी में कोई कमी बता रही है– उससे मिलो।

मैं कैटी के पास क्या पहुँचता, वह तो ड्राइंगरूम के किवाड़ की ओट में खड़ी–खड़ी सुन ही रही थी सब, मेरे हाथ से लिपटकर उसने 'थैंक यू अंकल, थैंक यू अंकल.... माई वेरी वेरी गुड अंकल' की रट ही लगा दी। बैठ गया तो मेरे मुँह को बार–बार चूमते हुए मेरे बालों में खुजखुजी भी की; सामने खड़े होकर कुछ देर तक मुझे निहारती रही, फिर बोली– 'ए थॉरोली कम्प्लीट मैन यू आर। यू आर जस्ट, ट्रू एण्ड टू ब्रेव।'

x x x

आज शाम को मुझे अपनी तैनाती के स्थान पर लौटना है। जिलाधिकारी कार्यालय में जिले के सभी पत्रकारों की मीटिंग है। हम प्रेस कान्फ्रेन्स भी कह सकते हैं उसे, इसलिए रुकना कतई सम्भव नहीं। सोच ही रहा था कि श्यामली का एसएमएस पढ़ा– 'कृपया बात कर लें।' ड्राइंग रूम में अभी तक मौजूद हैं झरना के डैड और मॉम, इसलिए घर के पीछे वाले लॉन में चला आया– सल्लू का नम्बर मिलाया। बोली वह– आप यह लिखकर एक दिन का अवकाश तो नहीं ले पायेंगे कि 'माई वाइफ इज कन्फाइन्ड टु बेड' या 'पिछली रात से मेरे पेट में दर्द है,' लेकिन आपकी जानकारी के लिए कुछ सूचनायें– 'आप मुझे बाहर ही छोड़ कर चल दिये– उस वक्त झरना बैठी थी एक घण्टे से– अभी अभी कहीं के लिए निकली है।

मैंने बात आगे बढ़ाई– तुम्हारा अनुमान सही था मैम।.... क्या कहने तुम्हारे अंतर्मन की भाषा के ! उसके डैड और मॉम बड़े भैया के पास शायद इस वक्त भी मौजूद हैं– निकलने वाले ही होंगे अब....।

तो...... ?......श्यामली के स्वर में हताशा थी।

'तो' की क्या बात श्यामली ?

उन्होंने बड़े भैया को तरह तरह के प्रलोभन दिये होंगे...... हम लोग तो सिर्फ खाता–पीता कुन्बा है। वैसे मेरा मन कहता है कि जज साहब किसी भी हालत में डिगने वाले नहीं।

ठीक समझी हो तुम।.... इन दिनों मैं तो रहूँगा नहीं। तुम झरना के करीब भी मत जाना। असामान्य हो सकती है वह किसी भी अन्जाम तक जाने के लिए। ठीक ?....बॉय..... कहते कहते दोनों ने ही अपने हैण्डसेट का संगीतमय चुम्बन किया था।

तीसरे–चौथे दिन कैटी और भाभी का फोन आया। कैटी बोली– अंकल तुम्हारे जाने के बाद यहाँ बड़ा गड़बड़ हो गया– माँ से सुन लो।... खुश रहो लखन जी। हुआ ये कि शाम की न्यूज में एक स्टोरी झरना के बारे में आयी। उसने इधर–उधर की कोई चीज खा ली थी। भूतनाथ मार्केट में एक फ्रूटजूस की दूकान पर वह तुरन्त ही बेहोश होकर गिर गयी थी।

फिर.... ?

उस वक्त सामने की पुलिस चौकी से दो कांस्टेबुल आये और दूकान के मालिक को हिरासत में ले लिया। वह झरना मैम को अस्पताल ले जा रहे थे तभी उसके डैड वगैरह पहुँच गये और किसी नर्सिंग होम में दाखिल कराया।

फिर.... ?

न्यूज में बताया कि वह अभी बेहोश है लेकिन खतरे से बाहर है। ....इस दौरान कैटी के मामा साहब और मामी कई घण्टे उसके पास ही रहे।

कौन मामा और मामी ?

हँसी वह, फिर बताया– सलोनी मैम के भैया और भाभी।

ठीक भाभी, मौका लगे तो पाँच–दस मिनट के लिए आप भी देख आइयेगा.... या फिर जैसा ठीक समझो।

अब मेरा वहाँ रात में जाना ठीक नहीं रहेगा, तुम्हारे बड़े भैया कोर्ट से लौटते वक्त पहले ही हो आये हैं। अब तो नर्सिंग होम से डिस्चार्ज भी हो चुकी होगी ! हाँ.... लखन देखो ये कैटी क्या कह रही हैं

बोली वह– अंकल ! पापा के पहुँचने के पहले ही मैम को होश आ चुका था। अरे हाँ, मैम के भाई और भाभी को वहाँ देखकर उसने बड़ा गुस्सा किया था। 'बड़ी बददिमाग है वह' कहकर कैटी सिसकने भी लगी थी।

२६

श्यामली का मोबाइल ऑफ है... ताज्जुब ! अब तक तो कालेज से आ चुकी होगी। उसका लैण्ड लाइन वाला नम्बर मिलाया। काफी देर बाद किसी ने उठाया–हलोअ् हलोअ् ! कौन साहब जी बोल रहे हो ?

सोचने लगा– यह तो किसी नयी महिला की आवाज है। ऐसी आवाज.... सलोनी के घर से मैंने पहली बार सुनी।... या फिर कोई दूसरा नम्बर मिल गया है ? एक बार फिर देखता हूँ... हलोअ्। .....वही आवाज आयी। पूछ लिया तुम कौन हो। क्या यह सलोनी मैम का फोन नहीं ?

फिर दुसरे का क्यों होगा ? तुम्हरे कहे से ही दुसरे का होय जायेगा ? ....मैं चम्पा बोलूं जी। अभी कल ही तो आई अपने गाँव से।

चम्पा ! घर में और कोई भी नहीं क्या ?.... मेरे इस सवाल से कुछ सकते में पड़ी वह– यही कि कोई मर्द जिसको वह जानती पहचानती तक नहीं.... ऐसा क्यों पूछ रहा है।.... सही आदमी नहीं लगता यह।.... तो मैंने शुभी भाभी का नम्बर मिलाया.... अभी अपने आफिस में ही थी वह।

भाभी ! आपके घर में चम्पा नाम की कोई औरत....

हाँ लखन जी, कल ही तो आयी वह अपने गाँव से। बात का सीधा जवाब नहीं दिया होगा।... शायद पहली बार शहर देखा है उसने। बताऊँगी उसके बारे में। उधर बाबू जी सो रहे होंगे ऐंग्जिट लेकर। डाक्टर ने कहा है नींद लाने वाली है ये दवा इसलिए वह जितना भी सोयें अच्छा रहेगा। कोई उनके सोने में खलल न पैदा करे ...तो उसकी ड्यूटी ये लगायी कि जब तक कोई बहुत आपस का आदमी न हो बात करने के लिए बाबू जी को न जगाये।... बुरा मत मानना लखन जी।

तो सलोनी !

आ चुकी होगी वह या फिर रास्ते में होगी। हो सकता है टेलीफोन से काफी दूर रही हो वह, या आते ही आते थकान की वजह से झपकी ले ली हो। अभी मैं भी कहती हूँ कि वह तुमसे बात कर ले।

ओह ! धन्यवाद। मैं ही मिला लूंगा उसका मोबाइल आधे घण्टे में। ध्यान ही न रहा फिर पूरे दिन दस बजे शाम तक। मोबाइल पर मिस्ड कालें छह या सात थीं। जरूर ये श्यामली की कालें थीं। ओह यस। श्यामली वाले ही नम्बर है सभी। नतीजन चौबीस घण्टे बाद बात कर पाया उससे।

डरी हुई आवाज में बोली थी– कल शाम को आपके फोन करने के बाद आ पायी थी घर।... हुआ यह कि बाईपास वाले ओवर ब्रिज पर मोटर सायकिल सवार दो आदमियों ने मुझे परेशान करने की कोशिश की ! वे शायद झरना को जानते हैं। तभी पीछे से यकायक लखनऊ की लेडी एसडीएम आ गयीं, अपनी गाड़ी से जैसे ही कान्स्टेबुलों को उतारा, दोनों बदमाश भाग गये। फिर उतर कर वह पास आयीं– इफ आ'म नाट रॉग, यू आर सलोनी।

यम मैम–कहकर मैंने उनको नमस्कार किया।

बोली– आपके कालेज फंक्शन में अध्यक्षा के साथ थी मैं। अतिथि दीर्घा में बैठी हुई मैने आपका लेक्चर सुना था। चलिये.... मैं घर तक आपके साथ रहूँगी। इस एरिया की मोबाइल पुलिस का नम्बर नोट करो, जब भी ऐसी स्थिति आये– तुरन्त सूचना दो।... बताते हुए श्यामली हांफने लगी थी।

मैं बोला– इस बार तुमसे शादी करने के वास्ते ही तो आऊँगा; वहाँ के डी.एम., एस.डी.एम. को थैंक्स् कहने और आमन्त्रित करने दोनों साथ–साथ ही चलेंगे। दि लेडी एस डी एम इज सर्टेन्ली ग्रेट... शी रेस्क्यूड यू यस्टर डे !!

२७

पाँच मार्च को ही लखनऊ आ गया। मार्च के महीने में कम से कम सरकारी कर्मियों को तो वक्त नहीं होता, छुट्टियाँ नहीं मिलती। मेरी शादी की बात थी तो जिला अधिकारी ने एक पुराने और अनुभवी एस.डी.एम. को मेरे सब डिवीजन का चार्ज भी दिला दिया जबकि मुझे मुख्य विकास अधिकारी के पद के आदेश तो हुए लेकिन कार्यरत सी.डी.ओ.को कहा कि वह १५ मार्च तक लखन शर्मा की प्रतीक्षा करके ही अपना चार्ज सौपें।... उधर जस्टिस बड़े भैया कुछ बहुत खास जगहों के अलावा कार्ड देने के लिए जाने से रहे। इतना अच्छा हुआ कि लखनऊ से बाहर के निमंत्रण पत्र कभी के उनके जूनियर वकीलों ने कुछ कोरियर से भिजवा दिये तो कुछ डाक टिकट लगाकर। उन लोगों के नाम तय करने में भैया ने माँ और भाभी से मशविरा जरूर कर लिया था। झरना और उसके डैड और मॉम भी

बाकायदे आमंत्रित थे। इस पर मैंने अपने मन की बात कही–

भाभी ! झरना के लिए अलग से कार्ड भेजने की क्या जरूरत थी ? उसके डैड के नाम के साथ सपरिवार लिख देना पर्याप्त था।... चलो, आप लोगों ने सोचसमझकर ही ऐसा किया होगा। ......इसलिए कोई बात नहीं।

लखन ! हम सभी ऐसा करने के लिए सम्मत थे क्योंकि तुम्हारी दोस्त होने के कारण उसे अलग से कार्ड जाना जरूरी ही था। डैड और मॉम से नत्थी कर दिये जाने पर वह मन ही मन खिन्न रहती... शायद आती भी नहीं फिर। अब वह आयेगी और पूरे कार्यक्रम के दौरान हम सभी की नजर के सामने तो रहेगी। ऐसे में कोई इधर–उधर की शरारत करके अपनी मिट्टी पलीत करने से बचेगी भी। बड़ी अधिकारी है इसलिए वहाँ मौजूद रहकर अपने पद की गरिमा के विरुद्ध ज्यादा हरकत नहीं कर पायेगी।

आप लोग ग्रेट हो। बहुत सही फैसला रहा यह।

लखन जी ! न बुलाये जाने पर वह लखनऊ में ही कहीं रहकर और भी ज्यादा शैतानी कर सकती थी।.... अब आयेगी वह, धीरे धीरे अपने आप इस नतीजे पर पहुंचेगी कि सलोनी में लखन की पत्नी होने की उपयुक्तता उसकी तुलना में बहुत अधिक है' वही हकदार है गारद बाबू के सुख शान्ति भरे परिवार में शामिल होने की।

ठीक भाभी, इसके बावजूद मैं अपने दोस्तों, और कैटी अपनी वानर सेना के साथ पूरे कार्यक्रम के दौरान चौकस रहने का इन्तजाम करेगी। उसे श्यामली से दूर रखना ही ठीक रहेगा। बदले की भावना से वह कोई भी पत्ता खेल सकती है। भाभी, उसकी तारीफ में सिर्फ इतना ही कहूँगा कि इतनी गिरी है वह कि किसी भी काम में वह अपनी बेइज्जती नहीं समझती।

माँ बोली– भैया जी, फिर तो यह भी देखते रहना जरूरी होगा कि श्यामली के करीब जाते वक्त उसके हाथों में क्या कोई चीज है... या कुछ छुपाये तो नहीं वह।

...बिल्कुल ठीक माँ।

तुरन्त ही बोली वह– लेकिन ये श्यामली ? .....क्या सलोनी असली नाम नहीं इसका बेटे। कैटी भी हमेशा सलोनी मैम ही कहती रहती है ?

अरे माँ, वास्तव में सलोनी नाम में मुझे कोई नयापन नहीं लग रहा था तो मैंने ही श्यामली नाम कर दिया। लगता कैसा है यह आपको ?

चोखा ! बिल्कुल चोखा !!

इसी बीच मोबाइल की बांसुरी बज उठी। पूछा मैंने– श्यामली, ठीक हो तुम ? थोड़ी देर में पहुचूँगा उधर। अपने बाबू जी को छड़ी देकर सोफे पर सिर्फ बिठाये रहो.... ड्राइंग रूम से अलग किसी कमरे में..... जिसमें ज्यादा आमदरफ्त ना हो। ओके..... जरा अपनी दोनों माताओं से जरूरी बात कर रहा हूँ।..... और हाँ सलोनी के बजाय श्यामली नाम को बड़े बुजुर्गों की मान्यता मिल गयी है। अब सभी लोग तुम्हें श्यामली ही कहेंगे।.... अच्छा सुनो.... भाभी जी तुमसे कुछ कहना चाहती हैं......।

भाभी नये नाम को सोच–सोचकर प्रसन्नता सूचक लम्बी हँसी हँसीं थी। बोली– लखन का यह नजरिया हम सभी को पसन्द तो आया लेकिन कानूनी तौर पर और कागज पर यह अपनी शादी सलोनी से ही करेगा।.... दूसरे छोर से श्यामली की खनकती हँसी इधर भी सुनाई दे रही थी तो मैंने जोड़ दी अपनी भी बात..... यस यस सल्लू, जस्ट अ मिनट, मुझे भाभी और तुम्हें साथ लेकर यहाँ के डीएम और उनकी धर्मपत्नी उज्ज्वला जी को कार्ड देने चलना है उनके रेजीडेंस पर।

ओ.के. ! मैं बिल्कुल तैयार मिलूँगी।

x x x

आज हाईकोर्ट से एक डेढ़ बजे ही लौट आये तो बड़े भैया के पास बैठ गया। उससे पहले आते ही उनका कोट उतारा, टाई और कमीज भी। हवाई चप्पल पावों के पास रखते हुए उनके जूते भी अलग किये। बोले वह– 'बहुत किया रे, अब यह सब बन्द कर। .....माँ ! देख तो मेरी तकदीर, एक आई.ए.एस. आफीसर मुझे कितना सम्मान दे रहा है !' फिर हँसते–हँसते भी कहने लगे– 'इसे अपने पद–प्रतिष्ठा की तनिक भी परवाह नहीं।'

एक जस्टिस और बड़ा भाई.... ईश्वर के बराबर हस्तीवाला होता है। उससे दुनिया के सभी पद छोटे हैं। इसलिए उसकी सेवा की पालिस से आई. ए.एस. पद को चमकाये रहने में ही इसकी गरिमा है। इसकी प्रतिष्ठा के प्रति बेपरवाह मैं तब होता जब इसमें मैल जमने की नौबत आ जाती।

अच्छा ?

'बड़े भैया ! जबसे मैं परदेसी हुआ.... एकान्त के क्षणों में आपकी याद में

अनायास ही आँखें गीली हो उठती हैं और मैं सिसकने भी लगता हूँ थोड़ी देर ....लेकिन ऐसे विशेष क्षण किसी मोबाइल की तरह मुझे रिचार्ज भी कर देते हैं।' भैया ने मेरी इस बात पर एक लम्बा अट्टहास किया था स्नेह भरी नजर से मुझे देखते हुए।

मैं बोलता गया– याद है भैया? फिफ्थ–सिक्स्थ तक की पढ़ाई के दौरान आपही मुझे स्कूल यूनीफार्म पहनाते थे, माँ अगर व्यस्त हैं तो आपही ने मुझे रिक्शे पर बिठाया, दशहरे के दिन रावण और कुम्भकर्ण... और मेघनाद के जलते हुए पुतले दिखाये, मेले में गोलगप्पे और जलेबियाँ खिलाईं। नौकर के साथ कभी भी किसी भी मेले नहीं जाने दिया। पता नहीं आपकी उंगली पकड़े हुए चलने में मुझे कितना सुख मिलता, ...सभी दिशाओं से रंग विरंगा उजियारा ही उजियारा उमड़ता हुआ दिखता।.... आपने मुझे पिता, गुरु और बड़े भैया का प्यार देने में कभी कोई कसर नहीं छोड़ी।

बस बंद भी कर छोटे, बहुत कह डाला। ये बातें सिर्फ महसूस करने की होती हैं, कहने की नहीं।.... मुझे रुला दिया तूने।

नहीं बड़े भैया! एक और मौके की याद दिलाऊँगा। ग्यारहवीं में था। एक दिन घनघोर बारिश में रेलवे स्टेशन की ओर पैदल ही भीगता हुआ चला जा रहा था। आप कोर्ट–कचहरी से वापस हो रहे थे। एकायक आपकी गाड़ी रुकी और आपने मुझे उसके अन्दर खींच लिया। बार बार ताप से सुर्ख मेरे गालों का स्पर्श करके कहा– तुझे तो बहुत बुखार है लखन! कहाँ जा रहा था इतने खराब मौसम में?

बड़े भैया, फौज में भर्ती होने के लिए रिक्रूटिंग आफिस। आपने कहा– आ रे.... बीमार लोग तो मिलिट्री में भर्ती नहीं हो पाते। सुनते ही मैं बैठे ही बैठे बेहोश भी हो गया। तुरन्त ही आप मुझे डाक्टर के पास ले गये, तीन दिन नर्सिंग होम में ही मेरी तीमारदारी करते रहे। चौथे दिन घर लौटने पर आपने माँ से कहा– ये छोटा इसी उम्र से देश सेवा करना चाहता है। कल ही मैंने अलीगंज वाले ज्योतिषी जी से पूछा तो कुण्डली से वह जाने कितने चक्र बनाते चले गये। कुछ देर तक जाने क्या सोचते रहे.... फिर बोले– राष्ट्र सेवा तो इस जातक को करनी ही है लेकिन एक प्रशासक रूप में।'

यूँ आपने मुझे बता दिया था क्या होना चाहिए मेरा लक्ष्य और उसकी

प्राप्ति का मूल मंत्र जो हमेशा ही मेरे मन मस्तिष्क में दस्तक दिया करता।

पाँव सीधे कर लीजिए भैया– थोड़ी देर आपकी कमर पीठ और कंधों में हाथ लगा दूँ।..... कुछ न कुछ कहते रहने की धुन में मैंने ध्यान तक नहीं दिया कि पेट के बल लेटे हुए बड़े भैया रोते रहे थे, आँसुओं से तकिया काफी गीली हो चुकी थी। .....ऐसे में दो क्षण भी मैं उस जगह ठहर नहीं पाया, खुद भी धीमी धीमी सिसकियाँ भरता हुआ दूसरे कमरे में चला आया था।

x x x

घण्टे भर के बाद या कहिए चार बजे के करीब। कहाँ–कहाँ हो लिए तुम लोग अब तक ? लॉन में आराम कुर्सी से उठकर एक ही सवाल से भैया ने पूरे परिवार का ध्यान अपनी ओर मोड़ा। भाभी बोली– लखन और श्यामली को साथ लेकर मैंने सबसे पहले डी.एम. साहब को कार्ड दिया, उसी के पास एस.एस.पी. आवास पर जाकर उन्हें भी आमन्त्रित किया। बाद में हम अपनी प्राचार्या और श्यामली की प्रिंसिपल के आवास पर भी गये।

लेकिन अन्नपूर्णा तुल्य वसुन्धरा जी ! ये श्यामली कौन है ? तुम तो ऐसे कह रही हो जैसे पहले से जानता हूँ मैं इस महिला को।

तो फिर..... ? लखन की श्यामली ही तो है हम सबकी सलोनी।

अच्छा–अच्छा !! पहले से पता नहीं था वर्ना निमन्त्रण पत्र में सलोनी के नीचे ब्रैकेट में 'उर्फ श्यामली' भी छपवा देता। तुम्हें पता जरूर होगा अन्नू, कुछ मुगल बादशाहों ने भी अपनी बेगमों के नाम बदल दिये थे। कहते हैं– शाहजहाँ की प्राणप्रिया मुमताज महल का शुरुआती नाम.... शायद..... बानू बेगम जैसा था कुछ।

हाँ हाँ तो अपने लखन का रुतबा भी कहाँ कम है ? श्यामली जैसी रानी, मुल्क के सबसे बड़े रुतबे वाली अधिकारियों की पंगत में चांद के टुकड़े की शानोशौकत वाला अधिकारी है जिसका पति !..... न्यायमूर्ति है जिसका बड़ा भाई... और छोटे अफसरों और मुलाजियों की फौज तो मुगलिया सल्तनत की फौज की पचास हजार गुने से भी जास्ती ! भैया जी ने ठीक किया सलोनी का नाम बदलकर।

मैं खुशी से सहसा उछल पड़ा अपने बारे में भाभी जी की दलीलें

सुनकर– अरे वाह भाभी माँ! आज से मैं खुद को बड़े से बड़े बादशाह से बड़ा नहीं तो उसके बराबर तो समझूँगा ही। देखा भैया! क्या होता है किसी ममतामयी नारी का मादराना जज्बा। आप लोगों की छत्रछाया के सारे सुख मुझे सुलभ हैं, इस बात का मुझे अभिमान है।

भाभी ने कैटी को कहा– रग्घू से जाकर बोल दे बेटे कि टेबल पर कॉफी वगैरह लगा दें, हम सभी आ रहे हैं।..... तुरन्त ही माँ अपनी गांठों पर हाथ रखकर कुर्सी से उठीं– बोलना क्या अन्नू, सब चल ही रहे हैं उधर, हवा में यकायक ठंढ सी आ गयी है, मेरा मंकी कैप खोज देना बेटे।..... कहाँ टांग देती हूँ..... याद ही नहीं रहता मुझे। अच्छा जज साहब! एक बात बड़ी देर से विचार रही थी मैं– ये अपनी श्यामली से शाहजहाँ वाली मुमताज ज्यादा चोखी नहीं रही होगी। वह मुल्क के बादशाह की बेगम थी जिसके दफनाने के लिए इत्ती मंहगी मजार बनी, सिर्फ इसलिए हम हिन्दुस्तानी उसे ज्यादा चोखी समझते हैं। श्यामली ही क्यों, उसके मुकाबले में, मेरे ख्याल से अपने लखनऊ की गली–गली में कोई न कोई बानू बेगम और नूरजहाँ दिख जायेगी– बस बैठने के लिए सिंहासन उसके पास नहीं होगा। छिः भक्षाभक्ष खाती रही होगी, सांसे भी बदबूदार रही होंगी लेकिन आदतन दूसरे की प्रशंसा करनेवाले हम देशवासी हर ऐसे आदमी या औरत को अकारण ही सिर पर बिठा लेते हैं। क्या किया जाय और क्या कहा जाये.....।

देख लखन अपनी मातेश्वरी का पुत्र प्रेम..... जो बेहिसाब है तेरे लिए और सलोनी ....ओह् सॉरी.... श्यामली के लिए। अब तेरे दोनों हाथों में मोतीचूर के लड्डू हैं। .....बड़े भैया की इस प्रतिक्रिया से मुझे घण्टों लम्बी तृप्ति मिली थी।

x x x

दूसरे दिन। यही कोई ग्यारह बजे श्यामली के घर पहुँचा। दद्दा जी के प्रणाम किये, इधर उधर देखते हुए पूछा– आप अकेले ही हैं, बाकी लोग कहाँ गये दद्दा जी?.... इन दिनों ज्यादा बीमार रहने के कारण कमजोरी, और कमजोरी के कारण आपकी कमर झुक जाना, पेट और सीने का पिचक जाना कोई ताज्जुब करने वाली बातें नहीं, वजह सिर्फ एक है, वही... आपकी अस्सी साल की उम्र। पहले तो उन्होंने धीमी आवाज में बैठे ही बैठे बोलने की कोशिश की, फिर दो तीन मिनट बाद रोज जैसी आवाज में आये– भैया लखन जी, सोच

रहा था अपनी अब तक की इकलौती शक्तितीर्थ यात्रा के बारे में।

शायद अत्यधिक कमजोरी की वजह से इनके कान भी धोखा दे रहे थे क्योंकि मेरे सवाल को उन्होंने समझा—क्या सोच रहे हैं दद्दा जी।..... जानते हुए भी मैंने उन्हें कुछ देर सुन लेना चाहा। बोले वह— तब मैं पूरी नवरात्र व्रत रहता। एक बार कुछ साथियों ने कहा कि शारदा नदी के तट पर देवी पूर्णा के दर्शन कर आये जायें। हम लोग सप्तमी की रात्रि में लखनऊ से चले, अष्टमी की प्रातः शारदा नदी के तट पर पहुँचे। .....अब तो वहाँ तमाम सुविधायें सुलभ हैं, पहले वे दुलर्भ थीं। तब पूर्णा जी के दर्शन बदरीनाथ जी के दर्शन की तरह दुष्कर थे।

फिर दद्दा ?..... जोर से बोला मैं।

पतली सी पहाड़ी ढाल। ऊपर से डेढ़ सौ दौ सौ भक्त उतर रहे थे, नीचे से लगभग सौ दर्शनार्थी मन्दिर तक पहुँचने के लिए उतावले थे। फिर क्या— गली में गाँठ पड़ गयी क्योंकि किसी के इधर—उधर बिखरने का मतलब था दर्जनों फुट नीचे खाई में गिर जाना... और मर जाना।

फिर दद्दा— उनकी आँखों से आँखें मिलाते हुए बड़ी उत्सुकता से पूछा।

बोले वह— सभी साथी किस जगह फँसे हैं, क्या कर रहे हैं, ऊपर पहुँच चुके हैं या मृत्यु से संघर्षरत हैं, पता ही नहीं था। मैं बहुत घबराया। माँ का ध्यान किया। मन ही मन कहा भी कि अब आगे बढ़ना मेरी सामर्थ्य की बात नहीं। ....अब लौटता हूँ मैं ! तब बेटे ! यकायक एक चमत्कार हुआ मेरे साथ। मुझे आभास हुआ कि किसी के दो हाथ पीछे से मेरी बगल में लगे हैं, क्षण में ही उन्हीं के सहारे मैं ढाई सौ तीन सौ भक्तों से ऊपर पहुँच चुका हूँ.... मैं अचंभित हो गया था इस देवी—कृपा से। फिर तो दर्शन करने में कोई दिक्कत ही नहीं थी।

जी !

ऐसे ही ईश्वर अपने भक्तों की मदद करता है। मैंने क्या प्रयास किये थे अपने जामाता के रूप में तुम्हें पाने के लिए, लेकिन माँ की कृपा से ही तुम मिले। जीवन में इतनी बड़ी उपलब्धि पहले तो नसीब नहीं हुई।

एक महिला इस बीच मेरे पीछे आकर खड़ी हो गयी थी। बुलन्द आवाज में बोली— भाभी काल साम को बाजार से ढेर दर्जन सारी लाई थीं दीदी को पसन्द कराने की खातिर। कई को उन्होंने खारिज कर दिया तो अब वह लोग

साथ साथ दुकान पर गये हैं। सचिन भैया अपने दफ्तर से वहीं पहुँचे होइहैं। आवत होइहैं अब।

क्या तुम चम्पा हो ?

अउर नहीं तौ, का कलावती समझ रहे हौ हमें। दू नौ बहिनी हैं न, एकुइ सूरत की.... तौ बड़े बड़े चकराय जावें। मुल अब वह अपनी ससुरारि मां रहै। गोदी मां अब तौ एक बेटवा भी है।..... बहुत झिटिकि गयी है बिचारी। मर्दवा सराबी भी हैं, जुवांरी भी। झूठि बोला कि वह डिगरी कालिज मां चपरासी है, मुल रिकसा चलावै कबौ कबौ।

मैंने जानबूझकर उसकी बातों में दिलचस्पी दिखाई 'अच्छा' कहकर..... तो बातों की बारूद से भरी वह फिर बोली– कल्लौ को लातन से मारै भी, वही की मेहनति से पेटु भी भरै। एक सांस मां सत्तर गारी भी देवै। अब भैया यही समझौ कि उइ गारी मुंह से कहे ते केहू को भी बड़ी शरम आवै।.... बड़ी गंदी गंदी जो हमरे गांव के मुखिया भी न देंय।

मैंने हुंकारी भरी।

एकु बार तो वह जेहल मा रहा तीन चारि दिन। अम्मा और बप्पा घाघरा की बाढ़ मा बहि गये। अब जब हम अकेले बचे तौ बोला वह कि ऐसी वैसी मारे मारे फिरै ते अच्छा है कि कलावतिया की तना तुम्हहू हमते बियाहु करि लो।

फिर..... ?

हमने कहा– नह्। अरे बाबू जी हम यही लिए तो जनमी नाही कि कोऊ हमका भोगै औरु हम कमाय कमाय कै वहिकी खातिर पनेथी सेंकी। बसि पुलिस मा सिकाइति करि दिया।

लखन जी इसी की मां हमारी सलोनी की मालिस किया करती थी मगर पारिश्रमिक ना लेती। तो बहू ने कहा– 'पापा जी चम्पावती को रोजमर्रा का कामधाम सिखा लिया जायेगा– कुछ नहीं तो झाडू–पोछा करेगी, बर्तन ही साफ करेगी– हम सभी लोगों को थोड़ा बहुत आराम ही हो जायेगा।..... और भैया, देहात का आदमी अब भी आज भी ईमानदार और हृदय से साफ सुथरा होता है। इस चम्पा का ऐसा ही आचरण है। कल शाम से शुभी का एक इयरिंग लापता था। आज सुबह बिस्तर–विस्तर सुधारते वक्त ये चिल्लाई– 'भाभी

भाभी ! तई इधर आवौ–ये देखौ तुम्हार ऐरन ई तकिया के मुंह मा अटका हैं। शुभी ने इसे कई बार धन्यवाद दिया तो उसकी निष्कपट सूचना शैली पर हम सभी लोग बागबाग रहे बड़ी देर तक।

शुभी वगैरह की खुशी तथा धन्यवादों से उत्साहित हुई तो और भी बोली– हमरे बप्पा अउर अम्मा की इमानदारी का भी कोई जवाब नाही। अम्मा ने तो जिन्दगी भर तुलसी मैया की पत्ती अपनी जबान पर धरे रक्खा.... तौ उनकी बेटी कइसे बेईमान होय जाय !

चम्पा ! अब चुप ! भरपूर मनोरंजन किया लखन जी का। बेटा जी, ये गाने–बजाने में भी निपुण है, पन्द्रह सोलह साल की अवस्था से ही इसे दर्जनों गीत–भजन जबानी याद रहे हैं। .....तो बड़े ही उपयुक्त अवसर पर आई यह !

तब तक श्यामली बोली– शुभी भाभी कहती हैं कि ये अतिथियों का मन तो बहलायेगी ही, बात–बात के लिए प्रासंगिक मंगल गीत भी गायेगी।

मुझे चम्पा–महात्म्य सुनाते सुनाते दद्दा जी की हँसी कंठ के बीच में ही कहीं उलझ गयी तो खाँसते–खाँसते आँखें लाल हो आईं, मैंने उन्हें तुरन्त उनके पलंग पर पहुँचाया। इस बीच चम्पा के पेट में बची बातें उमड़ घुमड़ रही थी जो यकायक फिर छलकने लगी। 'बाबू साहब ! ये अभी पूरे सत्रह साल जियैंगे, कउनेव कागद पर लिखि लियौ हमारी यह बात।' ऐसा कहकर पाल्थी लगाई फिर किसी जोगन सी कुछ देर बैठी रही, सांसें भी रोक लीं। देखते ही देखते उसकी आँखे कान याकि पूरा मुँह सुर्ख हो उठा। फिर धीरे धीरे वह सामान्य भी हुई, बड़ी गम्भीरतापूर्वक बोली– 'मैया से बोल आई हूँ, बाबू जी कौ सौ साल की उमर जरूर जियावौ।' ....इसके बाद उसने हाथ में एक कपड़ा लिया, सारा फर्नीचर, खिड़की दरवाजे बड़े मनोयोग से पोछने लगी। मैं अवाक् सोचता रहा– 'गरीब आदमी सर्वे भवन्तु सुखिनः की प्रवृत्ति वाला होता है। उसकी कामना होती है कि सब एक ही तरह से सोचें, एक ही तरह से बोलें, स्वस्थ और दीर्घायु बनें...... और..... और ऐसे ही आदमी के साथ अपने अट्ठारह हाथों को उठाये हुए मैया भी रहा करती हैं; उसी के साथ हँसने–रोने–बतियाने, सोने और जागने में ही उन्हें आत्मसुख भी मिलता है।'

शायद सोचने के बजाय मैं साफ–साफ बोल रहा था क्योंकि दद्दा जी ने ही मेरी बात को विराम दिया था–बात मन की निर्मलता की है लखन जी।

x x x

श्यामली और शुभी मेरे मौजूद रहने तक नहीं आई तो मैं तो चला आया। .....शायद झरना पहुँची थी बाद में। यही मंशा रही होगी कि वह सलोनी परिवार को आखिरी लमहे तक परेशान किये रहे। पता नहीं उसकी मॉम का आखिरी सेकण्ड तक कौन सा पत्ता काम कर जाये। उसे आते हुए चम्पा ने दुमंजले से देखा था; दरवाजे की कालबेल पर उंगली ठूँसते हुए भी देखा था उसे। पहचानती तो थी नहीं तो ऊपर से ही चिल्लाई– 'कउन अजीब आदमी होय भाई ? अरे कोई दरवाजे पर ही नहीं बैठा रहत।' इससे झरना आगबबूला हो उठी, किवाड़ों पर दोनों हाथ पटकने लगी। चम्पा ने किवाड़ खोले तो झरना मुँह के बल अन्दर की ओर गिर गयी, हैण्ड बैग भी उसके कंधे से फँसा–फँसा चम्पा के पावो की ओर छिटक गया था। उठकर उसे तरह तरह की अंग्रेजी गालियाँ दीं तो चम्पा ने उसका हाथ पकड़कर दरवाजे से बाहर कर दिया और किवाड़ों की सिटकनी भी लगा ली।

इस पूरे वाकिये की जानकारी मुझे शुभी ने मेरे मोबाइल पर दी।

मैंने जिज्ञासा व्यक्त की– फिर क्या किया आप लोगों ने ?

लखन जी, क्या करती–आखिर। हम दोनों ने समझदारी से काम लिया। तुरन्त न आ गयी होती तो कोई बवाल भी हो सकता था क्योंकि चम्पा तो उससे अपरिचित थी ही। मैंने उसे बताया कि कोई बहुत आपस का आने वाला ही देर तक कालबेल दाबेगा या दरवाजा थपथपायेगा क्योंकि वह किसी जल्दी में होगा। तुम्हारी श्यामली ने उसके चेहरे पर हुई रगड़ पर पहले तो सचिन का आफ्टर शेव लोशन स्प्रे किया, फिर उस पर कुछ पाउडर–क्रीम लगाकर मेकअप भी कर दिया। बाल भी सँवार दिये उसके।

और उसके अपने स्वभाव और आपसी जलन की वजह से मना भी नहीं किया ऐसा सब करने से ?

बताने से क्या फायदा लखन। मुँह से मिसाइल पर मिसाइल दागती रही लेकिन हम लोगों ने कोई भी प्रतिक्रिया नहीं की। बाद में कॉफी उसके सामने रक्खी तो तुनककर उठ खड़ी हुई, सिर झटककर बोली– 'कुछ नया सीखो तुम लोग। चोट कॉफी के सेवन से नहीं जाती।.... कहकर तुरन्त ही तैश में चल भी दी।

मतलब ?

समझ ही नहीं पाये हम लोग कि क्या मकसद था उसका यहाँ आने और बिलावजे इतना बंवाल काटने का। हमारे लिए ज्यादा कष्टकर नहीं रही यह घटना क्योंकि शुरू शुरू में हम लोग घर में नहीं थे, बाबू जी भी अन्दर अपने पलंग पर थे– इस वजह से वह ज्यादा कुछ नहीं कर पायी।

उसकी अपनी कमियाँ तो हैं ही, लेकिन अपना दिमाग कहीं, उसे वह अपनी मॉम के पास आगरे में ही छोड़ आती है।.... आपको सतर्क रहने के लिए बता रहा हूँ– अपनी मॉम का सुझाया ही कोई कार्ड चलने आई थी वह, मैं ठीक ठीक जानता हूँ कि उसके सभी सोपान बाकायदा सोचे समझे ही होते हैं।

दद्दा जी मेरी और शुभी की वार्ता को सुनकर वाकिये से अवगत हो चुके थे। शुभी से मोबाइल लेकर बोले– भैया ! झरना जगद्‌गुरु से कुछ ज्यादा ही समझदार दिखती है।

कौन जगद्‌गुरु दद्दा जी ?

शंकराचार्य भगवान्, क्योंकि मंडन मिश्र जी का घर तलाश करने में वह भ्रमित हो गये तो पहले घर के तोते से उन्हें अपशब्द सुनने पड़े थे। ये सोच–समझकर यहाँ आई कि उसे ऐसी नौबत का सामना नहीं करना पड़ेगा। तुम्हारी तरह से हमारे ये बच्चे भी सत्संस्कारी हैं।

अच्छा दद्दा जी, सलोनी है क्या आपके पास ?

भैया, श्यामली तो है, सलोनी के लिए पूरा घर छानना पड़ेगा।

दद्दा जी..... ! तो आपको भी इसके नये नाम का पता चल चुका है ?

अरे मैं तो खुश हूँ कि तुमने मेरे स्तर से दी गयी संज्ञा में उचित परिष्कार किया ! हम सबको पसन्द आया यह। श्यामली के प्रति तुम्हारे और तुम्हारे परिजनों के प्यार का परिचायक है यह नाम।

दद्दा जी, हमारी माँ को बहुत भाया यह। उनकी प्रतिक्रिया थी कि चलो, माँ का नाम श्यामा है तो बेटी का नाम श्यामली होना ही चाहिये। सलोनी नाम से इसकी सुषमाई का बोध तो होता था लेकिन..........। बीच में ही बात रोकर मैंने कहा.... छोड़िये दद्दा जी, सलोनी से कहिये कि वह उज्ज्वला जी से तुरन्त बात कर ले।...... उज्ज्वला जी डी.एम. की धर्मपत्नी हैं।

x x x

आफीसर्स वाइव्ज एशोसियेशन की ओर से नारी उन्नयन मंच की अध्यक्ष एवं लखनऊ के जिलाधिकारी की पत्नी श्रीमती उज्ज्वला की उपस्थिति में मुख्य वक्ता के रूप में सलोनी का पर्यावरण प्रदूषण विषय पर भाषण समाप्त हुआ ही था कि प्रवेश द्वार पर इतनी जोर का धमाका हुआ कि सभागार के अन्दर अफरातफरी मच गयी। सुरक्षा के पहले से ही पुख्ता इंतजाम होने के कारण गार्डों ने आयी हुई सभी सदस्याओं तथा उनके पतियों को उनकी गाड़ियों तक सुरक्षित पहुँचाया। दो क्षण का भी विलम्ब किये बिना मैंने भी श्यामली को गाड़ी पर बिठा लिया। उसके घर पहुँचे ही थे कि शुभी भाभी ने पूछ लिया– क्या हुआ वहाँ लखन जी ? टीवी चैनलों ने तो कई कारों, जीप गाड़ियों और दो तीन मोटर साइकिलों को बिल्कुल तबाह दिखाया है, आखिर बात क्या हुई ?

उत्तर दिया मैंने– क्या कह सकते हैं हम। बाहर तो थे नहीं। वहाँ रुककर किसी से कोई पूछताछ करने में वक्त बर्बाद करना भी तो समझदारी नहीं थी।

इसी बीच लगभग सभी समाचार चैनलों पर खबर दी गयी– धमाके की साजिश में शामिल श्याम बाबू नाम के एक युवक को पुलिस ने हिरासत मे ले लिया है, उससे पूछताछ की जा रही है, उम्मीद की जाती है कि घटना के मास्टर माइन्ड को कल तक हर हालत में गिरफ्तार कर लिया जायेगा।

मैं श्यामली के घर से निकलना ही चाहता था कि एक पुलिस दस्ता दरवाजे पर आकर रुका।

हलो पुलिस आफीसर !

सर आदेश हुआ था कि मैं संतुष्ट हो लूँ कि सलोनी जी और आप सलामती से अपने अपने घर पहुँच चुके हैं।

धन्यवाद आफीसर।

चलिये आपको हम एस्कोर्ट करते हैं

ठीक....। कहकर मैंने अपनी गाड़ी स्टार्ट की। बड़े भैया की वजह से घर के सामने पुलिस पोस्ट थी ही, रुका ओर एस्कोर्ट कर रहे मोबाइल दस्ते के आफीसर को फिर से धन्यवाद किया।

२८

मन्दिर मार्ग पर कल्याण मण्डपम्! सचिन और शुभांगी भाभी ने सोच समझकर इसे हमारे शादी समारोह के लिए आरक्षित कराया। इनके दिमाग में रहा होगा कि वर पक्ष और कन्या पक्ष दोनों ही स्थानीय हैं, दोनों के ज्यादा से ज्यादा व्यावहारिक सम्बन्ध हैं, कद के लिहाज से लखन और जस्टिस बड़े भैया की जान–पहचान के कहने ही क्या.... उसी के मुताबिक जगह और सारा इन्तजाम भी होना चाहिए। इसलिए शुभी ओर सचिन दोनों की ही ऋद्धि–सिद्धियाँ बड़ी समझदारी और निष्ठा से काम कर रहीं थीं। किसी तरह की कमी न रह जाय, तो बड़े भैया के कुछ ही वक्त पहले के बिरादर सहयोग भावना का यूँ प्रदर्शन कर रहे थे कि कोई समझ ही नहीं पा रहे थे कि वे किस पक्ष से ताल्लुक रखते हैं। नन्हें से नन्हें बल्बों में अनगिनत चांद और बेशुमार सूरज समाये थे– बिना घड़ी देखे कोई समझ ही नहीं पा रहा था कि कई घण्टे पहले सूर्यास्त हो चुका है। बड़े भैया की योजनानुसार सड़कों पर वर पक्ष की शोभायात्रा, आतिशबाजी और बैण्डबाजे मुमानियत के दायरे में थे। उनके सोच के मुताबिक परिजनों–मित्रों और सम्बन्धियों से घिरा हुआ लखन जब मंच तक पहुँचने के लिए स्थल के मुख्य द्वार पर होगा, वहीं कन्या के पिता लोकाचार सम्पन्न करायेंगे, वर पक्ष के मान्य जनों को माला पहनाकर सम्मानित करेंगे, फिर ससम्मान वे हाल के अन्दर रिजर्ब कुर्सियों पर बिठा भी दिये जायेंगे। कुछ वक्त तक सभी अतिथि शीतल और सुरुचिकर संगीत का आनन्द लेंगे, वर और कन्या को परस्पर दिव्य मालायें पहनाने का दृश्य देखेंगे, फिर मंच के बगल में हाल के कोने से सटकर बने आर्केस्ट्रा मंच से बच्चों बालाओं और बड़े बुजुर्गों के साथ मिली–जुली आवाज में सुनने लायक गाने होंगे। पहली मंजिल पर बने डाइनिंग हाल में काफी जगह है, इसलिए दोनों तरफ के अतिथि–अभ्यागत आपस में मिलते–जुलते, हँसते–बोलते चलते–फिरते या बैठे–बैठे एक साथ भोजन लेंगे। अंततः आगमन के लिए आभार प्रकट करने के लिए बड़े भैया और सचिन दोनों ही निकास द्वार पर मौजूद रहेंगे।

हुआ भी यही ऐसे ही। बड़े भैया की लिखी पटकथा के अनुसार! लेकिन उत्सव के समापन तक के अंतराल में हम दोनों ही परिवार किसी बहुत ही अजीब स्थिति उत्पन्न होने की आशंका से चिंतित थे। झरना के डैड और

मॉम शुरू–शुरू में ही साथ–साथ दिखे, बड़े भैया से बताया भी था कि उसने उनसे फोन पर कहा था कि वह पहुँचेंगी जरूर। ....तो भी अब तक कहीं नहीं दिखी! विवाह स्थल में मौजूद पुरुष और महिला आगन्तुकों में अपनी–अपनी नजर से सभी टटोल रहे थे उसे। ......श्यामली भी बगल में बैठी हुई रह–रहकर उद्विग्न हो उठती, दबे ओठ मुझसे कहती भी– अभी तक नहीं दिखी आपकी दोस्त। उत्तर में मैं उसकी ओर निहारकर अपनत्व बिखेर देता। ....मेरे बैच के सभी साथी आये। भास्कर सबसे पहले मिला– नयी तैनाती के भी लगभग सभी सीरियर और जूनियर सहयोगी आये। हाँ ......झरना और उसकी दीगर कक्षवासिनियाँ ही अभी तक अंडरग्राउण्ड हैं। श्यामली की ओर देखकर मैं यकायक बुदबुदाया था– चारों साथ ही साथ आ रही होंगी। हो सकता है, वे किसी ट्रैफिक जाम से जूझ रहीं हों।

श्यामली बोली– देखिये देखिये, स्मिता, प्रीती और सुधा अभी अभी उज्ज्वला जी के नजदीक पहुँची हैं.... उनसे बतिया रही हैं कुछ..... और अब मुसकाते हुए इधर के लिए बढ़ी हैं..... लेकिन लखन जी, ये स्मिता क्या कर रही है.... इतनी बेतकल्लुफी से! झरना की कोटी की थैलियों, कालर, पर्स वगैरह टटोल रही है। आखिर एक आफीसर के प्रति अमर्यादित आचरण है यह!

कोई बात नहीं सल्लू, सब कुछ उज्ज्वला जी की सुरक्षा सोच के मुताबिक है..... आखिर वह यहाँ के जिलाधिकारी की पत्नी हैं।

वह तो ठीक है.....लेकिन इससे झरना बड़े तनाव में आ गयी है, शायद वह इस कार्रवाई से खुद को अपमानित महसूस कर रही है। देखिये न उसकी तनी तनी भौहें, पसीने से बहता जा रहा उसका मेकअप और हेयर स्टाइल भी बेतरतीब हो गया है लोगों का हाथ लगते लगते।

राक्षस कन्या–सा हो गया है.... यही कहना चाहती हो न तुम?

नहीं लखन जी, मेरे मानस में उसके लिए रंच मात्र अनादर नहीं.... मैंने हमेशा ही उसे परेशान मनःस्थिति में देखा है। मैं उसकी अब तक की हरेक चेष्टा–कुचेष्टा के प्रति क्षमाशील हूँ।

ग्रेट यू आर... सो ग्रेट! ....मैंने कहा ही था कि झरना आई, हम दोनों से हाथ भी मिलाये, फिर सलोनी के दोनों गाल चुटकियों से दबाकर प्यार जताया। मेरी कनपटियों को दोनों हाथों से दबाकर सबके सामने बड़ी बेहयाई से मेरे मुँह

के दोनों ओर किस किया। ....मुझे बुरा तो बहुत लगा लेकिन एक बार फिर श्यामली की तरह ही कोई महत्व नहीं दिया उसकी हरकत को। .....तो भी मीडिया वालों ने अपना काम कर लिया था। .....मुझे यकीन है झरना की यह करतूत वहाँ किसी को भी पसन्द नहीं आयी होगी। मंच पर ही बैठी माँ और कैटी की सूरतें तो बिल्कुल सुर्ख हो गयीं थीं।

चलते चलते पता नहीं कैसे मूड में आ गयी– श्यामली से बोली सल्लू ! तुम जितनी अच्छी हो, मैं उतनी ही खराब। नसीब वाली भी हो जो लखन को पति रूप में पा गयी.... आई ऐक्सेप्ट माई डिफीट।

श्यामली बोली– लेकिन दीदी ! मैं आपसे कोई मुकाबला तो नहीं कर रही थी। सब कुछ विधि–विधान के मुताबिक अपने आप ही होता गया।

प्रकरण को समाप्त करने के लिए मैंने झरना से पूछा– तुम देर से क्यों आई, डैड और मॉम दोनों ही तुम्हारे इंतजार में थे ? ..... इस बात के उत्तर में वह बुदबुदाई थी– 'यह भी सब ऊपर वाले की लिखी स्क्रिप्ट के मुताबिक हुआ। तुम लोगों की जानकारी में नहीं है शायद– मॉम को अकारण ही परसों का ब्लास्ट कराने के आरोप में यहाँ की पुलिस ने धर लिया है। आ तो रहीं हैं इधर डैड के साथ पुलिस कस्टडी में।' कहते–कहते वह अश्रुपूरित भी थी।

श्यामली साथ ही साथ उठी झरना के पिता और माँ को सम्मान देने के लिए। हम दोनों ने उनके प्रणाम किये। इस दौरान हमारे सर उन्हीं की तरह ही संवेदना में झुके हुए थे.... तब तक रोने लगी वह। सहलाने भी लगी थी हम दोनों के सिर फिर श्यामली से कहा था– फलवती भव सलोनी बेटे।

क्या कह पाते हम लोग, तो..... माँ पास आई, उसके बहते हुए आँसुओं पर अपने रूमाल का इस्तेमाल करते हुए एक श्लोक कहा– 'झरना की माँ ! **ममता परमं दुःखं निर्ममत्वं परं सुखम्। संतोषादपरं नास्ति सुखस्थानं च शाश्वतम्।**' माँ फिर इसका भाव भी बताने लगी– तू करती भी तो क्या, अतिरेकमयी ममत्व के बजाय अपेक्षित स्तर की निर्ममता से उत्पन्न संतोष बड़ा सुख देता है। तुम्हें पता होता ऋषि–मुनियों द्वारा कही गयी इस बात का तो उस घटना को जन्मती ही नहीं जो परसों हमारे बच्चों के लिए प्राणघाती थी। अच्छा किशन जी, अब ले जाव इन्हें.... और समझाओ कि मंच पर खड़े रहकर अपने आत्मसम्मान को और ज्यादा कलूटा न बनायें।

✦

कतिपय अध्यतन प्रकाशनों पर प्रतिक्रियायें

डॉ. आशा वर्मा, गगनांचल–जून–२००८ / नई दिल्ली

*** निश्चय ही परिवेश तथा पात्रानुकूल भाषा कौशलेन्द्र पाण्डेय के इन एकांकियों की जबर्दस्त खूबी कही जा सकती है, जिसके कारण पाठक इनके कथ्य एवं शिल्प से निरन्तर बंधा–सा अनुभव करता है। ** कुल मिलाकर रंगकर्मी कौशलेन्द्र ने **'त्रिशंकु'** के सभी बारह एकांकियों में समाज की किसी न किसी समस्या को उठाया है और नितान्त उपयुक्त याकि सुसम्प्रेषणीय भाषा में उनके समाधान भी दिये हैं। इन प्रयोगधर्मी नाटकों का हिन्दी जगत में भरपूर स्वागत होगा।

श्री रघुवीर शर्मा, इण्डिया न्यूज (साप्ताहिक), नयी दिल्ली

*** श्री पाण्डेय ने रेडियो नाटक लिखे, टेलीविजन के लिए पटकथायें भी लिखी हैं, बचपन में उन्होंने लगभग आधा दर्जन नाटकों की केन्द्रीय भूमिकायें भी अभिनीत की। अतीत की इस रंगकर्म सरोकारशीलता का परिणाम है ये कि **'त्रिशंकु'** में समाहित उनके नाटक न केवल पठनीयता बल्कि मंचनशीलता की कसौटियों पर भी ढीले नहीं पड़ते, नाटकों में पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग करने के अभिप्राय से पाण्डे जी ने जनभाषा को वरीयता दी है क्योंकि वह चाहते हैं कि अधिसंख्य पाठक उनके नाटकों को पढ़े समझें और संदेश ग्रहण करें।

डा. गंगा प्रसाद निर्मल, पूर्व निदेशक : केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, दिल्ली

*** **'त्रिशंकु'** के सभी नाटक उम्दा हैं, खासकर उनमें भाषा भी एक पात्र बनकर आई है।

डॉ. मेहता नगेन्द्र सिंह, पर्यावरण वैज्ञानिक, कंकड़ बाग, पटना

*** **'त्रिशंकु'** के सभी एकांकियों में डॉ. कौशलेन्द्र पाण्डेय की पर्यावरण प्रियता स्पष्ट है। एक पर्यावरण वैज्ञानिक होने के नाते मैं उन्हें इस बिन्दु पर बधाई देना चाहूँगा।

प्रो. नेत्रपाल सिंह, कथाशिल्पी एवं उपन्यासकार

*** **'त्रिशंकु'** में संगृहीत सभी नाटक लेखक की अध्ययनशीलता तथा उसके व्यावहारिक अनुभव के परिचायक है। हिन्दी जगत् में इस कृति की सर्वत्र सराहना की जायेगी, ऐसा विश्वास न करने का कोई कारण नहीं है।

आचार्य भागवत दुबे, सम्पादक : दीपशिखा, जबलपुर

*** सुविख्यात कहानीकार, चर्चित निबन्धकार, विद्वान् समालोचक एवं नाट्यशिल्पी कौशलेन्द्र जी का एकांकी संग्रह **'त्रिशंकु'** पढ़कर मुझे सुखद आश्चर्य हुआ चूँकि ये नाट्य लेखन में भी निष्णात है। संग्रहीत नाटकों की पृष्ठभूमि सामाजिक एवं प्रगतिवादी सोच वाली है। ये प्रगति भी स्वस्थ वैज्ञानिक चेतना एवं सुधारवादी मंशा के सार्थक संदेशवाही भी हैं।

सुकवि एवं पत्रकार सतीश सागर 'सागर', गुलमोहर पार्क, नई दिल्ली–४६

*** आप प्रगतिशील होने का नाटक नहीं करते, प्रोपैगण्डा भी नहीं बल्कि सही अर्थों में उपेक्षित वर्ग के लिए चिन्तित होते हैं, सामाजिक सरोकारों को जीते हैं मन से। और यही चिन्ता और सरोकार आपको कहीं न कहीं श्रेष्ट साहित्यकार का दर्जा देते हैं। *** कुल मिलाकर 'समालाप' मुझे इसलिए भी झकझोरती है क्योंकि साक्षातकारों में आपने बड़ी सहजता से बात की है, आज के सन्दर्भ में आपकी मान्यताएँ बेहद महत्वपूर्ण हो गयीं हैं।

डा. शिववंश पाण्डेय, पूर्व उपाध्यक्ष, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना

'समालाप' सचमुच में जीवेनेतिहास के साथ साहित्येतिहास बनने की क्षमता से परिपूर्ण है। इस तरह की रचनाओं से लेखक और उसकी विचारधारा को समझने में पाठकों को मदद मिलती है। लेखक की कृतियों में प्रच्छन्न रूप से व्यक्त उसके निजी सोच को ऐसी कृतियों में मुखर अभिव्यक्ति मिलती है। इसे पढ़ने पर मुझे लगा कि एक बहुत साफ–सुथरे दर्पण में कवि–कथाकार कौशलन्द्र से यथाभिलषित रूप में देख रहा हूँ।

नीहारिका (दैनिक स्वतन्त्र भारत, लखनऊ)

*** **'समालाप'** के सभी साक्षातकार जिन्हें डॉ. कौशलेन्द्र पाण्डेय ने भेंटवार्ता या बतकहियों का गुच्छ कहा है, लघुकथा, कहानी, व्यंग्य, कविता, बाल साहित्य, नाटक, समालोचना, यत्र तत्र संस्थाओं की पुरस्कार सम्बन्धी राजनीति तथा अन्य अनेक विषयों पर कोई न कोई सार्थक टिप्पणी की है। मुद्रण तथा साक्षातकारों का प्रस्तुतीकरण उत्कृष्ट है। इस कृति के पारायण से वर्तमान रचनाधर्मियों के अतिरिक्त अनागत पीढ़ियों को भी रचनात्मक दृष्टि मिलेगी; साक्षातकार विधा भी समृद्ध होगी। वस्तुतः समालाप के साक्षातकारों में श्री कौशलेन्द्र का लेखनीय अनुभव बिखरा पड़ा है।
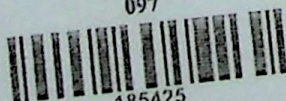
कौशलेन्द्र पाण्डेय
जन्म : २८ दिसम्बर '३७, बन्नावाँ, रायबरेली

कहानी

क. मरघट का प्रहरी/१९६५
ख. आंगन से भी छोटा आसमान/१९९२
ग. नीले फ्रेम वाली खिड़की/१९९५
घ. एक नया आसुफुद्दौला/१९९१
ङ. पटाखे/१९९६
च. गगनचुंबी/१९९६
छ. संवेदना के जुगनू/२००१

काव्य कृतियाँ

क. मैं शिव नहीं/१९८२
ख. जाने कैसे-केसे दर्द/१९८४
ग. छक्का/१९८७
घ. टॉफी/१९८७
ङ. देशभक्त रोबोट/१९९२

अन्य

क. गुदगुदी (व्यंग्य संग्रह)/१९९८
ख. निर्झर और नदियाँ (यात्रा वृत्तांत)/१९९३
ग. त्रिशंकु (एकांकी नाट्य संग्रह)/२००७
घ. समालाप (साक्षात्कार संग्रह)/२००८

और यह उपन्यास

सम्पर्क : 130, मारुतिपुरम्, लखनऊ